श्रमणोपासक

(पाक्षिक)

पंजी सख्या आर एन ७३८७/६३

वर्ष-३० अक-१७

१० दिसम्बर १९९२

युवाचार्य विशेषांक

सम्पादक

जुगराज सेठिया

डॉ शान्ता भानावत

आगम-वाणी

जहा से सयभूरमणे,
उदही अक्खओदए ।
नाणारयणपडिपुण्णे,
एव हवई बहुस्सुए ।।

जिस प्रकार अक्षय जल निधि स्वयम्भूरमण समुद्र नानाविध रत्नो से परिपूर्ण होता है, इसी प्रकार बहुश्रुत भी (अक्षय सम्यग्ज्ञान रूपी जलनिधि अर्थात् नानाविध ज्ञानादि रत्नो से परिपूर्ण) होता है ।

—उत्तराध्ययन ११/३०

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड

—विचार-दर्शन—

द्वितीय खण्ड

—युवाचार्य समारोह—

जिज्ञासाएं समाधान एवं साक्षात्कार

नोट—यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से संघ अथवा सम्पादक की सहमति हो।

धन्यवाद एवं आभार

जिनशासन प्रद्योतक, समीक्षण ध्यान योगी, समता विभूति परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की महती अनुकम्पा से बीकानेर क्षेत्र में समध्यान का जैसा अपूर्व वातावरण बना हुआ था उसकी चरम परिणति युवाचार्य चादर प्रदान महोत्सव के रूप में जिनशासन के भूत, वर्तमान और भविष्य की स्वर्णिम योजक कड़ी बनकर हमारे समक्ष उपस्थित हुयी।

परम पूज्य शासन नायक के बीकानेर पदार्पण के साथ ही १६ फरवरी ९२ को २१ मुमुक्षु आत्माओं के भव्य भागवती दीक्षा समारोह के साथ प्रारम्भ हुए पवित्र धार्मिक अनुष्ठानों की यशस्वी यात्रा पर हमे गर्व है। दीक्षा के पावन प्रसग से एकत्र साधु साध्वी मण्डल और प्रेरित जनसमुदाय की सामूहिक दया के ऐतिहासिक कार्यक्रम के पर्यवसान पर परम पूज्य गुरुदेव द्वारा युवाचार्य की घोषणा और तदनन्तर पश्चात् ही सारस्वत धरा बीकानेर के राजमहलों के प्रांगण में प्रखर प्रवक्ता तरूण तपस्वी शास्त्रज्ञ विद्वद्वय श्री रामलाल जी म सा को चादर प्रदान समारोह ने जिनशासन के इतिहास में एक गौरवशाली स्वर्णिम पृष्ठ रचा है।

इस अलौकिक क्षण की महनीय घटनाओं को शास्त्रीय, सन्दर्भों और युग सन्दर्भों के साथ संयोजित करके जन-जन के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए श्रमणोपासक का यह "युवाचार्य विशेषांक" प्रकाशित करने का निश्चय किया गया और वह निश्चय आकार लेकर आज आपके हाथों में समर्पित है। युवाचार्य पद के साथ जुड़े बहु आयामी दायित्वों के सैद्धान्तिक, शास्त्रीय व्यावहारिक पक्षों पर लेख संस्मरण आदि समन्वित सामग्री से यह अंक सुग्रहणीय बन पड़ा है। पूर्ण प्रयत्न किया गया है कि आगमिक दृष्टि से यह सर्वांगपूर्ण बन सके। युवाचार्य श्री रामलालजी महाराज के सरस जीवन की अन्तरंग झांकी, आचार्य प्रवर द्वारा स्थविर प्रमुखों की घोषणा और उनकी

शास्त्रीय भूमिका को प्रस्तुत करने का भी यथाशक्य प्रयास किया गया है। विद्वान् संत सती मंडल को प्रशस्त आशीर्वाद सदैव सुलभ रहा, जिनसे सम्पादक मंडल को जिज्ञासा समाधान का सुअवसर मिला। हम उन पूज्य संत चरणों में वन्दना अर्पित करते हैं।

सम्पादन कार्य में डॉ श्री नरेन्द्र जी भानावत, जानकी नारायण श्रीमाली व उदय नागोरी की समर्थ लेखनी एवं प्रतिभा का स्पर्श इस विशेषांक को मिला है।

विद्वान् लेखकों व सम्पादक मंडल के अनथक श्रम के प्रति हार्दिक आभार। श्री जैन आर्ट प्रेस के व्यवस्था प्रभारी श्री राजेन्द्र रामपुरिया तथा उनके सहयोगी कर्मचारियों व कम्पोजिटरों ने अहर्निश कार्य किया, तदर्थ वे प्रशंसा के पात्र हैं। कार्यालय सचिव श्री नाना लालजी पीतलिया और उनके सहयोगीजनों के सद् प्रयास। हेतु साधुवाद। संक्षेप में इस विशेषांक को मूर्त रूप देने में प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष संलग्न सभागियों के प्रति मैं आभारी हूं।

अंक के प्रकाशन में अपरिहार्य कारणों से हुए विलम्ब के लिए पाठकों से क्षमाप्रार्थी हूं।

जिनशासन की गौरव व गरिमा के अभिवर्धक युवाचार्य चादर प्रदान समारोह के उपलक्ष्य में प्रकाशित यह अंक आपके हाथों में समर्पित करते हुए संघ स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है। आशा है यह विशेषांक मार्गदर्शक उपयोगी व प्रेरक सिद्ध होगा।

—चम्पालाल डागा
मंत्री
श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, बीकानेर

झलकिया

पुनरावर्तन

महान् क्रियोद्धारक पूज्य आचाय श्री हुक्मीचन्द जी म सा ने सं १६०७ माघ शुक्ला पचमी को धमनगरी बीकानेर मे पूज्य आचाय श्री शिवलाल जी म सा को युवाचाय पद से विभूषित किया था । १४३ वर्षों के बाद उसी बीकानेर मे समता विभूति आचाय श्री नानेश ने, मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को युवाचाय पद प्रदान कर इतिहास के दुलभ प्रसग का पुनरावतन कर दिया । दुलभ क्षणो को, दुलभ प्रसंग को प्राप्त कर यहा की जनता धन्य धन्य हो उठी ।

हर्ष–हर्ष

युवाचार्य पद सम्बन्धी आचाय प्रवर का सदेश जब विद्वद्वय श्री शाति मुनिजी म सा ने पढ़कर सुनाया तो सभा हर्ष–हर्ष के अतुल निनादो से गू ज उठी । इस गू ज से सेठिया धार्मिक भवन काफी देर तक अनुगु जित रहा ।

ज्वलन्त उदाहरण

अत्यल्प समय मे श्री साधुमार्गी जैन सघ, श्री समता युवा सघ, श्री समता बालक बालिका मडल एव श्री महिला मडल ने विद्युत गति से युवाचार्य महोत्सव की व्यापक तैयारिया सुन्दर समीचीन एव भव्य रूप से सम्पन्न कर एकता अनुशासन तथा समपण का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया जो प्रत्येक सघ के लिए अनुकरणीय है ।

कर्त्तव्य पालन

अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए समता भवन, रामपुरिया मार्ग स्थित केन्द्रीय कार्यालय ने तत्परता के साथ युवाचाय पद महोत्सव की खबर देश भर मे फैलाने में महत्वपूण भूमिका निभाई ।

व्युत्पन्नमति मेधा

सघ सरक्षक, पाच स्थविर प्रमुख एव तीन शासन प्रभावको की नियुक्ति कर आचाय श्री ने अपनी व्युत्पन्नमति मेधा का परिचय तो दिया ही सघ रूप कल्पवृक्ष की जडो को और अधिक गहराई तक पहुंचाने का महत्तम काय किया जिससे सकल सघ में हर्ष की लहर परिव्याप्त हो गई ।

समवशरण की स्मृति

३५ साधु--१४२ साध्वियों एवं सहस्रों श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति में युवाचार्य पद प्रदान का अद्भुत/अपूर्व/ऐतिहासिक प्रसंग दृश्य महावीर के समवशरण की स्मृति दिलाने वाला था।

समथन

श्वेत, निर्मल, शुभ्र, धवल, त्याग, तप, संयम एवं उच्चाचार की प्रतीक युवाचार्य चादर को प्रथम सन्त वृन्द एव बाद में महासती वृन्द ने शासन सेवामें अनवरत जुटे हुए अपने पावन हाथों से स्पर्शित कर प्रबल समर्थन दिया। भगवान महावीर के निर्ग्रन्थों की सर्वोच्च समता यहां साकार हो गयी

सगम

बीकानेर राज प्रांगण मे महाराजा श्री नरेन्द्र सिंहजी की विद्यमानता मे आयोजित युवाचार्य चादर महोत्सव को देखकर ३० वर्ष पूर्व उदयपुर राज प्रांगण में महाराणा श्री भगवत सिंहजी की विद्यमानता में आयोजित युवाचार्य चादर महोत्सव का दृश्य जनता के मस्तिष्क में उभर आया। अद्भुत अनोखा सहज संगम देखकर जन-मन प्रमुदित हो उठा।

सकल्प

चादर का श्वेत रंग, समता का केशर मंडित रंग केशरिया प्रतिष्ठा का एवं इसके तार एकता के प्रतीक हैं ऐसी भावाभिव्यक्ति करते हुए युवाचार्य श्री ने आचार्य श्री के स्वप्न समता समाज रचना को साकार करने का संकल्प व्यक्त किया।

गुरूणां आज्ञाऽविचारणीया

देश भर से आये विभिन्न संघों के प्रतिनिधियों श्रद्धालुओं ने 'गुरु आज्ञा' के प्रति असीम आस्था व्यक्त करते हुए गुरु आदेश को सिर माथे उठाया। शासन समर्पित श्रावक-श्राविकाओं ने 'गुरूणां आज्ञाऽविचारणीया' उक्ति को चरितार्थ कर के इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में नया अध्याय संयुक्त कर दिया। यह नूतन अध्याय भावी पीढ़ी को सदा-२ दिशा बोध प्रदान करता रहेगा।

तरुण तपस्वी, शास्त्रज्ञ, पडित रत्न मुनि श्री रामलालजी म॰ युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित चारो ओर हर्ष की लहर : अभिवन्दन एव शुभ कामनाए

भारतीय आध्यात्मिक परम्परा मे श्रमण सस्कृति का विशेष महत्त्व है। इस सस्कृति ने आत्म-जागृति, पुरुपाथ पराक्रम, तप-त्याग, सयम सदाचार पर सर्वाधिक वल दिया है। इस संस्कृति के विकास मे तीर्थकरा की वाणी को अपने आचार-विचार मे जीवन्त रूप देने वाले आचार्यो, सन्त-सतिया एव श्रावक श्राविकाओ की उल्लेखनीय भूमिका रही है। इस संस्कृति के महत्त्वपूर्ण अ ग के रूप मे जैन धम भारतीय समाज मे आज तक अविच्छिन्न रूप से चला आ रहा है। अतिम तीर्थकर भगवान् महावीर ने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप जिस तीर्थ की स्थापना की, वह "चतुर्विध सघ" रूप से जाना जाता है। सघ की इस परम्परा ने जैन धम को वरावर जीवन्त वनाये रखा है।

श्रमण भगवान् महावीर के वाद तीर्थंकर-परम्परा समाप्त हो गई और सुधर्मा स्वामी उनके प्रथम पट्टधर आचाय हुए। इस दृष्टि से वर्तमान में जो आचाय-परम्परा चली आ रही है, वह आचाय सुधर्मा-स्वामी से ही सम्वन्धित है। विगत ढाई हजार वर्षों मे जैन श्रमण-परम्परा में कई उतार चढ़ाव आये, गण गच्छ-सघ भेद हुए, पर यह परम्परा अवरुद्ध नहीं हुई। दिगम्बर और श्वेताम्बर दो प्रमुख परम्पराओ के रूप मे जैन धम आज भी जन-जीवन मे अपना प्रभाव वनाये हुए है।

जैन परम्परा मे स्थानकवासी परम्परा का अपना विशेष महत्त्व है। इस परम्परा मे ज्ञानसम्मत क्रिया, तप संयम और गुणाराधना पर जोर दिया गया है। आत्म गुणो के विकास से सबंधित विविध धर्मानुष्ठान इस परम्परा की विशेषताए हैं। इस परम्परा मे साधुमार्गी जैन संघ अपने विशुद्ध साध्वाचार एव कठोर संयमी जीवन के लिए

विश्रुत है। वर्तमान मे समता विभूति, समीक्षण ध्यानयोगी, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालालजी म सा इस संघ के आचार्य हैं। महावीर स्वामी की शासन-परम्परा मे आप ८१ वें तथा साधुमार्गी संघ की आचार्य हुकमीचन्दजी म सा की सम्प्रदाय के आप आठवें आचार्य हैं।

आचार्य हुकमीचन्दजी म ने संयमीय-साधना की गहराई में उतर कर निग्रन्थ संस्कृति में व्याप्त संयम-शैथिल्य को दूर करने का ऐतिहासिक प्रयत्न किया। आपने २१ वर्ष तक बेले-बेले की तप-साधना की और प्रतिदिन दो हजार शक्रस्तव एव दो हजार गाथाओं का परावर्तन नियमित रूप से करते हुए स्वाध्याय एव ध्यान के क्षेत्र म अनूठा आदर्श प्रस्तुत किया। आप विशिष्ट क्रियोद्धारक आचार्य थे। अतः आपके नाम पर सम्प्रदाय का नाम पड़ा। आपके बाद इस परम्परा में जो आचार्य हुए, वे हैं—आचार्य श्री शिवलाल जी म सा, आचार्य श्री उदयसागर जी म सा, आचार्य श्री चौथमल जी म सा, आचार्य श्री श्रीलाल जी म सा, आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा, आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा और वर्तमान आचार्य श्री नानालाल जी म सा।

आचार्य का धर्मशासन परम्परा मे विशेष महत्त्व होता है। पच परमेष्ठि महामंत्र मे आचार्य को तीसरा स्थान दिया गया है। अरिहन्त और सिद्ध देव हैं तो आचार्य, उपाध्याय और साधु गुरु हैं। आचार्य स्वयं "आचार" का पालन करते हैं और दूसरों से आचार का पालन करवाते हैं। इस दृष्टि से संघ, समाज और जीवन में सदाचरण की महक फैलाने मे आचार्य की प्रभावी भूमिका रहती है। आचार्य अपने जीवन और नेतृत्व से सबका मार्ग प्रशस्त करते हैं, भूले भटकों को सही राह बताते हैं और सयम म विचलन आने पर अपने उपदेश से सबको संयम-स्थिर करते हैं। शास्त्रीय दृष्टि से आचार्य छत्तीस गुणों के धारक होते हैं। वे पांच महाव्रतों का पालन करते हैं, पांच इन्द्रियों को जीतते हैं, पांच समिति और तीन गुप्ति की परिपालना करते हैं, चार कषायों को टालते हैं, पांच आचार का पालन करते हैं और नौ बाड़ सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य की आराधना करते हैं।

आचार्य श्री नानालाल जी म सा साधुमार्गी जैन चतुर्विध संघ के महान् तेजस्वी और प्रभावक आचार्य हैं। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य इन पंच आचार की परिपालना करते हुए आपने संघ को इस ओर गतिशील किया है। ज्ञानाचार के क्षेत्र म आपने स्वयं आगम साहित्य का दोहन कर इसे प्रवचनों में धर्मतत्त्व की इस

सामयिक जीवनपरक प्रभावी व्याख्या की है। "जिणधम्मो" आपकी ज्ञान-साधना का नवनीत है। आपने अपने साधु-साध्वियो को संस्कृत प्राकृत एव तत्त्वज्ञान के क्षेत्र मे निरन्तर अध्ययन और स्वाध्याय की विशेष प्रेरणा दी है। यही नही, समाज मे ज्ञान का विशेष प्रचार-प्रसार हो, इस दृष्टि से आप सदैव अपने प्रवचनो मे प्रेरणा देते रहते हैं। श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार रतलाम, सुरेन्द्र कुमार साड शिक्षा सोसायटी, आगम-अहिंसा समता प्राकृत संस्थान उदयपुर आपकी प्रेरणा के ही प्रतिफल हैं।

दर्शनाचार के क्षेत्र मे आपने अनेक लोगो को धर्म-श्रद्धा मे स्थिर किया है और विश्व शांति तथा आत्म कल्याण की दिशा मे समता-दर्शन का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक रूप प्रस्तुत किया है। चारित्राचार के क्षेत्र मे आपने जहा एक ओर २८९ मुमुक्षु भाई-बहिनो को अब तक दीक्षित कर वीतराग पथ का पथिक बनाया है, वहा हजारो लोगो को धर्मोपदेश देकर व्यसनमुक्त सस्कारी जीवन जीने की प्रेरणा दी है। धर्मपाल प्रवृत्ति इस दिशा मे जीवन निर्माण मे एक रचनात्मक कार्यक्रम है। तपाचार के क्षेत्र में आपने बाह्य तप के साथ साथ आभ्यन्तर तप पर विशेष बल दिया है। समीक्षण-ध्यान के रूप मे आपने वर्तमान युग के भौतिक दबावो और तनावो से मुक्त होने तथा क्रोध, मान, माया, लोभादि कषायो पर विजय प्राप्त करने के अभ्यास का सुन्दर समीक्षण-प्रयोग प्रस्तुत किया है। वीर्याचार के क्षेत्र मे व्यक्ति के पुरुषार्थ और आत्म चैतन्य को जगाने की आप सदैव प्रेरणा देते रहते हैं, जिसके फलस्वरूप स्वधर्म वात्सल्य, जीवदया एव सर्वजन कल्याणकारी अनेक प्रवृत्तियों मे कई भाई-बहिन व संस्थाए सक्रिय हैं। संक्षेप मे कहा जा सकता है कि आचार्य श्री नानेश संघनायक के रूप मे चतुर्विध संघ का सही नेतृत्व देने एव पंचाचार की परिपालना कराने म एक आदर्श नेतृत्व हैं।

काल एक अखण्ड प्रवाह है। आचार्यों की परम्परा अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है और आगे भी चलती रहेगी। धर्म संघ अखण्ड और अविचल बना रहे इस दृष्टि से आचार्य अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य मनोनीत करते रहे हैं। आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा ने वि स १९०७ में बीकानेर मे मुनिश्री शिवलाल जी म को, आचार्य श्री उदयसागर जी म ने मुनिश्री चौथमल जो म को वि स १९५४ में मार्गशीर्ष शुक्ला त्रयोदशी को, आचार्य श्री चौथमल जी म

ने मुनि श्री श्रीलाल जी म सा को वि सं १९५७ कार्तिक शुक्ला द्वितीया को रतलाम में, आचार्य श्री श्रीलाल जी म ने मुनि श्री जवाहरलालजी म को वि सं १९७६ चैत्र शुक्ला नवमी को रतलाम में, आचार्य श्री जवाहरलाल जी म ने मुनि श्री गणेशीलाल जी म को वि सं १९९० मे फाल्गुन शुक्ला तृतीया को जावद में और आचार्य श्री गणेशीलाल जी म ने मुनि श्री नानालाल जी म को वि सं २०१९ मे आश्विन शुक्ला द्वितीया को उदयपुर में युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया था। इसी क्रम मे आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने मुनि श्री रामलाल जी म सा को वि स २०४८ फाल्गुन कृष्णा अमावस्या (२ मार्च, १९९२) को बीकानेर में अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य घोषित किया और फाल्गुन शुक्ला तृतीया (७ मार्च, १९९२) को चादर प्रदान कर चतुर्विध संघ की साक्षी में उन्हें युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया है। इससे पूरे संघ और देश में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है।

पं र श्री राम मुनि जी ने वि स २०३१ में माघ शुक्ला १२ को देशनोक मे जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। तब से आप निरन्तर आचार्य श्री के सान्निध्य मे ही रहे और अन्तेवासी शिष्य की तरह उनके साथ होने वाले चिन्तन मनन, विचार विमर्श, सेवा-साधना मे सक्रिय रूप से रहे। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषाओं के साथ साथ आगम, दर्शन, शास्त्र आदि का आपका विशेष अध्ययन और चिन्तन रहा है। कुछ समय पूर्व आचार्य श्री ने संघ विहार, चातुर्मास-विनति-व्यवस्था आदि का दायित्व आपको सौंपा था। अपने सौम्य-स्वभाव, विनय-विवेक, धैर्य, संयम आदि गुणों के कारण आप चतुर्विध संघ के सभी के स्नेह और आदर के पात्र रहे हैं। आपको युवाचार्य के रूप मे मनोनीत करने पर चतुर्विध संघ में अपार हर्ष और प्रसन्नता का संचार हुआ है। सभी ने इस मनोनयन का पूर्ण आदर और सम्मान के साथ स्वागत किया है तथा संघ संचालन और धर्म-प्रभावना में पूरा सहयोग देने का विश्वास व्यक्त किया है। हम 'श्रमणोपासक' के समस्त पाठकों की ओर से इस शुभ प्रसंग पर युवाचार्य श्री के प्रति विनम्र अभिवन्दना और हार्दिक मंगलकामनाएं व्यक्त करते हैं।

आचार्य श्री नानेश ने युवाचार्य श्री की घोषणा के अवसर पर श्री श्रमण वैरागमूर्ति, शासन प्रभावक अपने गुरु भाई सरल स्वभावी श्री इन्द्रचन्द्र जी म सा (दीक्षा वि सं २००२ वैशाख शुक्ला ६, गोगो-

लाव) को चतुर्विध सघ का सरक्षक घोषित किया है। हमे पूरा विश्वास है कि आपके सरक्षण में संघ सयम साधना और सेवाभावना मे विशेष प्रवत्त होगा। इस अवसर पर आचाय श्री नानेश ने शासन सहयोग के लिए निम्न पाच महामुनिराजो का "स्थविर प्रमुख" रूप मे नियुक्त किया—सघ स्थविर श्री शाति मुनि जी (दीक्षा वि स २०१६, कार्तिक शुक्ला १, भदेसर), श्री प्रेम मुनि जी (दीक्षा वि स २०२३ आश्विन शुक्ला ४, राजनादगाव), श्री पाश्व मुनि जी (दीक्षा वि स २०२३ आश्विन शुक्ला ४ राजनादगाव), श्री विजय मुनि जी (दीक्षा वि स २०२६, माघ शुक्ला १३, भीनासर) और श्री ज्ञानमुनि जी (दीक्षा वि सं २०३१ ज्येष्ठ शुक्ला ५, गोगोलाव)।

सघ के सभी साधु-साध्वियो ने आचाय श्री के उक्त निर्णय को हार्दिक समथन देते हुए सघ को अबाध गति से आगे बढाने का आश्वासन दिया है। देश के विभिन्न क्षेत्रो से आये हुए सघ प्रमुखो ने आचार्य श्री के इस निणय का समथन और अनुमोदन किया है। चादर प्रदान महोत्सव पर उपस्थित चतुर्विध सघ के हजारो सदस्यो ने अपनी शुभ-कामनाए व्यक्त करते हुए इस निर्णय को सघ सगठन को सुदृढ बनाने वाला निरूपित किया। सघ निरन्तर प्रगति करता रहे तथा जीवन और समाज मे रत्नत्रय की आराधना अभिवृद्ध होती चले, इसी भावना के साथ चरितात्माओ के चरणों मे शत-शत वदन।

—डॉ भानावत

अमृतवाणी

कल्पतरू संघ : नेतृत्व एवं निष्ठा

प्रवचनकार
आचार्य श्री नानेश

प्रभु महावीर ही नहीं सभी तीर्थंकरों की दृष्टि में संघ व्यवस्था का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यही कारण है कि उन्हें केवल ज्ञान होने के पश्चात् वे चार तीर्थ साधु साध्वी, श्रावक श्राविका का प्रवर्तन करते हैं। तीर्थ का अर्थ होता है—जिसके माध्यम से तिरा जाय, तीर्यते अनेनेतितीर्थ' अर्थात् जिसके द्वारा या जिसके आधार से तिरा जाय वह तीर्थ है। इन चार तीर्थों के समुदाय रूप को ही संघ कहा गया है। भगवान महावीर या अन्य किन्हीं भी तीर्थंकरों को अपनी आत्म-साधना के लिए संघ की आवश्यकता नहीं रहती, वे केवलज्ञान प्राप्ति के पूर्व स्वतन्त्र एकाकी सत्य के अन्वेषण में लगे रहते हैं। जब सत्य से साक्षात्कार कर लेते हैं अर्थात् आत्मा के स्वरूप को केवलालोक से देख लेते हैं तब वे संघ की स्थापना करते हैं। यह स्थापना प्रभुत्व प्रदर्शन के लिए नहीं अपितु—जगत् के समस्त प्राणियों के प्रति अपार करुणा भाव के फलस्वरूप होती है। जैसा कि प्रश्न व्याकरण सूत्र में कहा गया है—

"सव्व जग जीव रक्खण दयट्ठयाए भगवया पावयणं सुकहियं"

इस प्रकार संघ के प्रवर्तन/स्थापन में उन सर्वज्ञ भगवंतों का कोई स्वार्थ या लगाव नहीं होता किन्तु होता है भव्य जीवों के प्रति एकांत करुणा भाव!

निर्ग्रन्थावस्था के विकास में संघ

केवलज्ञान प्राप्त हो जाने पर तीर्थंकर देव मार्ग के स्वरूप

को, वहा के परमानन्द को, आत्मसाक्षी से हस्तामलक की तरह देखने लग जाते हैं। उसी केवलालोक मे जो अनन्तानन्त सूर्यों से भी अधिक प्रकाशवान है वे ससार के स्वरूप को भी देखते हैं और ससार मे परिभ्रमण कराने वाली ग्रथियो का भी उन्हें साक्षात्कार होता है। बाह्य एव आभ्यन्तर अशुद्धियो से ग्रथिया बनती जाती हैं। जैसे सजीव या निर्जीव किसी भी पदार्थ के प्रति आसक्त हो जाना, उस आसक्ति के भाव को जमाये रखना, उस पदार्थ प्राप्ति के लिए चिंतन करना कि वह मुझे ही प्राप्त हो, यदि वह प्राप्त न हो तो उसके लिए आर्त्तध्यान करना, यह अशुद्धि का एक रूप है। इसी प्रकार की अशुद्धियों से भव परम्परा का चक्र चलता रहता है। इसीलिए प्रभु महावीर ने भव्य आत्माओ को निर्ग्रन्थ बनने का उपदेश दिया।

निर्ग्रन्थ का तात्पर्य होता है "निर्गत ग्रन्थात् बाह्याभ्यन्तररूपादिति निर्ग्रन्थः।" अर्थात् बाह्य आभ्यन्तर रूप ग्रंथ (ग्रन्थि) से जो निकला हुआ (रहित) है वह निर्ग्रन्थ है।

निर्ग्रन्थ अवस्था के विकास मे संघ की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। सघ में रहकर भव्य आत्माए अपने जीवन के चरम उत्कर्ष/लक्ष्य को प्राप्त कर पाती हैं। साधना गत प्रत्येक साधु साध्वी को अपने श्रमणत्व को सुरक्षित रखने हेतु जागृत/सजग रहने मे, भौतिक आंधी मे अपने संयमी भावो को अचल/अडोल/अकम्प बनाये रखने मे, समय परिवर्तन के लुभावने आकर्षण से बचाने मे, सघ कवच रूप हैं, ढाल रूप है।

इससे यह भलीभाति स्पष्ट है कि जीवन की परमोत्कर्ष प्राप्ति में सघ सशक्त माध्यम है। संघ की गरिमा के विषय मे यदि विस्तार से कोई जानना चाहें तो नदी सूत्र गाथा ४ से १९ तक देख सकते हैं।

एकता के सूत्र में पिरोने वाला सघ

साधना करने वाले सभी साधक एक समान नही होते। कोई वय से लघुवय वाले होते हैं, कोई परिपक्व व वृद्धावस्था वाले भी होते हैं, बौद्धिक क्षमता की दृष्टि से मद मति वाले भी होते हैं और प्रज्ञा पुरुष भी होते हैं। उन सबको साधना के क्षेत्र में भावात्मक एकता के सूत्र में पिरोये रखने वाला संघ ही होता है।

संघ नायक की भूमिका—

ऐसे संघ की सुव्यवस्था अत्यंत आवश्यक है। तीर्थंकर भगवंतो की उपस्थिति में यह व्यवस्था गणधरों के माध्यम से सम्पादित होती है। किन्तु वे (तीर्थंकर भगवंत) निर्वाण/मोक्ष पधारने के पूर्व अपनी उपस्थिति मे ही संघ व्यवस्था के मेरुदण्ड के रूप में आचार्य को प्रस्थापित करते है। यानी संघ व्यवस्था के केन्द्र मे आचार्य को स्थित किया जाता है। ये संघ के कर्णधार होते हैं। संघ में तीर्थाधिप के रूप में आसीन आचार्य का स्थान सर्वोच्च होता है।

वर्तमान आचार्य परम्परा का उद्भव—

प्रश्न हो सकता है कि आचार्य परम्परा का उद्भव कब व कैसे हुआ। इस सम्बन्ध में 'गणहर सत्तरी' व 'वीरवंश पट्टावली' अपर नाम 'विधिपक्ष गच्छ पट्टावली' में कुछ तथ्य प्राप्त होते हैं। उक्त ग्रन्थों के अनुसार भगवान महावीर ने स्वयं की उपस्थिति में ही चतुर्विध संघ के तीर्थाधिप—नायक रूप मे संघ सचालन हेतु आर्य सुधर्मा स्वामी को आचार्य पद पर आरूढ किया—

तित्थाहिवो सुहम्मो
लहुधम्मो गरिम गयण संकासो
वीरेण मज्झिमाए
संठ विओ अग्गियेमाणो

—गणहर सत्तरी-२

इसमें यह कहा गया है कि स्वयं भगवान महावीर ने मध्यम पावा में अति क्षीण कर्मा केशरी सिंह के तुल्य अग्नि वैश्यायन गोत्रीय सुधर्मा को तीर्थाधिप-अर्थात् साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध तीर्थ के नायक पद पर प्रतिष्ठित कर अपना प्रथम पट्टधर नियुक्त किया।

वीर वंश पट्टावली की निम्न गाथा से भी यह स्पष्ट है —

भविय जण पडिबोहिय
बायालिस पाविऊण परियाई
सोहम्म गणहरस्स य
पट्ट दाउ गिओ सत्तो ॥६॥

अर्थात्—भव्य जीवो को प्रतिबोध देकर बहत्तर वर्ष की आयु पूर्ण कर और गणधर सुधर्मा को अपने उत्तराधिकारी के रूप मे पट्टधर पद आचार्य पद प्रदान कर भगवान महावीर निर्वाण को प्राप्त हुए।

करुणाशील तीर्थंकर

मोक्ष गमन के पूर्व सघ की सुव्यवस्था करना यह तीर्थकर महाप्रभु की अनन्त अनन्त करुणा भावना का प्रतीक है। सघ कल्प-वृक्ष के तुल्य है अत प्रभु महावीर ने आर्य सुधर्मा स्वामी को अपनी अनुपस्थिति में सघ की सुव्यवस्था का उत्तरदायित्व सौंपा। यद्यपि आर्य सुधर्मा स्वामी को आचार्य पद देते समय उनसे दीक्षा पर्याय मे ज्येष्ठ रत्नाधिक संत महात्मा भी विद्यमान थे। स्वय गौतम स्वामी जिन्हे भगवान महावीर के प्रथम शिष्य व प्रथम गणधर बनने का गौरव प्राप्त था, मौजूद थे किन्तु भगवान ने आचार्य पद पर सुधर्मा स्वामी को आसीन कर तत्कालीन राजवशीय उस व्यवस्था, कि राजा का बडा पुत्र ही राज गद्दी का अधिकारी होता है, को निरस्त कर गुण मूलक दृष्टि का सर्जन किया था। वही से आचार्य परम्परा अविच्छिन्न रूप से गतिमान है।

सघ व सघ के सदस्य

सघीय व्यवस्था में साधना रत सदस्यो के मुख्य दो प्रकार है—पहला साधु साध्वी जो पूर्ण अहिंसक गृह त्यागी एव अणगार होते है, दूसरा गृहस्थावस्था में रहते हुवे धर्म पूर्वक जीवन यापन करने वाले श्रावक-श्राविका होते हैं। इनके कर्त्तव्य भिन्न २ होते हैं किन्तु इनके अनेक कर्त्तव्य समान भी होते हैं जैसे—देव गुरु—धर्म पर अविचल आस्था/श्रद्धा/विश्वास रखना, सभी प्राणियो के प्रति आत्मीय भाव रखना। सघ की भावात्मक एकात्मकता के प्रति पूर्ण समर्पित रहना, किसी भी सदस्य की निन्दा विकथा न करना और न ही उसके सुनने मे रस लेना बल्कि गुणी व्यक्तियों के गुणो का समय २ पर उद्भावन/दिग्दर्शन करना करवाना आदि।

निर्ग्रन्थता के प्रति समर्पित

वीतराग देवों की संस्कृति को निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति कहा जाता है क्योंकि इसके मूल मे निर्ग्रन्थता के प्रतीक श्रमणो की महान्

समस्या होती है। श्रमण निर्ग्रन्थ का जीवन जगत् के समस्त प्राणियों की तुलना में बेजोड़ होता है, अद्वितीय होता है। अतः प्रत्येक साधु-साध्वी को अपने लक्ष्यपूर्ण निर्ग्रन्थता के प्रति सदा जागृत/सजग रहना चाहिए। उन्हें अपने लक्ष्य का सदा अनुचिंतन करते रहना चाहिए कि हमने निर्ग्रन्थ श्रमण धर्म धारण किया है। हम इसका परिपूर्ण रूप से पालन करते रहें। बाह्य परिग्रह धन धान्य, माता पिता, पुत्र-पुत्रियाँ आदि प्राप्त व प्राप्त होने वाले एवं इनसे सम्बन्धित आंतरिक परिग्रह मोह, ममत्व, अहंत्व आदि का त्याग कर जगत् साक्षी से आत्मभाव पूर्वक साधु साध्वी जीवन स्वीकार किया है अतः "जाए सद्धाए निक्खंतो तमेव अणुपालिज्जा' के अनुसार सदा सर्वदा हमारा वर्तन हो।

जो श्रमण समाचारी है उसका सजगता से परिपालन करते हुए अनुशास्ता की आज्ञाराधन पूर्वक अपनी आत्म साधना में लीन रहना चाहिये। उन्हें चाहिए कि सहअस्तित्व, सहिष्णुता, समता को जीवन का आधार बनाकर पारस्परिक वात्सल्य भाव रखते हुए पंचाचार का पालन करने में सतत् जागरूक रहें। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक साधु-साध्वी को निर्ग्रन्थता के प्रति सर्वात्मना समर्पित होना चाहिये।

श्रावक वर्ग का दायित्व

भव्य भवन की छत को टिकाये रखने के लिए कई स्तम्भ होते हैं। उन स्तम्भों में से प्रमुख स्तम्भ की सम्प्रभुता है अन्य गौण है, यह नहीं माना जाता बल्कि सभी स्तम्भों का अपने २ स्थान पर महत्त्व स्वतः सिद्ध है। इसी प्रकार चतुर्विध संघ का भव्य भवन के श्रमण-श्रमणी श्रावक-श्राविका रूप स्तम्भ हैं। चतुर्विध संघ में जैसे श्रमण-श्रमणी को महत्त्व प्राप्त है उसी प्रकार श्रावक श्राविका का स्थान भी गौरवमय बना हुआ है। वीतराग भगवंतों ने श्रावक श्राविकाओं को साधु-साध्वी के लिए अम्मा पिया, माता पिता की उपमा से उपमित किया है। जैसे माता पिता बालक की सुरक्षा करते हैं उसी प्रकार श्रावक-श्राविका वर्ग भी साधु साध्वी के जीवन की सुरक्षा करता है। ऐसे शासन सेवी संघनिष्ठ श्रावक श्राविकाओं को भी संघ व शासन के प्रति रहते हुए अपने कर्तव्यों का जागरूकता से पालन करना

प्रसग वश उनके कतिपय दायित्वो का सूचन किया जाना उचित लग रहा है ।

० साधु-साध्वियो की निग्रन्थत्ता बरकरार रहे उसमे किसी तरह का दोष नहीं लगे इसकी अपनी तरफ से पूरी सजगता रखी जाय ।

० त्यागी आत्माओ के समक्ष व धार्मिक अनुष्ठानो के समय सांसारिक बातें न हो ।

० किसी व्यक्ति विशेष के प्रसग को लेकर अपनी आस्था को चलायमान नहीं होने देना क्योकि कभी २ सुनी हुई या देखी हुई बात भी भ्रामक या गलत हो सकती है । यदि सच्ची प्रतीत भी हो तो यही चिन्तन करना चाहिए कि व्यक्ति गलत हो सकता है पर जिनेश्वर देवो का सिद्धान्त गलत नहीं हो सकता ।

० संघ के किसी सदस्य या व्यवस्था विषयक कभी कोई अन्यथा बात देखने या सुनने मे आवे तो उसकी इधर उधर चर्चा नहीं करते हुए शासन सेवा की भावना से उस बात को सघ नायक/अनुशास्ता तक पहुचा देना चाहिए ।

० संघ के सदस्यों के पास अलग-२ क्षमताए होती है कोई स्नातक/अधिस्नातक आदि शिक्षित प्रबुद्ध व बुद्धिजीवी होते हैं । उनके पास बौद्धिक क्षमता होती है । किसी के पास समय होता तो किसी के पास शारीरिक क्षमता होती है । इसी तरह किसी मे वाचिक व किसी-२ म अन्य अनेक प्रकार की क्षमताए होती हैं ।

० उन्ह अपनी-२ क्षमता के अनुसार अपनी शक्ति/शक्तियो का समविभागीकरण कर बच्चो, युवाओं व बहिनो आदि के लिए धार्मिक शिक्षण व्यवस्था, स्वधर्मी वात्सल्यता स्वाध्याय प्रवृत्ति, जरूरतमद स्वधर्मियों की अपेक्षित सेवा, अहिंसा प्रचार, ज्ञान प्रचार असहाय पीडित मानवता की सेवा, स्वधर्मियों की उन्नति के उपाय आदि विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रों म अपनी क्षमता व शक्ति का सदुपयोग कर धर्म की प्रभावना करना ।

० प्रभु महावीर के शासन का अनूठा प्रताप है, जिससे अच्छे २

मेर वृहद् साधु सम्मेलन भी उसी शृंखला में एक था। उस समय एक आवाज बुलंद हुई थी। तदनन्तर घाणराव सादड़ी वृहद् साधु सम्मेलन में यह विषय पुनः उठा। प्रबुद्ध चिन्तक श्रमणों ने अनेकता एवं फूट परस्ती को मोक्ष मार्ग तथा आत्मशुद्धि में बाधक माना। उस सम्मेलन में चर्चा के दौरान यह भी कहा गया कि विभिन्न सम्प्रदायों के उद्भव का मुख्य कारण अलग-२ शिष्य परम्परा है। एक गुरु के चार शिष्य हों और प्रत्येक शिष्य सोचे कि मेरे भी चार शिष्य हों इन आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु गुरु भाईयों में संघर्ष, गुरु चेलों में संघर्ष जन्म लेते हैं। इन्हीं संघर्षों से आपस में अनबन, एक दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति, श्रावक वर्ग में भेद पैदा करना आदि कार्य होते हैं। सभी की बुद्धि एक समान नहीं होती भद्रिक परिणामी सत्य तथ्य को भी कभी-कभी समझ नहीं पाते। एक दूसरे के पक्षधर बन जाने से श्रावक समाज में छिन्न भिन्नता बन जाती है। गुरु शिष्यों में इस प्रकार अलग २ खेमे बन जाते हैं। आलोचना प्रत्यालोचना से संसार अभिवृद्धि का प्रसंग उपस्थित हो जाता है। शिष्य चेलों की होड़ में योग्य-अयोग्य को देखे बिना जिस किसी को भी साधु बनाने में लग जाते हैं। अयोग्य साधु से त्रुटि होना स्वाभाविक है। गुरु महाराज उस त्रुटिकर्ता को दंड देना चाहें तो अन्य चेला उसका पक्ष कर लेता है। उसे देखा देखी दूसरा गुरु भ्राता भी वैसा ही आचरण करेगा और सोचेगा कि मेरे चेले को यदि दण्ड मिला और सहन नहीं कर सकने के कारण भाग खड़ा हुआ तो मेरे चेलों की संख्या कम हो जायेगी। इस प्रकार आपसी खींच जाती है और समाज का रूप विरूप हो जाता है। ऐसी स्थिति में समाज को नीचा देखना पड़ता है।

एक और भी बात है कि सभी के चेले हो ही जायें यह आवश्यक नहीं। जिनके चेले नहीं हुए उनकी वृद्धावस्था में सेवा न होने से दुर्दशा हो सकती है। साथ ही बिना अनुशासन के स्वच्छन्द बनकर पक्का विहार आदि आरम्भ परिग्रह की अवस्था बढ़ जाने से, निर्द्वन्द्व, स्वच्छन्द होने से संसारी मनुष्यों के मन में उन श्रमणों के प्रति जैसा चाहिए वैसा सत्कार सम्मान नहीं रह जाता आदि कारण को लिखना बाद यह भी निश्चय किया कि समाज की एकरूपता व संगठना—

त्मक एकबद्धता के लिए एक ही आचार्य या नेतृत्व आवश्यक है। क्योंकि यदि संघ अनायकत्व/बिना नायक की स्थिति मे रहता है तो वह सघ विनाश को प्राप्त होता है। इसी तरह बहुनायकत्व/अनेक नायको की स्थिति से भी सघ की दुर्दशा होती है। अत एक ही आचार्य की नेश्राय मे चतुर्विध सघ रहे। इससे अनुशासन की दृढता से समाज की एकरूपता बनी रहेगी, दड प्रायश्चित का विधान बना रहेगा और वृद्ध साधु साध्वियो की सेवा के साथ २ अन्तिमावस्था सुधर सकेगी। इसी आशय की विचार चर्चा के पश्चात् एक ही आचाय की नेश्राय में साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के रहने के निर्णय पर पहुंचे और वृहद् साधु सम्मेलन ने इस उद्देश्य को सगठन के लिए रीढ़ की अस्थि के तुल्य माना।

परिपूर्ण समर्पणा–

शांत क्रान्ति के जन्मदाता स्व आचाय देव श्री गणेशीलालजी म सा ने अपनी वृद्धावस्था मे इस उद्देश्य को चतुर्विध संघ मे साकार किया। अमली रूप प्रदान किया। उसी का परिणाम है कि आज यह चतुर्विध सघ अपने शुद्धाचार के लिए चतुर्दिक प्रख्यात् है। यह सर्व-विदित है कि यह सब स्व आचाय देव श्री गणेशीलालजी म सा के शुभ आशीर्वाद का ही फल है। उसी आशीर्वाद की छत्रछाया मे प्रत्येक सदस्य को अपनी परिपूर्ण समपणा के साथ तत्पर रहना चाहिए।

तीर्थंकर भगवंतो द्वारा अनन्त-अनन्त करुणा भाव से प्रवाहित कल्पतरु तुल्य इस सघ की सुचारु गतिशीलता हेतु पूर्वाचार्यों ने अपने-अपने समय मे इसकी सम्यक् व्यवस्था सपादित की। प्राय प्रत्येक आचाय अपनी साध्य वेला मे अथवा यथावसर अपना उत्तरदायित्व किसी योग्य मुनिवर को सौंपते रहे जिससे यह शासन धुरा सम्यक् प्रकारेण गतिशील होती रही।

शांत क्रांति के अग्रदूत पू गुरुदेव स्व आचाय श्री गणेशी-लालजी म सा ने अपनी साध्य वेला मे मेरे नहीं चाहते हुए भी सघ सचालन के समग्र दायित्वों से मुझे संयुक्त किया।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि मेरा तो नाम ही 'नाना' है फिर भी संघ ने स्व पू गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य कर मुझे जो सहकार दिया फलस्वरूप मैं संघ की यत्किंचित् सेवा कर पाया

सूत्र साहित्य

२३ अन्तगड दसाओ (पुस्तकाकार) ३०.००

२४ वियाह पण्णत्ति सूत्र ४०.००

उपदेशात्मक साहित्य

२५ एक साधे सब सधे ३.००

२६ आदर्श भ्राता ४.००

पर्यावरण प्रदूषण मुक्ति

- हरे वृक्षों में जान है। उनको कटवाना, उनके फल, फूल पत्तियों को उखाड़ना हिंसा है। हिंसा कभी धर्म नहीं होती। अपने प्राणों की जब हम रक्षा करना चाहते हैं तो क्या इन प्राणियों का रक्षण करना हमारा दायित्व नहीं है ?
- अन्न वै प्राणा जल वै प्राणा —अन्न ही प्राण है, जल ही प्राण है इसलिये अन्न और जल का सदुपयोग करना हमारा पुनीत कर्तव्य है, उनको बर्बाद करना अथवा उनका दुरुपयोग करना, धार्मिक एवं नैतिक अपराध है। इन अपराधों से बचना और बचाना प्रत्येक इन्सान का प्राथमिक धर्म है।
- वायुमण्डल प्रदूषित होगा तो मन भी प्रदूषित हो जायेगा। क्योंकि मन पर वायुमण्डल का गहरा प्रभाव अंकित होता है और साधना के लिये मानसिक शुद्धि आवश्यक है। अतः वायुमण्डल को दूषित करने वाले तत्वों से बचना साधना की मौलिकता का रक्षण करना है।

महामन्त्र नमस्कार जाप

- परमात्मा से भेंट करने का सीधा, सरल मार्ग प्रभु भजन है।
- नमस्कार महामन्त्र सभी दुःख दुर्भावनाओं को मिटाकर सुख सुविधायें प्रदान करता है।
- नमस्कार महामंत्र के प्रति अविचल श्रद्धा रखने वाला नर से नारायण, जीव से शिव, भक्त से भगवान और आत्मा से परमात्मा बन जाता है।
- जाप से हृदय में अपूर्व शांति एवं असाधारण सुख प्राप्त होता है।

—आचार्य श्री नानेश

युवाचार्य विशेषांक

विचार-दर्शन

प्रथम-खण्ड

सघ सेवा

● श्रीमद् जवाहराचार्य

सघ की एकता के पवित्र काय मे विघ्न डालना एवं संघ मे अनक्ता उत्पन्न करना सबसे वडा पाप बताया है और सभी पाप इस पाप से छोटे हैं। चतुर्थ व्रत खडित होने पर नवीन दीक्षा देकर साधु को शुद्ध किया जा सकता है लेकिन सघ की शाति और एकता भंग करके अशाति और अनैक्य फलाने वाला–सघ का छिन्न-भिन्न करने वाला दसवें प्रायश्चित का अधिकारी माना गया है। इससे यह स्पष्ट है कि सघ को छिन्न भिन्न करना घोर पाप का कारण है। जो लोग अपना वडप्पन कायम करने के लिए दुराग्रह करके सघ मे विग्रह उत्पन्न करते हैं, व घोर पाप करते हैं। अगर आप सघ की शाति और एकता के लिए सच्चे हृदय से प्रार्थना करेंगे तो आपका हृदय निष्पाप बनेगा ही, साथ ही सघ मे अशाति फलाने वालो के हृदय का पाप भी धुल जायेगा। सघ म एकता होने से सघ की सब बुराई नष्ट हो जाती है।

शासन से प्रेम के कारण आप पर जो उत्तरदायित्व आता है उसका दिग्दर्शन मैंने कराया है, पर साधुओ पर आने वाला उत्तरदायित्व भी है। साधुओ से आपका सम्पर्क होता है आप उनके प्रति आदर भाव रखते हैं। आप उन्हे अपना मार्गदर्शक मानते हैं। अतएव साधुओ का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे आपको वास्तविक कल्याण का मार्ग बताए, आपको धर्म, व्रत और संयम से भेंट कराए। त्याग म ही सच्चा सुख है, अतएव उस सुख की प्राप्ति के लिए आपको त्याग का उपदेश दें।

इस प्रकार साधु संघ और श्रावक सघ का पारस्परिक स्नेह सम्बन्ध स्थिर रहने से ही धर्म की जागृति रह सकती है। दोनो को अपने २ कर्तव्य के प्रति सजग और दृढ रहना चाहिये। एक दूसरे को पथ से विचलित होते देख कर तत्काल उचित प्रतिकार करें तभी भगवान का शासन सुशोभित रहेगा। श्रावक संघ अगर साधु का वेष देखकर उसकी उच्च पद-मर्यादा का विचार करके साधु को पथ भ्रष्ट होते समय भी दृढता पूर्वक नही रोकता और साधु संघ श्रावकों के सांसारिक वैभव से प्रभावित होकर या अन्य किसी कारण, धर्म को लज्जित करने वाले श्रावक के कार्य देखकर भी उस कर्तव्य का बोध

नहीं कराता तो दोनों ही अपने कर्त्तव्य से भ्रष्ट हो जाते हैं।

साधु इस संघ रूपी अंग के मस्तक हैं। मस्तक का काम अच्छी-२ बातें बताना है, साधु भी यही करते हैं। साध्वियाँ सदा अपने कर्त्तव्य पालन में तत्पर और दृढ़ हों तो संघ अंग की भुजाएं हैं। श्रावक उदर के स्थान पर है। उदर आहारादि अपने भीतर रख कर मस्तक, भुजा आदि समस्त अवयवों का पोषण करता है। इसी प्रकार श्रावक साधुओं साध्वियों का भी पालन करता है। और स्वयं अपना भी। पेट स्वस्थ और विकार-हीन होगा तो ही मस्तक और भुजा आदि अवयव शक्तिशाली या कार्य क्षम हो सकते हैं। इस प्रकार, भगवान् महावीर ने संघ रूपी अंग में श्रावक पेट और श्राविका जंघा है।

वेदान्त में ईश्वर के विराट रूप की चार वर्णों में कल्पना की गई है। ईश्वर के उस विराट रूप में ब्राह्मण को मस्तक, क्षत्रिय को भुजा, वैश्य को उदर और शूद्र को पैर रूप में कल्पित किया है। किन्तु भगवान महावीर के संघ में यथार्थ चार अंग हैं। जब तक सब अवयव एक दूसरे के सहायक न बनें तब तक काम नहीं चलता। आज संघ तो महान है, पर उसमें संग नहीं दिखाई देता। संघ का तात्पर्य है जंघा का पेट को, पेट का भुजा को, भुजा का मस्तक को, मस्तक का भुजा, पेट एवं जंघा को, भुजा का पेट, मस्तक और जंघा को, पेट का मस्तक और जंघा को और जंघा का मस्तक, भुजा और पेट को सहायता देना। चारों वर्गों का संगठन होना चाहिये। मस्तक में ज्ञान हो, भुजा में बल हो, पेट में पाचन शक्ति हो और जंघा में गतिशीलता हो, तो अभ्युदय में क्या कसर रह जायेगी? अगर संघ शरीर के संगठन के लिए सर्वस्व का भी त्याग करना पड़े तो भी वह त्याग कोई बड़ी बात नहीं होनी चाहिये। संघ के संगठन के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने में भी पश्चात्ताप नहीं होना चाहिये। संघ इतना महान् है कि उसके संगठन के हेतु आवश्यकता पड़ने पर पद और अहंकार का मोह न रखते हुए इन सब का त्याग कर देना श्रेयस्कर है। आज यदि संघ सुसंगठित हो जाए, शरीर की भांति प्रत्येक अवयव एक दूसरे का सहायक बन जाए, समस्त शरीर का ध्येय ही अवयव का मुख्य ध्येय हो जाए तो गुणों की वृद्धि हो, संघ शक्ति का विकास हो तथा धर्म एवं समाज

की विशिष्ट उन्नति हो । इस पवित्र एव महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मैं तो अपनी पद मर्यादा को भी त्याग देने को तैयार हू । सघ की सेवा मे पारस्परिक अनैक्य को कदापि बाधक नहीं बनाना चाहिये ।

मैं संघ का ऋणी हू, सघ का मुझ पर क्या ऋण है, यह बात मैं, साहित्य मे पडितराज कहलाने वाले जगन्नाथ कवि की उक्ति मे कहना चाहता हू ।

मुक्ता मृणाल पल्ली भवता नीपिता,
न्यग्वूनिनि यमन लिनानि निर्षेवितानि ।
रे राजहंस ! वद तस्य सरोवरस्य,
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः ।।

यह अन्योक्ति अलकार है कि एक सरोवर पर राजहंस बैठा था । एक कवि उसके पास होकर निकला । राजहंस को देखकर कवि ने कहा—हे राजहस मैं यहा रहकर तेरी क्रिया देखता-रहता हू । तू कमल का पराग निकालकर खाया करता है और पराग से सुगन्धित हुए जल का पान करता रहता है । तू इधर से उधर पुदक कर, कमलिनी के कोमल-कोमल पल्लवो पर विहार किया करता है । तू यह सब तो करता, मगर मैं पूछता हू कि इस सरोवर का तुझ पर ऋण है, उससे मुक्त होने के लिये तू क्या करेगा ? तुम किस प्रतिदान मे इस ऋण से उऋण होओगे ?

कवि राजहस को सम्बोधित करके कहता है—मैं तुम्हें एक काम बताता हू । अगर तुम वह काम करोगे तब तो ठीक है अन्यथा धिक्कार के पात्र बन जाओगे । वह काम क्या है ? तुम्हारी चोंच मे दूध और पानी को अलग-२ कर देने का गुण विद्यमान है । अगर इस गुण को तुम बनाये रहे तो यह सरोवर प्रसन्न होगा, और कहेगा—वाह! मेरा बच्चा ऐसा ही होना चाहिये । इसके विपरीत अगर तुमने इस गुण में बट्टा लगाया तो सरोवर के ऋणी भी रह जाओगे और ससार मे हसी के पात्र भी बनोगे ।

यह अन्योक्ति अलकार है अर्थात किसी दूसरे को सम्बोधन करके दूसरे से कहना है । इस उक्ति को मैं अपने ऊपर ही घटाता हू । यह सघ मानसरोवर है । मैंने सघ का अन्न खाया है । सघ ने मेरी खूब सेवा भक्ति की है । संघ की सेवा का आश्रय पाकर मुझे

जैसे राजहंस के लिए सरोवर है, उसी प्रकार क्या आपके लिये भारत-वर्ष नहीं है ? क्या आपने भारत का अन्न नहीं खाया है ? पानी नहीं पिया है ? आपने भारत में श्वास नहीं लिया है ? क्या यह शरीर भारत के अन्न जल से नहीं बना ?

आपने इसी भारत-भूमि पर जन्म ग्रहण किया है। इसी भूमि पर आपने शैशव-क्रीड़ा की है। इसी भूमि के प्रताप से आपके शरीर का निर्माण हुआ है। हंस ने मानसरोवर से जो कुछ प्राप्त किया है उससे कहीं बहुत अधिक ऋण आपके ऊपर जन्म भूमि का है। इस ऋण को आप किस प्रकार चुकायेंगे।

आपका यह शरीर भारत में बना है या किसी विदेश में ?

—भारत मे। फिर आपने भारत को क्या बदला चुकाया है ? विलायती वस्त्र पहनकर, विलायती सेंट लगाकर, बिस्कुट खाकर, चाय पीकर, वेशभूषा धारण करके और विलायती भावना को अपना कर ही क्या आप अपनी जन्म भूमि का ऋण चुकाना चाहते हैं ? ऐसा करके आप कृतकृत्यता का अनुभव करते हैं ?

कल एक समाचार पत्र मे मैंने वह संदेश पढ़ा था जो गांधी जी ने अमेरिका में दिया था।

एक वे भारतीय हैं जो पक्षपात के वश होकर अथवा भय के कारण ऐसे दबे हुए हैं कि जानते हुए भी सत्य नहीं कहते। इसके विपरीत दूसरे वे हैं जो भारत की ओर से अमेरिका को निर्भय, निःसंकोच होकर इस प्रकार का संदेश दे सकते हैं। आप भगवान महावीर के श्रावक हैं। आपसे जगत् न्याय की आशा करता है। मगर आप समुचित न्याय नहीं दे सकते या उस न्याय की मान्यता को अंगीकार नहीं कर सकते तो फिर ऐसा कौन करेगा ?

मैं संघ के सम्बन्ध मे आपसे कह रहा था। अगर आप संघ की विजय करवाना चाहते हैं तो संगठन करो। वर्तमान युग इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह ऐसा युग है, जिसका भविष्य के साथ गहरा सम्बन्ध रहेगा। अतएव संगठित होकर अपनी शक्ति केन्द्रित करो और वीर संघ को शक्तिशाली बनाओ। संघ सेवा का बहुत बड़ा माहात्म्य है। यह कोई साधारण कार्य नहीं है। संघ की

(शेष पृष्ठ ६ पर)

किसी प्रकार का कष्ट नही पहुचता, बल्कि संघ द्वारा मैं अधिकाधिक सम्मानित होता जाता हू । यह सब कुछ तो हुआ मगर गुरु महाराज मुझसे पूछते हैं–तुम कौनसा काम करोगे जिससे इस ऋण से मुक्त हो सको ?

साधु आपसे आहार लेते हैं । क्या आहार का यह ऋण साधुओं पर नहीं चढ़ता ? आप भले ही उसे ऋण न समझें और उसका बदला लेने की भावना न रखें, तथापि नीति निष्ठ और धर्म प्रिय ऋणी की भांति इस ऋण का बदला तो चुकाना ही चाहिए। जो साधु सच्चा है, वह अपने ऊपर संघ का बोध अवश्य ही अनुभव करेगा । मैं अपने ऊपर संघ का ऋण मानता हू, इसलिये प्रश्न यह है कि मैं संघ के ऋण से किस प्रकार मुक्त हो सकता हू ?

एक आचार्य की हैसियत से सत्यासत्य का विवेक रखते हुए निर्णय करना मेरा कर्त्तव्य है । सत्य निर्णय से अगर मेरी पोल खुलती है तो खुले, दूसरे मुझ पर क्रुद्ध होते हो तो हो जायें, किसी प्रकार का खतरा मुझ पर आता हो तो आ जाये, फिर भी सत्य निर्णय देना मेरा कर्त्तव्य है । यदि मैंने सत्य असत्य का निर्णय किया तो मैं संघ के ऋण से मुक्त हो सकूंगा । विपरीत आचरण करने से संघ का ऋण भी मुझ पर लदा रहेगा और मैं संसार में धिक्कार का पात्र बन जाऊं ।

ठाणांग सूत्र में कहा गया है कि निष्पक्ष होकर विवेक पूर्वक संघ मे शांति रखने वाला महानिर्जरा का पात्र होता है । संघ का आचार्य होने पर भी अगर मैं निष्पक्ष न रह सका, मैं अपने कर्त्तव्य का भली भांति पालन न कर सका तो संघ का ऋणी बने रहने के साथ ही कमल प्रभाचार्य के समान मेरी भी गति होगी । कमल प्रभाचार्य ने तीर्थंकर गोत्र बांधने की सामग्री इकट्ठी करली थी । उनके आने पर लोगों ने सोचा था कि अब समस्त चैत्यालयों का उद्धार हो जायेगा । किन्तु कमल प्रभाचार्य ने साफ कह दिया कि भगवान के नाम पर फूल की पखुरी भी चढ़ाना सावद्य है । चैत्यालय आदि भगवान की आज्ञा के काम नहीं है । ऐसे निष्पक्ष और साहसी कमल प्रभाचार्य थे, मगर एक विपरीत स्थापना* के कारण सावद्य आचार्य कहलाने लगे ।

इसी सम्बन्ध में मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हू ।

* साध्वी के चरण छूने की स्थापना

जसे राजहंस के लिए सरोवर है, उसी प्रकार क्या आपके लिये भारत-वर्ष नहीं है ? क्या-आपने-भारत का अन्न नहीं खाया है ? पानी नहीं पिया है ? आपने भारत में श्वास नहीं लिया है ? क्या यह शरीर भारत के अन्न जल से नहीं बना ?

आपने इसी भारत-भूमि पर जन्म ग्रहण किया है । इसी भूमि पर आपने शैशव-क्रीड़ा की है । इसी भूमि के प्रताप से आपके शरीर का निर्माण हुआ है । हंस ने मानसरोवर से जो कुछ प्राप्त किया है उससे कहीं बहुत अधिक ऋण आपके ऊपर जन्म भूमि का है । इस ऋण को आप किस प्रकार चुकायेंगे ।

आपका यह शरीर भारत मे बना है या किसी विदेश में ?

—भारत में । फिर आपने भारत को क्या बदला चुकाया है ? विलायती वस्त्र पहनकर, विलायती सेंट लगाकर, बिस्कुट खाकर, चाय पीकर, वेशभूषा धारण करके और विलायती भावना को अपना कर ही क्या आप अपनी जन्म भूमि का ऋण चुकाना चाहते हैं ? ऐसा करके आप कृतघ्नता का अनुभव करते हैं ?

कल एक समाचार पत्र में मैंने वह संदेश पढ़ा था जो गांधी जी ने अमेरिका में दिया था ।

एक वे भारतीय हैं जो पक्षपात के वश होकर अथवा भय के कारण ऐसे दबे हुए हैं कि जानते हुए भी सत्य नहीं कहते । इसके विपरीत दूसरे वे हैं जो भारत की ओर से अमेरिका को निर्भय, निसंकोच होकर इस प्रकार का संदेश दे सकते हैं । आप भगवान महावीर के श्रावक हैं । आपसे जगत् न्याय की आशा करता है । अगर आप समुचित न्याय नहीं दे सकते या उस न्याय की मान्यता को स्वीकार नहीं कर सकते तो फिर ऐसा कौन करेगा ?

मैं संघ के सम्बन्ध में आपसे कह रहा था । अगर आप संघ की विजय करवाना चाहते हैं तो संगठन करो । वर्तमान युग इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । यह ऐसा युग है, जिसका भविष्य के साथ गहरा सम्बन्ध रहेगा । अतएव संगठित होकर अपनी शक्ति केन्द्रित करो और वीर संघ को शक्तिशाली बनाओ । संघ सेवा का बहुत बड़ा माहात्म्य है । यह कोई साधारण कार्य नहीं है । संघ की

(शेष पृष्ठ ६ पर)

संघ संगठन के साधन

श्रीमद् जवाहराचार्य

जिन शासन की भांति बुद्ध-शासन में भी संघयोजना के संबंध में सुन्दर विचार किया गया है। संघ योजना में वह विचार बहुत उपयोगी है। अतएव यहां बुद्ध विचारों का उल्लेख कर देना उचित होगा।

सघ सगठन—

सुखो बुद्धानमुप्पादो, सुखा सद्धम्मदेसना।
सुखा संघस्स सामग्गी, समग्गानं तपो सुखं॥

अर्थात्—बुद्धों का जन्म सुखकर है। सद्धर्म की देशना सुख कारक है। संघ की सामग्री-संगठन सुखकारक है और संगठित होकर रहने वाले भिक्षुओं का तप सुखकारक है।

सघ सगठन की उपयोगिता और उसके लाभ—

'एकधम्मो भिक्खवे! लोके उपज्जमानो उपज्जति बहुजन हिताय, बहुजनसुखाय, बहुनो जनस्स अत्थाय, सुखाय, देवमनुस्सानं कतमो एकधम्मो? संघस्स सामग्गी। संघे खो पन, भिक्खवे! समग्गे न चेव अञ्ञमञ्ञं भण्डनानि होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिभासा होन्ति न च अञ्ञमञ्ञं परिक्खेपा होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिच्चजना होन्ति तत्थ अप्पसन्ना चेव पसीदन्ति, पसन्नानञ्च भीय्योभावो होतीति।'

अर्थात्—हे भिक्षुओं! लोक में एक धर्म ऐसा है, जिसे सिद्ध करने से बहुत लोगों का कल्याण, बहुत लोगों का सुख तथा देव और मनुष्य सहित बहुत लोगों का कल्याण, सुख और इच्छित अर्थ सिद्ध होता है।

—'वह धर्म कौन सा है?'

'संघ का संगठन।'

भिक्षुओ! संघ का संगठन होने से परस्पर क्लेश कलह नहीं होता, परस्पर अपशब्द गाली गलौच-का व्यवहार नहीं होता, परस्पर आक्षेप विक्षेप नहीं होता, परस्पर परित्यजना नहीं होती, इस प्रकार संघ

का संगठन होने से अप्रसन्न भी प्रसन्न हो जाते हैं (हिलमिल कर रहने लगते हैं) और जो प्रसन्न हैं उनमें खूब सद्भाव उत्पन्न होता है।

संघ संगठन-साधक की सिद्धि—

सुखा संघस्स सामग्गी, सम्मग्गानञ्च अनुग्गहो।
समग्गरतो धम्मत्थो, योगक्खेमा न धंसति ॥
संघं समग्गं कत्वान, कप्पं सग्गम्हि मोदति।

अर्थात्—संघ की सामग्री संगठन सुखकारक है। संगठन में रहने वालों की सहायता करने वाला, धर्म में स्थिर रहने वाला और संगठन साधने वाला भिक्षु योग क्षेम से च्युत नहीं होता और संघ का संगठन करके वह भिक्षु अल्पकाल पर्यन्त स्वर्ग सुख भोगता है।

संघभेद का दुष्परिणाम—

एक धम्मो भिक्खवे! लोके उपज्जमानो उपज्जति बहुजन-हिताय, बहुजनसुखाय, बहुनो जनस्स अनत्थाय, अहिताय, दुक्खाय देवमनुस्सानं, कतमो एक धम्मो? संघभेदो। संघे खो पन भिक्खवे! भिन्ने अञ्ञमञ्ञं भण्डनानि चेव होन्ति, अञ्ञमञ्ञ परिभासा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञ परिक्खेपा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञ परिच्चजना च होन्ति, तत्थ अप्पसन्ना चेव न प्पसीदन्ति, पसन्नानञ्च एकच्चानं अञ्ञथत्तं होतीति।

अर्थात्—भिक्षुओ! लोक में एक धर्म ऐसा है जिसे उत्पन्न करने से बहुत लोगों का अकल्याण बहुत लोगों का असुख और देव मनुष्य सहित बहुत लोगों को अनर्थ, अकल्याण और दुःख उत्पन्न होता है।

'वह कौनसा धर्म है?'
'संघभेद'

भिक्षुओ! संघ में फूट डालने से आपस में कलह होता है, आपस में गाली गलौच होता है, आपस में मिथ्या आक्षेप होते हैं। आपस में परितजना होती है। आपस में अप्रसन्न हुए लोग हिलते मिलते नहीं हैं और मिलेजुले लोगों में भी अन्यथा भाव असद्भाव पैदा होता है।

संघभेदक की दुर्गति—

आपायिका नेरयिको, कप्पट्ठो संघभेदको।

संघ समग्ग भित्वान कप्प निरयम्हि पच्चतीति ।

अर्थात्—संघ मे फूट डालने वाला अधर्मी, अल्प वय पर्यन्त नरक मे निवास करता है, निर्वाण से विमुख होता है और संघ में फूट पैदा करके अल्पकाल तक नरक मे पचता है ।

संघ संगठन के साधन—

छहिमे भिक्खू धम्मा साराणीया पियकरणागरकरणा संगहाय, अविवादाय, समग्गिया एकीभावाय संवत्तन्ति । कतमे छ ?

(१) इध भिक्खवे ! भिक्खुनो मेत्त कायकम्मं रहो च ।

(२) इध भिक्खवे ! भिक्खुनो मेत्त वचीकम्म रहो च ।

(३) इध भिक्खवे ! भिक्खुनो मेत्त मनोकम्म रहो च ।

(४) भिक्खवे ! भिक्खू ये त लाभा धम्मिका धम्मलद्धा अन्तमसो पत्तपरियापन्नमत्त अपि तथा रूपेहि लाभेहि अप्पटिविभत्त भोगी होति सीलवन्तहि सब्रह्मचारीहि साधारणभोगी ।

(५) भिक्खवे ! भिक्खू यानि यानि सीलानि अखण्डानि अछिद्दानि असबलानि अकम्मासानि भुजिस्सानि विञ्ञुप्पसत्थानि अपरामट्ठानि समाधिसंवत्तनिकानि सीलेसु सीलसमन्नागतो विहरति सब्रह्मचारीहि आवी चेव रहो च ।

(६) भिक्खव ! भिक्खू याज्य दिट्ठि अरिया निय्यानिका निय्याति तक्करस्स सम्मादुक्खक्खयाय तथारूपाय दिट्ठियादिट्ठिसमन्नागतो विहरति सब्रह्मचारीहि आवी चेव रहो च ।

अर्थात्—यह छ वस्तुए स्मरणीय, प्रेम बढ़ा वाली और आदर बढ़ाने वाली है और वह संग्रह, अविवाद, सामग्री (एकता) और एकीकरण में कारण हैं —

(१) प्रत्यक्ष और परोक्ष में मैत्रीमय कायकम ।

(२) प्रत्यक्ष और परोक्ष में मैत्रीमय वाचा कम ।

(३) प्रत्यक्ष और परोक्ष में मैत्रीमय मन कम ।

(४) धर्मानुसार मिली हुई वस्तुओ का सार्धमिकों म बंटवारा करके उनके साथ आप उपभोग करना ।

(५) प्रत्यक्ष और परोक्ष मे अपना शीलाचार, अखण्ड, अछिद्र, अशबल, अकलुषित, भुजिष्य (स्वतन्त्र), सुज्ञप्रशस्त, अपरामृष्ट और समाधि संवर्तनिक रखना, और ।

(६) प्रत्यक्ष तथा परोक्ष मे जिस दृष्टि के द्वारा, सम्यक् प्रकार से दु ख का नाश होता है, उस भार्य निर्यानिक दृष्टि से सम्पन्न होकर व्यवहार करना ।

महात्मा बुद्ध ने सघ की व्यवस्था के लिए जिन साधनो का उपदेश दिया है, वे किसी भी सघ के लिए उपयोगी हो सकते हैं । हमारा संघ भी उनसे लाभ उठा सकता है । सघधम का पालन करने के लिए इन नियमो की ओर अवश्य ध्यान रखना चाहिए ।

(शेष पृष्ठ ५ का)

उत्कृष्ट सेवा करने से तीर्थंकर गोत्र का बन्ध हो सकता है । अगर आप संघ की सेवा करेंगे तो आपका ही कल्याण होगा ।

दिनाक १६ ६-३१ को महावीर भवन दिल्ली मे दिये गये प्रवचन से । —श्री रतनलाल जैन द्वारा सकलित ।

कामनाओ पर विजय प्राप्त करें

स्वभाव से ही मानव अनेक कामनाए करता रहता है । वे कामनाए पूण होने पर उसे संतुष्टी हो जाय, यह बात नही है । कामनाए पुन-पुन जागृत होती रहती है । जो कामनाए तीव्र इच्छा शक्ति से जागृत होती है उनकी यदि कदाचित् पूर्ति नही होती है तो उस समय मानव के मानस तन्त्र का असन्तुलित हो जाना अधिकतर सम्भावित है । बहुत कम व्यक्ति उस परिस्थिति मे अपने आपको संभाल पाते हैं । कामनाओं से प्रताडित वह मानस कुछ कर सकता है ? उसका अनुमान भी लगा पाना कठिन हो जाता है । अत कामनाओ को जागृत करने की बजाय उस पर विजय प्राप्त करना चाहिए । इस सन्दभ म गीता का यह वचन स्मरणीय है—

"न जातु काम कामानां उपभोगेन शाम्यति'

—[illegible]

सघ समग्ग भित्वान कप्प निरयम्हि पच्चतीति।

अर्थात्—सघ मे फूट डालने वाला अधर्मी, अल्प वय पयन्त नरक मे निवास करता है, निर्वाण से विमुख होता है और संघ में फूट पैदा करके अल्पकाल तक नरक मे पचता है।

सघ सगठन के साधन—

छहिमे भिक्खु धम्मा साराणीया पियकरणा गरुकरणा सगहाय, अविवादाय, समग्गिया एकीभावाय संवर्तन्ति। कतमे छ ?

(१) इध भिक्खवे ! भिक्खुनो मेत्तं कायकम्मं रहो च।

(२) इध भिक्खवे ! भिक्खुनो मेत्त वचीकम्मं रहो च।

(३) इध भिक्खवे ! भिक्खुनो मेत्त मनोकम्म रहो च।

(४) भिक्खवे ! भिक्खु ये त लाभा धम्मिका धम्मलद्धा अन्तमसो पत्तपरियापन्नमत्तऽपि तथा रूपेहि लाभेहि अप्पटिविभत्त भोगी होति सीलवन्तेहि सब्रह्मचारीहि साधारणभोगी।

(५) भिक्खवे ! भिक्खु यानि यानि सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि असबलानि अकम्मासानि भुजिस्सानि विञ्ञुप्पसत्थानि अपरामट्ठानि समाधिसंवत्तनिकानि सीलेसु सीलसमन्नागतो विहरति सब्रह्मचारीहि आवी चेव रहो च।

(६) भिक्खवे ! भिक्खु याय दिट्ठि अरिया निय्यानिका निय्याति तक्करस्स सम्मादुक्खक्खयाय तथारूपाय दिट्ठियादिट्ठिसमन्नागतो विहरति सब्रह्मचारीहि आवी चेव रहो च।

अर्थात्—यह छ वस्तुए स्मरणीय, प्रेम बढाने वाली और आदर बढाने वाली है और यह संग्रह, अविवाद, सामग्री (एकता) और एकीकरण मे कारण हैं—

(१) प्रत्यक्ष और परोक्ष मे मैत्रीमय कायकर्म।

(२) प्रत्यक्ष और परोक्ष मे मैत्रीमय वाचा कर्म।

(३) प्रत्यक्ष और परोक्ष में मैत्रीमय मन कर्म।

(४) धर्मानुसार मिली हुई वस्तुओं का सार्धर्मिकों मे बँटवारा करके उन्हें साथ साथ उपभोग करना।

(५) प्रत्यक्ष और परोक्ष मे अपना शीलाचार, अखण्ड, अछिद्र, असबल, अकलुषित, भुजिष्य (स्वतन्त्र), गुणप्रशस्त अपरामृष्ट और समाधि संवर्तनिक रखना, और।

साधुचर्या धम की प्रयोगशाला है। धर्म का स्वरूप उसकी दैनिक चर्या मे चरिताथ होता है। उसका जीवन धर्म का पर्याय हो जाता है। साधु के तीन रूप होते है—साधु, उपाध्याय और आचाय।

जब साधु आगम के अनुशीलन मे प्रवृत्त होता है तभी उसका दूसरा चरण, साधना सोपान के द्वितीय पद पर आरोहण करता है। साधु आगमवेत्ता होने पर उपाध्याय की सज्ञा प्राप्त करता है। उसमे चौदह विद्या स्थानो के व्याख्याता की सामथ्य का उदय होता है। उपाध्याय परमेष्ठी समस्त साधुओ तथा सभी मोक्षाभिलाषियो, शील-वान साधको को उपदेश देते हैं, शिक्षित करते हैं।

साधु का तीसरा महत्त्वपूर्ण चरण है—आचार्य पद। आचार्य पूरे धम शासन की रक्षा करते हैं। वे कही भी हो, पर उनकी आत्म शक्ति का प्रभाव सवत्र पडता है। क्योकि सर्व साधुओ के सघ मे ऐसे साधु को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जाता है, जो सामान्य साधुओ से अधिक प्रतिभावान हो, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी हो, सुदर्शन हो, विरक्त, धीर-वीर गम्भीर, दयालु, उदार, मृदुभाषी, शास्त्री तथा लोक-व्यवहार मे पटु होना आचार्य के प्रमुख लक्षण हैं। इनका पवित्र सानिध्य पाकर साधक सन्मार्गी हो सकता है।

सारा साधु समाज उन्हीं के निर्देशन मे स्व पर कल्याण मे सक्रिय रहता है। सादृश्य मूलक पद्धति में यह तो कहा जा सकता है कि शासन रूपी वृक्ष के लिए आचार्य तने के समान हैं। वे अपनी सभी डालियों, पत्तो, फूलो तथा सभी फलो मे शासन को सभालते हैं।

साधु समाज का सर्वोच्च पद है -आचार्य। आचाय का आचरण जागृति से निष्पन्न होता है। जिस प्रकार एक दिए से अन्य अनेक दीप जलाए जाते हैं, सैकडों दीप जल जाते हैं, फिर भी जो मूल मे दीप जला है यह कभी निजला नही होता। यही उसकी आध्यात्मिक सम्पदा की महिमा है।

आचाय एक महत्त्वपूर्ण शब्द है। इस पद पर पहुचने पर साधु छत्तीस गुण संयुक्त मधुरभाषी तथा सरल स्वभावी होते हैं। वे भव्य जीवो को कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं उनका कोई पक्ष नही होता, वे सदा निष्पक्ष होते हैं, समभावी होते हैं। जगत के सभी प्राणियो के साथ समानता का व्यवहार करते हैं।

पंच परमेष्ठी पद और आचार्य तथा युवाचार्य

● डॉ महेन्द्र सागर प्रचंडि

आत्मा और परमात्मा पर आधारित विश्व में दो प्रमु धार्मिक मान्यताए प्रचलित हैं। जो धार्मिक मान्यता परमात्मा सृष्टि का कर्त्ता हर्त्ता स्वीकारती है वह कहलाती है परमात्मावादी परमात्मावादी ही ईश्वरवादी कहलाती हैं। दूसरे प्रकार की मान्य वह है जो आत्मा को स्वीकारती है और सृष्टि का कर्त्ता हर्त्ता परमा को नही मानती, वह कहलाती है आत्मवादी। आत्मवादियों के ईश्वर या परमात्मा कोई अजनबी नहीं, वह वस्तुत आत्मा की नि अवस्था ही है। कर्म युक्त जीव है आत्मा और कर्म मुक्त जीव है प मात्मा। कर्म-क्षय करने के लिए जो साधना पद्धतियां प्रचलित उनमे पंच परमेष्ठी परम्परा अर्वाचीन नही है और वह आत्मवा परम्परा का पोषण करती है। यहां पंच परमेष्ठी पद और आच तथा युवाचार्य विषयक अनुशीलन करना हमारा मूल अभिप्रेत है।

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु नामक पां पद मिलकर पंचपरमेष्ठी के रूप को स्वरूप प्रदान करते हैं। आत्म विकास के पांच पड़ाव हैं। ये पद अथवा पड़ाव कोई परमेश अथवा व्यक्ति विशेष नहीं हैं। अपितु सभी आत्मा के विकास चर हैं। साधु चरण आत्म विकासी सोपान का पहला पड़ाव है। साधुप अपने की प्राथमिक अवस्था है। संयम एवं तप साधना पूर्वक आगत्ति जीवन से आध्यात्मिक जीवन की ओर उन्मुख होने का उपक्रम संकल्प है

साधुचर्या में मोह को जानने और पहिचानने का प्रयास कि जाता है। मोह मेरुदण्ड है आगतिक जीवन चक्र का। इससे क्रो मान और माया के द्वार बिना दस्तक दिए स्वत खुल जाते हैं। रा और द्वेष सजग हो जाते हैं। साधु इस पर की चोट करता है। व पर से बेपर हो जाता है। परंतु विगलन छूट जाती है। इसक नजर में संचय का कोई मूल्य नहीं है, वह अन्तरंग से अकिंच हो जाता है। वह अनन्त दर्शन, ज्ञान और चारित्र को बड़ी सावधान से परखता है, पाता है। वह शुद्ध आत्म स्वरूप की साधना करता है

साधुचर्या धर्म की प्रयोगशाला है । धर्म का स्वरूप उसकी दैनिक चर्या मे चरितार्थ होता है । उसका जीवन धर्म का पर्याय हो जाता है । साधु के तीन रूप होते है—साधु, उपाध्याय और आचार्य ।

जब साधु आगम के अनुशीलन मे प्रवृत्त होता है तभी उसका दूसरा चरण, साधना सोपान के द्वितीय पद पर आरोहण करता है । साधु आगमवेत्ता होने पर उपाध्याय की संज्ञा प्राप्त करता है । उसमे चौदह विद्या स्थानो के व्याख्याता की सामर्थ्य का उदय होता है । उपाध्याय परमेष्ठी समस्त साधुओ तथा सभी मोक्षाभिलाषियो, शील-वान साधको को उपदेश देते हैं, शिक्षित करते हैं ।

साधु का तीसरा महत्त्वपूर्ण चरण है—आचार्य पद । आचार्य पूरे धर्म शासन की रक्षा करते हैं । वे कही भी हो, पर उनकी आत्म शक्ति का प्रभाव सर्वत्र पड़ता है । क्योंकि सर्व साधुओ मे संघ मे ऐसे साधु को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जाता है, जो सामान्य साधुओ से अधिक प्रतिभावान हो, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी हो, सुदर्शन हो, विरक्त, धीर-वीर गम्भीर, दयालु, उदार, मृदुभाषी, शास्त्री तथा लोक-व्यवहार में पटु होना आचार्य के प्रमुख लक्षण हैं । इनका पवित्र सानिध्य पाकर साधक सन्मार्गी हो सकता है ।

सारा साधु समाज उन्हीं के निर्देशन मे स्व पर कल्याण मे सक्रिय रहता है । सादृश्य मूलक पद्धति मे कहे तो कहा जा सकता है कि शासन रूपी वृक्ष के लिए आचार्य तने के समान हैं । वे अपनी सभी डालियों, पत्तों, फूलो तथा सभी फलो के शासन को सभालते हैं ।

साधु समाज का सर्वोच्च पद है-आचार्य । आचार्य का आचरण जागृति से निष्पन्न होता है । जिस प्रकार एक दिए से अन्य अनेक दीप जलाए जाते हैं, सैकड़ों दीप जल जाते हैं, फिर भी जो मूल मे दीप जला है वह कभी निजला नही होता । यह उसकी आध्यात्मिक सम्पन्ना की महिमा है ।

आचार्य एक महत्त्वपूर्ण शब्द है । इस पद पर पहुचने पर साधु छत्तीस गुण संयुक्त मधुरभाषी तथा सरल स्वभावी होते हैं । वे भव्य जीवों को कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं उनका कोई पक्ष नहीं होता, वे सदा निष्पक्ष होते हैं, समभावी होते हैं । जगत मे सभी प्राणियों के साथ समानता का व्यवहार करते हैं ।

आचार्य पद बड़ा व्यापक होता है। इस पद को विषयानुसार अनेक रूपों में विभाजित किया गया है। गृहस्थाचार्य, प्रतिष्ठाचार्य, दीक्षाचार्य, वालाचार्य, एलाचार्य तथा नियमिकाचार्य आदि अधिक उल्लेखनीय हैं। दिगम्बर समुदाय में आचार्यों के इन भेद रूपों के ... श्वेताम्बर समुदाय में वालाचार्य और एलाचार्य के मिले-जुले दायित्व का निर्वाह करने के लिए युवाचार्य का प्रवर्तन किया गया है। दर असल ये सारी संज्ञाएं आचार्य के सहायक की भूमिका का निर्वाह करती हैं। विगत वर्षों में एक आचार्य ने एक नया पद उत्पन्न कर दिया—उपाचार्य। अब विचारणीय बात यह है कि पंच परमेष्ठी पदों में इन नए पदों के लिए कोई स्थान है या नहीं। लगता यह है कि यह उपासकों के समाज ने संगठन और सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए व्यक्ति की सूझ और समझ का परिणाम है। उपाचार्य अथवा युवाचार्य मात्र प्रथम मानीटर और द्वितीय मानीटर की नांई आचार्य पद के पूर्व की अवस्था विशेष हैं, जिन्हें आचार्य के दायित्व का निर्वाह करने-कराने के लिए पूर्व अभ्यास करने हेतु अवसर प्राप्त होता है।

मुझे लगता है कि ये सारे पद मूल में दर्शन, ज्ञान और चारित्र की भूमिका पर खड़े होते हैं। साधक जैसे जैसे अपनी साधना से धार्मिक आलोक जगाता जाता है। वह स्वतः ही पदोन्नत होता जाता है। इस सर्वोदयी मार्ग पर किसी के हस्तक्षेप अथवा स्तुति संस्तुति की अपेक्षा नहीं होती। श्रद्धा पूर्वक जब ज्ञान गुणी साधक में चारित्र में अवतरित होता है, जागता है, तभी उसकी आत्मा का विकासात्मक उदय प्रतिभासित हो उठता है।

साधु—साधु के तीन रूप—साधु, उपाध्याय और आचार्य—अरिहंत पद के प्राप्त्यर्थ आवश्यक पड़ाव—चरण हैं। उपाध्याय और आचार्य वस्तुतः व्यवस्था परक दायित्व भी रखते हैं। साधु इन सब बातों से मुक्त रहता है। अपनी साधना सातत्य से वह सीधा अरिहंत पद भी पा सकता है और अरिहंत पद के लिए उसे चार घातिया कर्मों को क्षय करना आवश्यक होता है। तभी उसमें केवल ज्ञान का उदय होता है। चार अघातिया कर्मों को और क्षय कर लेने पर वह अंतिम पड़ाव चरण सिद्धपद प्राप्त कर लेता है। बंध से निर्बन्ध हो जाता है। जो पाप कल्याणक पूर्वक अरिहंत पद प्राप्त करते हैं वे

वस्तुत कहलाते हैं तीर्थंकर । तीर्थंकर-अरिहंत लोक वासियो को धार्मिक देशनाएं दिया करते हैं और स्व पर कल्याण करते हुए वसु कर्मो का विनाश कर सिद्ध पद प्राप्त कर मुक्त हो जाते हैं ।

इस प्रकार आत्मा के आध्यात्मिक विकास के ये पांच पडाव अथवा चरण प्रत्येक प्राणी के कल्याणार्थ प्रेरणा देते हैं, माग को प्रशस्त करते हैं अत सर्वदा और सवथा ये पाचा पद नमस्कार करने योग्य पूजनीय हैं ।

—मगल कलश ३९४, सर्वोदय नगर,
आगरा रोड, अलीगढ़-१

श्रमणोपासक . चार कोटिया

चत्तारि समणोवासगा—
अद्दागसमाणे, पडागसमाणे ।
खाणुसमाणे, खरकटसमाणे ।

श्रमणोपासक की चार कोटिया हैं—
दपण के समान-स्वच्छ हृदय ।
पताका के समान-अस्थिर हृदय ।
स्थाणु के समान-मिथ्याग्रही ।
तीक्ष्ण कांटक के समान—कटुभाषी ।

—स्थानाग सूत्र ४/३

साधना पथ

ससारगड्डपडितो णाणादयलंवितु समारुहति ।
मोक्खतड जध पुरिसो, वल्लिवितारोण विसमाओ ॥

जिस प्रकार विषम गत में पडा हुआ व्यक्ति लता आदि को पकडकर ऊपर आता है, उसी प्रकार ससारगत मे पडा हुआ व्यक्ति ज्ञान आदि का अवलबन लेकर मोक्ष रूपी किनारे पर आ जाता है ।

—निशीथभाष्य ४६५

आचार्य मन्त्रपद और ध्यान-साधना

△ श्री रमेश मुनि शास्त्री
[उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी के विद्वान् शिष्य]

अध्यात्म-जागरण और अध्यात्म-यात्रा के लिए जिस मन्त्र का चयन नितान्त अपेक्षित है, वह मन्त्र 'नमस्कार महामन्त्र' है। यह मन्त्र इतना शक्तिशाली एवं परम तेजस्वी है कि उसके द्वारा आध्यात्मिक उपलब्धियों के साथ साथ ऐहिक उपलब्धियाँ भी प्राप्त होती हैं। इस विशिष्ट मन्त्र की साधना के द्वारा अध्यात्म का समग्र मार्ग प्रकाशमान् हो जाता है, हमारी यात्रा निर्विघ्नरूपेण सम्पन्न होती है, हमें निर्मल-चेतना का अनुभव हो सकता है, विशुद्ध चेतना की उच्चतम-भूमिका में हमारा आरोहण हो सकता है।

नमस्कार महामन्त्र वस्तुतः अगाध अपार महासागर है। इसमें कितनी ही डुबकियाँ लें, कितना ही अवगाहन करते रहें, इसका आर पार पाना कठिन अवश्य है। इसकी गहराई को मापना सम्भव नहीं है। इसकी जो गहराई है, वह श्रुत-सागर की गहराई है। इस—महासागर को इसीलिए महामन्त्र कहा जाता है। यह आत्मा का जागरण करता है, इससे अधोमुखी बुद्धि ऊर्ध्वमुखी होती है। वास्तविकता यह है कि प्रस्तुत महामन्त्र कामनापूर्ति का महामन्त्र नहीं है, पर यह मन्त्र है जो हमारी अनन्त कामनाओं को सदा के लिये समाप्त कर देता है। इस मन्त्र के माध्यम से चैतन्य का जागरण, आत्मा का जागरण आत्म के सघन आवरणों का सर्वथा विलय और आत्मा के ज्योतिर्मय-स्वरूप का उद्घाटन होता है।

नमस्कार महामन्त्र के पाँचों पदों से परम आत्माएं सम्बन्धित हैं, जुड़ी हुई हैं। इसके साथ सामान्य शक्ति जुड़ी हुई नहीं है, पाँच महत्तम शक्तियाँ इसके साथ जुड़ी हुई हैं। पाँच परम आत्माओं से एक धारणा बनाएं। आधार की निर्मल गंगा में नित्य निरन्तर अवगाहन करते रहें और ऐसे नन्दनवन में रहते जाएं, जिनके परिपार्श्व में

मधुर सौरभ विकीण होता है । वे परम आत्मा का जागरण करने वाले आचार्य इसके साथ जुडे हुए हैं । विराट् विश्व की यह परम पवित्र आत्मा किसी सम्प्रदाय की नही, किसी जाति विशेष की नही, किसी धर्म विशेष की नहीं, सबकी है और वह सबके साथ जुडी हुई है ।

निज-स्वरूप की अनन्त अनुभूति तब तक सम्भव नही है, जब तक राग और द्वेष का क्षय नही होता । जब तक हमारा अन्तर्मन राग द्वेष के रग से रंगा हुआ होता है, हमारी अन्तश्चेतना रंगीन होती है, तब तक आत्मानुभूति नहीं हो सकती । राग द्वेष का अन्तर्भाव कषाय मे हो जाता है । कषाय के प्रधान रूप से दो संवाहक हैं—प्रथम 'ममकार' है, द्वितीय 'अहकार' है । अहकार और ममकार इन दोनो का जब तक सवथा प्रकारेण विलय नही हो जाता है तब तक हमारी सान्तता समाप्त नहीं हो सकती । जब तक सान्तता समाप्त नही हो जाती तब तक अनन्त की अनुभूति कदापि सम्भव नही है ।

'णमो आयरियाण' इस मन्त्र-पद के माध्यम से राग द्वेष का क्षय होता है । इसे हम स्पष्ट-भाषा मे प्रगट करें । 'णमो' यह नमन है, सर्वात्मना समर्पण है । अपने समूचे व्यक्तित्व का सहज रूपेण समपण है । इसके द्वारा अहकार का विलय हो जाता है। जहां श्रद्धा-स्निग्ध हृदय से नमन होता है वहां अहकार का सद्भाव सम्भव नही है । अहकार सवथा रूप से निःशेष हो जाता है । जहा आचाय है, वहा ममकार का सवतोभावेन अभाव है । ममकार पदार्थ के प्रति स्थापित होता है । आचार्य चेतना का उज्ज्वल-स्वरूप है, आचाय आत्मा का पिण्ड है । ममकार चेतना के प्रति नही हो सकता । ममकार पदाथ से जुडा हुआ है । जहा आचाय चेतना का अनुभव जाग जाता है, एक क्षण के लिये भी चेतना की निमल ज्योति का साक्षात्कार हो जाता है, वहां ममकार का विलय स्वत हो जाता है । पदाथ के प्रति जो आकर्षण है, वह छूट जाता है ।

'नमो आयरियाणं' यह अहकार और ममकार के महारोग को सवथा विलीन करने वाला अमोघ-औषध है । यह एक मन्त्र-पद है । इसका मनोयोग के साथ जप किया जाता है । मन्त्र का अथ है—गुप्त भाषा । 'मन्त्र' शब्द की निष्पत्ति 'मतृ' धातु से हुई है । इसका यार्थ्य अथ है—गुप्त रूप से अनुभव करना, गुप्तरूपेण बोलना । यही रहस्य-

वाद है, यही गुप्तवाद है। जब तक रहस्य को हृदयगम नहीं किया जाता है, तब तक मन्त्र का भय भी समझ म नही आ सकता। जब तक मन्त्र की रहस्यात्मकता आत्मगत नही होती, तब तक मन्त्र के माध्यम से अहकार और ममकार इन दोनो का विलय नहीं किया जा सकता।

'नमो आयरियाणं' यह सप्ताक्षरी मन्त्र है। इसका एक-एक अक्षर अपना अक्षुण्ण अस्तित्व और अतुल महत्त्व रखता है। इसका केवल उच्चारण करना ही पर्याप्त नहीं है। केवल जाप अथवा ध्वनि ही पर्याप्त नहीं है। यह सत्य है कि इसका स्थूल जाप विशेष रूप से लाभ प्रद नहीं होता। जब तक जाप ध्यान में परिणत नही हो जाता, वह जाप ध्यान मे नही बदल जाता, तब तक उसके माध्यम से वह उपलब्ध नहीं होगा जो निश्चित रूपेण होना चाहिए। तब तक मन्त्र का अचिन्त्य चमत्कार प्रगट म नही आएगा।

हमे जप को ध्यान की सर्वोच्च भूमिका पर प्रतिष्ठित करना है। जप और ध्यान के विभेद को मूलत समाप्त करना है। यह केवल जप ही नहीं है। यह शब्दगत ध्यान है, शब्द के आलम्बन से किया जाने वाला ध्यान है। इसी सन्दर्भ में यह तथ्य प्रगट है कि ध्यान के वर्गीकृत रूप दो हैं—भेद प्रधान ध्यान और अभेद प्रधान ध्यान। जहाँ भेद ध्यान की प्रधानता है वहाँ ध्यान करने वाले साधक का शब्द के साथ सम्बन्ध स्थापित होता है। ध्यान-कर्ता व्यक्ति "नमो आयरियाणं" शब्द का उच्चारण करता है तो वक्ता का, ध्वनित होने वाले शब्द के साथ यह सम्बन्ध स्थापित हो जाता है कि अमुक व्यक्ति ने 'नमो आयरियाणं' यह शब्दोच्चारण किया है किन्तु इन दोनों मे तादात्म्य स्थापित नहीं हो सका। दोनो का भेद समाप्त नहीं हो सका। व्यक्ति और शब्द ये दोनों अलग अलग रह जाते हैं। इन दोनों के मध्य दूरी बनी रहती है। जब यह भेद—यात्रा करता हुआ अभेद तक पहुँच जाता है तब शब्द का समापन हो जाता है। ध्यान करने वाले साधक का सम्बन्ध उस शब्द के अर्थ से जुड़ता जाता है। 'नमो आयरियाणं' का पद और ध्यान करने वाले साधक म एकीभाव सहज रूपेण स्थापित हो जाता है। इन दोनो म तादात्म्य भी स्थापित हो जाता है। 'नमो आयरियाणं' का ध्यान करने वाला और आचार्य एक हो जाते

है, दो नही रहते हैं। आचार्य की जो दूरी है, वह समाप्त हो जाती है। हमारा आचार्य उसमे सर्वथा रूप से लीन हो जाता है, और उसका प्रगटीकरण हो जाता है।

हमें इस निगूढ़ प्रक्रिया को स्पष्टत समझना है कि शब्द से अशब्द तक कैसे पहुंचा जा सकता है? इस रहस्यात्मक प्रक्रिया को समझे बिना निर्विकल्प की स्थिति तक पहुचने का हमारा स्वप्न साकार नहीं हो सकता। स्वप्न की अपूर्णता बनी रहेगी। जब 'नमो आयरियाणं' यह स्थूल उच्चारण छूट जाता है और मानसिक उच्चारण बन जाता है, मन मे पहुंच जाता है अन्य को श्रुतिगोचर नहीं होता है, उच्चारण के जितने भी स्थान हैं, उनमे कोई प्रकम्पन नही होता, उनमें कोई छेदन भी नही हो पाता। केवल मन की धारणा के आधार से 'नमो आयरियाणं' यह पुन-पुन प्रगट होता रहता है। यह सजल्प है। इसी का अपर नाम अन्तर्जल्प है। उच्चारण से छुटकारा मिल गया। जल्प छूट गया। मौन की स्थिति बन गई। अन्तर्वाणी बन गई। किन्तु अन्तस्तल में वह चक्राकार रूप में गतिशील है। जल्प में शब्द और अर्थ इन दोनो का भेद स्पष्ट रूप से होता है। शब्द अर्थ से अलग है, और अर्थ शब्द से अलग है। हम जब अन्तर्जल्प मे पहुच जाते हैं, वहां शब्द और अर्थ इन दोनो मे भेद भी हो जाता है, और अभेद भी हो जाता है। वहां न पूर्णत भेद है और न पूर्णत अभेद है। किन्तु भेदाभेदात्मक स्थिति निर्मित हो जाती है। उस स्थिति मे शब्द और अर्थ के मध्य में जो दूरी है, वह कम हो जाती है, मिट जाती है। अन्तर्जल्प की स्थिति में जो शब्द उच्चरित होता है, वह वहां पर घटित होने लग जाता है। 'नमो आयरियाणं' का ध्यान करने वाले व्यक्ति का अर्थ के साथ एकीभाव जुड गया, तादात्म्य हो गया। उस एकीभाव की स्थिति में ध्याता और ध्येय दो नहीं होते हैं। वह ध्याता व्यक्ति स्वयं ध्येय के रूप मे बदल जाता है। ध्येय पूर्ण रूपेण समाहित हो जाता है। सर्वथा रूप से अभेद की स्थिति उपलब्ध हो जाती है। कोई भी भेद अपना अस्तित्व नहीं रखता है। अब वाक् की समाप्ति हो जाती है, तब उस स्थिति में अभेद स्थापित हो जाता है। इसी स्थिति में मन्त्र का साक्षात्कार भी हो जाता है।

निष्कर्ष यह है कि अभेद की स्थिति का उद्भव होना ही

मन्त्र का साक्षात्कार है । यही मन्त्र का जागरण है, और यही मन्त्र का चैतन्य स्वरूप उद्घाटित है । इस स्थिति में 'नमो आयरियाणं' जल्प से छूट कर अन्तर्जल्प मे पहुंचा जाता है । वाक् की स्थिति से छूट कर मानसिक—अवस्था मे चला जाता है । उस विशिष्ट स्थिति में 'नमो आयरियाणं' का साक्षात्कार होता है और फिर उसके माध्यम से जो घटित होना चाहिये, वह सब घटित हो जाता है, कुछ भी अघटित नही रहता है । वास्तविकता यह है कि अभेद की स्थिति म 'नमो आयरियाणं' की अचिन्त्य-शक्ति जागृत हो जाती है और आन्तरिक ज्योति का जागरण हो जाता है । हमारा शब्द ज्योति म बदल जाता है । शब्द के साथ साथ अर्थ की घटना घट जाती है । हम उक्त मन्त्र पद की अनन्त शक्ति से परिचित हुए । हमने इसकी शब्द शक्ति को जाना, वर्णों से निर्मित पद को सम्यक् रूप से समझा । वर्णों का समीचीन रूप से समायोजन किया । ध्वनि के सूक्ष्मतम उच्चारण को समझ उसके साथ अपना अचल संकल्प जोड दिया । गहरी श्रद्धा को उसमें नियोजित किया तो 'नमो आयरियाणं' के ये सात अक्षर विराट बन जाएँगे ।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि 'नमो आयरियाणं' उक्त मन्त्रपद का ध्यान करने पर हमारी वृत्तियां प्रशान्त बन जाती हैं, और ये प्रशान्तपूर्ण वृत्तियां पवित्रता की दिशा में सक्रिय बन जाती हैं । मन पर जो मल स्थित है, उसको निकालने के लिये कुछ न कुछ ताप अनिवार्य होता है, अपरिहार्य होता है, उसे निकालने के लिये ध्यान ही एकमात्र अमाप साधन है । जब ध्यान तप का ताप प्राप्त होता है, तब संश्लिष्ट परमाणु अपना स्थान छोड़ देते हैं । यही विशुद्धि है और यही निर्मलता है । इस तप की प्रभावकारिणी प्रक्रिया में, मलिन परमाणुओं को सक्रिय उत्तप्त कर निकालने की प्रक्रिया में 'नमो आयरियाणं' मन्त्रपद की ध्यान साधना का निरुपम-योगदान है, जिससे हमारी चेतना का ऊर्ध्वारोहण प्रारम्भ हो जाता है ।

प्रबुद्ध उत्साह दृढ़ मनोबल

साधना के सम्यग् भाव हेतु प्रबुद्ध उत्साह की आवश्यकता है और यह उत्साह प्राप्त होता है दृढ़ मनोबल से । — दुखापाल ओराद

आचार्य पद का महत्व : युवाचार्य का दायित्व

△ श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

जैन धम मे नमस्कार मत्र का वडा महत्व है । नमस्कार मत्र में पाच पद हैं । इनमें आचार्य पद का स्थान उपाध्याय, साधु एव वीत-राग से भी ऊचा है, कारण कि वीतराग केवलज्ञानी को जैनधर्म की अनेक सप्रदायें साधुपद मे ही स्थान देती ह । आचार्य पद का इतना महत्व होने का कारण यह है कि आचार्य को चतुर्विध सघ का सचालन माग दशन करना व उन पर अनुशासन रखना होता है । व्यवहार जगत मे जो स्थान सम्राट् का होता है साधना जगत मे वही स्थान आचार्य का होता है । जैसे सम्राट का कर्तव्य है अपनी प्रजा को दुष्टो, दुजनो, दुश्मनों से बचाना, उसकी कमिया को दूर कर समृद्ध बनाना, इसी प्रकार आचाय का कर्तव्य है साधको को विषय कषाय आदि विकारो से बचाना, शिथिलाचार को दूर कर शुद्धाचार का पालन कराना ।

श्री राममुनिजी को युवाचार्य पद प्रदान किया गया है । वतमान मे युवाचाय पद बहुत दायित्व का पद है । काटो का ताज सिर पर धारण करना है । कारण कि आज स्थानकवासी सप्रदाय म पीछे के दरवाजे से वे सब बुराइया घुस गई हैं जो लोकाशाह के समय जैन धम फैली हुई थी यथा चैतन्य पूजा के स्थान पर जडपूजा, भगवद्-पूजा के स्थान पर आचार्य व गुरु पूजा, गुण पूजा के स्थान पर व्यक्ति पूजा, धम के स्थान पर धन पूजा, योग के स्थान पर भोग, का बोल-बाला हो चला है । चुनाव मे धमनीति का स्थान राजनीति कूटनीति दलनीति न, तथा सम्यग्दशन का स्थान व्यक्तित्व प्रदशन ने ले लिया है । धम स्थानो मे उपदेश तो अपरिग्रह का दिया जाता है परन्तु पूजा प्रतिष्ठा परिग्रहधारी की ही देखी जाती है, निर्धन सयमी, सदाचारी को कोई नहीं पूछता है, सवत्र महत्व धन-वैभव व प्रदशन का हो गया है, ज्ञान, दशन, चारित्र गौण हो गये हैं । अत जो शुद्धि करण का काय लोकाशाह ने किया वही शुद्धि करण का काय आज के आचाय-युवा-चाय को भी करना है । आज की पीढ़ी जो धर्म से विमुख हो गई है, उसका प्रमुख कारण उपयु क्त विकृतिया ही हैं । स्थानकवासी संप्र-

दाय में आई विकृतियों को दूर करने के लिए अनेक क्रियोद्धारक आचार्य हुए । आज के आचार्य युवाचार्य को भी क्रिया उद्धारक होना ही होगा अन्यथा वर्तमान का शिथिलाचार बढ़कर अनाचार, दुराचार रूप धारण कर लेगा ।

आज धर्म के 'आचार' की शुद्धिकरण की जितनी आवश्यकता है उतनी ही आवश्यकता सैद्धान्तिक पक्ष के शुद्धिकरण की भी है। जिस प्रकार जैनाचार्य श्री जवाहरलालजी म. सा. ने महारंभ अल्पारंभ, दया, दान, अनुकम्पा, आदि सैद्धान्तिक पक्ष की विकृत व्याख्याओं के स्थान पर युक्तियुक्त समीचीन व्याख्याएं प्रस्तुत कीं, उसी प्रकार सैद्धान्तिक पक्ष पर पुनः विचार करना आवश्यक है । वर्तमान सैद्धान्तिक व्याख्याओं पर मध्य कालीन सामन्तशाही युग का प्रभाव है। वर्तमान में धर्म का जो विवेचन किया जा रहा है उसमें धर्म का फल भविष्य में, अगले जन्म में, स्वर्ग के भोग मिलने, संपत्ति, शक्ति, सत्ता, संतति प्राप्ति के रूप में किया जा रहा है जिससे ऐसा लगता है मानो धर्म भी कर्म है जो बंधता है और अबाधा काल पूरा होने पर उदय में आकर फल देता है । इस प्रकार वर्तमान में धर्म को कर्म का रूप दे दिया गया है जो आगम विरुद्ध है जबकि यथार्थता यह है कि जिसका फल वर्तमान में न मिलकर भविष्य में, अगले जन्म में, कालान्तर में मिलता है और समय पाकर नष्ट हो जाता है, वह कर्म है । जबकि धर्म का फल तत्काल मिलता है और अक्षुण्ण बना रहता है तथा जिस प्रकार ज्वर आदि शारीरिक विकार दूर होने पर तत्काल शांति मिलती है, ताप मिटता है, स्वस्थता तथा प्रसन्नता बढ़ती है इससे भी अनन्त गुनी अधिक राग, द्वेष, मोह रूप आत्मिक विकार दूर होने या घटने रूप धर्म से शांति, स्वस्थता एवं प्रसन्नता मिलती है ।

यदि ऐसा नहीं होता है तो धर्म के नाम पर धोखा है । शांति, स्वस्थता, प्रसन्नता मानव मात्र को इष्ट है जिसकी उपलब्धि निर्विकार हुए बिना कभी भी संभव नहीं है । निर्विकार ... प्रकार में कमी होना ही स्वभाव की उपलब्धि करना है, ... धर्म मानव मात्र को अभीष्ट है । आज जो धर्म का ... है, वह उस तथा कथित धर्म का ... है जो ॥

जिसमें निर्विकारता व स्वभाव की उपलब्धि रूप प्राण का नितान्त अभाव है। ऐसे निष्प्राण धर्म का इस वैज्ञानिक युग में अधिक काल टिक सकना संभव नही है। इस वैज्ञानिक युग में वही धर्म टिक सकेगा जो स्वर्ग, नर्क, परलोक से सम्बन्धित मान्यताओं पर आधारित न होकर, स्वभाव रूप हो। निज स्वभाव का ज्ञान सभी को है, अत स्वयं सिद्ध होता है, उसमें तर्क को अवकाश नही होता है, वह सभी के लिए मान्य होता है। स्वभाव सदा समान रहता है अर्थात् समता रूप होता है, उसमें विषमता की लेशमात्र भी गंध नहीं होती विषमता विकार की और समता स्वस्थता की द्योतक है। जहा विषमता है वहां अधर्म है, जहां समता है वहीं धर्म है। आज सारे विश्व को इसी समता धर्म की आवश्यकता है।

युवाचार्य श्री राममुनिजी को समता दर्शन आचार्य श्री नानालालजी से विरासत मे मिला है। समता दर्शन सभी के जीवन का दर्शन है। विषमता सभी समस्याओ, संघर्षों, दुखों की जड है। समता दर्शन में ही द्वन्द्व, दबाव, तनाव, युद्ध, संघर्ष, भेदभाव आदि मानव जाति की समस्त समस्याओ का समाधान है। इसका किसी सम्प्रदाय, दर्शन विशेष से सम्बन्ध नहीं है। आज आवश्यकता है समता दर्शन को कर्म काण्ड से बचाकर मानव समाज एवं मानव जीवन के वैयक्तिक, आध्यात्मिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, वैचारिक, बौद्धिक मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक आदि समस्त क्षेत्रों मे समत्व को प्रस्थापित व प्रतिष्ठित करना। समता दर्शन मे ही मानव की समस्त समस्याओं का समाधान है, सर्वांगीण विकास संभव है। समता दर्शन मानव जाति का, युग का दर्शन है। आशा है, युवाचार्य श्री राममुनि जी समता दर्शन को विश्व व्यापी रूप देकर मानव जाति का महान् उपकार, कल्याण करेंगे।

—अधिष्ठाता, जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान,
ए ६, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-१७

एकाग्रता

मानसिक क्षमता का प्रभाव शरीर तंत्र पर अवश्य पड़ता है। मन यदि एकाग्र है तो शरीर काया से एकाग्रता सहज सिद्ध हो सकती है।

—युवाचार्य श्री राम

चतुर्विध संघ का महत्त्व और

युवाचार्य का ...

△ श्री चांदमल ...

संघ की महिमा सर्वविदित है । उसमे धर्मसंघ की महिमा
अतिविशिष्ट है । धर्मसंघ व्यक्ति और समाज के धार्मिक, आध्यात्मि
और नैतिक जीवन के निर्माण मे विशेष प्रभावकारी होता है। यह
अध्यात्म के रक्षण एव उत्थान का दृढ़ आधार है ।

चतुर्विध संघ धर्मतीर्थ है

संघ की अत्यधिक महिमा होने से साधु, साध्वी, श्रावक, श्रावि
रूप धर्मसंघ को तीर्थ माना गया है । इन चारों को चार तीर्थ क
गया है । 'तीर्थ' का अर्थ है 'जिसका आश्रय लेकर तिरा जाय, क
कल्याण साधा जाय ।' साधु-साध्वी आदि चारों तीर्थों का जीवन
आचरण स्वयं के उत्थान और कल्याण मे समर्थ होने से परकल्याण
भी सहायभूत होता है । ये चारो तीर्थ स्वयं पवित्र हैं, महान् हैं,
ये अन्यों के जीवन उत्थान में भी सहायक होते हैं । ये चारों तीर्थ
क्रिया मे सम्पन्न होते हैं । ये जंगम या चलते फिरते तीर्थ अन्यों
लिए प्रेरणास्रोत होते हैं । इनकी पावन प्रेरणा से जनसमुदाय धर्म
में अग्रसर होता है ।

'श्री नंदीसूत्र' के प्रारम्भ में स्थविरावली के अन्तर्गत संघ स्तु
की गई है । गाथा ४ से १६ तक संघ को अनेक उपमाओं से उपमि
किया गया है । संघ की तुलना नगर, चक्र, रथ, कमल, चन्द्र, सू
और समुद्र सुमेरु से की गई है । तप, संयम, शील, सदाचार आ
गुणों से युक्त होने के कारण संघ महान् है, कल्याणकारी और मार्ग
कारी है'।

शास्त्रकार ने संघ का महत्त्व निम्न प्रकार बताया है—गु
रूप भवनों से सदा श्रुतरत्नों से भरी हुई और सम्यग्दर्शन रूप विश
रथ्या (मार्ग) वाला और अखण्ड चारित्र रूप प्राकार (कोटवाला) है।
संघ रूप नगर का कल्याण हो । (नंदीसूत्र स्थविरावली गाथा ४)

'संयम रूप नाभि (मध्यभाग) और तप रूप आरा वाले, सम्यक्त्व

रिकर(ऊपरी भाग)वाले ऐसे शत्रुरहित संघ रूप चक्र को नमस्कार।' (वही गाथा ५)

'शील रूप पताका से उन्नत, तप और नियम रूप घोडो से युक्त और पाच प्रकार के स्वाध्याय रूप मांगलिक शब्द वाले संघ रूप रथ का कल्याण हो।' (वही गाथा ६)

'कर्मरूप (कीचड) और जलसमूह से निकले हुए शास्त्र रूप रत्नमय लम्बायमान नाल वाले, अहिंसादि ५ महाव्रत रूप दृढ कर्णिका वाले, क्षमा आर्जव आदि उत्तरगुणरूप केसरवाले, श्रावकजनरूप भौरो से घिरे हुए, तीर्थंकर रूप तेज से विकसित, साधु समूह रूप हजार पत्र-वाले संघ रूप कमल का कल्याण हो।' (वही गाथा ७ ८)

शास्त्रकार के इन शब्दो में संघ की महिमा स्वतः स्पष्ट है। शास्त्रकार ने स्वयं संघ को नमन करते हुए उसके कल्याण की कामना की है और संघ के पावन पवित्र स्वरूप का निरुपण किया है।

तीर्थंकर भगवान स्वयं चतुर्विध संघ तीर्थ के संस्थापक हैं

केवलज्ञान प्राप्ति के बाद तीर्थंकर भगवान स्वयं उपदेश देकर साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप धर्मतीर्थ की स्थापना करते हैं। इन चारों तीर्थों की स्थापना करने से वे तीर्थंकर कहलाते हैं। चौबीस तीर्थंकरो के स्तुति पाठ 'चतुर्विंशतिस्तव' के प्रारम्भ मे 'धम्मतित्थयरे' शब्द में तीर्थंकर भगवान को धर्मतीर्थ (संघ) की स्थापना करने वाला बताया गया है। इसी प्रकार 'शक्रस्तव' या नमोत्थुणं' पाठ के प्रारम्भ में भी अरिहंत भगवान या तीर्थंकर प्रभु को 'तित्थयराणं' कहकर धर्म-तीर्थ रूप चतुर्विध संघ की स्थापना करने वाला कहा गया है।

चतुर्विध संघ रूप धर्मतीर्थ की स्थापना करके तीर्थंकर भगवान उद्धार के लिए आत्मकल्याण और आत्मोत्थान का मार्ग प्रशस्त करते हैं। तीर्थंकर भगवान के उत्तम प्रवचनों के साथ इन चारों तीर्थों से तीर्थंकर भगवान के प्रवचन सुनकर प्राणी दुःखों से मुक्त होकर शाश्वत गुणों के अधिकारी बनते हैं।

संघादेश का सम्मान और पालन :

संघ का आदेश कितना सम्मान योग्य और पालनीय होता है, इसका उदाहरण महान् आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी के जीवन से प्रकट है। आचार्य भद्रबाहु एकांत में सदा महाप्राण ध्यान-साधना में संलग्न

थे। संघ को उनकी आवश्यकता हुई और संघ ने उनका आह्वान किया अन्ततोगत्वा अपनी साधना छोड़कर भी उन्हें संघ-सेवा हेतु उपस्थित होना पड़ा। उनके द्वारा संघादेश का सम्मान और पालन किया गया।
युवाचार्य का दायित्व

युवाचार्य संघ के भावी आचार्य होते हैं। केवल संघ या अन्य के प्रति ही उनका उत्तरदायित्व नहीं होता। स्वयं के प्रति भी उनका दायित्व होता है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।
संघ के प्रति दायित्व

भावी आचार्य के रूप में ज्ञानाचारादि ५ आचारों का स्वयं परिपालन उनका प्रथम और प्रमुख दायित्व है। आचार्य के लिए कहा भी गया है कि आचार्य वे हैं जो ज्ञानाचार आदि ५ आचारों का स्वयं पालन करते हैं और दूसरों से करवाते हैं। युवाचार्य का स्वयं के प्रति यह प्रमुख दायित्व है कि वे ५ आचारों व उनके भेदोपभेदों का परिज्ञान एवं परिपालन दृढ़ता से आत्मनिष्ठा से करें। तभी वे अन्यों से पालन करवाने में सक्षम हो सकेंगे।

युवाचार्य सर्वप्रथम मुनि हैं, साधु हैं अतः साधु जीवन के सभी आचारों का सम्पूर्ण समाचारी का पालन तो उनके लिए अनिवार्य है ही। यह भी आवश्यक है कि वे आचार्य के समस्त गुणों (३६) का पूर्ण पालन करते हुए वे सुदृढ़तापूर्वक दृढ़ता से संयम का पालन करें। संघ द्वारा आचार्य के अनुशासन का पालन तभी सम्भव होगा, जब आचार्य का या युवाचार्य का अपना जीवन आत्म-अनुशासित होगा, जब वे तीर्थंकर भगवान की आज्ञाओं को समझते हुए उनके धर्म-अनुशासन का पालन करेंगे।
संघ एवं अन्यों के प्रति दायित्व

संघ के प्रति युवाचार्य का महान् दायित्व होता है। युवाचार्य संघ के भावी आचार्य हैं अतः आवश्यक है कि वे आचार्य के सान्निध्य में रहते हुए संघ को, संघ के स्वरूप को, संघ की समस्याओं तथा उनके संचालन को भली भांति समझें। संघ-संचालन में, संघ की व्यवस्था में साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका चारों तीर्थों का योग होता है। उसे भली प्रकार समझते हुए उनके सहयोग को प्राप्त कर वे संघ को आत्मोत्थान एवं आत्मकल्याण के मार्ग में अग्रसर करें।

संघ का नायकत्व

युवाचार्य भावी आचार्य के रूप मे संघ के नायक होंगे। उन्हें संघ को नेतृत्व देना है। धार्मिक आध्यात्मिक मार्ग मे संघ का पथ प्रदर्शन करना है। विभिन्न समस्याएं जो धर्म एवं अध्यात्म के मार्ग में बाधक हैं, उनका मर्यादा मे रहते हुए धर्मभावना से निवारण करना है। संघ के सभी अंगों मे, सभी सदस्यो मे परस्पर स्नेह एवं सौहार्द बना रहे, यह महत्प्रयास करना है क्योकि धर्मशासन स्नेह और सौहार्द का शासन है। धर्म रूप उद्यान भी तभी हरा भरा रहेगा, पल्लवित और पुष्पित होगा, जब उसे अनुकूल हवा पानी रूप धार्मिक गुणो का वातावरण प्राप्त होगा।

यह आवश्यक है कि युवाचार्य भूतकाल की आदरणीय परंपराओं का निर्वाह करते हुए संघ को प्रगतिशील भविष्य की ओर अग्रसर करें। यह युवाचार्य का संघ के प्रति महत्त्वपूर्ण दायित्व है।

संघ पर अनुशासन थोपना उचित नहीं होगा। संघ को धर्मानुशासन की गरिमा समझाकर उनके मानस को एतदर्थ तैयार करना आवश्यक है। प्रभु महावीर के पास भी जब साधक उपस्थित होता व्रतधारण, दीक्षा ग्रहण आदि के लिए अनुमति चाहता तो वे सदा यही कहा करते—'अहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंध करेह'। देवानुप्रिय, जैसा तुम्हें सुख हो, वैसा करो, परन्तु धर्म कार्य मे विलम्ब मत करो।

युवाचार्य से संघ की अपेक्षाएं

संघ अपने युवाचार्य से कई अपेक्षाएं रख सकता है जैसे संघ का प्रेम और स्नेह का संचालन, चारों तीर्थों की समस्याओं को सुनना, समझना और उनका समुचित संतोषप्रद समाधान करना और ज्ञान दर्शन चारित्र के मार्ग में अग्रसर होने के अवसर प्रदान करना। युवाचार्य का दायित्व होगा कि वे संघ को ज्ञान दर्शन चारित्र के मार्ग में अग्रसर करें और उनकी समस्याओं को भली भांति समझकर उनका संतोषजनक समाधान करें।

युवाचार्य संघ के पुरुष, महिला, बालक, बालिकाओं, युवक, युवतियों सभी को धर्म से जोड़ें। इस पर गम्भीरता से विचार कर के उसे कार्यरूप में परिणत करें।

युवाचार्य या भावी आचार्य वर्तमान आचार्य के निर्देशानुसार

अपने कार्य को विकेन्द्रित करें। सुयोग्य मुनिराजा, महासतियों की का सहयोग लें। विकेन्द्रीकरण से उन्हें संघ का सहयोग मिलेगा और उनका कार्य भी सरल होगा। इससे संघ प्रगति पथ पर अग्रसर होगा और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा।

संघ के महत्त्व का रक्षण एवं अभिवृद्धि

संघ का भी दायित्व है कि युवाचार्य के अनुशासन का आचरण से पालन करते हुए सब संयमशील सदाचार में अग्रसर हो। संघ में सदा स्वाध्याय का जयघोष होता रहे और संघ का प्रत्येक सदस्य ज्ञान क्रिया के मार्ग में आगे बढ़े और श्रुत चारित्र धर्म का विकास हो। संघ के छोटे बड़े स्त्री पुरुष सभी सदस्यों का धर्म से जोड़ने में अपने दायित्व का पालन करें।

इस प्रकार संघ के दायित्व पालन से युवाचार्य का धर्मशासन सफल होगा, संघ में प्रेम और स्नेह का प्रसार होगा जिससे संघ समुन्नत होगा और सभी जीवों की साधना सुगमता से अग्रसर हो सकेगी।

—३४ अहिंसापुरी, फतहपुरा, उदयपुर–३१३००१

जीवन रहस्य का ज्ञान। शान्त भाव का अवलम्बन

नदी में नहीं चाहते हुए भी उसमें तूफानी कहराम आ जाता है किन्तु जो नदी गम्भीर होती है, गहरी होती है। वह प्रलय का रूप धारण नहीं करती। वह उस तूफान को अपने भीतर समाहित कर लेती है। इसी तरह जीवन में रहस्य को जानने वाला अपने भावों को/तूफानों को बाहर प्रकट नहीं होने देता और न ही बाह्य रूप में प्रकट हो पाता है बल्कि अपने अन्दर में ही वह उन भावों/तूफानों को समाहित कर स्वयं शांत भाव का अवलम्बन लेता है और अपने जीवन को गम्भीर व उदात्त बनाए रखता है।

—युवाचार्य श्रीराम

वर्तमान सन्दर्भ में आचार्य और आचार की भूमिका

△ डॉ नरेन्द्र भानावत

वतमान युग तक और बुद्धि प्रधान युग है। इसमें आचार की अपेक्षा विचार पर अधिक बल है। परिणाम स्वरूप मस्तिष्क सम्बन्धी ज्ञान के विस्तार के लिए अनेकानेक सगठन, शिक्षा केन्द्र और अनुसधान शालाए हैं। इन सबके सम्मिलित प्रयास और प्रभाव से जगत के अनेक रहस्य उद्घाटित हुए हैं और जागतिक ज्ञान का विस्फोट हुआ है। इससे अनेक अ धविश्वास दूर हुए हैं, मिथ्या मान्यताए नष्ट हुई हैं और भूत, भविष्य मे विचरते भटकने वाला मानव वर्तमान के धरातल पर खडा हुआ है। उसके मन मे इसी धरती को स्वग बनाने का नया विश्वास जगा है और वह आधुनिक चेतना से सम्पन्न, समृद्ध हुआ है।

पर चिन्ता का विषय यह है कि तर्क और बुद्धि की प्रधानता के कारण उसका आत्म विश्वास, आस्था और आचार का पक्ष डगमगा उठा है। कोरे ज्ञान ने तर्क को पैना और प्रभावी बनाया है पर "करनी" के अभाव मे वह शुष्क और विघटनकारी बन कर रह गया है। ज्ञान के साथ कम का, तप और चरित्र का बल न होने से त्याग के स्थान पर भोग, सवेदना के स्थान पर उत्तेजना, सगठन के स्थान पर विघटन, भराव के स्थान पर बिखराव, सहयोग के स्थान पर सघर्ष की कई समस्याए-खडी हो गई हैं। ज्ञान शास्त्र न बनकर शस्त्र बन गया है। सक्षेप मे कहा जा सकता है कि आधुनिक युग मे विचार के क्षेत्र से आचार निष्कासित कर दिया गया है। अध्ययन तो है पर स्वाध्याय नहीं, अध्यापक और प्राचार्य तो हैं पर उपाध्याय और आचाय नहीं हैं।

उक्त भयावह स्थिति मे भारतीय संस्कृति में और विशेषकर जैन श्रमण परम्परा मे आचाय और आचार की जो व्यवस्था दी गई है, वह अधिक उपयोगी, सामयिक और मार्गदर्शक है।

जैन परम्परा मे "णमोकार महामन्त्र' का विशेष स्थान है। यह विश्व का सर्वहितकारी, सवमागलिक महामन्त्र है। इसमे किसी व्यक्ति विशेष को नमन न करके गुण निष्पन्न आत्माओं को नमन किया

गया है । इन आत्माओं को पंचपरमेष्ठि कहा गया है। ये हैं—अरिहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु । इनमें से प्रथम दो देव रूप हैं अरिहंत वे हैं जिन्होंने चार घाती कर्मों—ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय मोहनीय और अन्तराय को नष्ट कर अपनी आत्म-शक्तियों का [illegible] विकास कर लिया है । जो देह में रहते हुए भी विदेह अवस्था प्राप्त हैं । जो जीवन मुक्त हैं । सिद्ध वे हैं जिन्होंने अष्ट कर्मों का [illegible] कर निर्वाण प्राप्त कर लिया है, सिद्धि प्राप्त करली है । जो [illegible] से मुक्त हो गये हैं । शेष तीन आचार्य, उपाध्याय और साधु गुरु हैं । ये तीनों साधु सन्त, महात्मा, ऋषि हैं । तीनों साध्वाचार का पालन करते हैं । आचार्य संघ का नायक है । उस पर संघ-संचालन का सम्पूर्ण दायित्व है । उपाध्याय ज्ञान दर्शन का प्रमुख है । साधु वे हैं, जो अपनी साधना में रत रहता है । तीनों गुरु हैं पर आचार्य का पद दायित्वपूर्ण पद है इसलिए वह विशिष्ट है । वर्तमान में तीर्थंकरों के न होने से आचार्य उनका प्रतिनिधि है । वह धर्म संघ का शास्ता है । तीर्थंकरों द्वारा बताये गये धर्म का, आचार का, वह स्वयं पालन करता है और दूसरों से-साधुओं से, गृहस्थों से आचार का पालन करवाता है ।

शास्त्रानुसार आचार्य के पांच आचार कहे गये हैं—ज्ञानाचार दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार । ये पंच आचार ऐसे आचार हैं जो आत्म-कल्याण व लोक कल्याण के लिए आवश्यक एवं करणीय हैं । ध्यान देने की बात यह है कि यहां ज्ञान को भी आचार के अन्तर्गत रखा गया है । इसका अभिप्राय यह है कि ज्ञान तब तक जीवन के लिए सार्थक और समाज के लिए उपयोगी नहीं बनता जब तक कि वह आचार में परिणत नहीं होता ।

ज्ञानाचार के पालन का अर्थ है परम्परागत रूप से चली आ रही आगम ज्ञानधारा को सुरक्षित रखना, विवाद की स्थिति में सूत्रों के अर्थ को स्थिर करना, जीवन और समाज में विनय और विवेकपूर्ण [illegible] बनाये रखना, ज्ञान और ज्ञानी के आदर, संरक्षण, संवर्धन आदि के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना, नियमित स्वाध्याय चिन्तन, मनन, ध्यान द्वारा मौलिक साहित्य-सर्जना स्वयं करना और इसके लिए दूसरों को प्रेरणा देना ।

ज्ञानाचार के सम्यक् परिपालन से जीवन-मूल्य और सांस्कृतिक आदर्श सुरक्षित रहते हैं। समाज और राष्ट्र की एकता बनी रहती है। क्रान्तदृष्टा ऋषि मुनियो की ज्ञान रूप मे जो विरासत हमे मिली है उससे पीढी दर पीढी हम लाभान्वित होते रहे, यह ज्ञानाचार की परिपालना से ही सम्भव है।

पर यह दुख की बात है कि आज पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित शिक्षण पद्धति और भौतिकता प्रधान बौद्धिक चिन्तन के कारण ज्ञानाचार की पारम्परिक पालना बाधित होती जा रही है। ज्ञान के नाम पर किताबी ज्ञान, मनन चिन्तन के नाम पर प्रवचन पटुता, स्वाध्याय के नाम पर अध्ययन कौशल प्रमुख बन गया है। वाचना-पृच्छना की प्रधानता के कारण अनुप्रेक्षा और धर्मकथा (धमधारणा) बहिष्कृत होती हो गई है परिणामस्वरूप मौलिकता का ह्रास हो गया है, विनय-विवेक की कमी हो गई है।

ज्ञान का अहम् प्रबल हो उठा है। प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। विवाद का बाजार गरम हो गया है। शास्त्रीय परम्परा से कटाव होने लगा है। ज्ञान का मुख्य कार्य है—आत्म जागृति, सजगता का विकास। पर आज जागृति अपने प्रति कम होकर दूसरो को उपदेश देने की प्रवृत्ति तक बढ़ गई है। इस कारण प्राय देखने मे आता है कि आज तथाकथित ज्ञानी अधिक उपद्रवी, विद्रोही, कुंठित, निराश और आस्थाहीन हो गये हैं। ज्ञान के साथ सावधानी की बजाय चालाकी अधिक जुड़ गई है। आचार का स्थान प्रचार प्रसार ने ले लिया है। आवश्यकता है ज्ञान आचार बनकर जीवन मे उतरे।

आचार्य दर्शनाचार का स्वयं पालन करते हैं और दूसरो से करवाते हैं। सामान्यत दर्शन जीव, जगत और ब्रह्म के सम्बन्ध मे विभिन्न धारणाओं और तर्क वितर्कों का नाम है जो जटिल और शुष्क माना जाता है। तथाकथित दार्शनिक बाल की खाल निकालने मे पटु होते हैं पर यहां दर्शन का आचार रूप मे अर्थ है—आत्म साक्षात्कार, आत्म दर्शन। यह तभी सम्भव है जब मस्तिष्क के आगे हृदय का विचार हो, अपनी आत्मा के प्रति श्रद्धा और विश्वास का रंग हो। शरीर और आत्मा की भिन्नता का बोध होने पर जो अनुभूति संवेदना के स्तर पर होती है वही सच्चा दर्शन है। दर्शनाचार का पालनकर्ता

स्थान पर घृणा, क्रोध, प्रतिशोध, अवज्ञा, कृतघ्नता आदि के अंकुर
फल-फूट उठे हैं। हमारा यह दायित्व है कि हम परिनिष्ठ
संस्कारशील बनकर ज्ञान-दर्शन के उपयोग को सार्थक करें। ज्ञान
की इस सन्दर्भ में विशेष भूमिका है।

तपाचार—तपोमय साधना का प्रतीक है। तप के द्वारा
संचित कर्मों को नष्ट कर आत्म शक्तियों का विकास किया जाता है।
जैन दर्शन में तप को बाह्य और आभ्यन्तर दो रूपों में विभक्त किया
गया है। जिनका प्रभाव शरीर पर परिलक्षित होता है, वे बाह्य
हैं। भूखा रहना, कम खाना, न्याय नीतिपूर्वक स्वावलम्बी जीवन
बिताना, सादा सात्विक आहार ग्रहण करते हुए स्वाद विजय का प्रयत्न
करना, कष्ट-सहिष्णु बनना बाह्य तप है। बहिर्मुखी वृत्तियों को अन्त-
र्मुखी बनाना आभ्यन्तर तप की ओर बढ़ना है। आभ्यन्तर तप
मुख्य हैं—अपनी की हुई भूलों के लिए प्रायश्चित्त करना, अहम् विसर्जन
के लिए विनयभाव लाना, राग को गलाने के लिए दूसरों की सेवा
करना, सद्‌शास्त्रों का आत्म चिन्तनपूर्वक अध्ययन करना, शुभ विचारों
में रमण करते हुए आत्मस्थ होना और शरीर की ममता का त्याग
करना।

तपाचार की पालना से सहनशीलता-तितिक्षा भाव का विकास
होता है। तप से विषय विकार दूर होते हैं और आत्मा का निर्मल
भाव प्रकट होता है। तप ज्योति है। उससे आत्मस्वरूप का साक्षा-
त्कार होता है।

आज की उपभोक्तावादी संस्कृति में इन्द्रियों को तृप्त करने
की ओर प्रायः सजग बनी रहती है। आवश्यकताएं अधिक बढ़ें और
नई-नई कामनाएं उत्पन्न हों। उनकी पूर्ति के लिए नये-नये आविष्कार
हों, इस दुश्चक्र में आज का ज्ञान विज्ञान और अनुसंधान लगा हुआ
है। कामनाओं के निरन्तर बढ़ते रहने से भोग की भूख कभी शान्त
नहीं होती। कामना की पूर्ति न होने से तनाव और व्याकुलता बनी
रहती है जिससे मन रोगग्रस्त हो जाता है। तन के रोग की तो स्थूल
चिकित्सा है औषधि है पर मन के रोग की चिकित्सा कहीं बाहर नहीं
है। वह तो मन के भीतर ही है। वह चिकित्सा तप है मानसिक शुद्धि
है। तप के माध्यम से ही कामनाओं पर नियंत्रण किया जा सकता है।

—इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है, ज्ञान, दर्शन, चरित्र का सम्यक् रूप से पालन तभी सम्भव है जब व्यक्ति तपनिष्ठ हो। तप के अभाव में प्राप्त ज्ञानदर्शन केवल ताप पैदा करता है, उससे प्रकाश नहीं मिलता। आचार्य का यह दायित्व है कि वह जीवन और समाज में सच्चे तपाचार को प्रतिष्ठित करे।

आज समाज में तप के नाम पर बड़ी-बड़ी तपस्याएं होती हैं। भूखा रहना सामान्य बात नहीं, इससे शरीर के प्रति रही हुई आसक्ति कम होती है पर तपस्या का लक्ष्य कषायों पर विजय प्राप्त करना है। यदि तपस्या का उद्देश्य इस लोक में प्रशंसा और परलोक में सुख-भोग प्राप्त करना है तो वह सच्ची तपस्या नहीं है। मान सम्मान, पूजा-प्रतिष्ठा और धन सम्पत्ति प्राप्त करने के लक्ष्य से की जाने वाली तपस्या तप न होकर लेन-देन है। इससे बचा जाना चाहिए। आदर्श तपस्या वह है जिसमें बाह्य और आभ्यन्तर तपों का सामंजस्य हो। बाह्य तप क्रांति लाते हैं तो आभ्यन्तर तप शान्ति प्रदान करते हैं। क्रांति और शांति के सुन्दर मेल से जीवन स्वस्थ और समाज उन्नत बनता है।

वीर्याचार—का अर्थ है—ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप की परिपालना में अपने शौर्य और पुरुषार्थ को जागृत करना। वीर्य का अर्थ है—शक्ति। यह शक्ति बाहरी नहीं, भीतरी प्राण शक्ति है। इसके अभाव में कोई भी कार्य सिद्धि नहीं हो सकती है। वीर्याचार की पालना व्यक्ति को स्वाधीन और स्वावलम्बी बनाती है। वीर्याचार के पालन का अर्थ है—अपने संयम की रक्षा, अपने प्राण की रक्षा, अपनी ऊर्जा की रक्षा। इनकी रक्षा करके व्यक्ति पूर्ण स्वाधीन बन सकता है। इस आचार का पालक कभी भी दूसरों पर अवलम्बित नहीं रहता है। उसका सुख-दुख किसी बाहरी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति पर निर्भर नहीं रहता है। वह अपने स्वभाव में स्थित रहता है। 'पर' से सुख की आशा नहीं करता है। वह अपने शील, संयम से, आत्म चिन्तन से दोषों का त्याग करता हुआ निर्मल, निर्द्वन्द्व होता जाता है। अपनी साधना में वह सदैव तत्पर और जागरूक रहता है।

आज का सबसे बड़ा संकट यह है कि व्यक्ति का अपना केन्द्र, स्वभाव दुर्बल व अस्थिर है। आस्था का खूंटा डोलायमान है। केन्द्र की उपेक्षा कर व्यक्ति परिधि में चक्कर काटता रहता है। उसकी

स्थान पर घृणा, क्रोध, प्रतिशोध, अवज्ञा, कृतघ्नता आदि के फल-फूट उठें हैं । हमारा यह दायित्व है कि हम परिनिष्ठ संस्कारशील बनकर ज्ञान-दर्शन के उपयोग को सार्थक करें । की इस सन्दर्भ मे विशेष भूमिका है ।

तपाचार—तपोमय साधना का प्रतीक है । तप के द्वा संचित कर्मों को नष्ट कर आत्म शक्तियो का विकास किया जाता है जैन दर्शन मे तप को बाह्य और आभ्यन्तर दो रूपों में विभक्त गया है । जिनका प्रभाव शरीर पर परिलक्षित होता है, वे बाह्य हैं । भूखा रहना, कम खाना, न्याय नीतिपूर्वक स्वावलम्बी विताना, सादा सात्विक आहार ग्रहण करते हुए स्वाद विजय का अभ्य करना, कष्ट-सहिष्णु बनना बाह्य तप है । बहिमुखी वृत्तियो को अ मुखी बनाना आभ्यन्तर तप की ओर बढ़ना है । आभ्यन्तर तपों मुख्य है—अपनी की हुई भूलों के लिए प्रायश्चित करना, अहम् विस के लिए विनयभाव लाना, राग को गलाने के लिए दूसरो की करना, सद्शास्त्रो का आत्म चिन्तनपूर्वक अध्ययन करना, शुभ विच में रमण करते हुए आत्मस्थ होना और शरीर की ममता का त्य करना ।

तपाचार की पालना से सहनशीलता—तितिक्षा भाव का विक होता है । तप से विषय विकार दूर होते हैं और आत्मा का नि भाव प्रकट होता है । तप ज्योति है । उससे आत्मस्वरूप का साक्ष त्कार होता है ।

आज की उपभोक्तावादी संस्कृति मे इन्द्रियों को तृप्त क की ओर प्राय ललक बनी रहती है । आवश्यकता अधिक बढ़े नई-नई कामनाएं उत्पन्न हो । उनकी पूर्ति के लिए नये-नये आविष्क हो, इस दुष्चक्र में आज का ज्ञान विज्ञान और अनुसंधान लगा हु है । कामनाओं के निरन्तर बढ़ते रहने से भोग की भूख कभी श नही होती । कामना की पूर्ति न होने से तनाव और व्याकुलता ब रहती है जिससे मन रोगग्रस्त हो जाता है । तन के रोग की तो स्थू चिकित्सा है, औषधि है पर मन के रोग की चिकित्सा कहीं बाहर न है । वह तो अपने भीतर ही है । वह चिकित्सा तप है, मानसिक शु है । तप के माध्यम से ही कामनाओं पर नियंत्रण किया जा सकता है

[इ]न्द्रियो पर विजय प्राप्त की जा सकती है, ज्ञान, दर्शन, चरित्र का सम्यक् [रू]प से पालन तभी सम्भव है जब व्यक्ति तपनिष्ठ हो। तप के अभाव [मे]ं प्राप्त ज्ञानदर्शन केवल ताप पैदा करता है, उससे प्रकाश नहीं मिलता। [आ]चार्य का यह दायित्व है कि वह जीवन और समाज मे सच्चे तपा-[च]ार को प्रतिष्ठित करे।

आज समाज में तप के नाम पर बड़ी-बड़ी तपस्याए होती हैं। [भ]ूखा रहना सामान्य बात नही, इससे शरीर के प्रति रही हुई आसक्ति [क]म होती है पर तपस्या का लक्ष्य कषायों पर विजय प्राप्त करना है। यदि तपस्या का उद्देश्य इस लोक मे प्रशसा और परलोक मे सुख-भोग प्राप्त करना है तो वह सच्ची तपस्या नहीं है। मान सम्मान, पूजा-प्रतिष्ठा और धन-सम्पत्ति प्राप्त करने के लक्ष्य से की जाने वाली तप-स्या तप न होकर लेन-देन है। इससे बचा जाना चाहिए। आदर्श तपस्या वह है जिसमे बाह्य और आभ्यन्तर तपो का सामजस्य हो। बाह्य तप क्रांति लाते हैं तो आभ्यन्तर तप शान्ति प्रदान करते हैं। क्रांति और शाति के सुन्दर मेल से जीवन स्वस्थ और समाज उन्नत बनता है।

वीर्याचार—का अर्थ है—ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप की परिपालना में अपने शौर्य और पुरुषार्थ को जागृत करना। वीर्य का अर्थ है—शक्ति। यह शक्ति बाहरी नही, भीतरी प्राण शक्ति है। इसके अभाव में कोई भी कार्य-सिद्धि नही हो सकती है। वीर्याचार की पालना व्यक्ति को स्वाधीन और स्वावलम्बी बनाती है। वीर्याचार के पालन का अर्थ है—अपने सयम की रक्षा, अपने प्राण की रक्षा, अपनी ऊर्जा की रक्षा। इनकी रक्षा करके व्यक्ति पूर्ण स्वाधीन बन सकता है। इस आचार का पालक कभी भी दूसरों पर अवलम्बित नहीं रहता है। उसका सुख दुख किसी बाहरी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति पर निर्भर नहीं रहता है। वह अपने स्वभाव में स्थित रहता है। 'पर' से सुख की आशा नहीं करता है। वह अपने शील, सयम से, आत्म चिन्तन से दोषों का त्याग करता हुआ निर्मल, निर्द्वन्द्व होता जाता है। अपनी साधना में वह सदैव तत्पर और जागरूक रहता है।

आज का सबसे बड़ा संकट यह है कि व्यक्ति का अपना केन्द्र, स्वभाव दुर्बल व अस्थिर है। आस्था का खूटा डोलायमान है। केन्द्र की उपेक्षा कर व्यक्ति परिधि मे चक्कर काटता रहता है। उसकी

प्रज्ञा स्थिर नही है। मन विक्षिप्त और चचल है। ...
दौड-धूप, आपाधापी, छीना-झपटी करके भी उसे कुछ प्राप्त नहीं ...
है। जीवन को वह सघर्ष मे ही खो देता है। उससे मक्खन ...
निकलता है। केवल झाग हाथ लगते हैं। शक्ति का सदुपयोग ...
रचनात्मक कार्यों मे नही कर पाता। बनाव-श्रृ गार में ही शक्ति ...
अपव्यय हो जाता है। वीर्याचार का परिपालन शक्ति के साथ ...
को जोडता है, सत्ता के साथ स्नेह को जोडता है। जीवन मे ...
सकारात्मक दृष्टि विकसित करता है। युवापीढ़ी मे वीर्याचार की ...
पालना विवेकपूर्वक हो, यह आज के युग की आवश्यकता है। ...
वीर्य अधोमुखी न होकर ऊर्ध्वमुखी हो, यह कामकेन्द्रित न होकर ...
केन्द्रित बने। तभी जीवन की सार्थकता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि वर्तमान सन्दर्भ में ...
और आचार की प्रासगिकता पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ी है। ...
ज्ञान के साथ चरित्र और दर्शन के साथ विश्वास को जोडने की ...
श्यकता है। चरित्र और विश्वास तभी मजबूत होंगे जब इनके ...
तप का बल और वीर्य की शक्ति हो। संक्षेप में ज्ञानाचार, दर्शनाचार, ...
चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार की परिपालना से सजग...
सहृदयता, संस्कारशीलता, शुद्धता, और स्वाधीनता का भाव विक...
होगा। वर्तमान त्रासदी के निस्तारण के लिए इनकी परिपालना आ...
श्यक ही नहीं अपरिहार्य है। कहना न होगा कि इस सन्दर्भ मे आचा...
और आचार की भूमिका अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। आचार्य श्री ना...
के मार्गदर्शन व नेतृत्व मे युवाचार्य श्री राम मुनि निश्चित ही ...
भूमिका का प्रभावी ढंग से निर्वाह करेंगे। इसी मगल कामना के ...
कोटि वन्दन-अभिनन्दन।

—अध्यक्ष, हिन्दी विभा...
राजस्थान विश्वविद्यालय, ...

सोना और सुहागा

युवकों के उत्साह में बुजुर्गों का मार्गदर्शन तथा अनुभव ...
जाय तो प्रत्येक कार्य "सोना मे सुगन्ध" वाली कहावत चरितार्थ ...
है और यह सब सम्भव है आत्मीयता के आधार पर

युवाचार्य श्री...

जिनशासन में संघ-व्यवस्था

श्री जशकरण डागा

जैन धर्म मे 'जिन' और 'जिनशासन' का बड़ा महत्त्व है। 'जिन' अर्थात् रागद्वेष के विजेता सर्वज्ञ अरिहन्त देव। ऐसे जिन सर्वज्ञ भगवंतो द्वारा भव्य जीवो के कल्याणार्थ प्ररूपित व प्रस्थापित जो मोक्ष मार्ग है, वही जिन शासन है। यह जिनशासन बड़ा निराला और सर्वोत्तम है। निराला इसलिए कि इस जिनशासन मे जनादेश की नहीं, जिनादेश की पालना सर्वोपरि है। इसमे जनवाणी से अधिक जिनवाणी को तथा जनतत्र से अधिक जिनतत्र को महत्त्व दिया गया है। इस जिनशासन मे मतार्थियो और दुराग्रहियो को विराधक तथा आत्मार्थियो और मुमुक्षुओ को जो भगवंत की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करते है, आराधक कहा गया है। इस जिनशासन को सर्वोत्तम इस लिए कहा गया है कि यह रत्नत्रय रूप,[1] त्रिवेणी से सदाकाल मण्डित और अखण्डित मोक्ष मार्ग है, पतित पावन रूप है। अनंत २ प्राणी इस से अतीतकाल में तिरे हैं, वर्तमान मे तिर रहे हैं और भविष्य मे भी अनत २ प्राणी तिरेंगे। ऐसे परमोत्तम, परम मगल रूप जिन शासन का धर्म संघ साधु-साध्वी, श्रावक श्राविका चतुर्विध रूप है, भव्य जीवो के लिए आदर्श तीर्थ रूप हैं। स्वयं प्रभु महावीर ने इस धर्म संघ को तीर्थ कहा है।[2] प्रभु ने धर्म सघ को तीर्थ कहने का कारण स्पष्ट करते हुए कहा है—"चतुर्विध सघ, ज्ञान, दर्शन व चारित्र का आधार है, जो प्राणीमात्र को, अज्ञान व मिथ्यात्व से तिरा देता है, एव ससार से पार पहुँचाता है।[3] आगमकारो ने भी नदी सूत्र' के आरम्भ धर्म सघ को आठ उपमाए देकर उसकी महती भक्ति-पूर्वक स्तुति की है यथा—

"नगर रह चक्क पउमे, चदे, सूरे, समुद्द मेरुम्मि।
जो उपमिज्जइ सयय, त सघ गुणायर वदे ॥१६॥"

अर्थात नगर, रथ, चक्र, पद्म, चन्द्र, सूर्य, समुद्र, और मेरु की जिसे उपमा दी जाती है, ऐसे ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप सम्पन्न

---

१ सम्यग्ज्ञान दर्शन चारित्र रूप।
२ भागवती सू श २०, उ ८, सू ६८१।
३ विशेषावश्यक भाष्य गा १०३३ से १०४७।

गुणाकर सघ की मैं सतत स्तुति करता हू। इस धम संघ दो प्रकार हैं—श्रावक सघ व श्रमण सघ। इन सबमें मुनि प्रधान है मुनियो मे स्थविर प्रधान हैं। स्थविरो मे आचार्य प्रधान हैं और आचार्यों पर भी जिन आज्ञा रूप जिनागम का अनुशासन है। इ प्रकार जिनाज्ञा सर्वोपरि है। ऐसा है जिनशासन और उसका ध सघ। यह धम सघ भव्य जीवों को तिराने मे सक्षम होने स त रूप है।

इस धर्म संघ मे मात्र जैन धम के ही नही, वरन् समग्र लो के सयमी महापुरुषा को भी पूज्य भाव से सम्मिलित किया है, सघ के महामत्र 'नवकार' से सुस्पष्ट है। जहा इस महामत्र के द्वा सभी सयमी महापुरुषा को पंच परमेष्ठी रूप मे पांच पदा म वि जित कर, उन्हे आराध्य रूप मे वंदनीय एवं परमपूजनीय घोषि किया है, वही दूसरी ओर धम सघ व्यवस्था सुचारु और सुव्यवस्थि रहे, और जिनशासन सदाकाल जयवत रहे, इस हेतु धम सघ में प्रधान श्रमण सघ के कर्णधारो को भी, सात प्रकार के वर्गों में अलग २ पद वियां देकर सघ गच्छव गण की व्यवस्था की देख रेख एवं जिन शासन के कुशल संचालन का काय भार, उन्हे उनका दायित्व निर्धा करते हुए सौंपा गया है, जो इस प्रकार है—[1]

(१) (i) आचार्य—यह सघ के नायक होते हैं। इन्हे प्रति बोध, दीक्षा व शास्त्रज्ञान के मुख्य प्रदाता कहा गया है। योग्यता— चतुर्विध सघ के कुशल सचालन में समर्थ होते हैं। आठ सम्पदाओं— आचार, श्रुतादि से सम्पन्न होते हैं। चार अनुयोग (चरण, करण, धर्म कथा व द्रव्यानुयोग) के ज्ञाता तथा छत्तीस गुणों (पंचा चार व पंच महाव्रत पालक, पचेंद्रिय विजेता, चार कषाय निवारक नव बाड सहित शुद्ध ब्रह्मचय एव पांच समिति तीन गुप्ति के पालक) से युक्त होते हैं।

"पंचिदिय संवरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्ति धरो।
चउविह कसाय मुक्को, इह अठारस्स गुणहि संजुत्तो॥

---

१ ठाणांग ३, उ ३, सूत्र १७७ की टीका के आधार से।

पंच महव्वय जुत्तो, पच विहायार पालण समत्थो ।
पंच समीय ती युत्तो, इह छत्तीस गुणेहिं गुरु मज्झ ।।"

यह आचाय भी पांच प्रकार के होते हैं ।[1] यथा—

(अ) प्रव्राजकाचार्य—सामायिक व्रत छेदोपस्थानीय चारित्र ादि का आरोपण करने वाले ।

(ब) दिगाचार्य—सचित्त, अचित्त, मिश्र, वस्तु की आगमोक्त नुमति देने वाले ।

(स) उद्देशाचाय—सर्व प्रथम श्रुत का कथन करने वाले ा मूल पाठ सिखाने वाले ।

(द) समुद्देशानुज्ञाचार्य—वाचना देने वाले, गुरु न होने पर ुत को स्थिर परिचित करने की अनुमति देने वाले ।

(इ) आम्नायार्थ वाचकाचार्य—उत्सर्ग, अपवाद रूप आम्नाय र्थ के कथन करने वाले ।

(ii) उपाचार्य—यह आचाय की अनुपस्थिति मे या उनके नर्देशानुसार उनका कार्य देखते व सचालन करते हैं। योग्यता- ाचाय के गुणों के धारक होते हैं ।

(iii) युवाचार्य—आचाय एवं उपाचार्य के पश्चात् सघ संचा- न का उत्तरदायित्व इन पर होता है । योग्यता—यह भी आचाय के ुणों के धारक होते हैं । इनका चयन प्राय आचार्य स्वयं सर्व परि- स्थितियों का विचार कर करते हैं ।

(२) उपाध्याय—इन पर सघ मे सूत्र ज्ञान के प्रचार का शेष दायित्व होता है । स्वय आगम ज्ञान-अभ्यास करते हैं व अन्य ो कराते हैं । योग्यता—ग्यारह अंग, बारह उपांग, चरण सत्तरी व रण सत्तरी के ज्ञाता होने से इन्हें पच्चीस गुणों के धारक कहा जाता ै । कहा है—

"बारसंगो जिणक्खाओ, सज्झाओ कहिं उ बहे ।
त उवसंति जम्हाओ उज्झाया, तेण वुच्चति ।।"

अर्थात् जो सर्वज्ञ भाषित और परपरा से गणधरादि द्वारा उपदिष्ट बारह अगों को शिष्यो को पढाते हैं वे उपाध्याय कहाते

1. धम संग्रह अधिकार ३ श्लो ४६ की टीका से ।

स्थविर का अर्थ सन्मार्ग मे स्थिर करना भी कहा है। इसके दस भेद बताए हैं[1] यथा—

(१) ग्राम स्थविर—(गांव की व्यवस्था करने वा (२) नगर स्थविर, (३) राष्ट्र स्थविर—(राष्ट्र का माननीय शाली नेता, (४) प्रशास्तृ स्थविर—(धर्मोपदेश देने वाला) (५) स्थविर—(कुल की व्यवस्था करने वाला (६) गण स्थविर (७) स्थविर (८) जाति स्थविर—(वय स्थविर) (९) श्रुत स्थविर (१०) पर्याय (दीक्षा) स्थविर। ये दस भेद लौकिक एव लोको देश एव धर्म दोनों की व्यवस्था की अपेक्षा से हैं।

(५) गणि—एक गच्छ (साधु-साध्वियो के एक समूह) स्वामी को गणि कहते हैं। वह उस समूह पर समय अपना शासन र है तथा आचार्य की आज्ञा से अलग विचरण कर जगह २ धर्म प्र करता है।

योग्यता—गच्छ की देख रेख व सचालन में समर्थ होत और आठ सम्पदाओं का धारक होता है।[2]

(६) गणधर—आचार्य की आज्ञा मे रहते हुए गुरु के ि मानुसार कुछ साधु-साध्वियो को लेकर अलग विचरे, उसे गणधर हैं। गणधर अपने अधीनों की दिनचर्या का तथा अन्य समाचारी पूरा ध्यान रखते हैं। कहा है—

"पिय धम्मे दढ़ धम्मे, संविग्गो उज्जुओ य तेयंसी।
संगहु वग्गहु कुसलो, सुत्तत्थ विऊ गणा हिवई॥"

अर्थात् जिसे धर्म प्रिय है, जो धर्म में दृढ़ है, जो संवेग वा सरल, तेजस्वी है। संत-सतियों के लिए वस्त्र-पात्रादि के संग्रह मर्या में तथा अनुचित क्रिया-कलापों के लिए उपग्रह अर्थात् रोक टोक क में कुशल है और सूत्रार्थ का ज्ञाता है वही गणाधिपति गण होता है।

---

१ ठाणांग १०, उ ३, सूत्र ७६१।

२ आठ सम्पदा-आचार, श्रुत, शरीर, वचन, वाचना, मति, प्रयोगम व संग्रह परिज्ञा (दशाश्रुतस्कंध दशा ४ व ठाणांग ८ उ सू ६०१)।

यद्यपि 'गणधर' शब्द तीर्थंकरो के प्रधान शिष्यों के लिए प्रचलित है, तथापि सात पदवियों मे गणधर का अर्थ उपर्युक्त प्रकार से लिया गया है।

योग्यता—जो गण संचालन मे कुशल व समर्थ हो।

(७) गणावच्छेदक—जो गण के एक भाग को लेकर गच्छ की रक्षार्थ आहार-पानी आदि की सारी व्यवस्था व कार्यों का विचार कर सही मार्गदर्शन देते हुए अलग विचरता है। कहा है—

"उद्धवणा पहावण खेत्तोवहि मग्गणासु अविसाई।
सुत्य तदुभय विऊ, गण वच्छो एरिसो होई ॥"

अर्थात् दूर विहार करने वाले, शीघ्र चलने वाले तथा क्षेत्र और दूसरी उपाधियो को खोजने मे जो घबराने वाला न हो, सूत्र, अर्थ और तदुभय रूप आगमो का विज्ञाता गणावच्छेदक होता है।

योग्यता—आगमो का विज्ञाता व गण के संचालन मे कुशल व समर्थ हो।

संघ की व्यवस्था का मुख्य भार आचार्य एव तदनन्तर उपाध्याय पर होता है। जिस संघ में आचार्य के अतिरिक्त अन्य पदो पर कोई न हो तो उन सभी अन्य पदो का कार्य भी स्वय आचार्य देखते व सम्हालते हैं। आचार्य द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव व सघ का कार्य आदि देखकर उपाध्याय, प्रवर्तक आदि पदों पर योग्य सतो की नियुक्ति करते हैं और कभी नहीं भी करते हैं। आचार्य, उपाध्याय, सघ मे सुव्यवस्थार्थ दूसरे सतो को अपने अनुकूल व नियमानुसार चलाने तथा योग्य ज्ञान एव शिष्यों के संग्रह हेतु सात बातो का ध्यान रखते हैं जो इस प्रकार हैं—[१]

(१) आज्ञा (कार्य संचालन का विधान) तथा धारणा (गतिविधि रोकने का विधान) का सम्यग् प्रयोग करना चाहिए। अनुचित प्रयोग से सघ में कलह होने व व्यवस्था टूटने की संभावना हो जाती है।

देशान्तर में रहा गीतार्थ साधु अपने अतिचारों को गीतार्थ आचार्य से निवेदन करने के लिए जो शुद्ध अगीतार्थ साधु को गूढ़ार्थ

१ ठाणांग ५, उ १, सूत्र ३९९ तथा ठाणांग ७, उ ३, सू ५४४

दिगम्बर परम्परा में सं

व्यवस्थ

● डॉ उदयचन्द

भारतीय संस्कृति के विविध पक्ष हैं। उनमें श्रमण सं और वैदिक संस्कृति दोनो का ही क्रम प्राचीन है। दोनो ही की अ अपनी विचार धाराए हैं, परम्परा भी है और दोनो का ही स महान् माना जाता है। उन संस्कृतियो के जीवन्त प्राण हमारे हैं, आगम हैं, वेद हैं, उपनिषद हैं, त्रिपिटक आदि जैसे सूत्र ग्रन्थ हैं। उन्ही का अनुसरण करने वाले चलते-फिरते तीर्थ हमारे स सत हैं। उनका अपना अपना स्थान है। उनकी अपनी अपनी ि ताए भी हैं। यहा श्रमण संस्कृति के जीवन्त एवं चलते-फिरत का क्या स्वरूप, गुण एवं महत्त्व इत्यादि का सामान्य परिचय और आगम साहित्य की दृष्टि को रखकर प्रस्तुत किया जा रहा है।

'संघ' आधुनिक दृष्टि से या प्राचीन दृष्टि से गुणो में ग समुदाय आदि के अर्थ को व्यक्त करता है। जब यही शब्द 'ध -संघ' इस वाक्य रचना को प्राप्त कर लेता है तब यह विशाल रूप प्राप्त हो जाता है। 'दंसण णाण चरित्ते संघायंतो हवे संघो' द दर्शन, ज्ञान और चरित्र का एकात्मक रूप संघ है। जहां तीनों धारक, चिंतक, उपासक, आराधक एवं मार्गानुगामी हैं वही संघ जाता है। संघ रत्नत्रय है, संघ समय है, संघ आत्मा है, संघ पर त्मा है, संघ प्रकाश है, संघ सत्य दृष्टि है इत्यादि जो कुछ भी चिं किया जाता है या जिसके द्वारा चिन्तन किया जाता है वह सभी है। संघ साधु रूप है। इसलिए भी यह विचार किया है कि किस संघ कौन सा साधु! मूलत दिगम्बर या श्वेताम्बर के श्रमणों क भेद सामान्य हैं। यहां दिगम्बर संघ के प्रमुख आचार्य आदि की वस्था का परिचय दिया जा रहा है।

१ आचार्य—'सदा आयारविद्दण्हू आयरियं या आयारमाणा वंतो आयरियो' अर्थात् जो आचार (पंचाचार के) म दिवेचन हैं जो आचार का सदा आचरण करते हैं, वे सभी आचार्य होते हैं आचार्य मुनि संघ के नायक है। व अन्तरंग, बहिरंग ... से ह

रम पद स्थित हैं। पचाचार से पवित्र हैं। आचाय कुन्दकुन्द' वट्ट र एव शिवार्य जैसे चिन्तनशील मनीषियो ने आचार्य कौन, इस पर भीरता से प्रकाश डाला है। 'नियमसार' मे आचार्य को गुण गम्भीर ी कहा है। धवलादि महाग्रन्थों में 'सुत्तत्थविसारद' कहकर आचार्य ो ज्ञानाभ्यासी ही नहीं अपितु आगमविज्ञ भी कहा है।

आचाय ३६ गुणों से युक्त सदैव ज्ञान, ध्यान एवं तप मे लीन हते हैं। शिवाय ने इसका विस्तार से वर्णन किया है। आचाय न्दकुन्द ने 'बोध पाहुड' में इनके गुणो का निर्देश किया है। 'भग- ती आराधना' मे आचारवान, आधारवान व्यवहारवान आयावायदर्शी, परिस्रावी, निर्यापक, प्रसिद्ध, कीर्त्ति सम्पन्न आदि गुणो की चर्चा की । आज भी आधुनिक युग में आचारवान्, आधारवान् आदि गुणो ो पूर्ववत् महत्व दिया जाता है।

आचाय आचरण योग्य ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप और बल म्पन्न तो है ही, इसके अतिरिक्त श्रमण सघ के सरक्षक भी वह होते । यह अन्त समय निकट जानकर समाधिमरण की क्रिया को स्वय ारण कर अपने उत्तराधिकारी का चयन अत्यधिक विवेकपूर्वक करता । आचार की अखडता बनाने के लिए सवसघ, चतुर्विध संघ को ही र्वोपरि मानता है।

आचाय पद योग्य वही साधक, चिन्तनशील श्रमण होता है जो ज्ञान, ध्यान और तप मे प्रवीण, वय से वरिष्ट, संघ सचालन मे क्षम हो। क्रूर, हीन, कुरूप, विकृत, अभिमानी, विद्याविहीन, आत्म- प्रशंसक आदि से युक्त साधक इस पद का अधिकारी नहीं होता है।

आचाय मे कई पद भी हैं। गृहस्थाचार्य, प्रतिष्ठाचार्य, बाला- ार्य, एलाचाय निर्यापकाचार्य आदि कई आचाय के पद हैं। 'भगवती आराधना' मे इसकी विस्तार से चर्चा की गई है।

२ उपाध्याय—जो स्वयं अध्ययन-मनन-चिन्तनशील होते हैं और दूसरो को भी अपने इन गुणों से अलंकृत करते हैं। सघ मे स्थित साधुओ को परमागम का ज्ञानाभ्यास कराते हैं। 'रयणत्तय-संजुत्ता' रत्नत्रय से युक्त सम्यक्त्व के नि शकित आदि अष्ट गुणों से सुशोभित उपाध्याय होते हैं। बारह अंग एवं चौदह पूर्व ग्रन्थो के अभ्यास से, स्वाध्याय से एवं पठन-पाठन से निरन्तर ही अपने ज्ञान में वृद्धि करते

रहते हैं। 'तिलोयपण्णत्ति' में उपाध्याय को भव्यजनों का उद्योत क वाला एव श्रेष्ठ बुद्धि का दायक कहा है। नेमिचन्द्र ने रत्नत्र समन्वित धम/वस्तु तत्व का विवेचन करने वाला कहा है। इ चिंतन को आधार बनाकर यही कहा सकता है कि उपाध्याय का समाधक, सुवक्ता, सिद्धान्त शास्त्र प्रवीण, सूत्र एवं सिद्धान्त रहस्य का उद्घाटक, शब्द, अर्थ की गहराई में प्रवेश करने गुणों में अग्रणी होता है "उपेत्याधीयतेऽस्मात साधव सूत्रमित्युपाध्याय' या 'श्रुताभिधानमधीयते स उपाध्याय । येषा तप श्री रत्नत्र विवेचका चेतसा तत्वबुद्धि । सरस्वती तिष्ठति वक्त्रपद्मे पुनन्तु अध्यापक पु गवा व ।' आचार्य कुन्दकुन्द ने उपाध्याय को अध्य कहा है।

उपाध्याय अज्ञानरूपी अन्धकार मे भटकने वाले जीवों प्रकाश देने वाले हैं। उत्तम मति युक्त हैं, जिनकी सीमा का पार अत्यधिक कठिन है।

३ साधु—आचार्य, उपाध्याय भी साधु हैं, नवदीक्षित साधु है। प्रवर्तक, स्थविर, गणधर, गणनायक, नायक, तत्वज्ञ, वि गीतायज्ञ, चारित्रज्ञ, ज्ञानज्ञ, तपस्वी, शैक्ष्य, ग्लान, गण, कुल ऋषि, यति, मुनि, अनगार, मनोज्ञ आदि चारित्र के धारक साधु हैं साधु ज्ञान, ध्यान तप मे लीन आत्म की ओर अग्रसर रहते हैं जिनकल्पी स्थविरकल्पी, पुलाक, बकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ, स्नातक गु स्थान की दृष्टि से साधु हैं। साधुओं मे संयम, श्रुत, प्रतिसेवना, ती लिंग, लेश्या, उपपाद, स्थान इन आठ अनुयोगों की भी विशेषता जाती है। द्रव्यलिंग और भावलिंग की अपेक्षा से भी साधु का वि धन प्राप्त होता है।

विविध प्रकार के संघ भी पाए जाते हैं। इस समय दिगम परम्परा में जो भी संघ हैं व सभी कुन्दकुन्द के अनुयायी एवं शान्ति सागर की परम्परा का अनुसरण करने वाले प्राय हैं। थोड़ा श शब्द श्रमण की पारिभाषिक दृष्टि से भी किया जाता है। आचा उपाध्याय, साधु तो श्रमण हैं ही। क्षुल्लक, ऐलक, भट्टारक, ब्रह्मचा प्रतिमाधारी श्रावक, श्राविका, क्षुल्लिका एवं आर्यिका, ब्रह्मचारि श्रमण संघ के स्तम्भ हैं।

४ ऐलक—जो ग्यारहवी प्रतिमा से युक्त, कौपीन वस्त्रधारी, दाढी, मूछ आदि का केशो का लोच करने वाला, पिच्छि-कमण्डलु-धारक एव मुनि सघ मे रहने वाला ऐलक होता है । पात्र-पाणी मे आहार लेता है और धर्मोपदेश भी करता है । तथा बारह तप का पालन करने वाला अतिचारो का भी निवारण करता है । 'भगवती', 'मूलाचार' मे इसकी विस्तृत चर्चा है । 'लाटी संहिता' मे इसके स्वरूप भेद आदि पर प्रकाश डाला गया है ।

५ क्षुल्लक—श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओ/भूमिकाओ मे उत्कृष्ट साधु की तरह चर्या करने वाला क्षुल्लक होता है । क्षुल्लक कौपीन और एक चद्दर का धारी, पिच्छि-कमण्डलुधारी, पाणिपात्री या भंडपात्री एक समय आहार चर्या साधुवत् जो करता है वह क्षुल्लक होता है । 'वसुनदि श्रावकाचार' म इसकी विस्तार से चर्चा की गई है । 'लाटी-सहिता' 'मूलाचार' 'भगवती आराधना' मे भी क्षुल्लक का स्वरूप दिया गया है ।

६ क्षुल्लिका—साधुवत् चर्या करने वाली, श्राविका की उत्कृष्ट भूमिका से युक्त, मुनिसंघ का एक अग आर्यिका के संघ के साथ चलने वाली क्षुल्लिका क्षुल्लक के नियमो का पालन करती है ।

७ आर्यिका—

अज्झयणे परियट्टे सवणे कहणे तहाणुवेहाए ।
तव विणय-सजमेसु य अविरहिदुवओग जुत्ताओ ॥

जो शास्त्र पढ़ने, अध्ययन करने, शास्त्र उपदेश देने, सुनने, अनुप्रेक्षा पूवक चिंतन करने में प्रवीण, सयम तप, विनय मे रत सदैव ज्ञानाभ्यास आर्यिकाओ की प्रथम भूमिका हैं । वे साधुवत् चर्या एवं व्रतो का पालन आदि भी करती हैं ।

८ भट्टारक—पूव में भट्टारक निष्परिग्रही एकान्तवासी थे । फिर समय के अनुसार भट्टारक साधु की चर्या, व्रतो का पालन करते हुए भी 'मठ' मे स्थित होने लगे । नग्न मुद्रा का परित्याग कर पिच्छि-कमण्डलु एवं वस्त्रधारी हो गए । ज्ञान उपदेश देते, श्रावको के शिथिलाचार को रोकते, धार्मिक आयोजन आदि को भी करवाने लगे । पूजा, प्रतिष्ठा, मन्त्र-तन्त्र आदि के प्रयोग के कारण वे समाज मे प्रतिष्ठित हो गए । वे साहित्य-सृजन, संरक्षण, स्थापत्य कला को जीवित रखते हुए धर्म प्रभावना को बढ़ाते हैं ।

धम को सही रूप से जानने एवं मानने वाले पुरुषों के जो
हैं, उनका आदान प्रदान जिस समूह में होता है, वह समूह
के नाम से पुकारा जा सकता है। ऐसा सम्प्रदाय सम्यक् रू
विचारों का आदान-प्रदान कर स्व पर कल्याण का मार्ग प्रशस्त
वाला होता है। ऐसा धम सम्प्रदाय-संग्रह विग्रह, क्लेश आदि से
रहकर 'सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय' वायुमण्डल का निर्माण
है। ऐसे सम्प्रदाय का समूह विशुद्ध स्थिति मे चलता है।

इस सहज अर्थ से भिन्न जो विकृत समूह सम्प्रदाय
हुए भी अस्तित्व मे है, वे ससार के समाने विविध प्रकार भेद
कर रहे हैं। पूर्व निर्मित एतद् विषयक ग्रन्थियो एवं वतमान में भी
सत्ता एवं भौतिक संस्कृति की आसक्ति के कारण तथा अधिकार
भूख से अहंता और ममत्व की पकड़ मे जो व्यक्ति आ चुके हैं,
इस प्रकार की कूट-राजनैतिक विचारणाओं से युक्त विविध प्रकार
संगठन बनाकर जनसमुदाय के बीच जाते हैं और उन्हें लुभावने
देकर आकर्षित करते हैं। कुछ धम के नाम पर उपरोक्त बातों
सम्पन्न करने के लिए जनता को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार
मत-पंथ और समूह बन जाते हैं। ऐसे समूहों को भी सम्प्रदाय
संज्ञा दी जाती है।

ऐसे सम्प्रदायों से व्यक्ति, परिवार समाज-राष्ट्र आदि
लिप्ताव विग्रह-तनाव और शस्त्र आदि की होड़ लगी हुई है।

इसका समाधान दूषित मनोग्रंथियों का विमोचन होने से
सम्प्रदाय का संस्कारात्मक सही रूप समझकर तदनुसार आचरण कर
से हो सकता है। ग्रंथि-विमोचन हेतु समीक्षण ध्यान पद्धति के उपयो
से व्यक्ति और समाज जीवन म तनाव शैथिल्य और सात्विक वातावर
बनाया जा सकता है।

प्रश्न आतंकवाद-पंजाब व अन्य का कारण क्या है और
इसका क्या समाधान है?

आचार्य श्री जी–इनका कारण भोग लिप्सा है। साथ ही
अधिकारों की आंतरिक लालसा, सामाजिक विषम वातावरण तथा
असामाजिक तत्वों के शोरगुल इत्यादि अनेक कारणों से उत्पन्न होते

(शेष पृष्ठ ५४ पर देखें)

आचार्य श्री नानेश की विलक्षण देन : समीक्षण ध्यान

● जानकी नारायण श्रीमाली

आचार्य श्री नानेश का उदयपुर वर्षावास समाप्ति पर था। कुछ प्रबुद्ध श्रावकों ने आचार्य प्रवर से निवेदन किया कि आप बहुधा प्रवचन मे समीक्षण ध्यान की चर्चा किया करते हैं। हमें इसके व्यवहार का दिशा बोध प्रदान करने की कृपा करें। इस पर आचार्य प्रवर ने अन्तर स्नेहपूर्वक अपनी साधना के अमृत को अपनी आत्मस्पर्शी अनुभूतियों को समाज के जिज्ञासुओं हेतु अभिव्यंजित किया और भौतिकता से यह समाज को आध्यात्मिक अन्तरावलोकन का सुअवसर मिला।

समीक्षण ध्यान आत्मदर्शन की साधना है 'आत्मान विद्धि'। चित्तवृत्तियों का निरोध करते हुए मन साधना से इसका प्रारम्भ किया जाना चाहिए। बहिर्मुखी चित्तवृत्तियों को नियंत्रित करते हुए अन्तर्मुखी बनना अपने अतरग में प्रवेश करना इस ध्यान की प्रथम सीढ़ी है। इसके लिए तीव्रतम संकल्प, स्थान एवं वातावरण की शुद्धता और समय की नियमितता होना उपयोगी है।

यथासंभव ब्राह्म मुहूर्त में विधिपूर्वक वंदन के पश्चात आत्म समीक्षण की अन्तरयात्रापूर्वक साधक चित्त का सृजन होता है। विनय-विवेक के साथ त्याग भाव की ओजस्विता से संयुक्त साधक मन की समस्त वृत्तियों को नियन्त्रित करते हुए विश्वमैत्री की उच्च भावना का आह्वान करता है। इस प्रकार प्रारम्भ हुई उसकी आत्म साधना शनैः शनैः अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार कर विश्वात्म साधना के पथ को प्रशस्त करती है।

समीक्षण शब्द का अर्थ क्या है? इसका अर्थ है—सम्यक् प्रकार से अथवा समतापूर्वक देखना, निरीक्षण करना। सम (धन) ईक्षण इन दो शब्दों के योग से समीक्षण शब्द बनता है। सम का अर्थ है समता अथवा सम्यक और ईक्षण का अर्थ है—देखना। अतः समीक्षण का अर्थ हुआ अपनी ही वृत्तियों को सम्यग्रीत्या समभाव पूर्वक निरिक्षित रूप से देखना। इस प्रकार समीक्षण ...

प्रज्ञा चक्षु है । यह एक व्यवहार दर्शन है, क्योंकि समाज के परिवेश में रहते हुए साधक मनोवृत्तियों का समायोजन करता है । इससे आदर्श स्वयं प्राप्त होता है और सहज योग सिद्ध होता है, जिससे प्रत्यक्ष साधना का प्रभाव दैनंदिन जीवन में भी प्रस्फुटित होता है। इससे अहं और मम का विसर्जन हो प्राणी मात्र से एकात्म स्थापित होता है । एकाग्रता और आत्म शक्ति का संचय होता है । श्वास प्रश्वास के द्वारा समीक्षण भी सधता है ।

परम श्रद्धेय समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानेश की पावन सन्निधि में साधक इस ध्यान साधना का अभ्यास करते हुए निरंतर आत्म और परमात्म कल्याण में रत है । गुरुदेव की सन्निधि में बोरीवली-बम्बई में आयोजित समीक्षण ध्यान साधना शिविर स्वयं में अनूठा था । श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ द्वारा रतलाम दिलीप नगर छात्रावास परिसर में समीक्षण ध्यान के स्थाई केन्द्र की स्थापना की गई है ।

समीक्षण से सद्विचार और समता के भाव जागृत होते और ये भाव ही विश्व कल्याण के हेतु हैं । आइए समीक्षण साधना से अपनी चेतना को जागृत करें और अलौकिक सत् चित् आनंद घन स्वरूप में प्रतिष्ठित होवें ।

—सचिव, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर

(शेष पृष्ठ ५२ का)

वाले चरम तनाव से मस्तिष्क में आतंकवाद की ग्रंथियां निर्मित हो जाती हैं । इन ग्रंथियों का सही तरीके से विमोचन जब तक नहीं हो जाता, तब तक यह तांडव नृत्य (आतंकवाद) कभी अधिक, कभी कम मात्रा में चलता रहेगा ।

इसका समाधान यहाँ प्रदि ...

... शोध, बीकानेर

आत्म-साधना में अनुशासन का महत्त्व

आचार्य शरद्चन्द्र के समान

जिस प्रकार चन्द्रमा अपने परिवार के मध्य शोभायमान होता उसी प्रकार श्रमण श्रमणी और श्रावक-श्राविकारूप चतुर्विध संघ में आचाय महाराज शोभायमान होते हैं । उन आचार्यों के बारे मे कहा या है—

> पंचिन्दियसवरणो तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो ।
> चउविह कसायमुक्को इअ अठारस गुर्णेहि सजुत्तो ॥
> पच महव्वयजुत्तो पच विहायार पालण समत्थो ।
> पच समिओ ति गुत्ती छत्तीस गुणो गुर मज्झ ॥

जिनमें ये ३६ गुण होते हैं उन्हें आचाय माना गया है । नके ३६ गुण हैं—वे पाचो इन्द्रियो को वश म रखते हैं, नव वाडो हित ब्रह्मचय का पालन करते हैं, पाचो महाव्रतो और पाचो प्रकार आचारो का पालन करते हैं, चारो कषायो (क्रोध, मान, माया, लोभ) से मुक्त होते हैं और पांचो समितियो तथा तीनों गुप्तियो का लन करने वाले होते हैं ।

ऐसे आचाय ही सक्षम होते हैं और वे ही अपने सघ को ठीक र सकते हैं । इसके विपरीत जो आचाय गुणो से हीन हों, स्वार्थी ों, अथवा अज्ञानी हों, वे कभी भी सघ की उन्नति नही कर सकते ।

आचार्य निष्पक्ष न्यायाधीश जैसे

य आचाय निष्पक्ष न्यायाधीश के समान होते हैं । जिस प्रकार याय के आसन पर बठकर न्यायाधीश यह नहीं देखता कि अपराधी मेरा पुत्र है, सम्बधी है, मित्र है या कोई स्वजन है, वह तो कानून के अनुसार निष्पक्ष होकर निणय कर देता है, उसी प्रकार आचार्य महाराज भी किसी के साथ पक्षपात नहीं करते, आगम के नियमों के अनुसार ही संघ की व्यवस्था करते हैं उनकी दृष्टि म सभी समान होते हैं ।

सोजत म प्रतापचन्द्रजी हाकिम बनकर आय । वहा उनके रिश्तेदार भी ज्यादा थे । तो उन लोगो ने सोचा कि अब धन कमाने

का अवसर आ गया । अपनी निजामत का हाकिम है तो अपने वारह हो गये ।

एक-दो बार उनसे बातें कीं तो उन्होने सुन लीं, लेकिन सबसे स्पष्ट शब्दो में कहा—देखो भाई ! मखाचन्द्र से कहो या से कहो, बराबर है । आप यह न समझें कि मैं आपकी निजामत आदमी हूं । सम्बन्धी हूं । मैं तो निष्पक्ष व्यक्ति हूं । कानून के अनु काम करूंगा ।

यह सुनकर सभी अपना-सा मुह लेकर रह गए ।

इसी प्रकार आचार्य भगवान भी निष्पक्ष होते हैं । वे यह नहीं विचारते कि अमुक शिष्य इतना गुणी है, तपस्वी है, यदि वह भी भूल करता है तो उसे भी आगम के अनुसार प्रायश्चित्त देते हैं । वे गुणो का आदर करत हैं पर गलती का दण्ड भी देते हैं । ऐसा है कि वे उनकी भूल को नजरअन्दाज कर जायें । उन्हें दण्ड न दें ।

आचार्य-पद गौरव-परीक्षण के बाद

आचार्य का पद बड़ा ही गौरवपूर्ण है । यह पद हर किसी को नहीं दिया जा सकता । पहले जब आचार्य बनाते थे तो उनका परीक्षण करते थे कि अमुक साधु इस पद के योग्य है भी या नहीं, अथवा यह इस भार को वहन कर भी सकता है या नहीं ? परीक्षण में यह योग्य प्रमाणित हो जाता था तब उसे आचार्य पद दे ।

उस युग के साधकों को भी आज की तरह पद की भूख नहीं थी । वे कभी यह नहीं कहते थे कि हम आचार्य बनें । अरे ! बनने की इच्छा क्यो करते हो, गुण धारण करो । यह मत कहो कि हमने सुध मन साध लिया है तो हमको आचार्य बना दो । इन पदों में क्या रखा है ? जब तक गुण धारण नहीं किये जायेंगे तब तक ये पद काम नहीं देंगे । फिर इन पदो से न तो संघ व्यवस्था में ही कोई सहायता मिलती है और न आत्मा की आध्यात्मिक उन्नति ही होती है । आत्मोन्नति का मार्ग है पांचो इन्द्रियों को वश में रखना, इन्हें संवर में काम में लगाना । ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार—इन पांचों आचारों में वह सम्पूर्ण होते हैं । उनका निरतिचार रूप से पालन करते हैं । इनके ज्ञानाचार, दर्शनाचार,

चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार में कोई कमी नहीं होती और यदि कमी होती है तो वे आचार्य बनने के योग्य नहीं होते। अपने विधिपूर्वक आचार पालन से ही वे भी संघ को अपनी आज्ञा मे चलाते हैं। वे आज्ञापालन करवाने मे कितने दृढ़ होते हैं यह पूज्यश्री जवाहरलालजी के जीवन की घटना से ज्ञात हो जाता है—

पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज के प्रमुख शिष्य थे घासीलालजी महाराज। वे ग्यारह भाषाओं के प्रकांड विद्वान थे और साध्वाचार भी भली भांति पालन करते थे। स० १९९० मे आचार्य ने उन्हें आज्ञा दी कि सम्मेलन में आओ। घासीलालजी ने दो बार आज्ञा का उल्लंघन कर दिया। आपस में ही गुरु शिष्य में मतभेद खड़े होने से आचार्य श्री ने उन्हें संघ से पृथक कर दिया। यह मोह नहीं किया कि इतना विद्वान शिष्य है तो उसकी भूल को क्षमा कर दिया जाय।

आज तो कहते हैं कि जैसे भी शिष्य हैं, समझौता करना ही पड़ता है। लेकिन इस समझौते का परिणाम क्या होता है? संघ अनुशासन मे शिथिलता आ जाती है। कूड़ा कचरा इकट्ठा हो जाता है और धीरे धीरे इकट्ठा होने पर ऊकरड़ी बनानी पड़ती है।

आज्ञाभंग चोरी है

मान लीजिए आपके छोटे बच्चे ने जेब से दस बीस पैसे या सिक्का निकाल लिया या दुकान के गल्ले से उठा लिया, उस समय आप उसे समझाएं नहीं ताड़ना न दें, बच्चा समझकर छोड़ दें, उसकी इस गल्ती को नजरअन्दाज कर दें तो क्या भविष्य में आपको पछताना नहीं पड़ेगा? अवश्य पछताना पड़ेगा।

इसी तरह संघ मे आचार्य श्री की आज्ञा का भंग करना भी चोरी है। चोरियां पांच प्रकार की बताई हैं—(१) राजा की चोरी, (२) संघ की चोरी, (३) आचार्य की चोरी, (४) सार्थवाह की चोरी, (५) गाथापति की चोरी। इसमें से आचार्य की चोरी यही है कि उनकी आज्ञा का भंग कर देना। यदि आज्ञाभंग कर देने वाला साधु किसी दिन आचार्य बन गया तो फिर वह अन्य साधुओं से अपनी आज्ञा का पालन कैसे करा सकेगा। क्योंकि कहा गया है—जैसा बुवे, वैसा लुवे।

ऐसी दशा में संघ का अनुशासन कैसे रहेगा, और कैसे संगठित रहेगा। सभी अपनी अपनी मर्जी चलायेंगे तो ... न बन जायेगी। इसीलिए अनुशासन आवश्यक है और आज्ञा भंग को चोरी की संज्ञा दी गई है।

अनुशासन आवश्यक

अनुशासन का महत्त्व सर्वविदित है। इसकी सभी क्षेत्रों में आवश्यकता है जाति, शिक्षा, समाज, राजनीति—सभी क्षेत्रों में अनुशासन रखना जरूरी है। ढिलाई सभी जगह हानिकारक होती है।

पहले जाति के मुखिया भी जरा-सी भूल होने पर कठोर दण्ड देते थे, स्वयं कठोरतापूर्वक नियमों का पालन करते थे और दूसरों से भी करवाते थे। जब तक यह कठोरता रही तब तक काम ठीक ढंग से चला, जाति प्रथा ने देश को लाभ ही पहुंचाया, समाज को संगठित रखा और जब से नियम पालन में ढिलाई आई तब से जाति में अनेक बुराइयां उत्पन्न हो गईं और आज तो प्रत्येक विद्वान कहता है कि जाति-प्रथा देश के लिए बहुत हानिकारक है, इसका नाश होना चाहिए।

सज्जनो! बुराई के प्रवेश का कारण क्या है? अनुशासन की कमी, नियम पालन में ढिलाई। यदि ऐसी बुराई धर्म संघ में भी प्रवेश कर जाये तो वह भी दूषित हो जाता है, उसमें भी दुर्गुण प्रवेश कर जाते हैं।

जमाली भगवान महावीर का भानज जमाई था। वह उत्कृष्ट आचरण करने वाला भी था। लेकिन उसकी श्रद्धा में अन्तर पड़ गया तब भगवान ने पहले तो उसे समझाया, फिर भी वह न माना तो संघ से पृथक कर दिया।

कल्पना करिए उस समय संघ में कितना अनुशासन था।

यह तो खैर, भगवान के समय की बात थी। उस समय तो भगवान स्वयं धरा को अपने चरण-कमलों से पवित्र कर रहे थे, किन्तु उनके निर्वाण के बाद भी धर्मसंघ का अनुशासन वैसा ही कठोर रहा।

आचार्य सिद्धसेन का नाम तो आप जानते ही हैं। उन्होंने कल्याणमंदिर जैसा भक्तिपूर्ण और चमत्कारी स्तव, प्रभावशाली स्तोत्र

थनाया । वे इतने विद्वान और प्रबल तार्किक थे कि उनकी समानता करने वाला उस युग में कोई नहीं था । उन्हें 'दिवाकर' की उपाधि प्राप्त थी । वे आचार्य वृद्धवादी से शंका समाधान करके प्रभावित होकर जैन श्रमण बन गये थे ।

उस समय जितने भी आगम थे, वे अर्धमागधी भाषा मे थे और ये संस्कृत भाषा के धुरंधर विद्वान थे । इन्होंने सोचा कि अर्ध-मागधी भाषा के जानकार कम हैं और सस्कृत को जानने वाले अधिक है तो इन पर संस्कृत भाषा मे टीका होनी चाहिए ।

पहले-पहल उन्होंने नवकार मन्त्र पर अठारह हजार श्लोक प्रमाण बड़ी सुन्दर और सारगर्भित टीका लिखी । उसमे प्रथम ही नव-कार मन्त्र को सस्कृत में इस प्रकार लिखा—

अर्हन्तसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम

अपनी टीका जब उन्होंने आचार्यश्री को दिखाई तो उन्होंने पढ़कर देखी । टीका अच्छी थी । पर आचार्यश्री ने पूछा—यह टीका किसकी आज्ञा से लिखी है ? क्या सघ की या मेरी अनुमति ली थी ?

"किसी की भी अनुमति नही ली ।" सिद्धसेन ने विनम्र शब्दो मे कहा ।

आचार्य ने टीका एक ओर रखते हुए कहा—सिद्धसेन ! यह तुमने शासन की सेवा नहीं, बगावत की है । तुम संघ से बाहर निकल जाओ ।

यद्यपि आज बहुत से लोग उपरोक्त मन्त्र का जाप करते हैं, ठीक समझते हैं, किन्तु आचार्यश्री को ठीक नहीं जंचा । इसका कारण यह है कि आगमों की कुंजी अर्धमागधी भाषा में ही निहित है । उस भाषा के ज्ञान बिना आगमों के भाव को नही जाना जा सकता । फिर दूसरी भाषा म उस भाषा के भावो को प्रगट करना असम्भव है । तीसरी बात यह है कि आगम भगवान के श्रीमुख की वाणी हैं और गणधरों ने उसे सूत्रबद्ध किया है । और नवकार मन्त्र तो चौदह पूर्वो का सार है । उसके एक-एक अक्षर काना, मात्रा में असंख्य-असंख्य रहस्य भरे हुए हैं, अनत शक्ति के बीज छिपे हुए हैं, इसी एक मन्त्र के जाप से जीव मुक्ति तक प्राप्त कर लेता है । उसे क्या संस्कृत भाषा में सम्पूर्ण रहस्य तथा शक्ति के साथ उतारना सम्भव है ? कभी नहीं ।

Discipline is the first and last for one and every

—अनुशासन प्रत्येक और सभी मनुष्यों के लिए सब कुछ

गुणों की पूजा

शतावधानीजी महाराज रत्नचन्द्रजी गुणों के भण्डार थे। बार उनका चातुर्मास जयपुर में हुआ। वहाँ केदारनाथजी ... थे। उनके यहां राधावेध का काम चलता था। वहाँ आपने ज्योतिष पढ़ना शुरू किया।

जयपुर का दीवान उस समय मिर्जा इस्माइल था। वहाँ प्रवचन का मौका आया। टाउन हाल में प्रवचन हुआ। वहाँ पंथियों और दिगम्बरियों के बड़े बड़े विद्वान थे। पांच हजार ... उपस्थित थी। लोग व्यंग्यपूर्वक सोच रहे थे कि यह ढूंढिया क्या ... त्कार दिखा सकता है।

व्याख्यान चल रहा था और लोग बीच-बीच में प्रश्न ... जा रहे थे। नोट करने वाले उन प्रश्नों को नोट करते जा रहे ... व्याख्यान के दौरान ही रत्नचन्द्रजी महाराज उनका समाधान करते रहे थे। व्याख्यान समाप्त होने पर उन्होंने क्रमपूर्वक सभी प्रश्नों ... उत्तर दे दिये। दिगम्बर और दादू पंथी विद्वानों ने शार्दूल और ... रिणी छन्दों में अपनी समस्यायें रखीं, उनका भी समाधान वहीं ... कर दिया, पाद पूर्ति कर दी।

यह देखकर सभी विद्वानों का गर्व खण्डित हो गया। ... सर्वोपरि सिद्धान्त शास्त्री २११ भाषाओं के जानकार थे। प्रोग्राम ... होने पर उन्होंने सिर झुकाया और मार्तण्ड की उपाधि दी।

सारांश यह कि उपाधि मांगने से नहीं मिलती, गुणों से ... ही मिलती है। संसार में सर्वत्र गुणों की पूजा होती है।

कहा भी है—

गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते

गुणों की सर्वत्र पूजा है, शरीर की नहीं। नाम से नहीं, काम से पूजा होती है। जो अच्छा काम करेगा, उसकी प्रशंसा संसार ... करेंगे आप ही होगी। —मिश्री विचार वाटिका से साभार

युवाचार्य विशेषांक

द्वितीय • खण्ड

युवाचार्य समारोह

विचार से व्यवहार तक युवाचार्य घोषणा की पृष्ठभूमि

△ चम्पालाल डागा

ान्त क्रांति के अग्रदूत श्रीमद् गणेशाचार्यजी के महाप्रयाण के चात् अप्रतिबद्ध विहारी शासन नायक आचार्य प्रवर श्री नानालालजी सा ने सर्व प्रथम मालव की उवरा धरा की रत्नपुरी रतलाम में २०२० में अपना प्रथम चातुर्मास पूर्ण किया और इसके साथ ही रंभ हुई एक अनवरत, अविश्रान्त यात्रा। पादविहारी आचार्य प्रवर -डग से अन्तहीन मग का और छोर नापते समाज को अपनी पीयूषिणी वाणी से आप्लावित, आस्नात् करते हुए चलते ही चले गए। रैवेति-चरवेति अर्थात चलते रहो, चलते रहो की अमरवाणी को चार्य प्रवर ने अपने अकंप, अडोल चरण युगलों की गति से साथक या।

परम पूज्य आचार्य प्रवर चलते ही रहे। भारत का परिभ्रमण रते ही रहे। वे मालवा, छत्तीसगढ़, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, जरात–सौराष्ट्र आदि का विहार करते रहे। आचार्य देव की अमृतभी वाणी, उनके क्रियावान, आचारवान आचरण से जन जन का पान्तरण होता रहा और एक जीवन व्रती श्रमण, एक निष्काम स्रष्टा । अन्तर हृदयों की श्रद्धा पुकार-पुकार कर नित्य नवीन नामों से भिहित करती चली गई।

मेवाड़ की कोख में बसे दांताग्राम का निश्छल, निष्कपट एक देहाती नाना अपनी साधना से अपने समर्पण से अपनी सेवा से नालाल बना और फिर जब उस सर्वस्व त्यागी ने विषमता से त्रस्त माज को समता की बंसी जैसी तान सुनाई तो श्रद्धान्वित समाज से सहसा पुकार उठा–ओ समता विभूति ! और आचार्य देव बन ए समता दर्शन प्रणता।

जन जीवन के सुख-दुःख की अनुभूति और –र्य की अमित

चाह लेकर जब नाना ने दलितों को गले लगाने का आह्वान ... वे बन गए धर्मपाल प्रतिबोधक/सहस्त्रों जनों के अज्ञान अधकार मिटाकर उन्हें धर्म का पथ प्रदर्शित कर, श्रेष्ठ जीवन मूल्यों से साक्षात्कार करा आचार्य-देव ने निकट भूत के ज्ञात इतिहास में अकल्पनीय अध्याय जोड दिया। वह भी सहज में। फिर धर्मपाल प्रणेता बन कर भी वैसे ही निरभिमानी वही—'नाना'।

आचार्य-प्रवर के पावन जीवन और उनकी शास्त्र वाणी से आकृष्ट हो शत शत युवाहृदय भौतिक सुख-सुविधाओं चकाचौंध को तृण की भांति त्याग कर जिनशासन के प्रति ... होने लगे। देश के कोने-कोने से धर्मश्रद्धालु युवक और ... आचार्य चरण में समर्पित होने को आने लगे। दीक्षाओं ... मच गई। श्रमण-श्रमणी और श्रावक श्राविका रूप चतुर्विध संघ शासन को प्रदीप्त करने लगा। आचार्य देव के प्रति सहस्त्रों हृदय अपनी श्रद्धा को स्वर देने के लिए मचलने लगे और ... स्वर मुखारित हुआ जिन शासन प्रद्योतक—किन्तु मध्याह्न के सूर्य भांति आलोक बिखेरता, पोषण करता आचार्य प्रवर का व्यक्तित्व उपाधियों से दूर आत्मध्यान में मौन था।

ध्यान के प्रति, साधना के प्रति आचार्य देव ... समर्पित होते चले गए। "ज्यों-ज्यों बूड़े श्याम रंग, त्यों-त्यों ... होई" कैसी विचित्र बात! ज्यों-ज्यों काले रंग में डुबाओ, त्यों-त्यों रंग और निखार पाता है। यह पहेली आचार्य प्रवर के व्यक्तित्व अवलोकन से सुलझती है। ज्यों ज्यों समाज उन्हें सम्मानित आकृष्ट करने लगा, ज्यों-ज्यों उपाधियों से आप्लावित करने लगा, ज्यों ज्यों हजारों कंठ से 'जय गुरु नाना' गूंजने लगा, त्यों-त्यों ... बनने की जगह आचार्य प्रवर अन्तर्मुखी ... होते गए। साधना ... विरसता सघनता में ... और ... जीवन को निमा ... आसजनी, गुणबोध—मार्ग ... न दूर से, ... तिरेक से और अपने ... त्म-समीक्षण योगी।

जिन ... स...

परण करते हुए सवत् २०४६ के चातुर्मास हेतु कानोड पधारे । कानोड की शस्य श्यामला, शिक्षा और विद्यावारिधि भूमि पर सफल चातुर्मास सम्पन्न कर आप भारत-गौरव मेवाड की वीरभूमि के ग्रामीण अंचलों में विहार करते हुए जब बम्बोरा पधार रहे थे तो सहसा स्वास्थ्य प्रतिकूल हुआ । कालचक्र की भांति अहर्निश समाज और राष्ट्र तथा प्राणी मात्र की कल्याण कामना हेतु परिभ्रमण करने वाले इस महान् परिव्राजक की सुदृढ़ काया भी विश्राम मांगने लगी । शरीर का भी अपना धर्म होता है । शरीर मे कमजोरी, थकान के लक्षण प्रादुर्भूत हुए । परम पूज्य गुरुदेव, निरन्तर ५० वर्षों से पादविहारी आचार्य प्रवर को उनके आज्ञानुवर्त्ती शिष्य वृन्द डोली मे उठाकर उदयपुर लाए । तडित गति से शासन नायक की अस्वस्थता का समाचार देश भर में प्रसारित हो गया । दल के दल सुश्रावक-सुश्राविका गण और वरेण्य समाज प्रमुख गुरुदेव की स्वास्थ्य पृच्छा हेतु उदयपुर उपस्थित हुए । मेवाड के धर्मप्रेमी चिन्तित हो दर्शनार्थ उपस्थित हुए । प्रमुख कुशल चिकित्सकों ने सभी प्रकार की जांच करके निष्कर्ष निकाला कि आपश्री के स्वास्थ्य लाभ के लिए पर्याप्त विश्राम लेना आवश्यक है । इतना अहर्निश श्रम स्वास्थ्य के लिए उचित नहीं ।

चतुर्विध सघ का भी एक स्वर से निवेदन रहा कि आपश्री को विश्राम लेना चाहिये किन्तु पूज्य गुरुदेव का एक ही प्रत्युत्तर रहा कि शरीर तो नश्वर धर्मा है । अत जिसका नाश अवश्यम्भावी है, उसके सरक्षण-सवर्धन के लिए मैं सघ हित रूप अपने दायित्व व कर्त्तव्य को उपेक्षित नहीं कर सकता । गुरुदेव शीघ्र ही अपनी दिनचर्या में यथापूर्व व्यस्त हो गए । समाज की चिन्ता का समाधान नहीं हुआ, वह गहराती गई ।

कमठ सेवाभावी स्थविरपद विभूषित, शासन प्रभावक श्री इन्द्रचन्दजी म सा ने गुरुभ्राता के नाते विशेष आग्रह पूर्वक निवेदन करवाया कि आपश्री को अपने शारीरिक स्वास्थ्य को देखते हुए अपने कार्यभार को हल्का करलें । साधु साध्वी समुदाय में से भी कई का इसी रूप में निवेदन आने लगा । श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के वरिष्ठ पदाधिकारियों और सदस्यों मे भी यही चिन्ता व्याप्त थी कि आचार्य श्री जी के स्वास्थ्य को देखते हुए भावी उत्तराधिकारी घोषित हो जाना

इस प्रकार संघ का विशालकाय अखिल भारतीय स्वरूप है और अखिल भारतीय स्तर पर महिला समिति, युवा संघ और बालक-बालिका मंडली के माध्यम से सभी क्षेत्रो मे चेतना और संगठन का कार्य कर रहा है । संघ के नव निर्वाचित संघ अध्यक्ष श्री रिधकरणजी सिपाणी और वतमान सहमंत्री श्री राजमल जी चोरडिया द्वारा प्रस्तुत महत्वाकांक्षी समता जन कल्याण योजना द्वारा संघ जरूरतमन्दों की सेवा योजना को अभिनव आयाम देने हेतु संकल्पित है ।

वर्तमान संघ अध्यक्ष श्री भंवरलाल जी बैद कलकत्ता द्वारा संघ की सक्रियता हेतु क्षेत्रीय समितियों के संगठन का सराहनीय कार्य किया गया है । स्थानीय श्री संघों और शाखा संयोजकों के सहयोग से संघ प्रगति पथ पर आरूढ है ।

युवाचार्य चादर प्रदान महोत्सव के सुअवसर पर सकल संघ की हार्दिक शुभकामना ।

—मंत्री, श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ समता भवन, बीकानेर

समस्याओ से घबराना कायरता को बुलाना

समस्याओं से घबराना यह व्यक्ति की कमजोरी-कायरता का द्योतक है । समस्याओं से झूझना यह जीवन्त जीवन का सूचक है । समस्याएं आपदाएं जो आती हैं वे नया ज्ञान देने के लिए आती हैं । ऐसा मानकर मानव को धैर्यता पूर्वक समस्याओं का सार निकाल कर उन्हें निस्सार कर देनी चाहिए ।

जिस मानव के जीवन में समस्याओं का आपदाओं का तूफान नहीं आया वह उनसे प्राप्त होने वाली शिक्षा, अनुभव से प्राय वंचित रह जाता है । अत समस्या को भी जीवन का एक अंग मानना चाहिए ।

—युवाचार्य श्री राम

एकात्मता

शरीर के किसी एक भाग मे कांटा चुभ जाय तो सारे शरीर में वेदना होती है, उसी प्रकार समाज मे किसी एक भाग को चोट पहुंचे तो सामाजिक प्राणी को अवश्य दुःख दर्द होगा ।

साधुमार्गीय परम्परा का गौरवशाली अध्याय

भंवरलाल कोठारी

श्रमण भगवान महावीर के शासन मे अनेकानेक श्रेष्ठ धाराएं विकसित हुई और उनमे साधुमार्गी परम्परा का महत्वपूर्ण स्थान है । साधुमार्गी परम्परा गुणपूजक समाज का प्रतिनिधित्व करती है। समाज में गुण पूजा के भाव से सात्विकता और गुण ग्राहकता के भावों का सृजन होता है और व्यष्टि तथा समष्टि जीवन में ऐसे रचनात्मक तथा परिष्कृत, सुसंस्कृत जीवन शैली की सातत्यपूर्ण स्थापना होती है । इस ध्रुव सत्य को हम साधुमार्गी परम्परा में दीक्षित बीकानेर के श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ में प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं।

साधुमार्गी परम्परा में महान क्रियोद्धारक आचार्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा से शास्त्रीय आचार विचार के दृढ़ अनुशीलन का एक वरेण्य अध्याय प्रवर्तित होता है और इसीलिए स्थानकवासी जैन समाज में आचार्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा एक युग सृष्टा आचार्य के रूप में समादृत हैं । आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा के उत्तराधिकारी के रूप में आचार्य श्री नानेश साधुमार्गी सम्प्रदाय के अष्टम पट्टधर हैं। आचार्य श्री नानेश ने भावी नवम् आचार्य के रूप में अपने शिष्य शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य घोषित किया है और इसी उपलक्ष में यह युवाचार्य चादर महोत्सव मनाया जा रहा है।

युवाचार्य चादर महोत्सव का यह महान गौरवशाली आयोजन राजस्थान नगरी बीकानेर के ऐतिहासिक जूनागढ़ में सम्पन्न हो रहा है । जिस जूनागढ़ में बीकानेर राजवंश के उत्तराधिकारी महाराजाओं ने राज्य शासन का उत्तराधिकार प्राप्त करते आए हैं वहीं गौरवशाली गढ़ के गरिमा मण्डित प्रांगण में महान विभूति आचार्य श्री नानेश अपने उत्तराधिकारी को आध्यात्मिक गुण गरिमा, श्रीसंघ संचालन के गुरुतर उत्तराधिकार सौंपने जा रहे हैं, यह बीकानेर श्रावक संघ के और 'धर्म की राजधानी बीकानेर' की धर्मभूमि के लिए महान हर्ष और गौरव की बात है ।

बीकानेर इस गौरव का सच्चा अधिकारी है । हुक्म-परम्परा

के आठो आचार्यों के चौमासे, शेखेकालीन आवास और मुक्त विचरण तथा उनके पावन विचारो से समृद्ध होने का सुअवसर बीकानेर को सर्दव सुलभ रहा है। यहां के सुश्रावक और सुश्राविकाएं ज्ञान ध्यान की धनी रही हैं।

एक असाधारण घटना—आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा बीकानेर में ही आचार्य पद पर आरूढ हुए थे। उनकी पावन निश्रा में ४ सुश्रावक दीक्षित हो रहे थे, किन्तु मस्तक के केश उतारने के लिए ५ नाई आ गए। अत पांचवां नाई उदास हो गया। नाई की उदासी ने एक श्रावक के सात्विक, सरल, करुणाशील मन को प्रेरित किया और उन्होंने मस्तक मुडाकर दीक्षा ग्रहण कर ली। सहसा जीवन के समस्त सुखोपभोगों को त्यागकर, भौतिकता की सभी चका॰ चौंध को उलांघकर सहज ही त्याग और सयम के पथ को स्वीकार कर लेना, बीकानेर की धरती के धर्मवीरा के ही बस की बात थी। यह इस महान त्यागमयी धरती की ही कोख थी, जिसने ऐसे धर्मशूरों को जन्म दिया। ऐसी गौरवशाली है बीकानेर की आचार परम्परा।

स्वर्णिम अध्याय—साधुमार्गी परम्परा में बीकानेर का योगदान भारत भर में समादृत है। यहा पर सन् ७२ मे एक साथ १२ दीक्षाएं आचार्य श्री नानेश की सान्निध्य मे सम्पन्न हुई थी, जिससे इतिहास के नए दौर में संघ का प्रवेश हुआ था। अभी १६ फरवरी को २१ भागवती दीक्षाए हुई हैं। यहां के सुश्रावक शास्त्रज्ञ एवं बोल थोकड़ों के महान् ज्ञाता रहे हैं, और साधु साध्वी के शिक्षण और समाज को स्वाध्याय के क्षेत्र में दिशा बोध देने मे अग्रणी रहे हैं। श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के ४ प्रमुख संघों में बीकानेर संघ अग्रगण्य है। यहीं पर सघ का अखिल भारतीय कार्यालय है और सघ के अखिल भारतीय मुख पत्र श्रमणोपासक का प्रकाशन होता है।

इस शिष्ट, सौम्य, शालीन, सात्विक और आध्यात्मिक संघ के गौरवशाली इतिहास मे आज युवाचार्य चादर महोत्सव से एक और स्वर्णिम अध्याय जुड रहा है। आज बीकानेर हर्ष से सराबोर है।

मैं इस अवसर पर समस्त धर्मानुरागियों का चादर प्रदान महोत्सव के अवसर पर हार्दिक अभिनन्दन करता हू।

भोगचन्द कोठारी मोहल्ला, बीकानेर

जिनशासन प्रद्योतक, समीक्षण ध्यानयोगी, समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालाल जी म सा द्वारा शास्त्रज्ञ, विद्वद्वर्य, तरुण तपस्वी मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा युवाचार्य घोषित

बीकानेर दि २-३-९२ आज स्थानीय श्री सेठिया धार्मिक भवन में प्रातः प्रार्थना के समय जिनशासन प्रद्योतक आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा द्वारा अपने उत्तराधिकारी के रूप में शास्त्रज्ञ, विद्वद्वर्य, मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य घोषित किया । युवाचार्य पद की इस महत्वपूर्ण घोषणा के समाचार विद्युत गति से पूरे नगर में फैल गए और देखते ही देखते प्रार्थना स्थल प्रवचन स्थल में परिणत हो गया । दल के दल श्रावक-श्राविका 'जय गुरु नाना' के घोष से वातावरण को गुंजाते हुए सेठिया धार्मिक भवन में इस पावन घोषणा और आयोजन के साक्षी बनने हेतु एकत्र होने लगे । बीकानेर के समीपस्थ गंगाशहर, भीनासर, उदयरामसर, देशनोक आदि से श्रद्धालु गुरुदेव की अमृत वर्षिणी वाणी से इस पावन घोषणा को सुनने के लिए पहुंच गए । चतुर्विध संघ उपस्थित हो गया और समवसरण जैसा दृश्य उपस्थित हो गया ।

गुरुदेव उच्च आसन पर विराजमान थे और उनके चारों ओर उनके आज्ञानुवर्ती संत वृन्द शोभित हो रहे थे । दक्षिण पार्श्व श्वेतवस्त्रधारी साध्वी समूह और बायें भाग [illegible] था । इस [illegible] शासन नायक के [illegible] गुणमंडल का निहार रहे थे । आचार्य श्री के सम्मुख और दायें बायें में ऊपर-नीचे सर्वत्र चतुर्विध संघ । श्रद्धालु सदस्य समुत्सुक भाव से विराज रहे थे । सभी के चेहरों पर हर्ष हिलोरें ले रहा था । सर्वत्र अपार आनन्द छाया हुआ था ।

आचार्य प्रवर का उद्बोधन—इसी हर्ष और आनन्द के [illegible] में शासन नायक आचार्य प्रवर ने [illegible] संक्षिप्त उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि—

[illegible] है । [illegible] अन्धकार और [illegible] इस [illegible] को [illegible] चतुर्विध संघ के [illegible]

ावना प्रस्तुत करना चाह रहा था और इसी कारण से गत २-३ दिन से आप सबके समक्ष प्रवचन सभा में भी उपस्थित नहीं हो पाया। उपस्थित न होते हुए भी, भीतर बैठा-बैठा भी मैं आपके संघ का ही काय कर रहा था अर्थात् चिन्तन कर रहा था। इसी गहन चिन्तन-मंथन के परिणाम स्वरूप मैं चतुर्विध संघ को एक सन्देश दे रहा हू। सन्देश देने की दृष्टि से ही मैंने संतो के साथ-साथ साध्वीवृन्द को भी बुला लिया है। आप सभी इस बात से परिचित हैं कि मेरी अन्तर वृत्ति का झुकाव ध्यान और योग साधना की ओर है। इसलिए मैं योग और ध्यान के प्रति अधिक समय देना चाहता हू।

अत अपने काय भार को हल्का करने की दृष्टि से शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को युवाचाय का पद भार सौंप रहा हू। इस युवाचार्य की घोषणा के सन्दर्भ मे मैं चतुर्विध संघ को भी सन्देश देना चाहता हू, यह सन्देश विद्वद्वय श्री शांति मुनिजी म सा आपको पढकर सुना देंगे।

आचाय प्रवर के मुखारविन्द से यह घोषणा होते ही उत्साही श्री सुशील जी बच्छावत की पहल पर सम्पूर्ण सभा हर्ष-हर्ष, जय-जय के घोष से गूज उठी।

देश

हर्ष हिलोर के कुछ शान्त होने पर विद्वद्वय श्री शान्ति मुनि जी म सा ने शासन नायक आचाय श्री नानेश का सन्देश चतुर्विध संघ के समक्ष ओजस्वी स्वरो में पढकर सुनाया। [गुरुदेव का सन्देश अविकल रूप से इसी अंक मे अन्यत्र प्रकाशित है।]

सन्देश को श्रवण कर सभा हर्ष से झूम उठी और युवाचाय श्री के जय-जयकार से भवन गूज उठा।

इसी समय विद्वान श्री गौतम मुनिजी ने अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहा कि "राम गुण गाया है, मोटा पद पाया है, आप सहारा है। उन्होंने प्रमोद भाव से युवाचाय श्री राम मुनिजी म सा पर बनाया हुआ एक भक्ति गीत भी सुनाया, जिसके बोल थे- "श्री राम मुनि गुणवान, बड़े पुनवान, बाल ब्रह्मचारी, ये उच्च क्रिया धारी" विद्वान श्री धर्मेश मुनिजी म सा भी सहज ही बोल उठे "हैं धि उ धो, श्री जग तारा, उदित हुआ है भानु प्यारा।"

अलौकिक व्यक्तित्व श्री शांति मुनिजी ने अपने [illegible]
प्रकट करते हुए कहा कि—आचार्य प्रवर जिस प्रकार गहर
और अनुचिन्तन करते हैं, वसा करना हमारे लिए संभव नहीं [illegible]
वे जिस प्रकार निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं, यह अलौकिक है। आच
प्रवर का व्यक्तित्व अलौकिक है। उनके समक्ष विचार विमर्श, [illegible]
वितर्क, चर्चा विचारणा सभी होता है पर वे अपने सहज सौम्य [illegible]
से सभी को तरल नरम बना देते हैं।

आचार्य श्री जी ने मुनि प्रवर श्री राम मुनिजी को युवा[illegible]
बनाया है। मैं स्वयं अपनी ओर से और सभी मुनि मन्डल की [illegible]
से आचार्य प्रवर को आश्वस्त करता हू कि हम आपके सन्देश-[illegible]
के अनुशीलन की भावना रखते हैं।

मैं श्री राम मुनिजी को बधाई देता हू। यह पद फूलों
शैय्या नहीं, कांटो का ताज है। सबको निभाने, साथ [illegible]
पड़ता है। आप हम सब साधक वर्ग, श्रमणी वर्ग को मधुर [illegible]
प्रदान करें। जो नेतृत्व पूज्य गुरुदेव से मिला है, वसा ही आपने [illegible]
यही अपेक्षा है। आपकी दृष्टि निष्पक्ष बनी रहे और आप [illegible]
बनें, यही शुभकामना है।

समता रस विद्वद्वय श्री प्रेम मुनिजी म सा ने अपने [illegible]
प्रकट करते हुए कहा कि मैं हमारे मनोनीत युवाचार्य श्री रामला[illegible]
म सा का अभिनन्दन करते हुए बोल रहा हू। अब तक की [illegible]
से समाज में समता रस घुला है। इस पवित्र संगठन की [illegible]
स्थिति में मोच नहीं आने वाली है। हमारे समक्ष ऐतिहासिक, [illegible]
निर्णय सामने आया है। आप सबको बधाई है। श्री राम मुनि
म सा को जो दायित्व मिला है, उसको निभाने में हम सब [illegible]
करेंगे। गुरुदेव के आदेशों पर चलेंगे और संगठन के गौरव को [illegible]
रखेंगे।

आदेश सर्वोपरि स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य प्रवर व्याख्याता
विजय मुनिजी म सा ने कहा कि आचार्य देव के संदेश, [illegible]
निर्देश का मैं अन्तर्हृदय से स्वागत करता हूं हम सब गुरु [illegible]
आदेश पर चलते रहे हैं। और चलेंगे। पूज्य भगवन् की [illegible]
आज्ञा से जो संदेश मिला उसकी परिपालना में हम कोई [illegible]

नहीं करेंगे । मैं तो यही चाहता हू कि पूज्य आचार्य गुरुदेव स्वस्थ रहें, युगो युगो तक आपका वरद हस्त हम पर बना रहे । साथ ही आचार्य श्री का क्या स्वागत करू वे स्वय स्वागत रूप बन चुके हैं । इसी भावना के साथ एक बार पुन आचार्य भगवन् को आश्वस्त करता कि आपका आदेश सदा सर्वोपरि रहेगा ।

निरन्तर विकास स्थविर प्रमुख विद्वद्वय श्री ज्ञानचन्द जी म सा ने फरमाया कि वीतराग देव प्रभु महावीर की परम्परा निराबाध रूप से गतिशील है । इसको अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए एव गतिशीलता के लिए आचार्य देव ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से जो निर्णय लिया वह इस परम्परा मे ऐतिहासिक कडी के रूप में उभर कर सामने आयेगा ऐसा विश्वास करता हू । साधना के पथ पर आचार्य भगवन् ने जो विकास किया है वह अद्भुत है । इस शासन को गति प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण निर्णय भी आचार्य भगवन् ने चतुर्विध सघ को दे दिया है । समयाभाव से मैं यही कहूगा कि शासन प्रभाव निरन्तर बढ़ता रहे वह बढ़ता ही चला जाय । चतुर्विध सघ के समक्ष मुनि प्रवर युवाचार्य के रूप मे उभर कर आये हैं । मैं शासन देव से मगल कामना करता हू कि इनके निर्देशन मे सघ का निरन्तर विकास होता रहे । जैन क्षितिज के शिखर पर शासन चमकता रहे । आगमिक धरातल पर पूर्वाचार्यों की परम्परा को ध्यान में रखते हुए समर्पणा के साथ आगे बढ़ते चले जाय । आचार्य प्रवर श्री विलक्षण प्रतिभा के समक्ष हम सब नतमस्तक हैं । युवाचार्य श्री समन्वय व समता मूलक सिद्धान्तो को ध्यान मे रखकर निरन्तर आगे बढ़ते रहें, बधाई के साथ यही शुभकामना ।

आदेश शिरोधार्य स्थविर प्रमुख विद्वद्वय श्री पारस मुनिजी म सा ने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि आचार्य भगवन् ने चतुर्विध सघ के लिए जो सदेश प्रसारित किया वह आचार्य भगवन् की विलक्षण बुद्धि का ही प्रमाण है । आचार्य भगवन् ने जो कुछ आदेश दिया आज्ञा प्रदान की वह चतुर्विध सघ के लिए शिरोधार्य है । मेरा स्वास्थ्य कुछ दिनो से अनुकूल नहीं है । इसलिए अधिक नहीं बोल पा रहा हू फिर भी जैसी आज्ञा प्राप्त हुई उसके अनुरूप कुछ बोलने की कोशिश की । आचार्य भगवन् के निर्देश का परिपालन करता रहूगा यह भाव

—परन्तु आचार्य देव यही फरमाते रहे कि "देखो क्या होता है।" यह कार्यक्रम इतना शीघ्र होने वाला है इसकी रात तक भनक भी नहीं थी।

आज आप सब हर्ष मना रहे हैं किन्तु मेरी दशा तो मैं ही जानता हूं। इस विराट् संघ के उत्तरदायित्व को संभालने में मैं स्वयं को सक्षम अनुभव नहीं कर रहा हूं। आचार्य भगवन् का वरद् हस्त व आशीर्वाद ही वह शक्ति प्रदान करेगा जिसके द्वारा आचार्य भगवन द्वारा सौंपा गया चतुर्विध संघ की सेवा का कार्य सम्पादित हो सकता है।

स्थविर प्रमुख मुनि भगवन्तों, अन्य साथी मुनिवरों व महासतियां जी म सा ने भी अपनी-अपनी भावनाए व्यक्त की है और मुझे बधाई दी है। यह बधाई की बात मैं समझ नहीं पा रहा हूं। बधाई जहां खुशियां हो वहां दी जा सकती है इस रूप में बधाई का पात्र तो चतुर्विध संघ हो सकता है।

मैं तो इस प्रसंग से इतना ही कहना चाहूंगा कि आचार्य भगवन् के आशीर्वाद व आप सभी के सक्रिय सहयोग से पूज्य गुरुदेव की भावना के अनुरूप मैं सेवा कार्य सम्पादित कर सकूं। इसी भावना के साथ विराम।

युवाचार्य श्री के सारगर्भित प्रेरक उद्‌बोधन के पश्चात् सभा संचालक श्री सुशील जी बच्छावत ने पूज्य गुरुदेव को बधाई देते हुए कहा कि हे आचार्य प्रवर ! आपको श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक संघ एवं श्री समता युवा संघ बीकानेर हार्दिक बधाई देते हैं। श्री बच्छावत ने यह बधाई अंग्रेजी में बोलकर तथा इतने मुक्त भाव से दी कि आचार्य प्रवर सहित सभी सभासद मधुर हास्य में निमग्न हो गए। इतने में श्री सुशील जी ने गंभीर होकर भावमय मुद्रा में सभा में संगीत के मधुर बोल बिखेर दिये। चादर को लक्ष्य करके श्री बच्छावत ने कहा—

गुरु जवाहर, गणेश ने ओढ़ी, नानेश ने निर्मल कीनी
राम मुनि को ऐसी ओढ़ाई, दुनिया दंग रह गई
चदरिया झीनी रे झीनी—मोरे राम
राम नाम रस भीनी, चदरिया झीनी रे झीनी
प्रमोद के इसी वातावरण में बीकानेर संघ की ओर से श्री

अत दि ३ ३-९२ को पुन श्रद्धाभिव्यक्ति का क्रम जारी रहा।

श्री सेठिया धर्मस्थान में प्रात ९ बजे से ही चतुर्विध संघ के श्रद्धालु अपना-अपना स्थान ग्रहण करने लगे थे और सघ नायक जिन-शासन प्रद्योतक आचाय प्रवर के शुभागमन के साथ ही हप की लहर सर्वत्र प्रसरित हो उठी। शुभ्रवसना, सत्वगुण प्रधाना महासतीवृन्द ने गुरुदेव के पधारने के साथ ही समवेत स्वरों में वन्दना के निम्न बोल मुखरित किए--झिलमिल ज्योत्सना में जो करते स्नान हैं—

महासती वृन्द के इन श्रद्धा-भक्ति पूण मधुर स्वरो मे शत-शत श्राविका कंठो ने सहभागी बन वातावरण को श्रद्धा और समपण के भावो से ओत प्रोत कर दिया।

महासती श्री अनुपमा श्री म सा ने भी अपने हृदयोद्गारों को निम्न प्रकार प्रकट किया—

नाना दीपो को जलाने वाले हो, तुम जीवो को तराने वाले हो
वंदामि, नमम स्वामी करती, तुम दु खो को मिटाने वाले हो
अभिनन्दन की ये मगल घड़ियां, ये मगल अर्पण
देख अनुपम छटा निराली, मैं मगल गीत गु जाती हू

तभी चार महासती जी ने सह गीत के माध्यम से निम्न प्रकार अपने भाव व्यक्त किए—

छाई रे छाई बीकानेर में हप की लहर मनभावनी
पूज्य प्रवर की पावन प्रभा, लहरी रे होकर प्रभा
श्रीसंघ की गोदी में एक लाल अनुपम भेंट किया
राम बना अभिराम आज ये तेज किरण मनभावनी

नवदीक्षिता महासती श्री कुमुद श्री म सा ने कहा—

श्रद्धा की तुच्छ भेंट ले, तेरे द्वार पर आई
कृपापात्र हो मान, मधुर मेहर की नजर कर देना

महासती जी ने आगे कहा कि भौतिक जगत मे देखने को मिलता है कि हम जिस वस्तु की अभिलाषा करते हैं, जब वह प्राप्त होती है तो खुशी कम हो जाती है पर अध्यात्म जगत में विपरीत नजारा देखने को मिलता है। आचाय प्रवर कोहिनूर हीरे के पारखी हैं। आप श्री की पारखी समझ से हम कृतकृत्य हुए हैं। आप श्री ने अपने उत्तरा-धिकारी के रूप में मुनि प्रवर श्री राममुनि जी म सा की घोषणा

श्री भृंगार के वीर अमूल्य रत्न चुना है तूने
अमन को चमन को गगन को नाज है तुझ पर

धर्मप्रेमियो ! कल अरुणोदय की वेला मे हम यहां आए तो
र दिल खुशियो से झूम रहा था । साधुमार्ग की परम पवित्र पर-
रा मे अन्तर को आनन्दित करने वाला यह प्रसंग हम सभी के समक्ष
स्थित हुआ । गुरुदेव ने अपने सम्पूर्ण साधनाकाल मे और अपने
प्रमित जीवन की अतर्यात्रा में आज की घोषणा द्वारा एक विशिष्ट
वसर चतुर्विध संघ को प्रदान किया है । गुरुदेव ने एक अनुपम व्य-
क्तित्व हमारे सामने रखा है, जो हमारे जीवन को उन्नत करेंगे । देश-
ाक के भूरा परिवार मे जन्मे श्री राम मुनिजी म सा मेरे परिवार
ग्राम के हैं भ्रातागण के नाते भी मैं उनकी आभारी हू । भ्राता
रूप से मैं रक्षा बन्धन के माध्यम से दावानल रूपी संसार से पार
राने के लिए प्रबल सहयोग प्रदान करने की भी युवाचार्य श्री जी
प्रार्थना करती हूं ।

कार्यक्रम के कुशल संयोजक श्री सुशील बच्छावत ने भी गीत
ा एक पद प्रस्तुत किया—

राम गुण गाया है, मोटा पद पाया है
आप सहारा है, नाना गुरु प्यारा है
शृंगार के लाला हो, शासन प्रतिपाला हो
अष्टम पाट प्यारा है, नाना गुरु हमारा है

सके बाद युवाचार्य श्री राम मुनिजी म सा की संसारपक्षीय बहिन
ीमती कमला देवी सांड ने भजन के माध्यम से अपने अन्तरहृदय के
ाव प्रकट किए—नगरी-नगरी द्वारे द्वारे, महिमा है नानेश की

आज जगत में खुशिया छाई, राममुनि महाराज की
होट लगी गुणगान की

श्री राममुनिजी म सा की संसारपक्षीय भतीजी वैराग्यवती
ुश्री सुमन भूरा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जब जब
आप श्री के युवाचार्य बनने का समाचार मिला तो ऐसे कुल म जन्म
लेने को मन मे महान् गौरव हुआ । अपार खुशी हुई ।

सौम्य भाव के दीपक, अपूर्व जगाए
अन्तरपथ के पाथी मुनिवर मन भाए

आज योग्य गुरु ने योग्य शिष्य को उत्तराधिकारी अभिव्यक्त किया है।

बीकानेर संघ के महामंत्री श्री नथमलजी सिपी ने कहा कि जिस संघ पर इन्द्र की कृपा हो, पारस, प्रेम, शांति हो, विजय, मंगल हो, ज्ञान की गंगा बहे,वहां कोई कमी आ ही नहीं सकती। केसर, पान, केवड़ा, कस्तूरी, चन्दन की महक फैलती है, उस चतुर्विध संघ को संभाला का दायित्व आज गुरुदेव ने युवाचार्य श्री को सौंपा है। आप श्री सौरे इस दायित्व को निभावें, यही कामना है। गुरुदेव से निवेदन है कि चादर महोत्सव भी इसी चतुर्विध संघ के समक्ष बीकानेर में होना चाहिए।

श्रीमती कुसुम देवी सेठिया ने भी आचार्य प्रवर से विनंती की कि आपश्री ने विलक्षण, विचक्षण शक्ति के बल पर संघ इतिहास में एक महत्वपूर्ण कड़ी जोड़ी है, अब आपश्री चादर महोत्सव और पावन का अवसर भी बीकानेर संघ को प्रदान करने की कृपा करें।

उदासर श्रीसंघ ने भी विनंती की कि चादर महोत्सव का आयोजन उदासर में करने की कृपा करें। आपश्री के आगमन की प्रतीक्षा में 'गिणते गिणते घिस गई, म्हारी आंगलियां री रेखा' अब आप उदासर पधारने की कृपा करें।

गंगाशहर भीनासर संघ के अध्यक्ष श्री [illegible] जी [illegible] ने गुरुदेव के प्रति आभार व्यक्त करते हुए विनंती की कि चादर दिवस और चातुर्मास का अवसर प्रदान करने की कृपा करें।

देश भर में हर्ष श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ के मंत्री श्री [illegible] जी [illegible] ने उपस्थित चतुर्विध संघ को सूचित किया कि आचार्य प्रवर की घोषणा का समाचार [illegible] सारे देश में फैल गया और देश भर से पुनः प्राप्त सन्देशों में आपकी घोषणा का हार्दिक स्वागत किया गया है। श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्री भंवरलाल जी बैद और संघ प्रमुख श्री [illegible] जी [illegible], पूर्व अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरड़िया सहित सभी संघ प्रमुखों के प्राप्त सन्देशों में आपश्री के निर्णय पर प्रसन्नता व्यक्त की गई है।

अब चादर दिवस पर सभी [illegible] की कामना करते हैं। आपश्री जहां चाहें, वहीं के लिए घोषणा करें, यह [illegible] की [illegible] हो, यह सभी चाहते हैं। ऐसे में गंगाशहर भीनासर [illegible]

देवस करने का निवेदन भी आपश्री की सेवा में प्रस्तुत करना चाहता हू ।

इसके बाद मत्री श्री डागा जी ने अखिल भारतीय सघ की ओर से अपना प्रभावशाली लिखित वक्तव्य पढकर सुनाया । [श्री डागा जी का अविकल अभिकथन इसी अंक मे अन्यत्र प्रकाशित है ।]

गीत—इसी समय छत्तीसगढ़ की वैरागिन बहिनो ललिता, सगीता और सरिता ने भावविभोर कर देने वाला गीत गाया—"धम-ध्यान धारी हैं, युवाचाय वर, गुरु कृपा की मधुर महर"

नींव का पत्थर—सफलता का शिखर-विद्वद्वय स्थविर प्रमुखमुनि श्री प्रेमचदजी म सा ने अपना पावन उद्बोधन व्यक्त करते हुए कहा कि मैं पूव वक्ताओ के द्वारा व्यक्त किये गये विचारा पर बहुत समय से चितन कर रहा हू । आचार्य प्रवर की घोषणा के सम्बन्ध मे प्रतिक्रिया स्वरूप असंख्य जना ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनमे युवाचाय श्री के अभिनन्दन और बधाई के भाव प्राथमिकता लिये हुए हैं । जबकि इस अवसर पर हमे व युवाचार्य श्री को अपने दायित्वा के प्रति विशेष चितनशील बनना चाहिय । वास्तव मे आचाय प्रवर की इस घोषणा ने यह प्रमाणित कर दिखाया कि चतुर्विध सघ ने एक महान लक्ष्य की सिद्धि कर ली है । बात लगभग आज से ३० वर्ष पुरानी है जब उदयपुर मे स्व श्रीमद् गणेशाचार्य ने अपने उत्तराधिकारी युवाचाय की घोषणा करके, वतमान आचाय प्रवर के सशक्त कधा पर गुरुत्तर उत्तरदायित्व सौंपा था । तब की और आज की परिस्थितियो की जरा तुलना कीजिए । उस समय यह सम्प्रदाय एक उजडे हुए उद्यान की तरह था । श्रमण संघ के उपाचाय पद का परित्याग कर स्व आचार्य प्रवर ने अति साहस के साथ एक विरोधी वातावरण को स्वीकार किया था । चारों ओर विरोध एवं निराशा के स्वर मुखरित थे । वैचारिक अधिष्ठान पर शुद्धाचार के प्रति अचल अविचल श्रद्धाधारी स्व श्रीमद् गणेशाचाय के उत्तराधिकारी आचाय श्री नानेश को प्रतिप्रतिकूल परिस्थितियां उपहार स्वरूप वसीयत में मिली थी पांच सात वृद्ध सन्त दो गुरु भाई तथा अत्यल्प सति वृन्द । लोग कहा करते थे कि इने गिने ढाई सन्त से ये नानालालजी क्या जिन शासन की प्रभावना करेंगे ।

जब आचार्य श्री नानेश नये नये ही आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए थे तब लोग यह कहते थे कि "वर्तमान आचार्य श्री मे तीन आचार्यों की झलक दिखाई देती है।" स्व जिन शासक प्रभावक आचार्य श्री श्रीलालजी म सा जैसी संयम निष्ठा, ज्योतिधर युगद्रष्टा आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा जैसी प्रखर प्रभावकता और स्व श्रीमद् गणेशाचार्य जैसी-शांति शुद्धाचार प्रियता। जन समूह इन रूपो मे आचार्य श्री नानेश के दर्शन कर अपने आपको कृतार्थता एवं धन्य-शीलता का अनुभव कर रहा था। इस जन जीवन की धारणा से आगे बढ़कर आचार्य श्री समता दर्शन का सृजन कर समता विभूति के रूप मे प्रसिद्ध हुए। और आपने अपनी क्षमता को प्रयोगात्मक रूप देते हुए मालव प्रान्त मे दुर्व्यसन मुक्ति अभियान के अंतर्गत अछूतोद्धार के कार्य को हाथो मे लिया। हजारो हजार (बलाई परिवारो को) अनु-सूचित जन जाति के लोगो को धर्मपाल संज्ञा प्रदान कर धर्मपाल प्रतिबोधक का विरूद प्राप्त किया। तत पश्चात शताधिक दीक्षाए प्रदान कर जिन शासन प्रद्योतक के रूप मे प्रख्यात हुए। फिर मान-सिक तनाव ग्रस्त जन समूह पर करूणा से आप्लावित हो समीक्षण ध्यान की अनुभूत प्रक्रिया का विधिवत् सूत्रपात कर "समीक्षण ध्यान योगी" का एक सुंदर आकार ग्रहण किया है।

वर्तमान आचार्य श्री नानेश मे पूज्य श्री श्रीलालजी म सा जैसा ध्रुव निश्चय जवाहराचार्य जैसी सृजन भावना और स्व श्रीमद् गणेशाचार्य जैसी सजगता का अद्भुत संयोग है। मैं स्मरण कर रहा हूँ कि आचार्य श्री नानेश सर्वप्रथम जब मालव प्रान्त में विचरण कर रहे थे तब इन्हें विघ्न संतोषी लोग रतलाम-मालव मे आना ही भुला देना चाहते थे, कहते थे कि-नानालालजी के साथ ऐसा षड्यंत्र करना कि वे रतलाम या मालव मे आना ही भूल जाय। कितनी अप्रतिम थी इन आचार्य श्री की सहिष्णुता, संयम निष्ठा और अविचल धर्म शीलता, आप कल्पना कीजिये कि इस प्रकार के उजड़े चमन को सर-सब्ज बनाने में आचार्य श्री को कितना परिश्रम करना पड़ा होगा?

आज आचार्य श्री नानेश ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य श्री रामलालजी म सा को अपने ज्ञान ध्यान सिंचित एक रमणीय नन्दनवन तुल्य सरसब्ज बाग सौंपा है, जिसमें घोर प्रतिभा

वस्तुत इस स्थिति को शून्यवत् कहा जाय तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी इस स्थिति का लाभ उठाने के लिए मालव, मेवाड़ अनेक अराजक तत्त्व सक्रिय हुए । हर हालत में क्रांति के इस को अंकुरित, पल्लवित पुष्पित और फलीभूत न होने दिया जाय, इस प्रकार के दूषित संकल्पों की अज्ञान अंधकार मयी घोर तमिस्रा को चीरकर आचार्य श्री नानेश ने अपने बचपन के "गोवर्द्धन" नाम को सार्थक कर दिखाया । जैसे—कर्मयोगी श्री कृष्ण को समुद्र विजय ने समुद्र के किनारे निज वन मे राज्य उत्तराधिकार समर्पित किया था जहा कोई गाव नगर महल या झोंपड़िया रथ और हाथी घोड़े नहीं थे । यहा तक कि श्री कृष्ण को पहनाने के लिए रत्न जटित स्वर्ण मुकुट भी उपलब्ध नहीं था ऐसी स्थिति में यदुवंशियो ने उस निर्जन वन से मोर के पंखों को एकत्रित कर उन पंखों से निर्मित मुकुट पहनाकर राज्याभिषेक किया अर्थात् श्री कृष्ण ने जो कुछ प्राप्त किया वह अपने पराक्रम से अर्जित था ।

इसी प्रकार वर्तमान युगीन-गोवर्द्धन श्री कृष्ण आचार्य श्री नानेश ने जो कुछ भी अर्जित किया है वह अपने बल पराक्रम से। आचार्य श्री नानेश ने उजड़े हुए इस उद्यान को एक सरसब्ज चमन नन्दनवन के रूप मे रूपान्तरित कर अपनी अद्वितीय कार्य क्षमता का परिचय दिया है । अपने स्व गुरु श्रीमद् गणेशाचार्य से जो क्रांति की मशाल आपको वसीयत स्वरूप प्राप्त हुई थी उसे सुदूरवर्ती ग्राम नगरों में फैलाकर जन भ्रान्तियों का निराकरण करते हुए जिनेश्वर देवों के शाश्वत मानवता के मूल्यों को सुप्रतिष्ठित किया और समाज को सुपथ दिखाया है ।

मुझे स्मरण है कि जब मैं वैरागी था तब संघ निर्माण में श्रावक श्राविका वर्ग की भी एक उल्लेखनीय भूमिका रही। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के प्रति श्रावक श्राविका वर्ग का अटल निष्ठा समर्पण भाव रहा है मुझे स्मरण है कि श्री सुन्दरलालजी ताँतेड़ उदीसा के प्रवास में टाट गाव आये थे । उस समय की इनकी धर्मशीलता कर्मठता और विराटता का विचार करता हूं तो मुझे लगता है कि वे अपने आप में विरल थी । इस रूप में संघ के माध्यम से भी एक गौरवशाली इतिहास का सृजन हुआ जिसे भुलाया नहीं जा सकता ।

जब आचार्य श्री नानेश नये नये ही आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए थे तब लोग यह कहते थे कि "वर्तमान आचार्य श्री मे तीन आचार्यों की झलक दिखाई देती है।" स्व जिन शासन प्रभावक आचार्य श्री श्रीलालजी म सा जैसी संयम निष्ठा, ज्योतिर्धर युगद्रष्टा आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा जैसी प्रखर प्रभावकता और स्व श्रीमद् गणेशाचार्य जैसी-शांति शुद्धाचार प्रियता। जन समूह इन रूपो में आचार्य श्री नानेश के दर्शन कर अपने आपको कृतार्थता एव धन्यशीलता का अनुभव कर रहा था। इस जन जीवन की धारणा से आगे बढकर आचार्य श्री समता दर्शन का सृजन कर समता विभूति के रूप मे प्रसिद्ध हुए। और आपने अपनी क्षमता को प्रयोगात्मक रूप देते हुए मालव प्रान्त मे दुर्व्यसन मुक्ति अभियान के अन्तर्गत अछूतोद्धार के कार्य को हाथो मे लिया। हजारो हजार (बलाई परिवारो को) अनुसूचित जन जाति के लोगो को धर्मपाल संज्ञा प्रदान कर धर्मपाल प्रतिबोधक का विरूद प्राप्त किया। तत् पश्चात् शताधिक दीक्षाए प्रदान कर जिन शासन प्रद्योतक के रूप मे प्रख्यात हुए। फिर मानसिक तनाव ग्रस्त जन समूह पर करूणा से आप्लावित हो समीक्षण ध्यान की अनुभूत प्रक्रिया का विधिवत् सूत्रपात कर "समीक्षण ध्यान योगी" का एक सुन्दर आकार ग्रहण किया है।

वर्तमान आचार्य श्री नानेश मे पूज्य श्री श्रीलालजी म सा जैसा ध्रुव निश्चय जवाहराचार्य जसी सृजन भावना और स्व श्रीमद् गणेशाचार्य जैसी सजगता का अद्भुत संयोग है। मैं स्मरण कर रहा हू कि आचार्य श्री नानेश सर्वप्रथम जब मालव प्रान्त मे विचरण कर रहे थे तब इन्हें विघ्न संतोषी लोग रतलाम-मालव में आना ही भुला देना चाहते थे, कहते थे कि-नानालालजी के साथ ऐसा षड्यंत्र करना कि वे रतलाम या मालव मे आना ही भूल जाय। कितनी अप्रतिम थी इन आचार्य श्री की सहिष्णुता, सयम निष्ठा और अविचल धैर्यशीलता, आप कल्पना कीजिये कि इस प्रकार के उजडे उद्यान को सरसब्ज बनाने मे आचार्य श्री को कितना परिश्रम करना पडा होगा?

आज आचार्य श्री नानेश ने अपने उत्तराधिकारी के रूप मे युवाचार्य श्री रामलालजी म सा को अपने कठोर श्रम सिंचित एव रमणीय नन्दनवन तुल्य सरसब्ज बाग सौंपा है, जिसमें घोर प्रतिभा

सम्पन्न, सेवा समर्पित, घोर तपस्वी विविध गुणालकृत विद्वान, लेखक, समीक्षक एवं प्रखर वक्ताओ के रूप में श्रमण श्रमणियों एक विशाल समुदाय नाना प्रकार के पुष्पों और फलो के रूप में सयम सुरभि विकीर्ण करते हुए जिन शासन की प्रभावना में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। ऐसा सुरम्य नन्दनवन उद्यान हमारे युवाचार्य श्री को पूज्य आचार्य भगवन से विरासत मिला है जिसे और अधिक सिंचन देकर विकसित करना युवाचार्य श्री की अपनी प्रतिभा पर निर्भर करता है—

इस सम्प्रदाय मे जब जब भी युवाचार्य चयन के प्रसग निर्मित हुए तब तब इस सघ को विघटन एव संघर्षों का सामना करना पडा है निर्माण के पूर्व कुछ खोना इस सघ की अब तक की नियति रही है। किन्तु आचार्य श्री नानेश ने इस विघटन बिखराव की स्थिति को जरा भी हवा नहीं दी, बल्कि सारे सघ को एक सूत्र में आबद्ध कर स्थविर प्रमुखो का सुरक्षा कवच बनाकर सघ के लिए समुज्ज्वल भविष्य की ओर आगे बढ़ते रहने का मार्ग प्रशस्त किया है। यह आचार्य श्री नानेश की दूरगामी निर्णायक क्षमता एव विलक्षणता का उपहार युवाचार्य श्री को अभूतपूर्व बसीयत है।

हमारे युवाचार्य श्री भाग्यशाली हैं, जिन्हें आचार्य श्री नानेश जैसे अनुभवी शिल्पी के द्वारा निर्मित अनेक सजीव प्रतिमाएं जिन शासन की जाहोजलालो के लिए उपलब्ध है। अब आवश्यकता है कि युवाचार्य श्री इन सभी प्रतिमाओ को उचित रंग दे, समुचित मनमन्दिर मे प्रतिष्ठित करने की नियोजकता सिद्ध कर दिखलाए।

साधुमार्ग परम्परा के प्रवर्तन एवं विकास मे आचार्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा मे लेकर आज तक युवाचार्य घोषणा की अति महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। युवाचार्य अपने व्यक्तित्व से सघ की नींव का पत्थर बनता है तथा यही आगे चलकर अपने कृतित्व से शिखर कलश का स्थान ग्रहण करता है।

चित्तौड मे हमारे युवाचार्य श्री को अधिकार प्रदान करने मुनि प्रवर के रूप मे प्रस्तुत किया गया था यह था—युवाचार्य पद का गर्भाधान, इसके पश्चात् कल (२ मार्च १९९२) युवाचार्य पद की घोषणा कर इन्हें जन्म दे दिया है अब युवाचार्य की चादर ओढा

मूरज पूजा का रूप देना बाकी है । बीकानेर सघ का जो आग्रह है वह आपके अपने गौरव के अनुरूप है । आपका आग्रह आग्रह ही रहे, दुराग्रह न बने । आचार्य श्री की अन्तरात्मा की साक्षी से जो कुछ भी हो वह हम सबके हित मे होगा ।

ढेर सारे दायित्वो के निर्वाह का गुरुत्तर बोझ युवाचाय श्री पर डालते हुए मैं जिन शासन देव से एवं आचार्य भगवन् से निवेदन करूगा कि वे हमारे युवाचाय श्री को आशीर्वाद के रूप मे वह शक्ति प्रदान करें जिससे हमारे युवाचार्य आपश्री जी की तरह आत्मीय स्नेह सद्‌भाव एवं विश्वास-अर्जित करते हुए मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस चतुर्विध सघ का कुशलता पूर्वक सचालन और संवर्द्धन करते रहें । इन अर्थो मे युवाचार्य श्री के प्रति ढेर सारी बधाईया एव अभिनन्दन समर्पित करता हू ।

गोद मे बालक—घोषित युवाचाय श्री राममुनिजी म सा ने कहा कि कल जब आचाय-प्रवर ने मुझे यह दायित्व देने का सकेत किया तो सहसा मैं स्वय को एक गुरुत्तर उत्तरदायित्व के भार तले दबता अनुभव कर रहा था पर जब गुरुदेव ने कहा कि चतुर्विध सघ की गोदी मे मैं यह बालक सौंप रहा हू तो सारा भार हल्का हो गया । गोदी के बालक को कभी किसी बात की चिन्ता होती ही नहीं । गुरुदेव द्वारा व्यक्त भावनाओं से मुझे बहुत आधार एव अवलंबन मिला । यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है ।

परमपूज्य गुरुदेव के दांत मे दर्द था जो कल निकाला गया है, अत बोलने का प्रसग आज नही बन पाया । मंगल पाथेय नहीं मिला उनका दर्शन ही मगलमय है । सभी समता रस का पान करें । आध्यात्मिक उत्क्रांति हेतु कटिबद्ध हों और उसे आगे बढ़ावें ।

आज नोखा से पारख परिवार दोष निवारण हेतु संघ लेकर आया है । नश्वर काया के प्रति व्यामोह न रखते हुए आध्यात्मिक तत्व को समझना चाहिये । यह ससार धर्मशाला है, यहां आवागमन चलता रहता है । अत हमे अपने चैतन्य आत्मा और सम्यक् दृष्टि भाव के प्रति सजग रहना चाहिये ।

इसके पश्चात् मगलपाठ पूर्वक आज का पुण्य प्रसग सोल्लास सुसम्पन्न हुआ ।

मरु भूमि, सारस्वत नगरी, भारत के सीमा ऐतिहासिक-बीकानेर-नगरी के भव्य दुर्ग जूना के राजप्रासादो में गौरव मडित चादर प्रदान समारोह

(समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा तरुण तपस्वी मुनिप्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य की चादर प्रदान)

जूनागढ़, बीकानेर दिनांक ७-३ ९२ थार की मरु बीकानेर, मानव सभ्यता के उषा काल की साक्षी सारस्वत सभ्यता हृदयस्थल बीकानेर, शौर्य, त्याग बलिदान और विद्या की अनन्त आराधना का केन्द्र बीकानेर आज हर्ष से पुलकित है। आज कच्छ के से थार पारकर और सिन्धु तीर के समृद्ध नगरों तक वाणिज्य करने के लिए अनथक, अनवरत प्रवासी यात्री दलों के, सार्थवाहों के और व्यापार नगर बीकानेर का युगयुगीन इतिहास देश के कोने से बीकानेर की ओर उमड रहे श्रेष्ठी दलों के स्पर्श की पुनः स्पन्दन से युक्त होकर हर्षित हो रहा था।

प्रभु महावीर के दया धर्म का कर्म क्षेत्र बीकानेर का क्षीण भूभाग जो आज भी पल्लू की विश्व विश्रुत जैन सरस्वती समृद्ध है और जहां आज भी जन धर्म के निर्झरना की प्रभग आग प्रगत है, आज अरिहन्त प्रभु के शासन के ८१ वें पट्टधर की मयी अमियवाणी से भावी ८२ वें पट्टधर की घोषणा और चादर के पावन समारोह का साक्षी बनने हेतु समुत्सुक है। जिस धरा को स्मरणातीत काल से जैन सन्तो के, आचार्यों के पावन उपदेशों अमृत निर्झर सदा सुलभ रहा और जहां सन्तों और श्रावकों की आराधना का अमृत कलश ग्रन्थालयो में प्राप्य दुर्लभ ग्रन्थ में आज जन जीवन को मधुस्नान कराने, अवगाहन करने और अनुशीलन कर जीवन के शाश्वत सत्यों का साक्षात् कराने हेतु सुरक्षित है बीकानेर की भूमि का कण-कण, इस भूमि के बाह्य और अन्तर जल प्रवाहो का बिन्दु बिन्दु आज सहस्त्रो नेत्रो से एक नवयुग के का दर्शन कर प्रत्यक्ष द्रष्टा बनने के क्षण की अधीर प्रतीक्षा में था।

जिस बीकानेर क्षेत्र के आचार समृद्ध श्रेष्ठियों ने अपनी अपराजेय जीवन शैली से राष्ट्रीय समृद्धि की अभिवृद्धि में मौन- और समर्पित योगदान दिया और सार्वजनिक हित के प्रत्येक कार्य उदात्त अर्थ प्रदान हेतु अग्रणी रहकर जिन्होंने नगर-श्रेष्ठ आदि अंतर हृदय से उदभूत विरुदों को सार्थक किया और प्रदेशों में ने अप्रतिम कौशल से तथा सत्य निष्ठ व्यवहार की अडिग आस्था धनोपार्जन के कीर्तिमानों की स्थापना कर अनन्त यश अर्जित किया, श्रेष्ठि आज पलक-पावड़े बिछाए सम्पूर्ण भारत से आने वाले अपने धर्मी बान्धवों, श्रेष्ठियों के स्वागत हेतु अपने धन को पानी की तरह कर, स्वयं विनीत भाव से करबद्ध सेवा में उपस्थित रहकर बीका- की अतिथि सेवी परम्पराओं में आज एक नया स्वर्णिम अध्याय जोड़ने को सकल्पित व तत्पर हैं।

बीकानेर की सहिष्णु प्रकृति और सवधर्म समभाव की गौरव- पी परम्परा को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए, आज के ऐतिहासिक क्षण को अपना समर्थन प्रदान करने के लिए और आज के युवाचार्य अभिषेक समारोह के प्रति अपनी सात्विक श्रद्धा को अभिव्यक्त करने आज यहां का आबाल वृद्ध नागरिक वर्ग, सभी धर्मों का प्रतिनिधिवर्ग आदर दिवस समारोह में उपस्थित होने को मचल रहा था।

ऐसे अपार हर्ष, अमित प्रमोद और अनन्त उत्साह के वाता- वरण में बीकानेर के कोने-कोने से जनमेदिनी बीकानेर के ऐतिहासिक दुर्ग जूनागढ़ के विशाल द्वारों से होकर समारोह स्थल पर प्रातः ७ बजे से ही एकत्र होने लगी थी। बीकानेर के परम पराक्रमी और महान् विद्वान छठे महाराजा रायसिंहजी द्वारा निर्मित जूनागढ़ अपने निर्माण से लेकर अद्यावधि अपराजेय रहा। ऐसी शुभ घड़ी, शुभ शकुन और शुभ भावना के साथ इस गढ़ की नींव रखी गई कि यह सदा वीरों- का आदरकर्त्ता और विद्वानों-गुणीजनों का आश्रयदाता बन कर गौरव मस्तक से कालप्रवाह का द्रष्टा बना रहा और इसी के प्रांगण में आज समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, जिन शासन प्रद्योतक, चारित्र चूडामणि, बाल ब्रह्मचारी आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा अपने उत्तराधिकारी को चादर प्रदान करके गौरवशाली इतिहास की साक्षी

में भावी इतिहास की गरिमामय रचना का आधार-सूत्र स्थापित करते जा रहे हैं।

भारतीय संस्कृति और संस्कृत के अनुपम रक्षक और संवर्धक महाराजा अनूपसिंह और लोकहित मे असभव को सभव कर दिखाने वाले प्रजावत्सल महाराजा श्री गगासिहजी की राजधानी बीकानेर के जूनागढ़ मे आज आध्यात्मिक उत्तराधिकार सौंपने की [illegible] से इस धरती के इतिहास मे एक सुवासित पृष्ठ जुड़ने जा रहा है और इसलिए मानो समारोह स्थल के तीन तरफ स्थित राजप्रासाद के कलात्मक गवाक्षों से एक युगबोध झाक-झाककर देख रहा हर्षित हो रहा है।

महाराजा रायसिहजी द्वारा निर्मित इस गढ़ मे बीकानेर [illegible] परिवार की ओर से स्वय श्री हणुवन्तसिहजी राठौड़ न्यासी, [illegible] रायसिहजी ट्रस्ट, आगन्तुकों के स्वागत मे उपस्थित हैं और उनके दिशा निर्देश मे राजपरिवार से सबद्ध जन समारोह की व्यवस्थाओं में हाथ बटा रहे हैं।

श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक सघ, बीकानेर समता युवा संघ बीकानेर और श्री साधुमार्गी जैन महिला [illegible] कार्यकर्ता समारोह की सुव्यवस्थाओं हेतु प्राण-पण से समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के प्रमुख पदाधिकारी भी सेवा और व्यवस्था कार्यों में उत्फुल्ल मन से जुटे हुए हैं।

इस प्रकार सर्वविध सहयोग और प्रसन्नता के क्षणों के बीच चादर प्रदान समारोह का मुहूर्त निकट आने लगा। ज्यो-ज्यों भगवान भुवन भास्कर क्षितिज से ऊपर अनन्त आकाश की ऊचाइयों को स्पर्श करने लगे, त्यों-त्यों दल के दल श्रद्धालु स्त्री पुरुष समारोह स्थल की ओर तेजी से बढ़ने लगे और जिस प्रकार दसों दिशाओं से उमड़ उमड़ कर बहता हुआ जल प्रवाह सागर की गोद में समाहित हो जाता है, वैसे ही सभी ओर से जन-जन जूनागढ़ की विशाल प्राचीरों में समाहित होकर प्रथमत तिरोहित और फिर समारोह स्थल पर प्रकट होने लगा।

राजप्रासादों की त्रिवेणी के बीच विस्तीर्ण मैदान पर यह आयोजन किया गया था। तीन ओर भव्य महलों की शीतल छाया

॥ चौथी ओर अक्षय जल भंडारा के बीच स्थित इस आयताकार ान का महान् पुण्योग आज उदित हुआ कि इसके भीतर समाजाने लिए आज लघुभारत उत्सुक हो रहा है।

जूनागढ के महलों मे स्वयं शासन नायक आचार्य श्री नानेश र उनके आज्ञानुवर्ती शिष्य वृन्द दिनाक ७ ३-९२ को प्रात ही ारे थे और वे अपनी दैनिक चर्या मे व्यस्त थे। दूसरी ओर नगर विभिन्न स्थानो से श्वेत परिधानों से आवृत्त साधु साध्वियो के समूह ारोह स्थल पर पहुच रहे थे। आचाय श्री नानेश और उनके ानुवर्ती साधु-साध्वी वृन्द हेतु नीले आकाश के तले ही विराजमान ने की व्यवस्था थी किन्तु श्रावक-श्राविका और अतिथि वग हेतु ्य और विस्तीण वितान ताना गया और बठने की उत्तम व्यवस्था ी गयी। इस प्रकार धीरे-धीरे चतुर्विध सघ जूनागढ मे आ जुटा ौर धार्मिक क्रिया कलाप प्रारम्भ हुए।

सवप्रथम स्थविर प्रमुख, विद्वद्वर्य श्री शांतिमुनिजी म सा न दी सूत्र शास्त्र वाचन किया जिसे हजारो की जनमेदिनी ने श्रद्धाव- ित होकर श्रवण कर स्वयं को पवित्र किया। सुदीघ शास्त्रवाचन का ्म चल ही रहा था कि शासन नायक आचाय श्री नानेश राजप्रासाद ी सीढ़ियों पर दिखाई दिए और वातावरण प्रभु महावीर की जय' ा 'जय गुरु नाना' के जयघोषो से गूंज उठा।

धीर-गंभीर कदमों से आचाय प्रवर पधारे और उन्होंने एक चे पट्ट पर आसन ग्रहण किया। उनके दोनों ओर पांचों स्थविर मुख—श्री शांतिमुनिजी म सा, श्री प्रेममुनिजी म सा, श्री पारस- ुनिजी म सा श्री विजयमुनिजी म सा एव श्री मानमुनिजी म सा अपने ि और साधना के तेज से प्रदीप्त विराजमान थे। इन पांचा स्थविर मुखों के पास ही शासन प्रभावक मुनिप्रवर श्री धर्मेशमुनिजी म सा ौर तपस्वी श्री अमरमुनिजी म सा विराजमान थे और इसके बाद ुरुदेव के वाम पार्श्व मे प्रसन्नमन साधुवृन्द विराजमान थे। आचार्य श्री जी के दक्षिण पार्श्व मे विस्तीर्ण भूभाग म शासन प्रभाविका, परम विदुषी, तपस्विनी, तरुण तपस्विनी और नवदीक्षिता सती मडल का िशाल समूह विराजमान था।

जिन शासन प्रद्योतक आचार्य श्री नानेश के श्री चरणों म वाम भाग

की ओर युवाचार्य मुनिप्रवर श्री रामलालजी म सा स्मिरचित मुखाकृति और शासन के प्रति अनन्य समपण के उदात्त [illegible] परिपूर्ण विराजमान थे ।

आचाय श्री नानेश की यह विपुल सम्पत्ति, यह [illegible] दशन राशि, चारित्र राशि सत-सती वग की महान् सम्पदा [illegible] मन मे अनन्त श्रद्धा का उत्कर्ष कर रही थी । ऐसे सात्विक [illegible] मे भव्य पृष्ठ भूमि मे चतुर्विध सघ धर्म श्रद्धा से ओत प्रोत [illegible] था और समवसरण सा दृश्य दिखाई दे रहा था ।

परम पूज्य गुरुदेव के शुभागमन से थोड़ा सा पहल [illegible] रियासत के महाराजा श्री नरेन्द्रसिहजी अपने कुल पुरोहित [illegible] रतनजी श्रीमाली के साथ समारोह स्थल पर पधारे । [illegible] साहब को युवाचार्य समारोह समिति के संयोजक और बीकानेर विकास न्यास के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी कोठारी ने अगवानी [illegible] श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्री भवरलालजी [illegible] अध्यक्ष श्री दीपचन्दजी भूरा, सघमत्री श्री चम्पालालजी डागा, प्रमुखों ने आत्मीय स्वागत किया और उन्हें गुरुदेव के सम्मुख आसन पर आसीन कराया । बीकानेर सघ के सहमत्री श्री [illegible] सिगी ने महाराजा साहब के प्रशस्त वक्षस्थल पर विशेष [illegible] का बैज लगाया ।

स्थविर प्रमुख पडितरत्न श्री शांतिमुनिजी के [illegible] साथ ही युवाचार्य चादर प्रदान की आगमसम्मत विधि प्रारंभ हो थी और जैसे ही विद्वद्वर्य मुनि श्री ने शास्त्र वाचन पूर्ण किया पूज्य गुरुदेव ने उपस्थित चतुर्विध सघ का सिहावलोकन किया, [illegible] जन समूह हर्ष पूर्वक जय-जयकारा से गगन गुंजाने लगा । सती वृन्द ने सस्वर सहगीत गाकर वातावरण को आध्यात्मिक [illegible] अभिषिक्त कर दिया ।

इसी समय समारोह के कुशल मच संचालक श्री सुशील [illegible] बच्छावत ने "जुग जुग जीओ ऐ नाना, चादर महोत्सव आया, जग मे हुष छाया" गीत के मुखड़े को गाया और फिर प्रथम [illegible] रूप मे श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के पूव मंत्री तथा

[उ]त्सव समिति के संयोजक सुश्रावक, धर्मानुरागी, श्री भंवरलालजी [कोठा]री को अपने विचार प्रस्तुत करने को आमन्त्रित किया ।

अपूर्व समागम—श्री भंवरलालजी कोठारी ने कहा कि समीक्षण [ध्या]न योगी परमपूज्य आचार्य प्रवर की महान् कृपा से आज बीकानेर [संघ] को इस महोत्सव के आयोजन का महान् सौभाग्य प्राप्त हुआ है। [सम]न्वय की तथा बीकानेर संघ की ओर से आचार्य प्रवर के चरणों में [वंद]ना निवेदन करते हुए इस उपकार के लिए अनन्त आभार व्यक्त [कर]ता हूं । साथ ही यत्र विराजित समस्त संत सती वर्ग के चरणों में वन्दना निवेदन करता हूं ।

आज का दिवस स्वर्णिम दिवस है । जिस ऐतिहासिक प्रांगण [में] युग-युग से बीकानेर की जनता अपने युवराज का राजतिलक देखती [रही] है, उसी गरिमामंडित प्रांगण में बीकानेर तथा भारत के प्राय: [सभ]ी भागों से पधारे हुए धर्म श्रद्धालुओं की यह विशाल जनमेदिनी [आ]चार्य द्वारा युवाचार्य का तिलक देख रही है और अपार हर्ष में [मग्]न हो रही है । आज से ३० वर्ष पूर्व उदयपुर के राजमहल में [तत्क]ालीन महाराणा सा. श्री भगवतसिंहजी की साक्षी में गुरुणां गुरु श्री [गणे]शाचार्यजी ने आज के हमारे आचार्य श्री नानालालजी म. सा. को [युवा]चार्य पद की चादर प्रदान की थी और आज बीकानेर महाराजा [श्री] नरेन्द्रसिंहजी की उपस्थिति में, साक्षी में आचार्य श्री नानेश अपनी [पट्]ट परम्परा का निर्वाह करते हुए युवाचार्य श्री राममुनिजी म. सा. [को] चादर प्रदान करेंगे । कैसा साम्य है !

बीकानेर के तथा सभी समागत धर्मानुरागी आज धन्य हैं । [उ]ल्लेख्य है इस पावन अवसर पर पधारे समस्त धर्म श्रद्धालुओं का मैं [स्व]यं अपनी ओर से बीकानेर संघ की ओर से तथा बीकानेर के नागरिकों [की] ओर से हार्दिक स्वागत करता हूं, अभिनन्दन करता हूं ।

बीकानेर की राजमाताजी महान् धार्मिक एवं सेवाभावी हैं । [उन्हों]ने अपनी श्रद्धापूर्ण वंदना और अभिनन्दन आपश्री की सेवा में [भेज] दी है ।

आज यहां आचार्य श्री जी की सन्निधि में शताधिक संत-[सती वृ]न्द की उपस्थिति में चादर महोत्सव आयोजित हो रहा है । [य]ह एक अपूर्व समागम है और विरल अवसर है । इस शुभअवसर पर

मैं युवाचार्य शास्त्रज्ञ मुनिप्रवर, तरुण तपस्वी, विद्वान श्री रामला
म सा का भी अभिनन्दन और वन्दन करता हू ।

गौरव दिवस–बीकानेर के महाराजा श्री नरेन्द्रसिंहजी ने
भावपूर्ण अभिभाषण मे कहा कि—परम पूज्य जैन आचार्य श्री श्री
श्री नानालालजी म सा, युवाचार्य श्री रामलालजी म सा, सा
सतियाजी म सा,, बीकानेर रा सगला भाई बहिन अर दूर दूर
घरा सू पधारयोड़ा भाइया और बहिनो ।

आज म्हारै वास्तै घोन सौभाग रो दिन है'क परम
आचार्य श्री नानालालजी म सा रै दरसण रो लाभ मिल्यो और
ऐतिहासिक दुग में आपरा शुभागमन हुयो । मैं इये जूनागढ़ में
हार्दिक स्वागत, वन्दन अर अभिनन्दन करू ।

मैं जूनागढ़ मे उपस्थित इण ऐतिहासिक मौके माथै
म्हारी तरफ सू म्हारी मातुश्री री तरफ सू, राज परिवार री
सू अ'र बीकानेर री जनता री तरफ सू पवित्र और हार्दिक
भावनावा अर्पित करू । चादर महोत्सव रै इण मगलमय
सू समाज अर राष्ट्र मानवीय मूल्या—अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह
अर सयम री प्रेरणा लेवेला, इसो म्हारो विश्वास है । मैं
आप सबरो बीकानेर री जनता री तरफ सू हार्दिक स्वागत
अ र पधारण वास्तै धन्यवाद देऊ ।

महाराजा साहब रा इया मीठा मिसरी सा बचनां
थारी भक्ति भावना सू उपस्थित चतुर्विध संघ नै अपार हरख

इसके बाद संयोजक श्री सुगोलचन्दजी के अनुरोध
श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के मंत्री श्री चम्पालालजी
अपने भाव व्यक्त किए तथा स्वयं की एवं श्री अ भा साधुमार्गी
संघ की ओर से गुरुदेव के निर्णय का हार्दिक अनुमोदन तथा
किया । श्री डागाजी ने भावपूर्ण स्वरों मे चतुर्विध संघ के प्रति
हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए शासन के उज्ज्वल भविष्य के प्रति
आस्था को दुहराया ।

[श्री डागा जी का वक्तव्य आगामी पृष्ठ पर]

रचनात्मक प्रेरणा—इसके बाद श्री समता युवा संघ के अध्यक्ष श्री उमरावसिंह जी ओस्तवाल बम्बई ने गुरुदेव के चरणो मे वन्दना-पूर्वक अपने विचार रखे। श्री ओस्तवाल ने कहा कि गुरुदेव के कानोड चौमासे मे जब मैं अपने युवा मित्रो की मनभावन टोली के साथ मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा के दर्शन करने गया तो आपश्री ने कहा कि नेतागिरी छोडो और रचनात्मक काय करो। इसी से प्रेरणा लेकर हमने श्री समता युवा संघ के माध्यम से स्वधर्मी सहयोग की योजना प्रारम्भ की और युवको को स्वावलबी बनाने मे सतोषजनक सफलता मिली। इसका सारा श्रेय श्री राम मुनिजी म सा को है। अब आपश्री युवाचार्य बने हैं, हमे विश्वास है कि आप संघ को रचनात्मक मार्गदर्शन देंगे। श्री समता युवा संघ आपका अभिनन्दन करता है।

एकता का सुनहरा इतिहास—श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया ने अपने प्रभावी, ओजपूर्ण, मधुर अभिभाषण से समस्त उपस्थित जनो का मन मोह लिया। संघ प्रमुखों की विचाराभिव्यक्ति के क्रम को आगे बढ़ाते हुए श्री चोरडिया जी ने आचार्य देव को सम्बोधित करते हुए शास्त्रीय मर्यादाओं का परिपालन करते हुए निवेदन किया जिन नहीं पर जिन सरीसे आचार्य प्रवर के श्रीचरणों मे वन्दन करता हू। आपश्री जब युवाचार्य बने थे तो साधु संस्था के रूप मे आपको उत्तराधिकार मे एक उजडा उपवन मिला था, जिसे आप आज एक खिली, सुरभित बगिया, दिग्दिगन्त मे समादृत उपवन उत्तराधिकार के रूप में निर्मित करके सौंप रहे हैं। यह आचार्य श्रीजी का अतिशय है, जिससे युवाचार्य घोषणा की महत्तम आज्ञा सर्वशिरोधार्य हुई है। आज का यह निर्णय, आज का यह समारोह आज का यह दिवस आपश्री के अचल संकल्प से पत्थर की लकीर बना है और आपश्री के अतिशय से आज साधुमार्गी संघ मे, जिनशासन मे एकता का इतिहास सुनहरे पृष्ठ पर लिखा जा रहा है। दशरथ के राम की भांति आज आध्यात्मिक उत्तराधिकारी आचार्य श्री नानेश के राम युग युग तक छाए रहें, यही मंगल भावना है।

अद्वितीय निर्णय—संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री गणपतराजजी बोहरा ने कहा कि युवाचार्य की घोषणा आचार्य प्रवर का एक अद्वितीय निर्णय

है । मैं इस निर्णय का और आचार्य प्रवर का अभिनन्दन करता हूं तथा सकल संघ की ओर से निर्णय के पालन का विश्वास दिलाता हूं।

श्री बोहरा जी ने कहा कि आचार्य प्रवर मे व्यक्ति परख और निर्माण की विलक्षण क्षमता है । तीन दशक से भी पहले मैं स्व आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा के चौमासे में तरुण युवा साधु श्री नानालालजी के साथ अपनी वार्त्ता का स्मरण करते अतीत की स्मृतियो से श्री बोहरा भावुक हो उठे और कहने लगे मैं युवक था और मात्र दर्शनार्थ जावरा पहुंचा था किन्तु जब नानालालजी म सा को वन्दना करने गया तो उस समय के क्रम पर मुझसे बात की और साधु मर्यादा मे मार्गदर्शन भी किया । मैंने कहा मेरी इतनी जानकारी नहीं है और न ही रुचि । इस पर आपश्री ने कहा उस क्षेत्र में आपकी भूमिका होगी । मैंने बात को गम्भीरता से नही लिया किंतु २ ३ वर्ष पाली जिले में स्थितियो ने कुछ ऐसा मोड लिया कि न चाहते हुए मुझे सत्य के समर्थन में मैदान मे आना पड़ा और तब मैंने पहली बार आपश्री की मौलिक प्रतिभा को अनुभव किया । योग्य व्यक्ति को खोज दायित्व देने और उसे प्रदत्त दायित्व के योग्य बनाने मे आपश्री बेजोड़ हैं । जावरा में आज से चौंतीस वर्ष पूर्व की घटना मैं भुलाये नहीं भूल पाता हूं । उसी समय के चयन के कारण कालान्तर में मुझे चार श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष पद का दायित्व भी निर्वहन करने का सौभाग्य मिला ।

आचार्य श्री की महान् दूरदृष्टि के प्रति मेरी और सकल संघ की अविचल आस्था है और मेरा विश्वास है कि भविष्य आचार्य श्री के आज के अद्वितीय निर्णय की पुष्टि करेगा । मैं युवाचार्य श्री के प्रति अपनी विनम्र शुभ कामनाएं अर्पित करता हूं ।

आशीर्वाद फलेगा—इसी समय श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती यशोकन्वर जी बोहरा ने समिति की तथा स्वयं अपनी ओर से आचार्य प्रवर के निर्णय की पुष्टि करते हुए कहा कि आपश्री का आशीर्वाद अवश्य ही फलेगा । युवाचार्य श्री का तो नाम ही राम है वे आगे बढ़ते जावेंगे और संघ को आगे ले जावेंगे । मेरी शुभकामना है ।

हीरो—कुशल मंच संयोजक श्री सुशील बच्छावत ने अपने अपार हर्ष को मुग्ध भाव से वाणी प्रदान करते हुए गाया कि—"हीरो पायो नाना गुरुवर र नाम रो जी, ओ तो नही है अज्ञानिया रै काम रो जी।"

गौरव की बात—संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री दीपचन्दजी भूरा ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यह खुशी केवल मेरी ही नहीं है, सबकी है। महावीर स्वामी के शासन को हुकम सम्प्रदाय जिस प्रकार से चला रहा है, वह गौरव की बात है। पूज्य गुरुदेव ने हमारे देशनोक गाव के भूरा परिवार के छोटे से बालक को क्या से क्या बना दिया। आपश्री ने श्री राम मुनिजी को तीजे पद का अधिकारी बना दिया। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि वह श्री राम मुनिजी को शक्ति दे कि इस महान् परम्परा को निभा सके।

यशस्वी हों—संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री पी सी चौरड़ा ने स्वयं की तथा मालव की ओर से बोलते हुए युवाचार्य श्री राम मुनिजी के यशस्वी होने की मंगल कामना की। पीपलिया मंडी—अमर नगरी के श्री सुरेशजी पामेचा और जावरा-म प्र मे श्री कांतिलालजी कासटिया ने भी अपनी शुभ भावनाए अर्पित कीं।

देशनोक संघ की बालक बालिका मंडली ने समवेत स्वरो म भक्ति गीत के द्वारा अपनी भावनाए व्यक्त की और कहा—

"घणी घणी बधाई थांनै ओ करुणा रा सागर
दो दिन रै प्रवास में पांच आज्ञा पत्र मिल्या
अब चौमासा दिरावो— .. —
" इसा मंगल दिवस माथै मंगल गीत गावाला
—चादर सौंपी राम रै हाथ"

नगरी अयोध्या फिर से सज रही है
उजड़े दिल की आस बंधाओ ना
चौमासा दिलाओ ना

मंगल सन्देश—इसी समय आचार्य प्रवर ने अपने श्रीमुख से उपस्थित चतुर्विध संघ को सम्बोधित किया। आचार्य श्री के विचारों का सार निम्न प्रकार है—

जय जय जय भगवान
अजर अमर अखिलेश निरंजन
जयति सिद्ध भगवान

गुरुदेव के साथ ही सहस्त्रों कंठ इस प्रार्थना को गा
जिससे वातावरण धर्ममय हो उठा और जन जन भक्तिमय हो उ

आचार्य प्रवर ने कहा कि—आज का प्रसंग सर्वविदित हो
है। इस प्रसंग से कई जिज्ञासाएं उभर रही होंगी। आज का
व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए कौनसा मंगल सन्दे
है। यह प्रसंग आन्तरिक परिवेश सुधारते हुए दु:ख, द्वन्द्व और
रिक प्रदूषण तथा मानव जाति में व्याप्त असन्तोष का निवारण करत

वैज्ञानिक अनेक प्रकार के प्रदूषणों का अध्ययन विश्लेषण
में जुटे हैं किन्तु जो मानसिक प्रदूषण सर्वाधिक घातक है, उसकी
बहुत कम चिन्तकों का ध्यान गया है। राष्ट्र के कर्णधारों को इस
ध्यान देना चाहिये और नागरिकों को सजग तथा एकजुट होकर प्र
रहित वायुमंडल का निर्माण करना चाहिये।

आचरण प्रदूषण को समाप्त करने के लिए समाहित क
लिए समता दर्शन एक सशक्त उपाय है। यह प्रसंग समता दर्श
व्यवहार प्रयोग का एक विलक्षण क्षण उपस्थित करता है।

समता दर्शन का रूप व्यावहारिक जीवन में उतरे, एतद
प्रभु महावीर जो कि क्षत्रिय थे, और अन्तिम तीर्थंकर थे शासन के
व्युत्पत्ति के साथ अग्रसर हुए और जनजीवन को कुछ निर्देशों के माध्यम
से व्यापक दिशा दर्शन दिया। यह दिशा दर्शन, ये निर्देश आज भी सार्थ
सिद्ध हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और संयम की आज
लोक जीवन में कितनी आवश्यकता है? क्या कहने की बात है। इन
शाश्वत मूल्यों की जन जन को अमित प्यास है।

महावीर ने कहा "धम्मो समिक्खए धम्मं" अर्थात् प्रज्ञापूर्व
आत्मावलोकन करते हुए धर्म का आचरण करो, विवेक से व्यवहार
करो। इस सूत्र का अनुपालन करने पर धर्म व्यक्तिगत जीवन को स्व
स्थित बनाता हुआ, व्यक्ति और समाज के जीवन में नवचेतना का
सृजन करता है। "समिक्खए" में समदृष्टि के साथ, समता भावना के
साथ धर्म-जीवन के दर्शन का उपदेश है। धर्म किसी व्यक्ति का धर्म

नहीं होता, वह आत्मा का होता है । वह चेतना जगाता है ।

यहां यह जो साधु संस्था बैठी है। वह जनजागरण की स्थिति जनजीवन में व्याप्त दोषों को पैदल चलकर, अकिंचन भाव से दूर ती है । इस प्रकार यह साधु संस्था महावीर के आदर्शों को व्यव- में ढाल रही है । इस जगम पाठशाला हेतु, इस चल विश्वविद्या- की सुव्यवस्था और शासन सचालन की दृष्टि से युवाचार्य की युक्ति की आवश्यकता होती है । शान्त क्रान्ति के अग्रदूत स्व पूज्य देव श्री गणेशीलालजी म सा ने इसी विचार से मेरी नियुक्ति की और उनके क्रांतिकारी कदम को आगे बढ़ाते हुए मैंने यह नियुक्ति है ।

आज का दृश्य स्व गणेशाचार्य जी की शांत क्रांति का सहज णाम है । गुरुदेव ने मुझ पर वजन डाला था, मेरी तो कोई योग्यता र शक्ति न थी कि जो इस गुरुत्तर उत्तरदायित्व से सामना करने मे र्थ होती, पर चतुर्विध सघ के सहकार से गुरु प्रदत्त कार्य सिद्ध ा है ।

अब आज गुरु प्रदत्त दायित्व को, उस वजन को, अन्य को र्द करने उपस्थित हुआ हू । वह समग्र उत्तरदायित्व युवाचार्य राम- न को सुपुर्द करता हू । यह सुपुर्दगी इस ऐतिहासिक स्थल पर हो ी है जो क्षात्रधर्म की स्मृति को ताजा करने का दूसरा संयोग प्रदान र रही है । पहला सयोग उदयपुर मे मिला था और दूसरा आज नागढ़ मे, बीकानेर में । बीकानेर की जनता ने यह आयोजन इस तिहासिक स्थल पर रखने का आग्रह करके क्षात्रधर्म के कर्म और नियुक्त क्रिया को संयुक्त करने का, एक पूर्व घटनाक्रम को गौरव के थ पुन स्मरण करने, दुहराने का प्रसंग उपस्थित किया है ।

यह प्रसग उन प्राणीमात्र के लिए, जो संत्रास में हैं श्रमण स्कृति के अभयदान सन्देश का एक प्रतिरूप है । आज जब जन जा ैतिकता की होड़ मे लगा हुआ है, श्रमण संस्कृति जन जागरण को र्पित है । जन जागरण और लोक मंगल को समर्पित श्रमण संस्कृति ो व्यापक जन सहयोग प्रदान करने की जरूरत है ।

हुक्म सम्प्रदाय का यह साधुमार्गी संघ ये साधु साध्वी आच- ए की शिक्षा प्रदाता एक जंगम विद्यापीठ हैं एक चलती फिरती

कॉलेज है । इस चलती फिरती कॉलेज के साधक श्रमण श्रमणी आप सभी एकजुट होकर विश्व शांति के कार्य को आगे बढ़ायें विश्व कल्याण होगा । हमारा प्रत्येक कार्य विश्व कल्याण की भावना से अनुप्रेरित होना चाहिये ।

अहिंसा दिवस—गुरुदेव का मंगल सन्देश पूर्ण होते ही चन्दन मल से समारोह संयोजक श्री भवरलालजी कोठारी ने हजारों की मेदिनी को यह हृदय सूचना दी कि बीकानेर के जिलाधीश श्री एन मीणा ने आज बीकानेर जिले मे अहिंसा दिवस की घोषणा की है और आज अगता रखकर प्राणियो को जीवनदान दिया है। कोठारी जी ने एतदर्थ चादर महोत्सव समिति की तथा स्वयं की ओर से भी जिलाधीश श्री मीणा के प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित किया।

मंगलाचरण व चादर स्पर्श—इसी समय युवाचार्य श्री को ओढ़ाई जाने वाली शुभ्र, धवल, त्याग और तप की, संयम और की, महान् उत्तरदायित्व की प्रतीक चादर आचार्य प्रवर के हाथों मे सौंपी । मन्द मन्द बह रही पवन और राजप्रासाद की छाया में प्राप्त शीतलता अपार जनमेदिनी की उत्सुकता और प्राप्त उत्साह से लहराती धवल चादर, फरफराती हुई अपने विकास मे आयाम में विस्तीर्ण होकर एक एक सन्त द्वारा स्पर्शित समर्पित हुई । तत्पश्चात् यह चादर सतीवृन्द के विशाल समूह को सौंपी गई और उनमें से भी प्रत्येक द्वारा स्पर्शित, समर्पित व नन्दित होती हुई पुन आचार्य प्रवर के पास पहुची ।

यह आचार्य श्री नानेश द्वारा धारित चादर जिसे आज विध संघ के समस्त पांचों स्थविर प्रमुखों आदि संत रत्नों ने श्री को धारण कराई थी और वापस आचार्य श्री से अनुग्रह पूर्वक करके संत-सती वृन्द को सौंपी गई थी, सर्वसमादृत होकर समर्पित होकर पुन गुरुदेव के हाथों मे आ गई ।

इस मंगलमय क्षण म स्थविर प्रमुख श्री विजय मुनिजी सा ने अपनी मधुर वाणी म मंगलाचरण प्रस्तुत किया और इसके ही चादर प्रदान का ऐतिहासिक क्षण स्वयं को साकार करने आ उपस्थित हुआ ।

चादर प्रदान टीक मुहूर्त के अनुसार १० बजकर ४२ मि

गुरुदेव जिनशासन प्रद्योतक आचार्य श्री नानेश ने प्रभु महावीर के शासन का उत्तराधिकार, अष्टाचार्यों के गौरव की संवाहिका, यशस्वी, निर्मल, पावन चादर युवाचार्य मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को ओढ़ाई। स्थविर प्रमुख श्री शांति मुनिजी, श्री प्रेम मुनिजी एवं विद्वद्वय श्री धर्मेश मुनिजी म सा आदि सन्त वृन्द ने युवाचार्य श्री जी को चादर धारण कराई, इसके साथ ही ऐतिहासिक जूनागढ़ के कण-कण मे जय गुरु नाना का घोष गूंज उठा।

विशाल जनमेदिनी मे से श्रद्धालु उठ-उठ कर दौड़े और उन्होंने युवाचार्य श्री पर केसर न्यौछावर की। वातावरण मे केसर की पीली पंखुड़ियों ने वसन्त का सा दृश्य निर्मित किया और चारो ओर केसरिया-पवन ने अपनी शीतल सुवास से जन मन को प्रमुदित किया। चारों ओर हर्ष का सागर लहराने लगा। केसर न्यौछावर का कार्य युवकों-श्रद्धालुओं ने ऐसी विद्युत गति से सम्पन्न किया कि संतो द्वारा निषेध करने तक चारो ओर केशर ही केशर छा गई। शीघ्र ही समता युवा संघ के कार्यकर्ताओं ने स्थिति को नियन्त्रित किया।

समता विभूति आचार्य प्रवर ने अपनी सुदीर्घ संयम यात्रा, ज्ञान-दर्शन चारित्र की सम्यक् आराधना से प्रदीप्त यशस्वी और धवल चादर युवाचार्य श्री को सौंपकर उन्हें गुरुतर उत्तरदायित्व से अभिषिक्त किया।

कार्यक्रम संयोजक श्री सुशील बच्छावत ने गीत का मुखड़ा गाया—

गुरु जवाहर, गणेश ने ओढ़ी
नानेश ने निर्मल कीनी
राम मुनि को ऐसी ओढ़ाई
दुनिया दंग रह गई—चदरिया—

हर्ष और उत्साह के इस वातावरण में युवाचार्य मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा ने युवाचार्य के रूप मे अपने प्रथम सार्वजनिक प्रवचन को अपने सहज स्वभाव के अनुसार ही सौम्य और विनीत भाव मे प्रारम्भ करते हुए सर्वप्रथम परमेष्ठि की प्रार्थना और शासन-नायक आचार्य प्रवर की भावभीनी वन्दना सम्पन्न करने के बाद कहा

कि गुरुदेव के प्रत्येक निर्णय को मैंने मेरे जीवन का दिशा
है और उसी भाव से आज के इस निर्णय के प्रति भी मैं

आप सबके लिए यह हर्ष का विषय हो सकता है
लिए अनचाहा काम है । एक अनगढ़ पत्थर को आचार्य श्री
रूप और आकार दिया है, उसके लिए आचार्य प्रवर का
आभार भूला नही जा सकता । आचार्य-प्रवर ने गृहस्थ परिवेश
कर मुझे मुनि जीवन के मगल परिवेश में प्रवेश दिया और
पावन सन्निधि में रखते हुए मुझ पर पूर्ण कृपा की । मैं तो
की नेश्राय में रहकर सयम साधना करते हुए स्वय का
रहा था और आज जो प्रसग उपस्थित हुआ है, उसकी तो मैंने
कल्पना ही नहीं की थी । ऐसा कुछ होने वाला है, इस
विचार तक नही गया था ।

मैं तो सेवा-समर्पण के लक्ष्य से ही कार्य कर रहा था।
देव ने जो भी सोचा है, उसके समक्ष हमारा चिन्तन
सदैव उनकी दूरदर्शिता और भविष्य की चिन्तन
सिद्ध होता है । आचार्य प्रवर ने चित्तौड़ में जो कार्य भार सौंपा,
बाद भी अनेक बार आपश्री के चरणो मे निवेदन किया कि
आपकी आत्मीय सन्निधि मात्र मे ही आत्म साधना का
प्रदान करते रहे, अन्य उत्तरदायित्व के लिए क्षमा करें।
देव का स्पष्ट निर्देश मिल गया, उनके हृदय के भाव और
अन्त करण निर्देश देने लगा तो हमारा, हमारे संघ का जो
गुरुदेव की इच्छा ही आज्ञा है तदनुसार मैंने यह दायित्व स्वीकार
है । आचार्य प्रवर की आज्ञा के समक्ष नतमस्तक होना
इसलिए आज यह चादर ग्रहण की है ।

यह चादर एकता और अखंडता की सूचक है । इस
का सन्देश है कि मानव जाति एक है । इस सन्देश को
करते हुए स्वीकारें, प्राणीमात्र के अस्तित्व को समझे
करें, तो विषमता और विषमता समाप्त हो सकती है
जाति के लिए एकता और अखंडता का भव्य प्रसंग उपस्थित हो
है ।

इस चादर में जो केसरिया रंग है, वह बलिदान का

माना जाता है किन्तु मैं इसे लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण का सूचक मानता हूँ। यह रंग चादर के माध्यम से समाज को त्याग और समर्पण का मंत्र प्रदान कर रहा है। चतुर्विध संघ को त्याग और समर्पण की अमर प्रेरणा दे रहा है।

यह धवल और निर्मल चादर है। अब समय आ गया है कि इसके उज्ज्वल संदेश के माध्यम से आचार्य देव की समता समाज रचना की परिकल्पना को साकार करें। विश्व मे व्याप्त अलगाव और अशांति का परिहार करें। समता दर्शन विश्व शांति का अमोघ उपाय है, हम अपने जीवन मे इसका आचरण करें।

चादर प्रदान के माध्यम से पूज्य गुरुदेव ने अपने चतुर्विध संघ की सेवा का विशेष व्रत प्रदान किया है। चतुर्विध संघ की सेवा मे मैं कितना सक्षम हूँ, यह आप जानते हैं, इसलिए सभी ने हाथ उठाकर सहकार का विश्वास दिलाया है। मैं मानता हूँ कि आचार्य श्री का वरदहस्त चतुर्विध संघ को आगे बढ़ाने मे पूर्ण मददगार बनेगा। साथ ही आप सबका और संघ का दायित्व भी बढ़ गया है।

कांटों का ताज—सन्त-सतीवर्ग देश-देशान्तर परिभ्रमण करते हैं। वे परिषह सहन करते हुए शासन की जाहोजलाली करने मे अग्रणी रहते हैं। मेरा सौभाग्य है कि गुरुदेव ने ५ स्थविर प्रमुखो व चतुर्विध संघ की गोद मे मुझे सुरक्षित कर दिया है। ये पांचों स्थविर प्रमुख व पूरा संघ सहकार देगा ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। युवाचार्य पद कांटों का ताज है। आचार्य प्रवर की कृपा व स्थविर प्रमुखों, संत-सती व श्रावक श्राविका रूप चतुर्विध संघ के सहकार से ये कांट फूल बन जाएंगे। "शूली का सिंहासन हो गया, शीतल हो गई ज्वाला"।

आचार क्रांति की मशाल—आज मैं चतुर्दिक जो स्नेह और वात्सल्य देख रहा हूँ उससे मुझे सतसाहस और प्रेरणा मिलती है। मेरा यह अचल विश्वास और भी प्रबल होता है कि आचार क्रांति की मशाल युग युग तक जागृत रहेगी। आचार क्रांति की इस मशाल को जागृत रखने में श्रावक-श्राविका का भी उतना ही दायित्व है जितना संत सती वर्ग का है। आज सिमटते मानस से श्रावकत्व खतरे म पड़ रहा है। श्रावकत्व संकुचित नहीं है। श्रावक को दरिया दिल होना चाहिए। यदि दया नही तो वह श्रावक नहीं है। पीड़ित की पीड़ा दूर न करे

पूर्व ऐसे ही विचार स्थविर प्रमुख श्री प्रेम मुनिजी म सा ने व्यक्त किए थे कि गुरुदेव ने उजड़े बाग को सुन्दर उपवन बना दिया है। शून्य मे से सृजन किया है। यह सत्य है। गुरुदेव ने जब युवाचार्य चादर ओढ़ी थी तब मे और आज मे बहुत अंतर है। परिस्थितियाँ बदल गई हैं। आज युवाचार्य श्री को एक हरा-भरा बगीचा मिला और चतुर्विध संघ का आशीर्वाद भी उन्हें मिला है। अतः उन्हें इसे और अधिक पुष्पित पल्लवित करना है।

अभी युवाचार्य श्री जी ने अपने वक्तव्य मे, कार्य में सहकार की अपेक्षा जतलाई तो उन्होंने उचित कहा। वास्तव में मात्र व्यक्ति पोषण नहीं कर सकता। संरक्षण-संवर्धन हेतु सब सहकार सामान्य आवश्यकता है, अपरिहार्यता है। कोई विलक्षण हो कार्य कर सकता है, अन्यथा टीम होनी ही चाहिये। सहकार होना चाहिये।

अप्रतिहत व्यक्तित्व—आचार्य प्रवर ने उदयपुर मे चादर ग्रहण कर जब विहार किया तो गांव गांव मे बड़ी विपरीत स्थिति थी किन्तु आचार्य देव अप्रतिहत आगे बढ़ते ही गए और समाज तथा राष्ट्र को समता दर्शन दिया, धर्मपाल की उत्क्रांति का सूत्रपात कर हजारों का जीवन परिवर्तन किया। जहा भी गुरुदेव जाते थे पूछा जाता था—आप श्रमण संघ से क्यों पृथक् हुए? आपश्री को प्रश्नों के घेरे में लेने के प्रयास सर्वत्र होते रहे पर आपने अपनी महान् ऊर्जा तथा धैर्य से समस्त घेरे ग्रन्थियों को निरुत्तर करते हुए इस उजड़े बाग को सींचा और विकसित किया।

आप जरा एक-एक श्रमणी वर्या का परिचय लेकर देखें, आपको आचार्य श्री के निर्माण स्तर को देख आश्चर्य होगा। आप एक-एक श्रमणवय के जीवन में झांक कर देखें, आप हृदय से पुलकित होंगे। आचार्य प्रवर ने संघ का जो निर्माण किया है, वह आदर्श है।

युवाचार्य श्री को आज आचार्य प्रवर ने जो धरोहर सौंपी है मैं उस धरोहर की ओर संकेत करना चाहूँगा। यह धरोहर है—आचार क्रांति की। इस आचार क्रांति में विचार क्रांति और संस्कार क्रांति भी सम्मिलित है। इस क्रांति त्रयी आचार विचार और संस्कार क्रांति-

विराटता प्रदान करने का दायित्व आपको मिला है। आप इसका
लता से निर्वहन कर सघ गौरव की अभिवृद्धि करें, यही आशा है।

साथ ही हम सब की यह अपेक्षा भी है कि आप हम सबको
ी आत्मीयता और स्नेह प्रदान करते रहेंगे जो हमे अभी तक आचार्य-
र प्रदान करते रहे हैं। सन्त जीवन को और क्या चाहिए ? उन्हें
चरित्र गरिमा के साथ अपने सरक्षक का स्नेह, प्रेम और दुलार
हिये। यह दुलार युवाचाय श्री जी से मिलता रहे जिससे सघ की
बगिया चहुंमुखी विकास करेगी हमारी कामना है कि युगो युगो
आचाय देव जीएं और उनकी सन्निधि मे रहकर युवाचाय श्री जी
करके दिखाए। समता का विकास भीतर मे होता है, हमारी
मना है कि युवाचाय श्री जी अपनी अन्तरंग सक्षमता से समता
कसित कर चतुर्विध संघ को यशस्वी बनाए ।

कीर्तिमन्त शासन आचाय श्री जो का शासन बडा कीर्ति-
त है। यह शुद्धाचार पर आधारित है। भगवान महावीर ने पंचा-
र का विधान किया है, जिसमे आचार साधना का महत्वपूर्ण स्थान
। श्रमण साधना आचार निष्ठा पर टिकी रहती है। आचार निष्ठा
ी रीढ़ बडी सुदृढ़ है। अत हम अपनी साधना को इतना भव्य
नावें कि किसी भी परिस्थिति में हमारे आचार मे कोई मोच न
ाने पावे।

आचार्य प्रवर ने आचार शांति की सुरक्षा हेतु अपनी दीर्घ
ष्टि से ५ प्रमुख सतों पर स्थविर प्रमुख का भार डाला है। आचार्य-
वर ने अपनी विलक्षण बुद्धि से सघीय सगठन की सुरक्षा हेतु यह
यवस्था दी है। इस सुरक्षा प्रबन्ध के बीच आचाय श्री जी ने युवा-
ाय श्री जी को सुरक्षित कर दिया है। हम सबका यह दायित्व है
ि जिनशासन की गौरव गरिमा बढाते हुए, सभी एक साथ जुटकर
ाचार्य प्रवर की व्यवस्था को सहयोग प्रदान करें।

आचार्य प्रवर ने श्री राम मुनिजी को युवाचाय का पद दिया
—जब तक आचार्य प्रवर हैं, तब तक युवाचाय श्री जी को चिन्ता
रने की आवश्यकता नही। आचाय देव की जो तेजस्विता है, वही
ारी समस्याए सुलझा देगी। आचार्य प्रवर से भी हमारी कामना है
ि वे हमे प्रकाश प्रदान करते रहें, जिससे यह संघ निरन्तर आगे

बढता रहे ।

स्थविर प्रमुख श्री शांति मुनिजी के इन उदात्त, ...
और धर्म दृढ़ता से ओतप्रोत प्रेरक उद्‌गारों पर चतुर्विध संघ ने
गौरव का अनुभव किया ।

अभिनन्दनीय इसके बाद श्री प्रकाश मुनिजी ने ...
आज जो प्रसंग उपस्थित है, वह सर्वविदित है । इसकी घोषणा ...
की हुई थी और आज अभिषेक किया है । यह चादर अपने ...
श्वेतता के साथ उत्तरदायित्व को भी लिए हुए है । अब तक मुनि ...
श्री रामलाल जी म. सा. ने जिस सेवा भावना और समर्पण से ...
काम किया, वह समर्पण आचार्य श्री के प्रति था किन्तु अब ...
संघ की सेवा का उत्तरदायित्व आप पर आ गया है । हम यही ...
कामना करते हैं कि आप अपना दायित्व निभाते हुए उत्तरोत्तर ...
को आगे बढ़ाते रहें । आप श्री को युवाचार्य पद देकर पूज्य ...
आचार्य श्री जी ने जिस दूरदर्शिता का परिचय दिया है, वह ...
वन्दनीय है ।

हर्ष विभोर शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनिजी म. ने ...
कहा कि इस समय से मेरा रोम-रोम हर्ष विभोर है । अब ...
राम भरोसे काम सौंप दिया है । सकल संघ के लिए इससे ...
हर्ष की बात और क्या हो सकती है ? कल तक मैं ...
कारण सोच रहा था कि ऐसे ऐतिहासिक प्रसंग पर उपस्थित हो ...
या नहीं किन्तु आज प्रातः विचार से शक्ति मिली और मैं यहाँ ...
गया । मेरा रोम-रोम उल्लसित है और मुझे भादवा सुदी ...
देशनोक चौमासे का प्रसंग याद आ रहा है । मैं प्रसंगोपात ...
नतक की पूर्ति कर रहा था । तेले का तप था और ...
मौन था । स्वप्न में मुझे राम के दर्शन हुए । उस दिन की यह ...
मैंने श्री गौतम मुनिजी को नोट करा दी थी । यह स्वप्न आज ...
हो गया । चादर प्रदान की मंगल घड़ी आ गई है । मैं युवाचार्य ...
जी को मंगल बधाई देता हूं ।

श्री धर्मेश मुनिजी ने अपने कथन के समापन ...
आराध्य प्रवर को अपनी पुस्तक 'आचार्य गणेश गुण शतक' ...
करते हुए भक्तिपूर्वक गुरु वन्दना करते हुए कहा कि—

तर्ज—उड उड रे

सुनो-३ ओ म्हारा पूज्य नाना गुरु
शपथ आज सब खावा गुरु सा-२
भावी शासन नायक चरणे,
लुल लुल शीष झुकावा गुरुसा ।
जैसी श्रद्धा था पर म्हारी,
उण सु अधिक रखावा गुरुसा ।
राम राज्य रो आनन्द पावा,
राम नाम रम जावा गुरुसा ।
"धम" सघ भी वढे निरतर,
मगल भावना भावां गुरुसा ।।

महाक्रान्ति स्थविर प्रमुख श्री प्रेम मुनिजी म सा ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि चतुर्विध संघ के लिए आज महान् हर्ष का दिन है कि वर्षों से संघ प्रमुख जिस आशका से उद्वेलित नजर आते थे, आज वह आशका निमूल हुई । समता विभूति आचाय श्री नानेश चिन्तन के क्षेत्र मे भी प्रथम हैं, इसलिए विघटन नहीं होगा, उनका निर्णय सर्वमान्य है व रहेगा । उन्होंने अपने गुरु शातक्राति के दाता श्री गणेशाचाय जी से जो उत्तराधिकार पाया था उसे, उस क्रांति को समता के परिवेश में महाक्रांति मे ढाल कर आज समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है । समाज की गोदी मे आज युवाचाय के रूप मे 'राम' को सौंपा है, यह एक महान् उपलब्धि है। यह गुरु भ्राताओं की महानता है । सभी सत सती वग निर्णय तक जैसे सगठित रहे, आगे भी वैसे ही संगठित रहेंगे । कधे से कधा मिलाकर सहयोग करेंगे । जिनशासन का गौरव बढ़ाएंगे ।

आज सघ सरक्षक श्री इन्द्रचन्द जी म सा बीकानेर में होते हुए भी यहां नहीं पधार सके हैं । उन्होंने मुझे जो निर्देश दिए हैं, तदनुसार मैं उनको अर्थात सघ सरक्षक श्री इन्द्र मुनिजी म सा का आशीर्वाद युवाचार्य श्री को सौंप रहा हूं । आप पुरुषार्थ करें और संघ की यशोवृद्धि करें ।

अभयदान इसी समय श्री लक्ष्मीचन्द जी बांठिया मद्रास ने आपाप स्वर से ६ उपवास के पचक्खाण ग्रहण किए और ६ गायों को

अभयदान देने के संकल्प भी धारण किए।

सुअनुशासन दें महासती श्री ललित प्रभाजी म सा ने
गीत के साथ अपना कथन शुरू किया—"भूमंडल पे चमक
गुरु नानेश हमारे' और कहा कि युवाचार्य श्री जी इस पुण्य
पर प्राप्त वरदान को धरोहर के रूप में सजो कर रखेंगे,
सबका विश्वास है। आज आचार्य देव ने जिस बड़ी का
किया है, वह शासन को दिपाएगे, ऐसी हमारी दृढ़ धारणा।

मैं महासती श्री पेपकवर जी म सा एवं समस्त
की ओर से निवेदन करती हू कि आप श्री सुनिश्चित रहें।
सक्षम हैं व आज्ञा पालन को सदा तत्पर हैं। आज इस म
रोह में महासती श्री धापूकंवर जी म सा, महासती श्री
म सा, श्री इन्द्रकवर जी म सा जैसी सतियां उपस्थित नहीं
कि शासन की शोभा हैं। ऐसी महासती वृन्द की अनुपस्थि
असर रही हैं किन्तु वे विभूतियां आचार्य देव के आज्ञा पा
भारत के सुदूर दक्षिण और मध्य भाग में रहकर सेवार्पित हैं।

आज भक्ति में विभोर होकर भक्तों का दिल बोल
जय गुरु नाना, ऐसे मंगल पावन प्रसंग पर मेरा युवाचार्य
निवेदन है कि वे सुअनुशासन दें, जिससे शासन की और भी प्र

सौरभ आदश त्यागी श्री रणजीत मुनिजी म सा
मुक्तक के द्वारा अपने भाव व्यक्त किए और कहा कि गुरुदेव
हरियाले वनों से लेकर ऊसर रेगिस्तानों तक महक रहा है
गुरुदेव ने भव के लिए आलम्बन प्रस्तुत किया है। हमारी
कि गुरुदेव शतायु हों।

इसी समय फरीदाबाद के श्री केशरीचन्द जी
गुरुदेव से ६ उपवास के पच्चक्खाण ग्रहण किए।

पावन घड़ियां महासती श्री उदय प्रभाजी के साथ
वृन्द में भजन "मधुर इन पावन घड़ियों में, शत शत आयु
ने वातावरण को हर्ष से भर दिया।

समभाव शासन इसके बाद श्री अजित मुनिजी ने
ओजस्वी विचार उपस्थित जनसमूह के समक्ष रखे। उन्होंने
वीतराग शासन की प्रसन्नता निराबाध गतिशील है। इस

जब भी भावी आचार्य का चयन हुआ है तो भारी उतार चढाव देखने को मिले हैं। आचार्य श्री श्रीलाल जी म सा ने ऐसे प्रसग पर ४० सतो को शासन से निष्कासित कर दिया था। श्रीमद् जवाहराचार्य जी ने जब श्री गणेशाचार्य जी को उत्तराधिकार सौंपा था तब भी ऐसी स्थितिया आई थीं। पर हम सभी का परम सौभाग्य है कि आज समता विभूति आचार्य प्रवर के निर्णय का एक स्वर से अनुमोदन हुआ है। इसका श्रेय भी आचार्य श्री के निर्माण को ही है कि आज संत और सतीवृन्द मे ऐसी विभूतिमत्ता है कि वे एक आदेश पर समर्पित होने, न्योछावर होने को तत्पर रहते हैं।

गुरुदेव ने इस दूरगामी प्रभाव वाले कठिन निर्णय के प्रसंग में केवल इतना संकेत किया कि "अन्तरात्मा को राममुनि जच रहे हैं।" मात्र इस संकेत पर हम सबने गुरुदेव को अन्तिम निर्णय तक पहुचने मे सहकार किया और परिणाम आज हमारे सामने है। बन्धुओ यह श्रद्धा-समर्पण अलौकिक है। आप लोग इस समर्पण के प्रकाश मे सोचें कि क्या आप भी ऐसे चल रहे हैं? जीवन जहा लिया, मरण भी वही होगा। तनिक सा अविवेक भी मोघ पैदा कर सकता है। ऐसा सम्यक् आचरण रखें कि कोई अगुली न उठा सके।

श्री अजित मुनिजी ने इन पंक्तियो के साथ अपने विचार पूर्ण किए—

युग-युग जीओ नाना गुरुवर
धर्मध्वजा फहराओ
चरणा री शरण म्हां ने राखजो ओ
हाथ जोड मान मोड
तिक्खुत्तो के पाठ से
गुरुवर स्वीकारो, म्हारी वन्दना।

अप्रतिम साहस स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य श्री ज्ञान मुनिजी म सा ने कहा कि मुझे गुरुदेव की पावन सन्निधि मे रहने का बहुत अवसर मिला और उससे मुझे आचार्य श्री जी को समझने, उनके अन्तरंग मे झांकने का सौभाग्य मिला पर इस बार उनके साहस को देखने का भी मौका मिला। संकल्प के साथ उनका साहस भी जग जाता है फिर तो चाहे सारी दुनिया एक ओर हो जाए गुरुदेव अन-

संघ ने स्वयं की तथा नोखा संघ की ओर से आज्ञापालन हेतु तत्पर रहने का वचन दिया। श्री भंवरलाल जी ओस्तवाल ब्यावर, श्री वीरेन्द्र सिंहजी लोढ़ा उदयपुर, श्री मदनलाल जी कटारिया, श्री धूलचन्द जी मुदाल कानोड, श्री सम्पतमल जी बरड़िया, महूर, श्री सम्पतलाल जी सिपाणी उदयरामसर और श्री मोतीलाल चण्डालिया, कपासन ने अपने-अपने संघों की ओर से गुरुदेव के निर्णय का अनुमोदन किया।

श्री सुल्तान जी गोलछा बीकानेर ने कहा कि सन्त-शिरोमणि और संघ संरक्षक श्री इन्द्रचन्द जी म सा की कृपा से यह महोत्सव बीकानेर में सम्पन्न हुआ है किन्तु स्वयं श्री इन्द्रचन्द जी म सा इस अवसर पर नहीं पधार सके, इसका हम लोगों को दुःख है।

वयोवृद्ध शिक्षाविद प श्री रतनलाल जी शास्त्री ने शुभकामना अर्पित की।

अलौकिक ध्यान से चयन संघ प्रमुखों की ओर से विचाराभिव्यक्ति के क्रम का समापन करते हुए नवनिर्वाचित संघ अध्यक्ष, वर्तमान उपाध्यक्ष, उद्योगपति श्री रिधकरण जी सिपाणी बेंगलोर ने कहा कि परम पूज्य आचार्य श्री नानेश के पावन चरणों में कोटिशः वन्दन के साथ ही आज मैं युवाचार्य श्री राम मुनिजी के प्रति भी तथा संघ की ओर से हार्दिक मंगल कामनाएं प्रकट करता हूं, वन्दन करता हूं। परम पूज्य आचार्य प्रवर ने चतुर्विध संघ का इस गौरवशाली भारत देश को जो महान् तथा सात्विक दिशा निर्देश किया है और उस पथ पर बढ़ने की जो प्रेरणा है, उसके लिए देश और समाज आपश्री का सदैव ऋणी रहेगा।

आचार्य प्रवर ने अपने अलौकिक ध्यान से और अपनी दीर्घदृष्टि से युवाचार्य पद पर श्री राम मुनिजी का चयन करने की घोषणा की है, यह चतुर्विध संघ के इतिहास का एक सुनहरा अध्याय है।

आचार्य प्रवर की प्रेरणा से देश भर में जनकल्याण कार्य सम्पन्न हो रहे हैं। गुरुदेव के निर्देशानुसार चौमासे में दिन को रात्रि को जोरदिया म संघ के समस्त स्वधर्मी बन्धुओं को उदास करते विचार रहे थे। कुछ हुआ है कि गुणग्राही संघ ने

चारों को स्वीकार कर कैंसर आदि जैसे असाध्य रोगो में अय सहा-
ता के लिए समता जनकल्याण योजना का शुभारम्भ किया और
निदय एक करोड़ रुपये की निधि स्थापित करने का सकल्प लिया
जसमें से २७ लाख रुपये के आश्वासन तत्काल ही प्राप्त हुए। मेरा सभी
धुओ से निवेदन है कि इस योजना के लक्ष्यो की पूर्ति हेतु खुलकर
हयोग प्रदान करें।

मुझे यह कहते हुए भी प्रसन्नता है कि इस पुनीत अवसर
र परम पूज्य आचार्य श्री जी के जन्म स्थान दांता में एक विद्यापीठ
नाने का निणय किया गया है। यह २ करोड रुपये की योजना है
जसे साकार करने को दिशा मे तीन महानुभावो द्वारा पच्चास लाख
पयों की घोषणापूर्वक योजना का शुभारम्भ कर दिया गया है। आप
भी से इस महत्वपूर्ण योजना मे भी सहयोग प्रदान करने का निवे-
दन है।

हमारे युवाचार्य श्री राम मुनिजी की जन्म भूमि देशनोक मे
जनकल्याण कार्यों हेतु भी सघ की ओर से एक योजना प्रारम्भ करने
का निणय लिया है। इस योजना हेतु श्री दीपचन्द जी भूरा, संघ उपा-
ध्यक्ष श्री सुन्दरलाल जी दुगड आदि और देशनोक सघ ने पूर्ण सहयोग
देने का आश्वासन दिया है। इस योजना मे भी आप सबका सहयोग
वांछनीय है।

मेरा विश्वास है कि इस पावन अवसर से प्रेरणा लेकर जन-
सेवा के कार्यों हेतु आप सभी अग्रसर होंगे। अन्त में मैं एक बार
फिर इस पुनीत अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव, युवाचाय श्री, सत-सती
वर्ग तथा समस्त उपस्थित श्रावक-श्राविका वर्ग, चतुर्विध सघ एव सभी
समागत बन्धु बहिनो का हार्दिक अभिनन्दन करता हू।

इसके बाद बीकानेर संघ की ओर से श्री मवरलाल जी
कोठारी सयोजक युवाचाय चादर महोत्सव समिति के आभार ज्ञापन
के साथ ही जय गुरु नाना के उद्घोषों के साथ समारोह पूर्ण हुआ।

परम पूज्य गुरुदेव से मंगल पाठ श्रवण कर सुधी श्रावक-
श्राविका हर्षित हो नगर-पथो पर स्वस्थान जाने के लिए बढ चले।
बीकानेर नगर की सभी सड़कें श्वेताम्बर सन्तों के समूहों और श्रद्धा-
लुओं के प्रयाण से शोभित हो रही थीं। इस प्रकार यह महान् समा-

किन्तु अब स्वास्थ्य की कुछ स्थिति देखते हुए एव ध्यान मौन आदि में अधिक समय प्राप्त हो इसके लिए मैं अपने कार्यभार से कुछ मुक्त होना चाहता हू । निग्रन्थ श्रमण-श्रमणियों ने यथा शक्ति संघ के विकास मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है और दे रहे हैं। विश्वास करता हू कि आप भविष्य में भी देते रहेंगे । संघ के सभी साधु साध्वी इस संघ के अभिन्न अंग है । सबका अपना-अपना स्थान है । मैं उन सबके सहयोग का सम्मान करता हू । जिन्होंने पद लिप्सा से ऊपर उठकर जिन शासन का गौरव बढ़ाया है इस भविष्य की व्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए इस जिनशासन विकास एव पूर्वाचार्यों की क्रांतिकारी विशुद्ध परम्परा को बनाये रखने के लिए फिलहाल मेरे बाद तृतीय पद को सम्भालने के लिए शासनज्ञ, सेवाभावी, तरुण तपस्वी, विद्वान, मुनिप्रवर श्री राम लालजी म सा को संघ के समग्र अधिकारों के साथ युवाचार्य के रूप मे नियुक्त करता हू ।

चतुर्विध सघ शासनज्ञ सेवाभावी तरुण तपस्वी विद्वान उपाध्याय प्रवर श्री रामलालजी म सा की आज्ञाओं को मेरी आज्ञा के समान आराधन करते हुए सघ विकास में उन्हें सहयोग प्रदान करें।

संघ पर की गयी सतत् सेवाओं को मद्देनजर रखते हुए सघ संरक्षक के रूप में कार्यवाहक पद विभूषित, कर्मठ सेवाभावी प्रभावक सरक्षक श्री इन्द्रचन्दजी म सा को नियुक्त करता हू ।

इनके साथ ही फिलहाल निम्न पांच महामुनिराजों को सहयोग के लिए "स्थविर प्रमुख" के रूप में नियुक्त करता हू ।

(१) स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य तरुण तपस्वी ओजस्वी व्याख्याता श्रमण प्रवर श्री शांतिलालजी म सा

(२) स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य तरुण तपस्वी मधुर व्याख्याता मुनि प्रवर श्री प्रेमचन्दजी म सा.

(३) स्थविर प्रमुख पंडित रत्न मधुर व्याख्याता साधु प्रवर श्री पारसकुमारजी म सा

(४) स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य मधुर व्याख्याता संवति प्रवर श्री विजयचन्दजी म सा

(५) स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य ओजस्वी व्याख्याता संत प्रवर श्री ज्ञानचन्दजी म सा

ये महामुनिराज तृतीय पद के अधिकारी से संघ विकास में ... आचारी के अन्तर्गत संयमी जीवन को आगे बढ़ाने वाले परस्पर महत्वपूर्ण परामर्श करते हुए संघ को गति देने मे अपना सहयोग प्रदान करेंगे। जिनके परामर्शों पर जिन्हें तृतीय पद का कार्यभार सौंप चुका वे उस पर विचार करते हुए निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति की सुरक्षा के उद्देश्यों को एव पूर्वाचार्यों की क्रांतिकारी विशुद्ध परम्पराओं को एव शासन हितों को ध्यान में रखते हुए नि स्वार्थ और निष्पक्ष निर्णय लेने में सर्वथा स्वतन्त्र रहेंगे।

विद्वद्वर्य मधुर व्याख्याता तरूण तपस्वी श्री सेवन्तकुमारजी म सा, विद्वद्वर्य तपस्वी आदर्श त्यागी श्री सम्पतलालजी म सा आदर्श त्यागी, तरूण तपस्वी पण्डितरत्न श्री धर्मेशकुमारजी म सा आदि ने जो शासन की प्रभावना में योगदान दिया है उनको मैं "शासन प्रभावक" के रूप में सम्मान करता हू एवं अपेक्षा करता हू कि वे इसी प्रकार शासन प्रभावना में सहयोग करते रहें।

वीतराग देव का शासन एव पूर्वाचार्यो का क्रांतिकारी विशुद्ध परम्परा की अक्षुण्णता के साथ विकास की गतिशीलता को बनाये रखने के लिए मुख्यरूप से फिलहाल निम्न महासतियाजी शासन प्रभाविका विदुषी तपस्विनी महासती श्री वल्लभकंवरजी म सा, शासन प्रभाविका परम विदुषी महासती श्री पानकंवरजी म सा, शासन प्रभाविका परम विदुषी घोर तपस्विनी महासती श्री नानूकंवरजी म सा., शासन प्रभाविका विदुषी महासती श्री चांदकंवरजी म सा, शासन प्रभाविका विदुषी महासती श्री इन्द्रकंवरजी म सा, शासन प्रभाविका विदुषी महासती श्री गुलाबकंवरजी म सा आदि संघ के महासती वर्ग की सभी प्रकार की संयमीय सुरक्षा का ध्यान रखती हुई स्वर्गीय आचार्य देव के उद्देश्य के अनुरूप संघ संचालन में सर्वतोभावेन समर्पित होकर शासन नायक को सतत् सहयोग प्रदान करती रहें ऐसी मैं अपेक्षा रखता हू।

पूर्वोक्त परामर्श आदि सभी व्यवस्थाओं में ...

हर्षद घोषणा–श्री चम्पालाल डागा, मंत्री, श्री अ भा साधु-र्गी जैन संघ अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन परम्परा में साधु-र्गी परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस गौरवशाली संघ के यक आचार्य श्री नानालालजी म सा ने अपने संगठन को सुदृढ़ ाते हुए अपने उत्तराधिकारी के रूप में एक अप्रसिद्ध पर समर्पित त्त शास्त्रज्ञ, विद्वद्वर्य, तरुण तपस्वी, मुनिवर श्री रामलालजी म सा । युवाचार्य पद प्रदान करने का निर्णय लेकर अनुपम विचक्षणता का रिचय दिया है। साथ ही आचार्य श्री नानेश ने युवाचार्य के सह-ोग के लिए कर्मठ सेवाभावी अपने वरिष्ठ गुरुभाई श्री इन्द्रचन्दजी सा को संरक्षक घोषित किया। आचार्य श्री नानेश ने ५ संघ ्थविर प्रमुख और परामर्शदाताओं की घोषणा की है ये हैं मुनि श्री ्तिलालजी म सा, श्री प्रेमचन्दजी म सा, श्री पार्श्वमुनिजी म सा, श्री जयमुनिजी म सा, श्री ज्ञानमुनिजी म सा, संघ के सभी साधु साध्वियों ्इस संघ को अबाध गति से आगे बढ़ाने का गुरुदेव को आश्वासन ्या।

समता विभूति जैनाचार्य श्री नानालालजी म सा ने ाज बीकानेर स्थित सेठिया धार्मिक भवन में प्रातः प्रार्थना के समय पने उत्तराधिकारी के रूप में शास्त्रज्ञ विद्वद्वर्य मुनिप्रवर श्री रामलाल ी म सा को युवाचार्य पद प्रदान करने की घोषणा की। इस ोषणा का तुरन्त एकत्र श्रावक श्राविकाओं ने हर्ष पूर्वक स्वागत किया ै। औपचारिक चादर प्रदान उत्सव अखिल भारतीय स्तर पर शीघ्र ी आयोजित किया जावेगा।

ार्च २ ३ ९२ सेठिया धार्मिक भवन, बीकानेर

अनन्त आभार–श्री चम्पालाल डागा, मंत्री, श्री अ भा ्साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर जिन शासन के क्षितिज पर २ दिन ंतर पुनीत परम्पराओं में आगमनिधि, तपोपूत, महान् क्रियोद्धारक ्चार्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा की परम्परा महान् लोकोपकारक और ्रांतिकारी सिद्ध हुई है। इस महान् क्रांतिकारी परम्परा में समाज और ्ट्र के सम्यक् और संतुलित विकास के लिए युग-सृजन में साध-्य समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप श्रमण संस्कृति ी दिशाबोध प्रदान करने में साधुमार्ग अग्रणी रहा है।

राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य और स्वदेशी के प्रश्न पर श्रीमद् आचार्य की सिंह गर्जना और श्रमण संस्कृति के सुरक्षा के प्रश्न पर गणेशाचार्यजी म. सा. द्वारा जिस अप्रतिम धैर्य और साहस के साथ शांत क्रांति की स्थापना की गई, वह भगवान [illegible] शासन की देदिप्यमान और ज्योतित अमर घटनाएं बन कर में अंकित हैं।

इसी युग द्रष्टा युग सृष्टा बोध के साथ अष्टम पट्टधर शासन नायक आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म. सा. ने जिन [illegible] जिस प्रकार दीप्तमान किया है, वह अविश्वसनीय सा लगते [illegible] सत्य और अलौकिक कार्य है। परमपूज्य आचार्य प्रवर ने [illegible] ग्रहण करते ही समता दर्शन रूपी अमृत प्रदान कर समाज [illegible] विषमता रूपी विष को परिहार करने का सूत्रपात किया। [illegible] प्रवर की अमियवाणी से मालव अंचल में धर्मपाल समाज [illegible] युग सत्य साकार हो उठा। समीक्षण ध्यान के माध्यम [illegible] समाज जीवन में तनाव शैथिल्य हेतु दिशा-दर्शन किया। [illegible] भव्य भागवती दीक्षाओं में ऐसे प्रसंग उपस्थित किए जो [illegible] विगत शत ५०० वर्षों के इतिहास में दुर्लभ रहे हैं। [illegible] संयमीय दृढ़ता–वज्र के समान कठोर और आत्मीय स्नेह की [illegible] नवनीत के समान स्निग्ध व पोषक तथा पुष्प के समान [illegible] को सुवासित करने वाली है।

आपके अनन्य प्रताप से आज साधुमार्गी समाज का [illegible] विध संघ गर्वोन्नत मस्तक और उदात्त हृदय से समाज और राष्ट्र [illegible] अहर्निश सेवा में संलग्न है। आपश्री की सन्निधि व [illegible] अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ विकास के अनिवार्य आयामों को [illegible] करते हुए प्रगति के पथ पर आरूढ़ है। संघ सेवा और [illegible] नाथ लेकर शासन की आज्ञा आकांक्षा व निर्देशों की पूर्ति में [illegible] भाव से समर्पित है।

विगत दिनों संघ प्रमुखों ने बीकानेर में श्री [illegible] के निवास पर एकत्र होकर अष्टाचार्य की गौरव गाथा के [illegible] भावी आचार्य के रूप में युवाचार्य मनोनीत करने हेतु आचार्य [illegible] निवेदन करने का निश्चय किया। संघ प्रमुखों ने [illegible]

रुदेव की सेवा मे उपस्थित होकर और इस ओर गुरुदेव का ध्यान आकृष्ट करने का अपना कत्तव्य भी निभाया ।

सघ के हर्ष का पारा पारा नहीं है कि परम पूज्य आचार्य-प्रवर ने इतना शीघ्र निणय लेकर युवाचार्य की घोषणा भी करदी । गुरुदेव की अन्तदर्शी दृष्टि ने शास्त्रज्ञ, विद्वान्, तरुण तपस्वी मुनिश्वर श्री रामलालजी म सा मे निहित योग्यताओ तथा क्षमताओ को परखा और आपश्री ने उन्हें युवाचार्य घोषित किया है ।

मैं श्री अ भा साधुमार्गी जन संघ की ओर से आचार्य प्रवर की इस घोषणा का पुरजोर अनुमोदन करता हू और सवभावेन सहकार का विश्वास दिलाता हू । हम सदव की भांति आज्ञापालन मे तत्पर रहेंगे ।

मैं इस अवसर पर युवाचाय श्री जी का भी सघ की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करता हू और उनकी आज्ञाओं के पालन की त्रिविध तत्परता प्रकट करता हू । आपश्री की सरलता, सहजता और अनुशासन पालन की भावना अभिनन्दनीय व अनुकरणीय है ।

परम पूज्य आचार्य प्रवर की इस घोषणा से सघ और समाज मे अपार हर्ष छा गया है । गुरुदेव के इस निणय से चतुर्विध सघ को नवीन बल, आशा और विश्वास प्राप्त हुआ है । हम गुरुदेव के अनन्त आभारी हैं ।

मैं एक बार पुन स्वयं अपनी ओर से तथा श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ की ओर से युवाचाय घोषणा का स्वागत करता हू, अभिनन्दन करता हू ।

दिनांक ३-३ ६२ सेठिया धार्मिक भवन, बीकानेर

युवाचार्य चादर महोत्सव

श्री चम्पालाल डागा, मन्त्री
अ भा सा जन संघ, बीकानेर

चतुर्विध सघ के लिए आज अपार हर्ष और गौरव का अवसर उपस्थित है । शासन नायक परम पूज्य आचार्य-प्रवर श्री नानालालजी म सा आज युवाचाय श्री रामलालजी म सा को चादर प्रदान कर रहे हैं । बीकानेर त्रिवेणी सघ को इस दिवस के आयोजन

का गौरव प्रदान करके आचार्य प्रवर ने हम पर महान उपकार किया है। हुकम सम्प्रदाय में अष्टम आचार्य श्री नानेश ने जो ज्योति जलाई है, वह स्थानकवासी समाज के इतिहास का सुनहरा पृष्ठ है। मैं आचार्य प्रवर और उनके आज्ञानुवर्ती सन्त-सती वर्ग के प्रति अपने अनन्त प्रणाम वंदना निवेदित करता हूं।

युवाचार्य श्री रामलालजी को प्राप्त करके चतुर्विध संघ धन्य हुआ है। आपश्री की अप्रतिम समर्पण भावना, असाधारण अनुशासन पालन, शास्त्र ज्ञान और आचार के प्रति अविचल निष्ठा समाज और देश को ज्ञान, दर्शन, चारित्र के क्षेत्र में महान् दिशा निर्देश देगी ऐसा मेरा ध्रुव विश्वास है।

मैं श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से तथा मेरी ओर से इस पुनीत अवसर पर युवाचार्य श्री जी का अभिनन्दन करता हूं और परम पूज्य आचार्य प्रवर को इस दीर्घ दृष्टि युक्त कल्याणकारी निर्णय हेतु बधाई देते हुए सर्वविध सहयोग का विश्वास दिलाता हूं।

मुझे महान् हर्ष है कि श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ नायक के दिशा निर्देशों का पूर्ण तत्परता से अनुशीलन और क्रियान्वित करने के प्रत्येक क्षण को सार्थक व साकार करता रहा है और आगे भी करता रहेगा। संघ की लोक कल्याणकारी योजनाओं में धर्मपाल प्रवृत्ति, छात्रावास छात्रवृत्ति, सहायता, स्वधर्मी सहयोग, स्वावलंबन की अनेकानेक योजनाएं। जीवदया और शाकाहार के क्षेत्र में संघ की सजगता और सहयोग भावना ने पूरे देश में उसको आदर प्राप्त किया है।

मैं उपस्थित सभी जनों से संघ को सबल बनाने का अनुरोध करता हूं।

एक बार पुनः आचार्य प्रवर, युवाचार्य वर और चतुर्विध संघ को विनीत प्रणाम।

"परमात्मा के न मिलने पर भी संसार के समस्त पदार्थों को आत्मा तुच्छ मानने से परमात्मानन्द की प्राप्ति हो सकती है।"

—श्रीमद् जवाहराचार्य

श्रमण संस्कृति–उन्नायक

आचार्य प्रवर नानेश

△ नाथूलाल जैन चिलेश्वर

जैन संघ में आचार्य का स्थान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है। संघ का उत्कर्ष या अपकर्ष आचार्य के व्यक्तित्व पर आश्रित है। जिनेन्द्र देव ने शासन संघ का समूचा उत्तरदायित्व आचार्य देव के व्यक्तित्व पर इसलिये निर्भर किया है कि उनके जीवन का कण-कण रत्नत्रय आदि छत्तीस गुणों से आलोकित एवं स्वयं के जीवन में कथनी-करणी का श्लाघनीय संगम रहता है। अतएव सुयोग्य, सक्षम एवं कुशल आचार्य देव की सदैव आवश्यकता रही है। आचार्य देव की अनुपस्थिति में संघ अनाथ माना जाता है।

आचार्य देव का व्यक्तित्व उस संघ के अन्य साधु साध्वियों पर झलकता है। आचार्य-प्रवर श्री नानालाल जी वर्तमान जैन जगत के एक ज्योतिर्मय सूर्य हैं। विषमता के इस युग में समता का दर्शन, दरिद्रनारायण का उद्धार, परिमार्जित, धर्म व्यवस्था का सूत्रपात, विशाल शिष्य मंडल का संचालन, शिथिलाचार के विरुद्ध क्रांति पवित्र संयम-यात्रा, ओजयुक्त वाणी का प्रवाह, तोड़ने के स्थान पर जोड़ने का सिद्धांत और शांत स्वभाव आपकी जीवन यात्रा के महत्त्वपूर्ण चमत्कार हैं।

आचार्य-प्रवर का सर्वांगीण जीवन विविध विशिष्ट अनुभूतियों का उपवन है। आपके जीवन का प्रत्येक क्षण परोपकार की महक से महकता है। सेवा समता धर्म से दमकता है और शील सदाचार से चमकता है। आप विद्यालय के विद्यार्थी नहीं बने परन्तु विद्या ने आपका वरण किया, आप प्रवचन शैली के ग्राहक नहीं बने वरन् स्वयं शीतल–सुगंध सुधाभरी वाणी ने आपको अपना आस्पद बनाया, आप कल्पना के पीछे नहीं दौड़ते, यथार्थता ही आपका अनुगमन करती है। आप पूजा, प्रतिष्ठा, मान, सम्मान के इच्छुक नहीं हैं, स्वयं जनमेदनी ही आपको अपना कर्णधार बनाकर अपना सौभाग्य समझ रही है।

चतुर्विध संघ द्वारा आप वि. सं. २०१९ में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आज तक करीबन २९९ भव्य आत्मायें आपके आध्यात्मिक वैभव को स्वीकार कर चुकी हैं और उससे भी अधिक महा

आत्मायें आपके सान्निध्य में भारत के कोने कोने में विचरण कर रही हैं। इस समय भी अनेक मुमुक्षु आपसे दीक्षा लेने को आतुर हैं जिनमें से धनिकता में डूबी अमीरी को लात मारकर पांच महाव्रत धारण कर अपना अहोभाग्य समझ रहे हैं। यहीं पर पिता-पुत्र तो कहीं पति पत्नी साथ साथ दीक्षा ले रहे हैं। एक तरफ कठिन तपस्वी पुरुष संघ को चमका रहे हैं तो दूसरी तरफ मिथ्या पाखंडों को मिटाने समाज सुधार का विशाल कार्यक्रम चल रहा है। वास्तव में समता, तप और संयम की त्रिवेणी प्रवाहित की है और इस नींव पर साधु मार्ग का एक ऐसा भव्य प्रासाद खड़ा किया है, जिसका अस्तित्व युगों युगों तक रहेगा।

एक सामान्य श्रावक द्वारा एक महामना, महामनस्वी, स्वरूप आचार्य प्रवर के संयमी जीवन का विश्लेषण करना एक दुष्कर कार्य है। क्योंकि आप गुणों के पुंज हैं और लेखक भी एक समय में एक ही गुण का चित्रण कर सकती है। फिर भी आपकी कथनी एवं करनी, अनूठी व्याख्यान शैली से प्रभावित होकर महिम आचार्य प्रवर के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं तपोमय संयमी जीवन की झिलमिलाती झांकी श्रद्धालु श्रावकों के कर कमलों में अर्पित करते हुए मैं अत्यन्त गौरव का अनुभव कर रहा हूं। आपकी जीवनयात्रा अध्येताओं को आत्मोन्नति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रही है। आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. का परिचय प्रकाश स्तम्भ का कार्य करेगा। श्रद्धेय आचार्य प्रवर का दर्शन व्यक्ति एवं समष्टि के लिये एक प्रेरणा है।

जन्म एवं बाल्यकाल

कपासन के निकट दांता एक छोटा सा ग्राम है। इस ग्राम में श्री मोडीलाल जी पोखरना अपनी गृहस्थी सुचारू रूप से जीवन व्यतीत कर रहे थे। [illegible] आदर्श [illegible] परिवार का कुशल संचालन था। [illegible] धर्म-परायणा सुशीला और आदर्श गृहिणी [illegible] धर्म कार्यों के प्रति वे सदा जागरूक [illegible] सर्वविध गुण रत्नों से विभूषित थीं। [illegible]

[illegible] श्री नव गर्भ में आये, [illegible]

उत्तमोत्तम भाव आने लगे । धर्म, तप, दान, दया, सामायिक, प्रतिक्रमण एव साधु साध्वियो के दर्शन करके जीवन सफल करने की भावना जागृत होने लगी । पुण्यात्मा के पदार्पण के शुभ सकेत मिलने लगे । सम्पूर्ण परिवार मे आनन्द का वातावरण था । कहा भी है कि भावी घटनाओं की प्रतिच्छाया पहले ही दृष्टिगोचर हुआ करती है । तदनुसार वि स १९७७ की ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को इस पोखरणा वंश का भाग्य सितारा चमक उठा । उषाकाल में इस तिलक का जन्म हुआ । शिशु का नाम 'गोवर्धन' रखा गया, परन्तु लाड प्यार व नन्हा होने के कारण 'नाना' नाम प्रसिद्ध हुआ ।

शैशवकाल

नन्हा गोवर्धन नन्हें कृष्ण की तरह जन्म-जात चपल, चचल परन्तु परोपकारी था, पूरे गाव की आखो का तारा था । एक दिन मे पचासो माताओ की गोद का सुख भोगता था । माता शृगार देवी का यह लाडला बाल्यकालीन स्वाभाविक नटखट भी था । एक घटना का अवलोकन कीजिये ।

"सध्या का समय" माता शृगार देवी कुछ महिलाओ के साथ बैठी सामायिक कर रही हैं । रेत की घडी रखी है । नाना बाहर से दौड़ कर दरवाजे मे प्रवेश करता है । नाना की दृष्टि ज्योही घडी पर पडती है वह घडी को झपट लेता है"

"माता यह घडी तो मैं खेलने के लिये लूगा ।"

"अरे नाना यह खिलौना थोडे ही है, देख मैं सामायिक कर रही हू, यह तो घडी है ।"

"मां ! दिन रात मे तो ३० घडी होती हैं यह ३१ वीं कौनसी ?"

"इसके हाथ मत लगा, पाप लगेगा ।"

"यह तो मैं ही लूगा" कहते हुए नाना घडी बाहर ले जाता है ।

"और इसे फोडकर देखता हू, पाप कहा मरा है ?"

क्या उस समय यह कल्पना भी की जा सकती थी कि यह घडी तोड कर पाप को निकालने वाला नाना भविष्य में शिथिलाचार की घडी तोडेगा ।

आत्माय आपके सान्निध्य मे भारत के कोने कोने में विचरण कर रहे हैं। इस समय भी अनेक मुमुक्षु आपसे दीक्षा लेने को आतुर हैं, जि[illegible]मता मे डूबी अमीरी को लात मारकर पाच महाव्रत धारण करना [illegible] अपना अहोभाग्य समझ रहे हैं। कही पर पिता पुत्र तो कहीं पति पत्नी साथ साथ दीक्षा ले रहे हैं। एक तरफ कठिन तपस्वी मुनि [illegible] संघ को चमका रहे हैं तो दूसरी तरफ मिथ्या पाखडों को मिटाने [illegible] समाज सुधार का विशाल कार्यक्रम चल रहा है। वास्तव में [illegible] समता, तप और सयम की त्रिवेणी प्रवाहित की है और इस त्रिवे[णी] पर साधु मार्ग का एक ऐसा भव्य प्रासाद खडा किया है, जिसका अस्तित्व युगो युगो तक रहेगा।

एक सामान्य श्रावक द्वारा एक महामना, महामनस्वी, [illegible]स्वरूप आचार्य प्रवर के संयमी जीवन का विश्लेषण करना एक दु[ष्कर] कार्य है। क्योंकि आप गुणो के पुञ्ज हैं और लेखक की लेखनी [एक] समय मे एक ही गुण का चित्रण कर सकती है। फिर भी आचार्य [श्री] की कथनी एव करनी, अनूठी व्याख्यान शैली से प्रभावित हो कर [इन] महिम आचार्य प्रवर के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं तपोमय संयमी [जीवन] की झिलमिलाती झांकी श्रद्धालु श्रावकों के कर कमलो में [समर्पित] करते हुए मैं अत्यन्त गौरव का अनुभव कर रहा हू। आचार्य [श्री] की जीवनयात्रा अध्येताओं को आत्मोन्नति के मार्ग पर चलने की म[ह]त्वपूर्ण प्रेरणा दे रही है। आचार्य श्री नानालाल जी म सा का [यह] परिचय प्रकाश स्तम्भ का कार्य करेगा। श्रद्धेय आचार्य प्रवर का जीवन एवं दर्शन व्यक्ति एव समष्टि के लिये एक प्रेरणा है।

जन्म एव बाल्यकाल

कपासन के निकट दांता एक छोटा सा ग्राम है। इसी [ग्राम] मे श्री मोडीलाल जी पोखरना अपनी गृहणी श्रृगार देवी के साथ सु[खी] जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनका आदर्श परिवार धर्म, स्नेह [और] चैतन्य का सुरम्य उपवन था। पूज्य श्री की माता श्रृगार देवी [बड़ी] धर्म-परायणा, सुशीला और आदर्श गृहणी थी। सामायिक व [अन्य] धर्म-कृत्यों के प्रति वे सदा जागरूक रहती थीं। सौभाग्यवती मातु[श्री] अगणित गुण रत्नों से विभूषित थी।

जन्मोत्सव :

आपश्री जब गर्भ मे आये, माता श्रृगार देवी को अनन्य [illegible]

ं उत्तमोत्तम भाव आने लगे । धर्म, तप, दान, दया, सामायिक, प्रति-
क्रमण एवं साधु साध्वियों के दर्शन करके जीवन सफल करने की भावना
जागृत होने लगी । पुण्यात्मा के पदार्पण के शुभ सकेत मिलने लगे ।
सम्पूर्ण परिवार मे आनन्द का वातावरण था । कहा भी है कि भावी
घटनाओ की प्रतिच्छाया पहले ही दृष्टिगोचर हुआ करती है । तदनु
सार वि स १९७७ की ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को इस पोखरणा वश
का भाग्य सितारा चमक उठा । उषाकाल मे इस तिलक का जन्म हुआ ।
शिशु का नाम 'गोवर्धन' रखा गया, परन्तु लाड प्यार व नन्हा होने
के कारण 'नाना' नाम प्रसिद्ध हुआ ।

शैशवकाल

नन्हा गोवधन नन्हें कृष्ण की तरह जन्म-जात चपल, चचल
परन्तु परोपकारी था, पूरे गांव की आखो का तारा था । एक दिन
मे पचासों माताओ की गोद का सुख भोगता था । माता शृगार देवी
का यह लाडला बाल्यकालीन स्वाभाविक नटखट भी था । एक घटना
का अवलोकन कीजिये ।

"सध्या का समय" माता शृगार देवी कुछ महिलाओ के साथ
बैठी सामायिक कर रही हैं । रेत की घडी रखी है । नाना बाहर से
दौड कर दरवाजे मे प्रवेश करता है । नाना की दृष्टि ज्योही घडी पर
पड़ती है यह घड़ी को झपट लेता है"

"माता यह घडी तो मैं खेलने के लिये लूगा ।"

"अरे नाना यह खिलौना थोडे ही है, देख मैं सामायिक कर
रही हू, यह तो घडी है ।"

"मां ! दिन-रात मे तो ३० घडी होती हैं यह ३१ वीं
कौनसी ?"

"इसके हाथ मत लगा, पाप लगेगा ।"

"यह तो मैं ही लूगा" कहते हुए नाना घडी बाहर ले
जाता है ।

"और इसे फोडकर देखता हू, पाप कहां भरा है ?"

क्या उस समय यह कल्पना भी की जा सकती थी कि यह
घड़ी तोड कर पाप को निकालने वाला नाना भविष्य में शिथिलाचार
की घडी तोडेगा ।

परोपकारी नाना

नाना जब किसी भी दु खी प्राणी को देखता, उसका हृदय भारी हो उठता था। बूढ़ी औरतो के सिर से पानी का मटका ला उनके घर रख देता। जाति का प्रश्न तो इसके मस्तिष्क में ही न था। कोई भी बीमार व्यक्ति नाना से देखा नहीं जाता मृत व्यक्ति को देख कर तो वह स्वयं ही रो उठता, मन ही मन प्र करता—क्या मैं भी मरूगा ? विद्यालय मे नाना अध्यापकों का प्रि भाजन था तो छात्रों का मुखिया। नेतृत्व की भावना उसमें जन्म प्रवृत्ति थी। इस तरह बालक नाना मे जीवन के सुप्त धार्मिक सं कार जाग्रत होने लगे।

वैराग्य का उदय

अब नाना पूर्णरूपेण सज्ञान हो गया। वयानुसार माता-पि नाना के लिये नये ससार की रचना में लग गये। माता सोचती कि कब मेरा यह होनहार नाना विवाह करके आंगन को चमकाये इधर भाग्य नाना को दूसरा आंगन चमकाने के लिये ले जाने लग एक बार आदमोडा जाना पड़ा। नाना को घुड़सवारी का काफी श था। नाना वहा पर भी घोड़ी पर बैठ कर गया। और लोग मुनि श्री के पास सामायिक में बैठ गये किंतु नाना एक तरफ मुनि श्री से कालचक्र का वर्णन सुन रहा था। बालक नाना कुछ रहा था तो कुछ उसकी समझ से परे था। व्याख्यान सुनने के नाना अकेला ही घोडे पर बैठ कर अपने ननिहाल को रवाना हो गया घोडा धरती पर दौड रहा था। नाना का मस्तिष्क काल चक्र में भ्रमण कर रहा था। रास्ते में एक पीपल का पेड आया, घोड़ा अपने रूक गया। चिन्तन का वेग बढ़ा, व्याख्यान में जो कालचक्र सुना, वह प्रत्यक्ष सामने घूमने लगा, मन-उपवन में तूफान उठने लगा— मुझे भी दु खों की ज्वाला में जलना पड़ेगा क्या यह संसार केवल दु खो का ही घर है ? क्या यह संसार, मुझे मोक्ष गामी बनने देगा ? अब नाना पीपल के पेड के नीचे तप व विराग के झूले झूलने लगा। वाह रे पीपल का पेड और प्रकृति ! तथागत बुद्ध को तो पीपल के पेड के नीचे सुजाता की पीने पर ज्ञान प्राप्त हुआ और यहां पर तो हमारे नाना को स्वय महान ज्ञानी खीर पिला रही है। धन्य है नाना को,

[...]त्मा थी, जिसने उस जंगल में स्वयं को स्वयं ने बोध दिया। स्वयं [...] लिये स्वयं ने ही वैराग्य का दीपक जला दिया।

नाना चिंतन करता है—'वह दिन कब आवेगा जब मैं सफेद [प]रिधान पहन कर तप व त्याग के माध्यम से लोक व परलोक सुधा[रने] मे तत्पर हो जाऊंगा ? मुनिवृत्ति धारण कर जन जीवन मे वीत[रा]ग धर्म जागृत करूं तभी मेरा जीवन सार्थक है। मैं दीक्षा ग्रहण [क]रके ही रहूंगा।'

[सा]धना की राह पर

नाना के जीवन का अब कठिन अध्याय शुरु होता है। पिंजरे [से] भाग निकलने वाले सिंह की तरह "नाना" एक दिन आंख बचाकर [ज]गत् के सभी जाल को भेद कर परिवार से निकल पडता है। किन-[कि]न मुनिराजों के सानिध्य में नाना पहुंचता है यह अपने आप में एक [इ]तिहास है। पोखरणा वंश के इस उज्ज्वल नक्षत्र को ज्ञान की खोज [में] काफी भटकना पडा। उदयपुर से ब्यावर तक की यात्रा पैदल [क]रनी पडी। भूख-प्यास, सर्दी गर्मी के थपेडे इस विरागी आत्मा को [स]हने पडे। इतना भटकने पर भी ज्ञान की गंगा कहां ? कहीं पर [मि]थ्या पाखंड को धर्म का धवल परिधान पहना रखा है, तो कहीं पर [मु]निवृत्ति की मनगढंत कपोल कल्पित धारणा। सर्वत्र संकीर्ण विचार, [अं]ध परम्परा एवं शिथिलाचार। "नाना" जहां भी जाता धर्म की [वेश]भूषा में आडम्बर भरा मिलता। कहीं पर शिष्य-सम्पदा का लोभ [थ]ा तो कोई मुनि वेष को व्यापार बनाने के लिये प्रेरित करता। एक [क]हते हैं—"हमारे शिष्य बन जाओ तुम्हारे परिवार को मालामाल कर [दें]गे" दूसरे कहते हैं कि—"हमारे पंथ मे दीक्षा लो, हम तुम्हें आचार्य [ब]ना देंगे।"

नाना सोचता—'क्या यही श्रमण धर्म है ! क्या सच्ची साधना [ल]ुप्त हो गयी है ! नहीं, नहीं मुझे प्रयास जारी रखना चाहिए। [स]च्चे गुरु के बिना नाना को शांति कहां ?

नाना का भाग्य का चक्र अब सही बिन्दु पर आता है। [न]ाना श्री गणेशाचार्य के पास पहुंचता है। वन्दना आदि के बाद साक्षा-[त्]कार होता है। प्रथम वार्तालाप में ही नाना का रोम रोम पुलकित [हो] उठता है। नाना की अन्तरात्मा कहती है—आखिर मेरा प्रयास

सफल रहा, मुझे सच्चे गुरु मिल गए। नाना ने अनुभव किया गणेशाचार्य निर्ग्रन्थ श्रमण हैं, शुद्ध संयमी व निर्लोभी हैं, सम्यक् मोक्षमार्ग प्रदर्शक हैं।

नाना को अपार शांति हुई और उन्होंने अपनी नाव इन्हें श्री गणेशाचार्य को सौंपने का निर्णय कर लिया। गुरुदेव की स्नेह मधुर वचनावली का नाना पर गहरा प्रभाव पडा। उन्होंने अपना मस्तक गुरु के पद-पंकज मे झुका लिया।

संघर्षों पर विजय

नाना अपने प्रयास मे विजयश्री प्राप्त कर लेता है, पर अब पारिवारिक संघर्षों का क्रम चलता है। नाना की भावना का पता परिवार को चलता है। डांट फटकार कर नाना दाता से घर गया। वहा पर कितने ही प्रलोभन बताए, परन्तु लक्ष्य को पूर्ण करने वाला थोडे के लिए बहुत को गवाने को तैयार नहीं था। उसका मन साध्वाचार पालने और ज्ञान-वृद्धि की तरफ ही था।

सहर्ष आनन्द से

नाना का माता पर बडा स्नेह था। माता की आंखों के आंसू उनके कलेजे को छू रहे थे। वह माता की कोमल भावना को जानता था। माता के आसुओ मे मोह नही किन्तु शुभाशीर्वाद था—"मैं समझ गई नाना, अब तू नही रूक सकेगा", मेरा आशीर्वाद है—"जन्म-मरण की व्याधि से तू मुक्त होजा। मुक्ति-माता की गोद प्राप्त करना।"

अन्त मे उग्र वातावरण एकाएक सुधारस समान शान्त, शीतल और सरस बनता है। वैराग्य रस मे प्लावित नाना पुन अपने परिवार की आज्ञा लेकर श्री गणेशाचार्य जी की सेवा मे पहुंचता है और संघर्षों पर विजय प्राप्त कर पूर्ण रूप से विरक्त जीवन व्यतीत करता है। श्री नाना ने वि सं १९९६ पौष शुक्ला अष्टमी सोमवार की मंगल वेला मे कपासन नगर मे श्री गणेशाचार्य का शिष्यत्व स्वीकार किया। अत सारे नगर में हर्ष की लहर दौड गयी। जन-जन के मुख से नाना के वैराग्य की भूरि-भूरि प्रशंसा होने लगी।

दीक्षा एक आध्यात्मिक प्रयोग है। केवल रंग बिरंगे वस्त्र उतार कर श्वेत पोशाक पहन लेना, रजोहरण, पात्र, शास्त्र स्वीकार कर लेना ही दीक्षा-व्रत नहीं कहलाता, यह तो केवल बाह्य चिह्न है

क्षा तो वह है जिससे जीवन में एक मर्यादा स्थापित की जाती है। इसके कारण अन्तरात्मा में अनूठा परिवर्तन परिलक्षित होता है।

प्रारम्भिक साधु जीवन

नाना अपनी दीक्षा के बाद सर्व सावद्य प्रवृत्ति से निवृत्त हो र मनसा-वाचा कर्मणा प्रवचन-माता की आराधना में जुट गये। पांच महाव्रतों का पालन करते हुए समयानुसार ज्ञान ध्यान, विनय और गुरु भक्ति में सदैव जागरूक रहते हुए मुनि जीवन को सार्थक करने लगे।

मुनि श्री अभी नवदीक्षित थे, परन्तु विनय-विवेक-व्यवहार में बड़े कुशल थे। पहले ज्ञान फिर दया इस सिद्धांत के आप पक्के हिमायती हैं। इस कारण ज्ञान सम्पादन संग्रह करने की तीव्र अभिलाषा रखते हुए गुरुजनों का आदर करने में हमेशा आगे रहे।

पुण्योदय से गुरुदेव भी आपको इस युग म एक महान स्पष्ट वक्ता मिले। श्री गणेशाचार्य जी ने साधु संघ की पवित्रता के लिये पद एवं प्रतिष्ठा का सदैव त्याग किया। उन्होंने शिथिलाचार को आश्रय नहीं दिया। गुरुदेव के समस्त गुण लोभी वणिक् की तरह आपने ग्रहण कर लिये।

प्रारम्भ से ही आपकी दिन-चर्या बड़ी सुव्यवस्थित रही है। गुरुदेव द्वारा दिये गये नवीन पाठ को याद करना, स्वाध्याय में रत रहना, बड़े मुनियों के पधारने पर खड़े होकर सत्कार करना तथा प्रत्युत्तर मे 'तहत' कहकर गुरुवाणी का सम्मान करना, मित भाषा का प्रयोग, आलस्य का परिहार कर द्रव्यानुयोग का चिन्तन करना आपकी दिनचर्या के मुख्य अंग रहे हैं।

कुछ प्रकृति संवधित अनुपम विशेषतायें भी आप में हैं। पुष्प के समान कोमलता, पर्वत के समान अडिगभाव, सूर्य के समान तेजस्विता, वृक्ष के समान समता, धरती के समान क्षमता एवं कमल के समान पवित्रता आपके अन्तरंग जीवन की विशेषतायें हैं।

ज्ञानार्जन का अवसर

मुनि श्री नानालाल जी ग्रामानुग्राम विहार एवं शासन प्रभावना करते हुए चातुर्मासार्थ गुरुदेव के साथ कनोड़ी पधारे। स्थानीय जनता हर्ष-विभोर होकर शांत सौम्य मुखाकृति का दर्शन करके अपने आपको धन्य मानने लगी। यहां आपको अध्ययन की खूब सुविधा

मिली । अध्ययनोपयोगी समस्त सामग्री प्राप्त हो गई । इस सर्वोत्तम अवसर का आपने पूरा लाभ लिया और आशातीत ज्ञान-संपादन किया। ज्ञान-वृद्धि मे यह चातुर्मास आशातीत सफल रहा ।

गुरु एवं शिष्य का सुमेल

श्री गणेशाचार्य के स्तुत्य सगम के प्रभाव से नवदीक्षित मुनि की ज्ञान-पिपासा बढती गई । आप केवल साधु वेश पहन के सतुष्ट नहीं हुए । गुरुदेव का सफल नेतृत्व पाकर उभरे हुए विचार कणो को काय रूप मे परिणत करने लगे । गुरुदेव भी ऐसे ही शुभ में ज्ञान पीयूष उडेलने लगे और नाना मुनि अपने ज्ञान खजाने को भरने लगे ।

मुनि श्री नानालाल जी का जीवन प्रारम्भ से ही दिनकर की भांति देदीप्यमान था । स्मित हास्य, इन्द्रिय-विजय, मार्मिक वचन नही बोलना, शुद्धाचार और सत्यानुराग आपके जीवन के मुख्य गुण हैं । ऐसे सुयोग्य पात्रो मे रत्नत्रय का अक्षय भंडार होता ही है। वैराग्य का तेज सदैव आपके चहरे पर झलकता रहा है ।

गुरु का शुभाशीर्वाद

मुनि नानालाल जी अधिक से अधिक ज्ञान पाकर भी सदव नम्र हैं, यही उनके यश का कारण है । शान्त स्वभावी गुरु और विवेकी, सुविचारी शिष्य का मेल भी एक महान काय का द्योतक है। ऐसे विनीत शिष्य को पाकर गणेशाचाय सदव प्रसन्न थे और ऐसे विनीत विद्वान व्याख्याता शिष्य पर उनका सदैव आशीर्वाद रहता था। आपने उदयपुर में अपने उत्तराधिकारी (संघ शासक) के रूप में मुनि नानालाल जी का चयन किया । अब आप युवाचाय बन गये ।

सघ के उन्नायक आचाय देव

उदयपुर के राज-महलो के प्रांगण में अपार जनसमूह के जय घोषों के मध्य वि स २०१९ मिती आसोज शुक्ला २ रविवार ३० सितम्बर १९६२ को महाश्रमण श्री नानालाल जी म सा को युवाचाय पद प्रदान किया गया । माघ कृष्णा २ सं २०१९ को गणेशाचाय ने जब अपने नश्वर शरीर का त्याग किया और आचार्य देव श्री नानालाल जी के कन्धों पर संघ के उत्तरदायित्व का भार आया तब आपके सामने कई विकट समस्यायें खड़ी हो गई । एक ह

पिलाचारियो का आक्रोश तो दूसरी तरफ समाज को नया रूप देने संकल्प। आपका एक सिद्धांत रहा है स्वान्त सुखाय के साथ-साथ जनसुखाय और इसी सिद्धात को आगे बढाने के लिये आपने कई क कल्याणकारी योजनायें घोषित कीं, जिनके प्रकाश से आज चतु घ सघ जगमगा रहा है।

ल अनुशास्ता।

आचार्य नानेश एक सफल सबल अनुशासक की श्रेणी मे गिने ते हैं। आपके जीवन का एक-एक क्षण मर्यादा मे बीत रहा है। त्रीय मर्यादा का पालन करना और अपने शिष्यो से पालना कर ना आप अपना कर्तव्य समझते हैं। आपके शासन मे न कटुता, न पटपूर्ण व्यवहार और न ही दिखावटी दृश्य हैं। सरलता, समता, थनी-करणी की समन्वयात्मकता, आपकी प्रेरणा के बिन्दु हैं। इन्ही दर्शों की छाप आपकी शिष्य-सम्पदा पर पड रही हैं। भारत के ोने कोने में विचरण कर रहे आपके शिष्य व्यर्थ के पाखण्डो से दूर विस आत्म कल्याण करने मे ही लगे हैं।

लात्मक जीवन

आचार्य 'नानेश' अपने कलात्मक जीवन के कारण इस समय एक दिव्य ज्योति के रूप मे हमारे सामाजिक क्षेत्र को आलोकित कर रहे । आपकी वाणी मं अथाह माधुर्य के साथ-साथ जनमानस को छूने वाला चुम्बकीय जादू है। आपके व्याख्यान के लिये जनमानस तरसते । वाणी प्रवाह में वैराग्य शान्त रस के झरने बहते हैं। बच्चे से लेकर बूढे तक आपके व्याख्यान से मुग्ध हुए बिना नही रहते। आपके प्रवचनों की छाया सब साधारण पर सदैव अंकित रहती है। किसान, मजदूर, अनपढ़ आदि सभी आपके व्याख्यानो को सुनना अपना महोभाग्य समझते हैं। वास्तव में आपका जीवन एक कलाकार का जीवन है जो भूले भटके राहगीरों को कलात्मक जीवन-यापन के लिये प्रेरित करता है।

समाज-सुधार के अग्रदूत

एक युगपुरुष के रूप में आचार्य नानेश समाज मे व्याप्त बुरा इयों एवं निरर्थक रूढ़ियों का प्रतिकार कर रहे हैं। आज समाज सुधार की महती आवश्यकता है। रूढीयाँ की गलत जंजीरों में जकडा

समाज संकीर्ण विचारों मे उलझ कर दम तोड रहा है, मिथ्या धर्म की हानि कर रहा है । आचार्य जी ने इन कुरीतियों के ... के लिए कई व्यावहारिक कार्यक्रम प्रसारित किये हैं । ... दहेज-प्रथा एवं व्यर्थ के आडम्बरों से होने वाली हानियो का ... जी बराबर सकेत करते रहते हैं । दहेज प्रथा को समाज का ... मानते हैं । आचार्य देव के इस संकेत से सर्वत्र सुधारों की लहर ... रही है । आप जो सुधार चाहते हैं वह दिखावटी नहीं अपितु ... शिक्षा से अनुप्राणित सुधार चाहते हैं ।

समता दर्शन

आचार्य नानेश सामाजिक बुराइयों के साथ व्यक्ति के ... में बैठी बुराइयों को भी उखाडने का विशाल अभियान चला रहे हैं । विषमता की खाई में फसे व्यक्तियो को आपने समता का एक ... ही व्यवहारिक दर्शन दिया है । भाई भाई में द्वन्द्व की दीवारें ... हैं । विषमता की आग मे मानव जल रहा है । सर्वत्र विषमता ... नाग जहर उगल रहा है । व्यक्तिवाद की इस घुटन का ... के लिए आपने समता का दर्शन प्रस्तुत किया कि हम अपने ... दूसरों को समझें । दूसरों की आत्मा में भी अपनी आत्मा के ... करें । समता के द्वारा ही हृदय परिवर्तन किया जा सकता है ।

पतित-पावन नानेश

पतितो को पावन करना आपके दर्शन का एक मुख्य ... मालवा मे इस समय आपकी प्ररणा से 'धर्मपाल' प्रवृत्ति चल ... है । इस प्रवृत्ति से हजारो व्यक्ति अपने जीवन को नया ... हैं । दुर्व्यसनो, शराब, मांस, धूम्रपान, वेश्यागमन आदि छोड़कर आदर्श जीवन व्यतीत कर रहे हैं । गन्दे गीतों का स्थान धर्म और ... रहे हैं । इसका एक दृश्य देखिये—

बलाईयों की एक पंचायत हो रही थी । करीबन ... व्यक्ति दुर्व्यसनों मे लीन हो कर मानवता का घणित उदाहरण ... कर रहे थे । आचार्य देव यहां पहुंचते हैं ।

"अरे देखो वे महाजनो के महाराज इधर आ रहे हैं ।" एक बोला ।

'आते होंगे, चलने दो शराब के पेग ।" दूसरा बोला ।

"अरे ये तो हमारे ही पास आ गये, खड़े होकर प्रणाम करो।" तीसरा बोला।

"हमारे क्या लगते हैं। ये तो बणियों के महाराज हैं, अभी वापस चले जावेंगे।" एक बोला।

औरतें गन्दे गीत गा रही हैं, उनको नहीं रोकना, गाने दो।" एक बोला।

आचार्य देव एक चबूतरी पर बैठ गये। सभी व्यक्ति हाथ जोड़ कर खड़े हो गये। आचार्य देव ने उनसे कहा।

"भाईयो, एक बात कहू, मानोगे।"

"अच्छी बात हुई तो अवश्य ही मानेंगे।" एक व्यक्ति बोला।

'भगवान कहा रहते हैं, शरीर या मन्दिर में।'

'दोनों जगह रहते हैं' हाथ जोड़कर दूसरा बोला।

'मन्दिर में भगवान को अगरबत्ती जलाते हो या बीडी?'

"अगरबत्ती, भगवान के तम्बाकू नहीं चढ़ती।" एक बोला।

"जब इस शरीर में भी भगवान रहते हैं तो, क्या शराब तम्बाकू चढ़ाना अच्छा है?"

"नहीं यह तो बुरी बात है। हम आपकी बात मानते हैं।" एक बोला।

"क्या आप इन बुराइयों को छोड़ना पसन्द करेंगे?"

हां, हम आपकी बात मानते हैं।

और देखते ही देखते उन सभी ने कुछ व्यसनों को छोड़ना स्वीकार कर लिया और हर्ष पूर्वक आचार्य श्री की जय-जयकार करने लगे। आज ये धर्मपाल सामायिक प्रतिक्रमण करते हैं, मंगल पाठ सुनते हैं, त्याग तपस्या करते हैं यह उत्थान नानेश के उपदेश से आया है। संक्षिप्त कहें तो नानेश पतित पावन हैं।

तोड़ने की जगह छोड़ने का सिद्धांत

आपकी धर्मकला के चमत्कार से कई द्वन्द्व की दीवारें टूटती जा रही हैं। कई सामाजिक झगड़े समाप्त हो गये हैं। वैमनस्य से पीड़ित हजारों परिवार प्रेम व शान्ति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हर ग्राम में, हर शहर में जहां भी आपका पदार्पण होता है द्वन्द्व की जगह प्रेम अपने आप आ जाता है।

आपके मानवता वादी दृष्टिकोण से कई जगह लिखी इन वारें अपने आप म्यान में चली गई। आपका सम्प्रदाय-वाद में विश्वास नहीं है।

आप कोरी प्रतिष्ठा पूजा और नारे बाजी में विश्वास नहीं करते हैं। रायपुर मे आपके नाम के पर्दे को लेकर जब टकराव की स्थिति बनी। और आचार्य देव को ज्योंही यह झलक मिली आपने कहा 'मैं यहां तोडने नही वरन् जोडने आया हूं। मैं आपके हृदय में प्रेम का रसास्वादन करने, करवाने एवं प्रेम का रस उड़ेलने आया हूं। एक निर्जीव पर्दे को लेकर इतना द्वन्द क्यों? क्या धरा है इस पर्दे में उतार दो इस द्वन्द के पर्दे को, प्रेम व स्नेह इस पर्दे से कहीं बढ़ कर है।

शिष्य सम्पदा

आचार्य देव की विशाल शिष्य-सम्पदा भारत के कोने-कोने मे बिखरी है। इनकी सयम-यात्रा पवित्र है, पंच महाव्रत का पालन करते हुये ये श्रद्धेय साधु साध्वी केवल तप-त्याग व आध्यात्मिक उत्कर्ष के पथिक हैं। शिथिलाचार इनके पास नहीं फटकता। आधे से ज्यादा शिष्य २५ वर्ष से कम आयु के बाल-ब्रह्मचारी हैं। स्वाध्याय में रत रहना, ज्ञानोपार्जन, चिन्तन मनन, सुधा भरी वाणी का प्रवाह, हित मित भाषा का प्रयोग, आलस्य का परिहार करना और आत्मा का चिन्तन करना इन भव्य आत्माओं की दिनचर्या है।

गुरु भगवन्त इन पात्रो में ज्ञान पीयूष भरते हैं। शिष्य के लिये गुरु का वात्सल्य जीवन दायिनी शक्ति है। आचार्य "नानेश" को पाकर शिष्य अपने आपको धन्य समझते हैं। आचार्य प्रवर के अनुशासन में रहना, उनके बताये हुये आदर्शों को जीवन प्रयोग-शाला में कार्यान्वित करना अपना धर्म समझते हैं। उनके सिद्धान्तों का मनन, आचरण व चिन्तन करते हैं। अपने से वृद्धों की सेवा और मन-वचन काया से अनुशासन की परिपालना इनके मुख्य अंग हैं।

दुर्लभ रत्न

आचार्य भगवन्त ने अपने शिष्य रूप पात्रो में ज्ञान पीयूष भरने का प्रथम प्रयास किया है। एक से एक ज्ञानी सन्त रत्नों का निर्माण कर आपने अपने पावन कर्त्तव्य का सम्यक निर्वाह किया है। इन्हीं रत्नो मे एक दसम रत्न उभर कर सामने आया है जो

आज हमारे सामने युवाचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म सा के रूप में है । युवाचार्य जी का निर्माण कर आचार्य श्री जी ने अपने जीवन की सर्वोच्च सफलता प्राप्त की है । आशा की प्रखर किरण चमक रही है कि क्रियोद्धारक पूज्य स्व आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा द्वारा गतिमान पावन पूज्य पूर्वाचार्यों के कठिन परिश्रम, सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्र के आलोक एवं वर्तमान शासन नायक के शुभाशीर्वाद के साथ युवाचार्य श्री के कुशल निर्देशन में सतत् चलता रहेगा ।

संयम . आगमिक दृष्टि

● अमिताभ नागोरी

Δ चउव्विहे संजमे—

मणसंजमे, वइसंजमे, कायसंजमे, उवगरणसंजमे ।

संयम के चार रूप हैं—

मन का संयम, वचन का संयम, शरीर का संयम और उपधि-सामग्री का संयम । चारों प्रकार का संयम ही सम्पूर्ण संयम है ।

—स्थानांग सूत्र ४/२

Δ गरहा संजमे, नो अगरहा संजमे ।

गर्हा (पापों के प्रति घृणा करके आत्मा की निन्दा करना) संयम है, अगर्हा संयम नहीं है । —भगवती सूत्र १/९

Δ भावे अ असंजमो सत्थ ।

भावदृष्टि से संसार में असंयम ही सबसे बड़ा शत्रु है ।

—आचारांगनियुक्ति ९६

Δ मणसंजमो णाम अकुसल मणनिरोहो,

कुसलमण उदीरणं वा ।

अकुशल मन का निरोध और कुशल मन का प्रवर्तन-मन का संयम है । —दशवैकालिकचूर्णि १

—सेठिया जैन लाइब्रेरी, बीकानेर (राज)

युवाचार्य श्री राम परिचयालोक में

—चम्पालाल डा[illegible]

अध्यात्म जगत् मे भारतवर्ष सब देशो का गुरु है। मरु भू के राजस्थान प्रान्त का इस क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान है। इस राजस्थान के मरु प्रदेश मे बीकानेर जिले में देशनोक कस्बा है, जो जैनियो की लगभग ५०० घरो की बस्ती है। अधिकांश धन धान्य सम्पन्न होने के साथ साथ यहा के निवासी धर्म सम्पन्न भी हैं।

यह वह तपो भूमि है जहां घोर तपस्वी उग्र क्रियापर [illegible] मुनि श्री ईश्वरचन्दजी म सा का जन्म हुआ। यह वह पुण्य भूमि जहा शासन प्रभाविका परम विदुषी साध्वी रत्ना श्री नानूकवरजी म सा ने जन्म लिया। अन्य अनेक संयमपूत आत्माओ ने यहाँ जन्म ग्रहण कर इस भूमि को सन्त प्रसू भूमि बनने का गौरव प्रदान किया है।

इसी धर्म नगरी में श्रेष्ठिवर्य श्री नेमचन्द जी भूरा निवास करते थे। भाग्यशाली भूराजी धर्म ध्यान मे अग्रणी थे। उनकी धर्म पत्नी श्री गवरा देवी भी अत्यन्त सरलमना एवं धर्मनिष्ठ महिला हैं।

माँ गवरा के एक पुत्र श्री मांगीलाल जी एवं पांच पुत्रियां १ मोहिनी, २ इन्द्रा, ३ भमकू, ४ कमला एवं ५ विमला हैं। इनके अलावा एक पुत्र एवं दो पुत्रिया लघुवय में ही इस नश्वर संसार से रिश्ता तोड़ महाप्रयाण कर गए।

एक दिन माता गवरा सुख शय्या पर अर्ध निद्रित-अर्ध जागृत अवस्था मे सोयी हुई थी। एक स्वप्न आया। शुभ स्वप्न। स्वप्न में देखा कि किसी अदृश्य शक्ति ने उनकी गोद में एक तेजस्वी, दीप्तिमान बालक को लाकर रख दिया है और सचमुच हुआ भी यही। नौ माह बाद एक पुण्य पुरुष को जन्म देने का गौरव प्राप्त किया माता गवरा ने। माता धन्य धन्य हो गई, कृतार्थ हो गई। घर आंगन भाग्य की सराहना करने लगी। शुभकारी मंगलकारी पुत्र जन्म से भूरा परिवार मे हर्ष एवं आनन्द की असीम लहर व्याप्त हो गई।

मूराकुल में राशि, ग्रह एवं नक्षत्र के आधार पर नामकरण परम्परा नहीं है । भुआ ही सन्तान के नामकरण संस्कार का कार्य संपादित करती है । तदनुसार 'जय' के प्रतीक बालक का नाम रखा गया—जयचन्द' ।

बालक जयचन्द प्राय व्याधियो से घिरा रहता । व्याधियो के कारण जन भावना के अनुसार पारिवारिक जन लाडले जयचन्द को धूलचन्द या धूलिया अथवा फूसराज अथवा फूसिया कहकर पुकारने लगे ।

कालान्तर मे 'बाबा रामदेवजी' के नाम पर बालक को राम लाल कहने लगे वास्तव मे यह नाम "रमन्ते योगिनो यस्मिन् इति रामः" इस सच्चे अर्थ मे चरितार्थ हुआ।

माता पिता ने लम्बे समय तक उपचार करवाया, देवी देवताओं की मनौतियां की । झाडफूक के लिए जिसने जैसा कहा वैसा उपाय किया परन्तु रोग में कुछ भी फर्क नही पड़ा ।

नाम परिवर्तन के बावजूद रोग से छुटकारा नही मिला, रोग अनियमित रूप मे चलता ही रहता था ।

बालक राम तीन चार वर्ष का था । देशनोक मे ही रामनाथजी स्वामी से 'पहाडा' पढ़ने लगे । कुछ दिनों मे ही अच्छा ज्ञानार्जन कर लिया । माता पिता सस्कार निर्माण के लिए बालक को स्कूल में भर्ती कराना चाहते थे । अध्यापक ने पूछताछ (इन्टरव्यू) की । बालक के उत्तर अध्यापक को आश्चर्य मे डालने वाले थे । एक एक उत्तर सुनकर अध्यापक सहित सभी अन्य व्यक्ति भी दंग रह गए। अध्यापक ने पूछा—कौनसी कक्षा में भर्ती करना ? संरक्षको ने कहा—पहली कक्षा में ही भर्ती करना ठीक रहेगा । अध्ययन और अधिक ठोस होगा ।

माघ शुक्ला पचमी का दिन था। राम को नये कपड़े पहनायें, ललाट पर तिलक किया । पाटी (स्लेट) वरता (पेंसिल) देकर स्कूल में विधिवत् भर्ती कराया । उस समय बालक राम कभी स्कूल जाता कभी नहीं जाता । वैशाख मे वार्षिक परीक्षा आ गई । राम ने कुछ समय ही अध्ययन किया फिर भी परीक्षा दी। परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुआ ।

नया वर्ष आया, दूसरी कक्षा मे प्रवेश मिला । मोनिटर रामलाल मेघवाल था । बालक राम मोनिटर से पहाड़ा सेता और याद

करता । मोनिटर ने कहा—जिसको जो पहाड़ा लेना हो लो।
राम ने कहा—मुझे एका एका एका, बिलबिलिये रा चौका,
नका, चौका चौका सोला, का पहाडा दो ।

रामलाल मेघवान ने कहा—कक्षा मे मजाक क्यों
बार बार पहाडा के बारे मे पूछने पर भी राम यही
रोक्त पहाडा दो । आखिर मोनिटर राम को कक्षा अध्यापक
ले गया ।

अध्यापक ने कहा—तुम्हारी शिकायत है । कक्षा में
करते हो । ऐसा क्यो करते हो ? राम ने कहा—मोनिटर ने
पहाड़ा मागो तब पहाडा मागा । अध्यापक—क्या मांगा ?
कहा—एका एका एका, बिलबिलिये रा चौका—पहाडा मांगा।

अध्यापक—क्या इससे पहले के पहाड आते हैं ?

राम—हाँ, आते हैं ।

अध्यापक—बोलो ।

राम ने तत्काल ढ़ाया, डेढा, ढू चा सभी मालनी तक
दी । सुनकर अध्यापक अत्यन्त प्रसन्न हुआ । प्रतिभा देखकर
कक्षा का मोनिटर बना दिया । तीन वर्ष तक फिर राम ही
रहा ।

राम अध्ययन के क्षेत्र मे आगे से आगे बढ़ता गया ।
पाचवी मे प्रवेश हो चुका । चर्म रोग ने पुन कुछ उग्र रूप
कर लिया । पारिवारिक जनो ने विचार किया—बिहार में
रोग ठीक हो सकता है । अत बालक को बनमनखी (बिहार)
चलना चाहिए । विचार कार्य रूप में ढ़ले और राम को देकर
बनमनखी ले गये ।

बनमनखी में कक्षा छ और सात तक विद्याध्ययन कि
इसी दौरान राम ने प्रयास कर बनमनखी में "मारवाड़ी छात्र
का गठा किया । जिसका कोषाध्यक्ष स्वयं राम को बनाया गया ।

सर्दी की अपेक्षा गर्मी के दिन बड़े होते हैं। मध्याह्न
गर्मी घर से बाहर निकलने को निषेध करती है । चाहे वृद्ध हो
जवान अथवा बालक । सभी घर या छाया में दुबक कर बैठना
करते हैं । ऐसे अवसर पर ताश शतरंज इत्यादि खेलकर प्राय

समय व्यतीत करते हैं ।

बालक राम भी गर्मी के दिनो मे ताश खेल रहा था । बच्चो- में चर्चा चली कि—कौन क्या बनेगा ? किसी ने सेठ, किसी ने ारी, किसी ने अध्यापक तो किसी ने और ही कुछ कहा । परन्तु शानी बालक राम के मुह से निकला—मैं साधु बनू गा ।

साथियो ने तत्काल कहा—इस बात की लिखा पढ़ी करो । लिखा पढी हुई । उस पर सभी के हस्ताक्षर हुए । रेवेन्यू प लगाई गई और काम पक्का किया गया । अब साथी कहने लगे- तू साधु बन गया तो हम अमुक त्याग करेंगे, कोई कहता—हम त्याग करेंगे । कौन क्या त्याग करेगा इसकी सूची (तालिका) ई गई ।

चचेरे भाई ने यह सारा वृत्तान्त राम के पिता श्री नेमचन्द को यह सुनाया । पिता ने कहा—कोई (साधुपना) लेने वाला भी ....।

राम समय का पाबन्द और नियम का दृढ़ था । स्कूल मे जाता तो घर से समय पर जाता और पुन समय पर घर चला ता । यह नहीं कि कहीं ठहर गया, बातचीत मे लग गया या इधर र घूमने चला गया । समय पर आना समय पर जाना—यह निय ता थी बालक राम मे ।

राम फिजूलखर्ची से दूर संग्रहशील वत्ति का था । माता ा भाई इत्यादि से विदा होने पर अथवा किसी प्रसग पर कभी भी रुपय मिलते तो तत्काल उसे ब्याज पर जमा करा देता । हर ह रुपये बढ़ाता । फिर ब्याज पर जमा करा देता । इस प्रकार संव- का काम भी चलता रहता ।

राम की उम्र सात वर्ष के लगभग थी । देशनोक में शा प्र, ान श्री सत्येन्द्र मुनिजी म सा का चातुर्मास था । राम ने प्रवचन, ंग का भरपूर लाभ उठाया । उसी समय सन्तो से प्याज, लहसुन, ाप के तो त्याग थे ही, परन्तु बालको के जो प्रिय खेल है—गोले, ण्णी-डंड इत्यादि के त्याग भी कर दिये । इन त्याग के लिए माता इत्यादि ने निषेध किया परन्तु बालक के अत्याग्रह पर मुनिराज ने "स्थिरता प्रमाणे" त्याग कराये । इस त्याग की स्थिरता आज तक

(आसाम) । मनोवैज्ञानिक असर हुआ कि पिता का देहावसान होते ही राम का मन उखड़ गया ।

पारिवारिक जन देशनोक (राज) आ गये । साईने राम को भी देशनोक बुला लिया । राम संसार की विचित्र दशा पर विचार करने लगा—जीव क्या है ? मनुष्य क्यों जन्मता है ? क्यों मरता है ? संसार क्या है ? आदि विभिन्न प्रश्न उभरते, समाधान की खोज में डूबते रहते । ज्यों-ज्यों प्रश्न उभरते, समाधान मिलते त्यों-त्यों विरक्ति के बीज मनोभूमि मे बिखरते रहते ।

राम को सुना-२ सा महसूस होने लगा। पिता का साया उठ गया ।

१५-२० दिन बाद राम को पूज्य श्री (आचार्य श्री) के दर्शनार्थ जयपुर जाने की प्रबल इच्छा जागृत हुई । राम ने सोचा—देखें, पूज्य जी कैसे होते हैं ? राम जयपुर की ओर चल पड़ा । देखिये उत्थानगामी जीव के प्रकृति सयोग बिठा रही है ।

राम ने ज्यों ही जयपुर में चौड़ा रास्ता स्थित लाल भवन में प्रवेश किया सामने दिव्य भव्य जीवन्त प्रतिमा के दर्शन हुए । राम के नेत्र विस्फारित रह गये । ओह ! यह मनोहारी मूरत है पूज्य श्री की । धन्य धन्य हो गया । नेत्र पवित्र हो गये ! सन्निकट जाकर चरण पर चरण स्पर्श किये । स्पर्श क्या हुआ सम्पूर्ण शरीर पवित्र हो गया । प्रशांत मूर्ति, समता सागर के मुखारविन्द से ज्योंहीं 'दया पालो' की मधुर-श्रुति प्रिय वाणी प्रस्फुटित हुई राम का चेहरा शत दल की भांति खिल गया । प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा ।

राम का मन अब गुरु चरण छोड़कर कहीं अन्यत्र जाने का नहीं रहा । राम का मन मधुकर गुरु चरण कमलों का मकरन्द प्राप्त करने का इच्छुक हो गया । मकरन्द का लुब्ध मन अन्यत्र जा भी कैसे सकता है ?

राम ने लाल भवन में ही संवर किया । प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण का उत्साह पूर्वक लाभ लेता रहा । तीन दिन यही क्रम चलता रहा । चौथे दिन आगम व्याख्याता श्री कंवरचन्दजी म. सा. ने राम से पूछताछ की । वार्ता द्वारा जब ज्ञात हुआ कि यह आत्मा संवर ...

को प्रातः प्रतिक्रमण के पश्चात् पूज्य गुरुदेव के ध्यान करने के कमरे में ले गये। संक्षिप्त परिचय के बाद राम ने पूज्य गुरु देव से सम्यक्त्व ग्रहण किया।

राम की शाम को देशनोक के लिए टिकिट बनी हुई थी। रवाना हो रहे थे कि हाल मे उतरते उतरते पूज्य गुरुदेव ने श्रमण प्रतिक्रमण प्रारम्भ कराया। फिर देशनोक के लिए रवाना हो गये। पूरे रास्ते राम के नयनो मे गुरु की दिव्य भव्य छवि तैरती रही।

देशनोक आने के दो तीन दिन बाद ही सम्यक्त्वधारी राम भयंकर अपशकुनो के होते हुए भी आसाम की ओर रवाना हो गये। रवाना होते समय भयानक अपशकुन हुए—१ काली बिल्ली ने रास्ता काटा, २ लकडों की भरी गाडी सामने आई और ३ गाव मे किसी के मृत्यु हो गई परन्तु ये अपशकुन भी राम के लिए श्रेयकारी ही सिद्ध हुए। राम आसाम मे चार माह तक रहे। मन किसी भी काम मे नहीं लगता। शरीर अस्वस्थ बना रहता।

जवाहर किरणावली पढ़ते समय संकल्प किया और संकल्प के फलस्वरूप जो चर्म रोग ठीक हो गया था, वह दो वर्ष तक ठीक ही रहा, परन्तु दो वर्ष हो गये और कृत संकल्प की क्रियान्वित नहीं हो पा रही थी तब तीसरे वर्ष रोग ने अधिक उग्र रूप धारण कर लिया।

औषधोपचार किये परन्तु रोग पूर्णतया ठीक ही नहीं हो पा रहा था। न्यूनाधिक रूप मे रोग चलता ही रहा।

राम का आसाम में शरीर ठीक नहीं रहने से जदिया (बिहार) चले गये। जदिया में राम का वैराग उतारने के लिए पुस्तको मे अनुपयुक्त फोटूए इत्यादि रखी जाती परन्तु प्रतिक्रिया रूप में राम कुछ नहीं कहता। 'आई गई' कह कर अपने काम मे लग जाते।

रोग चल रहा था....कभी कम, कभी ज्यादा।

बीकानेर (गंगाशहर-भीनासर) में १२ दीक्षाओ का भव्य ऐतिहासिक अवसर था। राम ने विचार किया—दीक्षाओं के दुर्लभ अवसर को नहीं चूकना चाहिए। भावना प्रबल बन गई, अतः बीकानेर आ गये।

पूज्य गुरुदेव का सायंकालीन प्रतिक्रमण चल रहा था। प्रतिक्रमण के बाद मुमुक्षु राम ने गुरुदेव से ज्ञान ध्यान के लिए कहा।

राम ने कहा—गुरुदेव की जैसी आज्ञा होगी। जब गुरुदेव का संकेत मिला तो मुमुक्षु राम वि श्री शांति मुनिजी म सा के साथ सरदारशहर की तरफ विहार में साथ हो गये।

डूगरगढ़ अथवा नापासर की बात है। जंगल में एक धोरे पर ठहरने का प्रसग आया। आषाढ की तप्त रेत थी। मध्याह्न लगभग दो बजे थे। देशनोक के कुछ व्यक्ति साथ थे, उन्होंने मुमुक्षु राम से कहा—वैरागी जी! इस सामने के धारे (रेत के टिले) पर अभी खड़े होकर बताओ तो जानें तुम्हारा वैराग पक्का है।

कष्ट सहिष्णु राम तत्काल सामने के धोरे पर जा खड़े हुए फिर पिंडली तक रेत मे पाव गाड कर कुछ देर खड़ रहे। सभी श्रावक् रह गये, दांतो तले अगुली दबा ली। वैराग्य की एक परीक्षा में आप पूर्णतया सफल सिद्ध हुए।

वि श्री शांति मुनिजी म सा की सेवा म रहते हुए सरदारशहर पधारे। सरदारशहर मे ज्ञानार्जन के साथ तपस्या का क्रम बराबर चल रहा था। मुमुक्षु राम को सर्वाधिक प्रिय सब्जी थी आलू की। भोजन का राजा था आलू। राम, जो त्याग के महापथ पर चलने को कटिबद्ध थे फिर प्रिय अप्रिय क्या रहा? आलू का त्याग कर दिया वह भी वर्ष दो वर्ष के लिए नहीं, सदा-सदा के लिए—जीवन भर के लिए।

एक बार मुमुक्षु राम ने अठाई की। पारणा के लिए शहर के प्रमुख श्रावक रत्न, शासन निष्ठ श्री मोतीलाल जी बरडिया उन्हें घर ले गये। घर के आंगन में वैरागी राम को भोजन कराना था दिया और कहा—कुल्ला (दंतधावन) कर लीजिए। वैरागी राम ने स्पष्ट निषेध कर दिया—"वैरागी को इस प्रकार नाली म पानी नहीं गिराना चाहिए।" फिर उपयुक्त प्रासुक निर्जीव स्थल पर ही वैरागी राम ने हाथ मुह धोये।

सरदारशहर प्रवास के दौरान मुमुक्षु राम का भोजन प्रायः श्री मोतीलालजी बरडिया के यहां ही होता। राम की ... पृत्ति, रत्ना जय से सारा बरडिया परिवार अत्यन्त प्रभावित था। बरडिया परिवार के सदस्य मोतीलाल जी आदि प्रायः कहा करते—

ागी तो बहुत देखे परन्तु ऐसे उत्कृष्ट वैरागी देखने का अवसर कम मिलता है ।

आचार्य भगवन् का वर्षावास बीकानेर था । मुमुक्षु राम सोज माह मे सरदारशहर श्री सघ के साथ बीकानेर आ गये । चू कि ानेर में आसोज मे कतिपय दीक्षाओ का प्रसग था । सघ मन्त्री श्री रलाल जी कोठारी गगाशहर राम के मातु श्री के मामेरा भाई श्री नदास जी पीचा के पास गये और इसी अवसर पर राम की दीक्षा जाय तदथ प्रयास करने लगे । दीक्षा के प्रयास मे उत्साही युवारत्न जयचन्दलाल जी सुखानी भी पीछे नहीं थे ।

पींचा जी ने कहा—यह गुरुदेव के साथ रहे और गुरुदेव के मने वराग्य की परीक्षा दे । उसके बाद कुछ सोचा जायेगा । राम ारशहर जाकर पुन गुरुदेव की सेवा मे आ गये । कुछ समय तक देव की सेवा में रहे कि आसाम से श्री पानमल जी राका (बहनोई) के समाचार आये कि अगर दीक्षा लेनी हो तो अपने हाथ का म पूरा करके चले जाओ । मुमुक्षु राम ज्यू त्यू शीघ्र दीक्षित होने कोशिश कर रहे थे । उन्होने विचार किया—चलो इतने मे काम आय तो अच्छा है । राम ने वहाँ—लाला बाजार (आसाम) जाकर ने हाथ का काम जो बिखरा पडा था, समेटा । लेन देन पूरा किया ।

लाला बाजार मे 'दीक्षा' के बारे मे राम को खूब प्रश्न पूछे ते । सम्यक समाधान के साथ मुमुक्षु राम प्रश्नो के चक्रव्यूह को न भिन्न कर अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय देते ।

कोई कहता—आपको साधु बनना है तो बनो, मना कौन रता है । परन्तु किसी सम्प्रदाय विशेष का साधु नही बनकर विश्व ा साधु बनना चाहिए । हम आपको आश्रम बना देते हैं । आश्रम मे थना करो । रजनीश, रामकृष्ण परमहंस इत्यादि के साहित्य राम ो देकर कहा गया—इसका अध्ययन करो, फिर निणय करो कि कैसा ाधु बनना चाहिए ।

राम इन सारे साहित्य का अध्ययन करते । अध्ययन ही नहीं, ात को एक-एक, दो-दो बजे तक चिन्तन मनन करते । चिंतन के हरों म डूबकर सोचते । एक विचारक ऐसा कहता है, दूसरा ठीक सके विपरीत ऐसा ..। सत्य के निणय हेतु राम की आत्मा मथन

सन्त—नहीं, नही, तुमको उत्तर आता हो तो बता दो, अन्यथा.... ।

राम—बताने मे कोई बात नही । इस दरख्त (वृक्ष) में आचार ही पर्याप्ति होती है । मार्ग मे ज्यादा चर्चा करना ठीक नहीं रहता इसलिए एक तरफ चर्चा का कहा । राम की पीठ पर शाबास कहते हुए थापी लगाई और संत तथा राम अपने अपने गन्तव्य की ओर चल पड़े ।

चूरू से सुजानगढ़ पूज्य गुरुदेव के साथ जाना हुआ । वहां से लाडनूं की तरफ जाना था । सुजानगढ़ के श्री भागचन्द जी सोनी ने कहा—वैरागी जी ! यहां तक तो भोजन पानी की व्यवस्था हो गई परन्तु आगे लाडनूं की तरफ क्या होगा ? वहां व्यवस्था कैसे जमेगी ?

भविष्य की चिन्ता से निश्चिन्त मुमुक्षु राम ने कहा—आगे की चिंता अभी क्यों करना । ज्यों ज्यों आगे जायेंगे सब गुरु कृपा से ठीक होता जायेगा ।

हुआ भी वैसा ही । लाडनूं मे काफी लोग भोजन की मनुहार करने वाले मिले । एक भाई जिसका घर प्रवास स्थान से लगभग एक किलो मीटर दूर था लेकिन भोजन हेतु अत्यन्त श्रद्धा भक्ति से ले गया । आदर सहित उसने भोजन कराया । उस समय राम ने अनुभव किया—कि जयाचार्य का बली प्रयास व्यर्थ नहीं गया । उनके अनुयायी चाहे नाममात्र के हो परन्तु उनके द्वारा फैलाये गये सिद्धांतो के अनुयायियो की संख्या यहाँ कम नहीं है । यहाँ भी दया दान परोपकार इत्यादि मानवीय गुण आज भी मौजूद हैं । मानवता के दीप इन धरा आज भी जल रहे हैं ।

आचार्य भगवन् का वर्षावास सरदारशहर था । जिज्ञासु राम ने प्रथम प्रवास पर ज्ञानार्जन किया । आचार्य भगवन् की सन्निधि का भरपूर लाभ उठाया । हर शंका का समाधान प्राप्त करना राम की नियति थी । जिज्ञासा भाव से सविनय प्रश्न पूछते और सम्यक् उत्तर प्राप्त कर ज्ञान को ठोस बनाते ।

सरदारशहर चातुर्मास में राम न वैरागी गौतम सेठिया का सोच भी लिया । वैराग्यवस्था में ही राम ने साध्वाचार सम्बन्धी कई अनुभव प्राप्त कर लिए ।

सरदारशहर चातुर्मास के पश्चात् ग्रामानुग्राम विहार करते हुए आचार्य भगवन् बीदासर पधारे। राम भी गुरुदेव की सेवा मे साथ थे। बीदासर मे देशनोक सघ को दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की गई। देशनोक सघ मे हर्ष छा गया। राम ने विचार किया—अब मुझे भी दीक्षा का प्रयास करना चाहिए। परिवार के प्रमुख प्रमुख सदस्यो को अपनी दीक्षा पक्की होने के समाचार दे दिये। सयमेच्छुक राम ने तार द्वारा सूचित किया—

My Diksha final At Deshnoke on 23rd Feb 1975 (2031 Magh Shukla 12) Come As Soon As Possible

ये समाचार उत्कृष्ट वैरागी राम ने नितान्त व्यक्तिगत रूप से न्यि भौर दृढ़ता के साथ दिये।

बीदासर में शासन समर्पित, सेवाभावी, पं श्री लालचद जी मुणोत जो पूज्य गुरुदेव की सेवा मे साथ थे, अस्वस्थ हो गये। दयालु राम ने उनकी सेवा में अपने आपको लगा दिया। सेवा का वह गुण राम के जीवन मे बढ़ता ही गया, बढ़ता ही गया।

दीक्षातुर राम बीदासर से दीक्षा के प्रयास हेतु देशनोक, नोखा, गगाशहर-भीनासर इत्यादि जगहो पर गये और सगे सम्बन्धियो से दीक्षा में सहयोगी बनने हेतु निवेदन करने लगे और साथ मे यह भी कहते गये कि मेरी दीक्षा निश्चित है आप विश्वास करें या न करें? आज्ञा मिलेगी तो भी दीक्षा होगी, नही मिलेगी तो भी दीक्षा होगी। बाद में उपालम्भ न मिले आप लोग यह नही कहें कि हमें ज्ञात ही नहीं था, अत यह सूचित करने आया हू।

राम के दृढ़ता पूर्वक इस प्रकार सभी को सूचित करने पर पारिवारिक जन व देशनोक श्री सघ ने श्री आईदानजी बुच्चा (मौसेरा भाई), श्री सुगनमल जी सांड (मामेरा जंवाई) तथा करणीदान जी बायरा (बहनोई जी) इन तीनो को साथ देकर दीक्षातुर राम को जदिया (बिहार) भेजा, जहा राम की मातु श्री तथा बड़े भ्राता श्री मांगीलाल जी रहते थे।

जदिया में घर पर पहुंचने के बाद दीक्षातुर राम श्री करणीदानजी बायरा से सं २०३१ माघ कृष्णा चतुदशी को मध्याह्न में आज्ञा पत्र का प्रारूप लिखवा रहे थे कि अग्रज मांगीलाल जी ने कहा—

घर-घर मे राम के पगलिये करवाये । मुह में मक्खन ... रखकर श्रद्धालुओ ने शुभाशीर्वाद दिया । हृष से, धम श्रद्धा से, ... मय वातावरण से देशनोक का कण कण परिव्याप्त हो गया ।

मां गवरा ने आचाय भगवन् से कहा—यह (राम) ... दीक्षा ले लेगा । अत कुछ दिन घर पर सोना चाहिए । मा ने ... राम को भी घर पर सोने का आग्रह किया परन्तु विरक्त राम ने ... पर सोना स्वीकार नहीं किया वरन् सन्त स्थल पर ही सोए ।

गुरुदेव के परिपार्श्व मे जो कमरा था, वही राम का ... स्थल था । वही वे स्वाध्याय इत्यादि करते । शयन के समय ... मे अत्यल्प वस्त्र बिछाकर सो जाते ।

वि स २०३१ माघ शुक्ला १२ को राजकीय करणी ... मिक विद्यालय के विशाल प्रागण मे समता विभूति, धमपाल ... पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानेश ने अत्यन्त उत्साहमय वातावरण ... मुहूत मे १०.१५ बजे दीक्षातुर राम को "मुनि राम" ... वर्तित कर दिया ।

भगवान महावीर, जन धर्म, आचार्य श्री नानेश के ... नवदीक्षित मुनि राम के जय घोष से आकाश गूज उठा ।

मुनि राम आचार्य श्री की सेवा मे समर्पित हो गये । ... के पाबंद मुनि राम साध्वाचार के हर कार्य को व्यवस्थित ... पर करते ।

शा प्र म से श्री इन्द्रचन्दजी म सा ने सिघाड़े ... दृष्टि से नवदीक्षित मुनि राम को विहार कराने का निवेदन ... परन्तु आचाय श्री ने उन के निवेदन के उत्तर मे फरमाया कि ... ही रखने का विचार है । दीघदर्शी आचाय श्री को न जाने ... अव्यक्त प्रेरणा मिली कि उसी समय गहरी दृष्टि से छिपे ... पहचान लिया । दीक्षित होने के बाद मुनि राम ने अपने जीवन ... विविध गुणो स सजाने संवारने का काय प्रारम्भ किया और ... श्री ने अनमोल रत्न को तराशने का कार्य ।

मुनि राम की दीक्षा के पश्चात् आचाय श्री पांचू ... पांचू में नवदीक्षित मुनि राम के संसारपक्षीय पारिवारिक जन ... थे । उन्होने प्रवचन देने हेतु अत्यन्त आग्रह किया । पूज्य ...

ाना प्राप्त कर नवदीक्षित मुनि ने—"अणासवा थूलवया कुसीला, मिउं पि चंड पकरंति सीसा" (उत्तरा १-१३) ।

उपरोक्त शास्त्र वचनो के साथ अपना प्रवचन प्रारम्भ किया । थम प्रवचन सुनकर जनता ने नवदीक्षित मुनि की त्याग वैराग्य पूर्ण ाणी का हृदय से स्वागत किया ।

पांचू से झझू होते हुए आचार्य प्रवर के साथ नवदीक्षित मुनि ाम गंगाशहर-भीनासर पधारे तथा प्रथम चातुर्मास गुरुदेव की सेवा में जन स्थली देशनोक मे किया ।

देशनोक चातुर्मास मे नवदीक्षित मुनि राम अपना ज्ञान घट रने म लग गये । पूज्य गुरुदेव, अन्य संत रत्नों एव विद्वानो से भी ध्ययन करते । प. शोभालाल जी मेहता से इसी वर्षावास मे प्राकृत ाकरण का अध्ययन किया । नवदीक्षित जिज्ञासु मुनि राम ने पंडित जी से प्राकृत व्याकरण के कुछ सूत्रो की सिद्धी पूछी परन्तु पंडित जी ंडित कोई बता नही पाया । प श्री मेहता जी कहने लगे—मुझे लग-ग ४५ वर्ष हो गये पढाते हुए परन्तु ऐसा खोजी विद्यार्थी आज तक हीं मिला । विद्या दाता पंडित भी नवदीक्षित मुनि को ज्ञान दान ेकर अपने को कृतार्थ समझते थे ।

देशनोक वर्षावास के बाद आचार्य भगवन् बीकानेर पधारे, हां गुरुदेव के संग्रहणी रोग की उपशांति हेतु परपट्टी का देशी उप-चार चला । सेवा प्रवीण नवदीक्षित मुनि राम ने पूज्य गुरुदेव की उस समय लगन से सेवा की । नवदीक्षित होते हुए भी सभी कार्य योग्यता ूर्वक सम्पन्न करना वस्तुत आश्चर्यजनक था ।

देशनोक के बाद नवदीक्षित मुनि राम ने गुरुदेव के साथ नोखा मंडी चातुर्मास किया । नोखा वर्षावास के समय युगदृष्टा ज्योति धर जवाहराचार्य की शताब्दी थी । नवदीक्षित मुनि ने गुरुदेव से निवे-दन किया—भगवन् ! शताब्दी आई है और चली जायेगी । छुट पुट कार्य हो रहे हैं इसकी अपेक्षा जवाहराचार्य पर कोई ठोस कार्य हो तो चिरस्थायी रह सकता है । प काशीनाथ जी (आचार्य चन्द्रमौलि) से कहा जाय तो वे जवाहराचार्य के जीवन पर रचना कर सकते हैं । नवदीक्षित मुनि राम के चिंतन का प्रतिफल है कि आज समाज के

आदेशानुसार साधु साध्विया प्रार्थना सभा में पहुंच गये। आचार्य प्रवर ने प्रार्थना के पश्चात् मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. को समग्र उत्तराधिकारों के साथ अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इस घोषणा का चतुर्विध संघ ने भारी उत्साह के साथ स्वागत किया। "युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा की जय" के साथ नभ मंडल गूंज उठा। साधु, साध्वी एवं श्रावक-श्राविकाओं ने अपने हर्ष व्यक्त किये।

एक दो दिन बाद ही बीकानेर संघ के आग्रह से एवं साधु-साध्वियों के विनम्र निवेदन पर बीकानेर में ही फाल्गुन शुक्ला ३ को चादर प्रदान करने की घोषणा कर दी गई।

फाल्गुन शुक्ला ३ को यथासमय शुभ मुहूर्त में चतुर्विध संघ की साक्षी एवं अनुमोदन पूर्वक समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने अपनी श्वेत, शुभ्र, धवल, निर्मल, पवित्र चादर युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा को ओढ़ाई। वह चादर प्रदान दृश्य बड़ा मनोहारी था। जय जयकारों के नारों से काफी समय तक वातावरण गूंजता रहा।

श्रद्धा से नित, करो प्रणाम।
जय गुरु नाना, जय श्री राम॥

मंत्री

श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ

(युवाचार्य महोत्सव का समग्र वर्णन इसी ग्रंथ में अन्यत्र)

युवाचार्य श्री के चातुर्मास स्थल

वर्ष	स्थल	अवस्था
१९७५	देशनोक	मुनि
१९७६	नोखामण्डी	"
१९७७	गंगाशहर-भीनासर	"
१९७८	जोधपुर	"
१९७९	अजमेर	"
१९८०	राणावास	"
१९८१	उदयपुर	"
१९८२	अहमदाबाद	"

१८३	भावनगर	"
१८४	बोरीवली (बम्बई)	"
१८५	घाटकोपर (बम्बई)	"
१८६	जलगाव	"
१८७	इन्दौर	"
१८८	रतलाम	"
१८९	कानोड	"
१९०	चित्तोडगढ	मुनि प्रवर नियुक्ति
१९१	पिपलियाकला	मुनि प्रवर
१९२	उदयरामसर	युवाचार्य

[सभी चातुर्मास परम पूज्य गुरुदेव की सेवामे किये]

समय का मूल्य

जागरण एव साधना के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति समय को साधे। समय के पाबन्द व्यक्ति को साधना मे विशिष्ट सकेत मिल सकते हैं। समय का पाबन्द व्यक्ति स्वल्प समय मे अधिक काम कर लेता है। समय के मूल्य को समझने वाले की प्रज्ञा निर्मल एव बुद्धि तीक्ष्ण हो सकती है।

जीवन के सत्य

अहकार और ममकार की भावना को नष्ट किये बिना जीवन के सत्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

समभाव

मन को भेदन करने वाले कटु वचनों को सुनकर भी समभाव बनाये रखना जीवन उन्नति का मार्ग है। ऐसे पथ का पथिक समता के सर्वोच्च शिखर पर उस हद तक पहुच जाता है जिसकी उसे स्वयं को कल्पना भी नहीं होती।

—युवाचार्य श्री राम

आदेशानुसार साधु साध्विया प्रार्थना सभा में पहुंचे। आचार्य प्रवर ने प्रार्थना के पश्चात् मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. को समग्र उत्तराधिकारों के साथ अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इस घोषणा का चतुर्विध संघ ने भारी उत्साह के साथ स्वागत किया। "युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा की जय" के साथ नभ मंडल गूंज उठा। साधु, साध्वी एवं श्रावक-श्राविकाओं ने अपने भाव व्यक्त किये।

एक दो दिन बाद ही बीकानेर संघ के भावभरे आग्रह पर साध्वियों के विनम्र निवेदन पर बीकानेर में ही फाल्गुन शुक्ला ३ को चादर प्रदान करने की घोषणा कर दी गई।

फाल्गुन शुक्ला ३ को यथासमय शुभ मुहूर्त में चतुर्विध संघ की साक्षी एवं अनुमोदन पूर्वक समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने अपनी श्वेत, शुभ्र, धवल, निर्मल, पवित्र चादर युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा को ओढ़ाई। यह चादर प्रदान दृश्य बड़ा मनोहारी था। जय जयकारों के नारों से काफी समय तक वातावरण गूंजता रहा।

श्रद्धा से नित, करो प्रणाम।
जय गुरु नाना, जय श्री राम॥

मंत्री
श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ

(युवाचार्य महोत्सव का समग्र वर्णन इसी ग्रंथ में दिया है)

युवाचार्य श्री के चातुर्मास स्थल

वर्ष	स्थल	अवस्था
१९७५	देशनोक	मुनि
१९७६	नोखामण्डी	"
१९७७	गंगाशहर-भीनासर	"
१९७८	जोधपुर	"
१९७९	अजमेर	"
१९८०	राणावास	"
१९८१	उदयपुर	"
१९८२	अहमदाबाद	"

८३	भावनगर	"
८४	वोरीवली (वम्बई)	"
८५	घाटकोपर (वम्बई)	"
८६	जलगाव	"
८७	इन्दौर	"
८८	रतलाम	"
८९	कानोड	"
९०	चित्तोडगढ	मुनि प्रवर नियुक्ति
९१	पिपलियाकला	मुनि प्रवर
९२	उदयरामसर	युवाचार्य

[सभी चातुर्मास परम पूज्य गुरुदेव की सेवामें किये]

समय का मूल्य

जागरण एव साधना के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति समय साधे। समय के पाबन्द व्यक्ति को साधना मे विशिष्ट सकेत मिल ते हैं। समय का पाबन्द व्यक्ति स्वल्प समय मे अधिक काम कर कता है। समय के मूल्य को समझने वाले की प्रज्ञा निर्मल एव वुद्धि क्षण हो सकती है।

जीवन के सत्य

अहंकार और ममकार की भावना को नष्ट किये विना जीवन सत्य को प्राप्त नही किया जा सकता।

समभाव

मन को भेदन करने वाले कटु वचनों को सुनकर भी समभाव बनाये रखना जीवन उन्नति का मार्ग है। ऐसे पथ का पथिक समता के सर्वोच्च शिखर पर उस हद तक पहुच जाता है जिसकी उसे स्वयं को कल्पना भी नहीं होती।

—युवाचार्य श्री राम

सघ को ज्ञानालोक प्रदान कर अंधकार से उबारते रहे, इस भाव के साथ चरणारविन्दों में वंदन।

युवाचार्य पद प्रदान की इस पुनीत शृंखला में परम श्रद्धेय भगवन पूज्य श्री नानेश ने इन्हें सघ के संरक्षक पद से सम्मानित कर विशिष्ट गौरव प्रदान किया है। इनके सेवामय आदर्श जीवन से प्रभावित हो आचार्य भगवन् ने इन्हें धायमाता का सम्माननीय पद प्रदान किया है तदनुरूप आपने अपने आचार विचार से उस पद का गौरव चढाया है।

आपके ससार पक्षीय भतीजे "शांति और कांति" ने भी आत्म समर्पण आचार्य श्री नानेश के शासन में किया है। जो श्रमण, वर्तमान मे सेवा सुशोभित "श्री पद्ममुनिजी" एव मधुर व्याख्यानी "श्री शांतिमुनिजी" के नाम से जाने जाते हैं।

—'वैराग्य अभिनन्दन उदयपुर से साभार
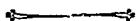
शासन प्रभावक विद्वद्वर्य तरुण तपस्वी श्री सेवन्त लालजी म सा

आपश्री जी को समता विभूति शासन नायक आचार्य श्री नानेश के शासन के प्रथम शिष्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आप सरल एवं सरस मनस्विता के धनी हैं। आपके माधुर्यपूर्ण व्यवहार तथा ध्यान साधना की जन समूह पर एक अविरल छाप पड़ती है।

आपके प्रवचनों में गुरुभक्ति एवं शासन निष्ठा के स्वर विशेष रूप से मुखरित होते हैं इन विषयों में आपकी विशेषता दर्शनीय होती है। साधुमार्गी परम्परा के विकास में आप श्री का विशिष्ट योगदान रहा है।

आपको आचार्य भगवन् प्यार एवं दुलार के साथ बड़े सेवन्त पढ़ते हैं इसी तरह दूसरे साथी संत विद्वद्वर्य श्री रमेशमुनिजी म. सा. को छोटे सेवन्त कहते हैं। संयमी जीवन की साधना में तत्पर हैं साथ साथ दोनों ने साधुमार्गी परीक्षा बोर्ड की सर्वोच्च परीक्षा में सफलता प्राप्त की है।

शासन प्रभावक आदर्श त्यागी, विद्वद्वर्य, तपस्वी श्री सम्पतमुनिजी म सा

आपश्री जी गृहस्थ जीवन मे अनेक धार्मिक/सामाजिक सस्थाओ के आदरणीय पद पर रहे हैं आप उच्च कोटि के विद्वान हैं आपकी प्रखर एव तात्विक प्रतिभा से साधुमार्गी परम्परा मे शैक्षणिक परीक्षाओ को वल मिला है आप कमग्रान्थिक अध्ययन/अध्यापन मे सुदक्षता रखते हैं।

सघ की समुन्नति मे आप सदैव जागरूक एव सक्रिय रहे हैं आपश्री जी इस वृद्धावस्था मे भी जवानो सा उत्साह रखते हैं आपका जहा पर भी पदापण होता है वहां पर ज्ञानाराधना की होड सी लग जाती है हर क्षेत्र मे छोटे बडे शिविरो के द्वारा अनेको को धर्म के सम्मुख करना यह आपकी विशेष रूचि का प्रसग है तथा इस अभिमान मे आपने अपेक्षा अनुरूप सफलता प्राप्त की है।

संयम साधना की सजगता के साथ आपश्रीजी ने साधुमार्गी जन धार्मिक परीक्षाओं मे सर्वोच्च परीक्षा श्रेष्ठ म को में उत्तीर्ण की है आप चतुर्विध संघ मे 'भाईसा" महाराज साहब के नाम से विख्यात हैं।
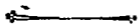
शासन प्रभावक, आदर्श त्यागी, तपस्वी, विद्वान श्री धर्मेशमुनिजी म सा

◦ आप जैन दर्शन के विशिष्ट विद्वान हैं। आपश्री जी आचार्य श्री नानेश शासन के प्रथम सत रत्न हैं कि जिन्होंने तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, पाण्डीचरी मे जाकर धर्मोद्योत व जिनशासन की प्रभावना की है।

◦ साधुमार्गी संघ में आपका अपना विशिष्ट स्थान है। आपके पास जो प्राचीन, ऐतिहासिक, प्रामाणिक जानकारियो का संग्रहण है वे आपकी विशिष्ट श्रमशीलता व अनुसंधानपरक बुद्धि की परिचायक है।

◦ मधुर एवं आकर्षक प्रवचन शैली से श्रोताओ को मंत्रमुग्ध करने में आप सुदक्ष हैं।

(शेष पृष्ठ ११३ पर)

स्थविर प्रमुख, श्रमण प्रवर, विद्वद्वर्य, तरुण तपस्वी, प्रखर व्याख्याता श्री शांतिलालजी म. सा

आचार्य श्री नानेश के शासन में आप विशिष्ट [illegible] विद्वान मनीषी सन्त रत्न हैं आपने भक्ति गीतों का सृजन कर [illegible] रोचक प्रवचनों को प्रस्तुत कर जन जीवन में आध्यात्मिक [illegible] करने में अहं भूमिका अदा की है। पूज्य आचार्य भगवन् द्वारा [illegible] समीक्षण ध्यान साधना जैसे गंभीर विषयों पर लिखित रूप में [illegible] प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। लेखनकला और आध्यात्म [illegible] प्रवण गीतों की सृजना के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि है।

आपश्री जी के पाद विहरण से राजस्थान, मध्यप्रदेश, [illegible] गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल एवं जम्मू कश्मीर की धरा पावन बनी। आप जहाँ भी पधारे आपके [illegible] प्रिय आकर्षक व्यक्तित्व एवं तर्कपूर्ण समाधान एवं प्रभावक [illegible] शैली से बुद्धिजीवी एवं युवा पीढ़ी में नूतन चेतना का प्रादुर्भाव हुआ है। अनेक भव्यात्माएं आपसे प्रतिबोध पाकर धर्म सन्मुख हुई हैं। आपकी सूझबूझ और प्रतिभा प्रवणता से साधुमार्गी संघ [illegible] पर लाभान्वित हुआ है। आपश्री जी ने संयम साधना की [illegible] के साथ जैन धार्मिक परीक्षाओं में सर्वोच्च परीक्षा को श्रेष्ठ अंकों से उत्तीर्ण किया है।

विशेष—आप हजारों शैक्षणिक/सामाजिक एवं अन्य [illegible] रातों में धर्म स्थलों पर प्रवचन हेतु आमंत्रित किये गये। वहाँ [illegible] जैन एवं जैनेतरों का जैन धर्म एवं संस्कृति से अवगत कराया।

स्थविर प्रमुख, मुनिप्रवर, विद्वद्वर्य, तरुण तपस्वी, मधुर व्याख्यानी श्री प्रेमचन्दजी म सा

भावुक परिवेश में स्पष्टवादिता, निर्भीकता एव कर्मठता से मण्डित व्यक्तित्व की दूसरी सज्ञा है—मुनि प्रेम ।

संघ समुन्नयन एवं सेवा भावनाओं से अनुप्राणित आपश्री जी विचक्षण प्रतिभा के धारक हैं । आप सस्कृत, प्राकृत, न्याय एवं आगमो के अध्येता सत हैं । अपनी धुन के पक्के व समभावट शैली में निष्णात मुनि श्री साधुमार्गी परम्परा के अभ्युदय में सक्रिय रहे है ।

आपश्री जी की रचनात्मक ठोस काय में रुचि है । आपका विचरण क्षेत्र राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात रहा है आपने अपने विचरण के दौरान एक ही स्वर बुलद किया है कि "केवल ज्ञानी बनना है तो सम्यग् ज्ञान का प्रचार-प्रसार करो और तीर्थंकर बनना हो तो निष्काम भाव से जीवदया का पालन करो अर्थात् अभयदान दो" आपके उपदेश से अनेक मूक प्राणियो को प्राणदान, स्वधर्मियो को वात्सल्य एव असहायों को सहारा मिला है । आपने वयोवृद्ध एव रोगी सतो की सेवा के साथ अध्ययन/अध्यापन का कार्य किया है ।

आपश्री जी ने सयम साधना की सजगता के साथ साधुमार्गी संघ की सर्वोच्च परीक्षा उत्तीर्ण की है ।

(शेष पृष्ठ १११ का)

• आपके व्यक्तित्व में सरसता ओतप्रोत है । संघ की गतिविधियों की सक्रियता और सुचारुता के प्रति आप चिन्तनशील रहे हैं ।

• आपके प्रवचनो में साध्वाचार व श्रावकाचार पर विशेष बल दिया जाता है ।

• आपका वैराग्य प्रसंग भी प्रेरक है विवाह के तत्काल कुछ माह बाद ही आप सजोड़े सयम पथ पर आरूढ हुए हैं ।

• श्रमण सस्कृति की मर्यादाओं से जनता को परिचित कराना यह आपका मुख्य अभियान है ।

स्थविर प्रमुख, साधु प्रवर, विद्वद्वर्य, मधुर व्याख्यानी श्री पार्श्वकुमारजी म सा

धायमात्र पदालकृत सेवावरेण्य श्री इन्द्रचन्दजी म सा के पावन सन्निधि मे आपश्री जी ने अपने जीवन को तराशा है। आप शांत, सौम्य एवं गभीर प्रकृति के सन्त रत्न हैं। आप सिद्धान्त कौमुदी, प्राकृत व्याकरण, के गभीर अध्येता है।

मधुर एवं मृदुवाणी के धनी आप अच्छे प्रवचनकार है। आपके द्वारा रचित, मधुर स्वरो मे मुखरित एव विवेचित प्रसगानुकूल चरित्र हजारो श्रोताओ द्वारा अत्यन्त प्रशसनीय है। स्व के निश्रेयस के प्रति आप सदैव विचारवान रहे हैं।

आपका विचरण क्षेत्र मुख्य रूप से पश्चिम राज रहा है। विचरण के दौरान समाज में व्याप्त कुरीति/बुराईयो को दूर करके व्रतधारी श्रावकों का निर्माण करने रूप अभियान आपका मुख्य रहा है। बोलना कम-काम ज्यादा यह आपकी विशेषता है। आपकी सत्प्रेरणाओं से अभिभूत होकर अनेक सत्कार्य की ओर गतिशील बनी हैं।

आपकी बहिन श्री विदुषी महासती श्री राजमतीजी भी पर माणु पदालंकृत श्री पेपचन्दजी म सा के मार्ग में चल जीवन धन्य बना रही है।

थविर प्रमुख, सयत प्रवर, विद्वद्वर्य, कविरत्न, प्रभावी वचनकार, तेजोमय व्यक्तित्व श्री विजयराजजी म सा

"जनम् जयति शासनम्" के स्वर को विविध रूपों में बुलद रने वाले युवा मनस्वी, रूप सम्पदा के धारक, मुनिवय जन-जन के कषण केन्द्र हैं।

आपश्री सरलता, सहजता और समरसता की त्रिवेणी मे वगाहन करते हुए उन्नति के शिखर पर आरोहण कर रहे हैं "जीवन त्याग के साथ जन कल्याण" यह आपके व्यक्तित्व की गरिमा है।

आपश्री के प्रवचन मे "शूल नहीं फूल बन खिलना सीखो" "ज्वाला नहीं ज्योति बन जलना सीखो" की भव्य प्रेरणायें स्फुटित होती हैं।

आप स्वयं भक्ति गीत, वैराग्य गीत के रचयिता एवं गायक हैं त आपके श्रीमुख से भक्ति रस, वराग्य रस की स्वर लहरियां मुख- त होती हैं तब आपकी भाव भगिमा एवं जनमानस की भावविभोरता रखने योग्य होती है आप सकडो गीतो, कविताओ के निर्माता है शाल जनमेदिनी को एक स्वर मे मदमस्त करने की आपकी अद्भुत मता है।

तेजस्वी प्रतिभा, सारगर्भित विषय प्रतिपादन रूप वक्तृत्व ता एवं प्रच्छन्न काव्यकला सौम्य मुखमडल ये आपकी उल्लेखनीय शेषतायें हैं जो जन जन द्वारा प्रशंसनीय है।

आपने १६ वष की उम्र में सपरिवार अर्थात् पिता-पुत्र, मां- गी सारा ने अभिनिष्क्रमण किया है।

संयमी मर्यादाओं मे दृढ रहते हुए आपश्री जी ने साधुमार्गी जैन परीक्षाओं में सर्वोच्च परीक्षा श्रेष्ठ अको मे उत्तीण की है।

समय तक अध्ययन किया । सरल भाषा में आपके प्रवचन जनता के हृदय को छूने वाले होते हैं ।

धर्म संघ में आप दीर्घ अनुभवी तथा साध्विया में दीक्षा पर्याय की अपेक्षा से द्वितीय स्थान पर हैं । आपने १६ तक तपस्याएं की हैं तथा सरल, सेवा परायण, सादगीमय व्यक्तित्व कार्यों के लिए प्रख्यात हैं ।

महाश्रमणी रत्ना श्री गुलाबकवर जी म सा

शासन प्रभाविका महासती श्री गुलाबकवर जी म सा का जन्म सं १९७० पौष शुक्ला १० को खाचरोद (म प्र) में हुआ । आपके पिता का नाम श्रीमान प्यारचन्द जी मेहता एवं माता का नाम श्रीमती कस्तूरा बाई था ।

बाल्यकाल में ही आपको विवाह बन्धन में बांध दिया लेकिन कुछ समय में ही पति श्री चम्पालाल जी मांडोत इस क्षण अशाश्वत सम्बन्ध से नाता तोड़ इस दुनिया से चल बसे । इनके चले जाने पर मानो गुलाब का फूल मुर्झा गया हो । प्यारचन्द जी के प्यार को छोड़कर ससुराल गई गुलाब अब अनाथ हो गयी । चिन्तन के क्षणों में गुलाब ने सोचा—ये सम्बन्ध नश्वर हैं मुझे अनश्वर आत्मिक सुख की प्राप्ति करना है । चिन्तन के क्षणों में वैराग्य का अंकुर उदित हुआ । बस क्या था, सुख का मार्ग मिल गया ।

३ वर्ष वैराग्यावस्था में रहने के पश्चात खाचरोद में वैशाख कृष्णा ६ सं १९९२ को युगद्रष्टा क्रांतिकारी श्रीमज्जवाहराचार्य के शासनकाल में आपने भागवती दीक्षा अंगीकार की । दीक्षा के बाद आपने ३० शास्त्रों का अध्ययन किया है । आपने भाषा में कोष इत्यादि भी कंठस्थ किये हैं । आप विदुषी हैं एवं आपके प्रवचन सरल तथा प्रभावी होते हैं ।

★

शासन प्रभाविका महासती श्री केशरकवर जी म सा

स्थविर पद विभूषिता महासती श्री केशरकवर जी म सा सरल एवं भद्रमना साध्वी हैं। आपका जन्म स १९७० श्रावण कृष्णा १४ को नोखा मंडी में हुआ। आपके पिता का नाम श्रीमान शिव॰ दासजी डागा तथा माता का नाम श्रीमती तुलसी बाई था। आपको बाल्यकाल मे ही बीकानेर के श्रेष्ठीवर्य श्री पानमलजी गोलछा के साथ विवाह बन्धन में बांध दिया। प्रकृति ने पति पान को जीवन वृक्ष से पृथक कर दिया। केशरकवर ने हिम्मत से काम लिया और भावी जीवन के बारे मे चिन्तन किया। वैराग्य के फल खिल उठे। केशर का जीवन सुगन्ध से भर गया। आत्मा मचल उठी सयम पथ पर कदम बढाने के लिए।

एक वर्ष तक ज्ञानाभ्यास पूर्वक वैराग्यावस्था व्यतीत करने के बाद बीकानेर में श्रीमद् जवाहराचार्य के शासन काल मे स १९९५ ज्येष्ठ शुक्ला ४ को कल्याणी भागवती दीक्षा अंगीकार की।

दीक्षा के पश्चात् अनेकों थोकडो का ज्ञान किया, आगमो का अध्ययन किया तथा आप सहज सरल भाषा में प्रवचन देते हैं, जो जन-साधारण के भी समझ में आ जाता है। आचार्य श्री की आज्ञानुवर्ती प्रमुख साध्वियो मे आप भी एक है।

शासन प्रभाविका महासती श्री धापुकवर जी म सा

विदुषी महासती श्री धापुकंवर जी म सा का जन्म बीका-नेर प्रांत में दादा गुरु के पुण्य धाम भीनासर मे सं १९७६ पोष माह में हुआ। आपके पिता का नाम श्रीमान चौंजराज जो पटवा एव माता का नाम श्रीमती गंगा बाई था।

श्रीमान रगलाल जी बांठिया के साथ आपका विवाह सम्बन्ध हुआ, परन्तु जिसकी नियति वैराग्य रूपी रग में रगना हो भला वह राग रंग में बन्धन में फंसे बन्धा रह सकता है? पति वियोग के पश्चात् आप संसार से विरक्त हो गये। तीन वर्ष तक वैराग्यवस्था मे रहने के बाद स १९९८ भादवा कृष्णा ११ को पूज्य श्रीमद् जवाहरा-

शासन प्रभाविका महासती श्री कचनकवर जी म सा

महासती श्री कचनकंवर जी म सा का जन्म टोंक जिले के अन्तगत अलीगढ़ (रामपुरा) मे हुआ। माता का नाम श्रीमती केशर बाई तथा पिता का नाम श्रीमान् मोतीलाल जी पोरवाल था। माता पिता ने आपका विवाह सम्बन्ध सवाई माधोपुर निवासी श्रीमान् गोपालजी पोरवाल से कर दिया।

संसार असार है। जीवन का सार भूत सत्य है—संयम। इस सत्य को आपने जाना, जाना ही नहीं इसे प्राप्त करने के लिए आत्मा आतुर हो उठी। आपने पति के सामने सयम की बात की। भाग्यशाली आत्मा को सहज शीघ्र सयम स्वीकार करने की आज्ञा प्राप्त हो गयी।

समस्त सांसारिक बन्धनो को तोड़कर पति आज्ञा से सं २००१ वैशाख शुक्ला द्वितीया ब्यावर में पूज्य श्रीमद् गणेशाचार्य के शासन काल मे प्रव्रज्या अंगीकार की। पति ने भी पत्नी के पथ का अनुसरण किया और उन्होंने (पं रत्न मुनि श्री गोपीलाल जी म सा ने) सं २००१ कार्तिक कृष्णा ६ को सरदारशहर में पूज्य श्रीमद् गणेशाचार्य के शासन मे दीक्षा अगीकार की।

आपकी दीक्षा एक आदर्श दीक्षा थी। आपका त्याग एक आदर्श त्याग था। दीक्षा के पश्चात् आपने आगम ग्रन्थों के साथ हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य का भी काफी अध्ययन किया। दीक्षा के एक वर्ष पश्चात् ही आपने प्रवचन देने प्रारम्भ कर दिये। आप सरल शांत एवं विनम्र स्वभावी साध्वी रत्ना हैं।

शासन प्रभाविका महासती श्री सूरजकवर जी म सा

स १९७८ पौष शुक्ला ८ को रिंगनोद (म प्र) में श्रीमान् रतनमल जी पगारिया की धर्मनिष्ठ पत्नी श्रीमती धापू बाई की कुक्षि से पुण्य प्रभा को लेकर एक सूर्य उदित हुआ जिसका नाम रखा गया-सूरज बाई।

लाड़ प्यार में लालन पोषण करने के बाद परिजनों ने आपका

विवाह बिरमावल गाव में श्रीमान घेवरचन्द जी सोनी के साथ कर दिया। घटना प्रसग से आपके हृदय मे वैराग्य के अकुर फूट पडे। २ वर्ष तक वैराग्यावस्था में रहते हुए सस्कृत व्याकरण एवं शास्त्रो का अध्ययन किया तथा बिरमावल (जिला रतलाम) में ही आपने पूज्य श्रीमद् गणेशाचार्य के शासन काल में दीक्षा अगीकार की। दीक्षा के पश्चात हिन्दी (मध्यमा) का अध्ययन किया। थोकडों का ज्ञानार्जन प्राप्त करने के बाद आपने जन जागृति हेतु प्रवचन देने प्रारम्भ किये। आपके प्रवचन सरल-सरस मधुर होते है। आप विदुषी सरल स्वभावी एव शान्त प्रकृति की साध्वी रत्ना हैं। विनय एवं सहजता आपके जीवन में ओत प्रोत है।

[नोट—इस विशेषांक के प्रकाशन होने तक वह सूरज गगाशहर में अस्त भी हो गया। अब जिसकी स्मृतियां मात्र ही शेष है। —सम्पादक]

शासन प्रभाविका महासती श्री भवरकवर जी म सा

श्रीमान मगलचन्द जी सोनावत की धर्मपत्नी श्रीमती पान बाई की कुक्षि से स १९८८ आषाढ कृष्णा एकम को धर्म भूमि बीकानेर में आपका जन्म हुआ। श्रीमान नथमल जी बाठिया के साथ आपका वैवाहिक सम्बन्ध हुआ। ससार की चित्र विचित्रता सयोग-वियोग को देखकर आपका मन संसार से विरक्त हो गया। एक वर्ष तक वैराग्यावस्था में रहने के बाद आपने सं २००३ वैशाख कृष्णा १० को बीकानेर में ही पूज्य गणेशाचार्य के शासन काल में भागवती दीक्षा अंगीकार की।

दीक्षा के पश्चात् आपने दत्तचित होकर संस्कृत, प्राकृत, न्याय, दर्शन, व्याकरण एवं आगम ग्रन्थों का अध्ययन किया। आप सरल स्वभावी, सेवाभावी एवं मधुर व्याख्यानी हैं। विनम्रता एवं दया का गुण आपमें विशेष रूप से देखने को मिलता है।

*

शासन प्रभाविका महासती श्री चांदकवर जी म सा

बीकानेर निवासी श्रीमान् डूगरमल जी बाया की धर्मपत्नी श्रीमती महनू बाई की कुक्षि से चान्द की तरह निर्मल बालिका ने जन्म लिया। जिसका नाम रखा गया—चांद कंवर। चांद कंवर का बचपन से ही धर्म के प्रति रूझान था परन्तु माता पिता ने आपका लघुवय मे ही शादी कर दी। धर्मपति के वियोग होने पर आपने पर मात्मा के चरणों में सर्वात्मना समर्पित होने का दृढ़ निश्चय कर लिया। सं २००८ फाल्गुन कृष्णा ८ को आपने श्री गणेशाचार्य के शासनकाल मे प्रव्रज्या अंगीकार की।

दीक्षा के पश्चात् ३२ शास्त्रों का वाचन एव अध्ययन किया। आपकी सरलता एवं क्रिया निष्ठा का जनता पर गहरा असर पड़ता है।

पंजाब के निकट एक बार आप मार्ग भूल गये और जंगल में पहुच गये। वहां सामने शेर आ गया परन्तु आप घबराये नहीं। अहिंसा मूर्ति के आगे शेर अपना स्वभाव भूल गया और कुछ समय बाद शेर स्वयं चला गया। आपकी यह वीरता आगम युग के आदर्शों की सहज स्मृति दिलाती है।

महाश्रमणी रत्ना श्री इन्द्रकवर जी म सा

साधुमार्गी धर्म संघ के ऐतिहासिक स्थल बीकानेर में सं १९९० में श्रीमान् हनुमानमल जी बच्छावत की धर्मपत्नी श्रीमती [illegible] बाई की कुक्षि से एक बालिका का जन्म हुआ। जिसका नाम रखा गया इन्दरा।

श्रीमान् दीपचन्द जी बेगाणी के साथ इन्दरा का विवाह सम्बन्ध हुआ। परन्तु क्रूर काल के झोंके ने इन्दरा के जीवन दीप को बुझा दिया। इन्दरा घबराई नहीं। उनके घट में वैराग्य का दीप जल उठा। चारों ओर प्रकाश की किरण फैल गई। वैराग्य-दीप के प्रकाश में इन्दरा ने संसार की असारता एवं जीवन रहस्य को समझा। [illegible]

वप तक वैराग्यवस्था मे रहकर मध्यमा एव प्रभाकर की परीक्षाए उत्तीण की तथा स २०१० चैत्र कृष्णा ५ को बीकानेर मे पूज्य श्रीमद् गणेशाचार्य के शासन काल मे दीक्षित होकर ज्ञान साधना तथा चारित्राराधना में संलग्न हो गये । आपने विपुल ज्ञान सम्पदा प्राप्त कर जन २ मे ज्ञान प्रचार हेतु प्रयत्न प्रारम्भ किया ।

आपके मधुरता पूण प्रवचनो का, उदारतापूण विचारो का, कुशलतापूण व्यवहार का तथा अनुशासनपूण आचरण का जन-मानस पर अच्छा प्रभाव पडता है ।

शासन प्रभाविका महासती श्री सरदारकवर जी म सा-

विदुषी सती रत्ना श्री सरदारकवर जी म सा का जन्म सं- १९८६ में माघ कृष्णा अष्टमी को अजमेर मे हुआ । आपके माता जी का नाम श्रीमती चूकीबाई तथा पिताजी का नाम श्रीमान् कस्तूरचन्द जी सेठिया था ।

दो वष तक वैराग्य भावना मे रहने के पश्चात् आपने पूज्य श्रीमद् गणेशाचार्य के शासनकाल में स २०१५ वैशाख शुक्ला ६ को भागवती दीक्षा अगीकार की ।

दीक्षा के पश्चात आपने लगभग १५० थोकडे कठस्थ किये तथा बीकानेर एव पाथर्डी बोड से जैन सिद्धान्त शास्त्री की परीक्षा उत्तीण की । आगमो के स्वाध्याय एवं तत्त्व के चिन्तन मे आपकी गहरी रुचि है । तपस्या के क्षेत्र मे आपने ३८ की एवं ३१-३१ की दो बार तपस्या की है । ८, ६, १०, ११ एवं अन्य फुटकर तपस्याएं तो चलती ही रहती हैं एवं १६ तक लडी पूरी की हुई है ।

आपके प्रवचन सरस सरस एवं मधुर होते हैं । सहज सादगीमय जीवन जन २ को सादा जीवन उच्च विचार का मूल संदेश देता है ।

श्रीमान् पीरदान पारख व धनराज बेताला की जिज्ञासाएं : समाधान-आचार्य श्री नानेश

प्र क्या आप श्री राम मुनिजी को अन्य सन्तों से ज्यादा योग्य मानते हैं ?

उ यह प्रश्न ही अपने आप में विचारणीय है कौनसी आंख ज्यादा श्रेष्ठ है ? ऐसा ही यह प्रश्न है। दो हाथ हैं एक हाथ से भोजन करते हैं दूसरे हाथ से अन्य काम लिया जाता है तो इसका यह मतलब नहीं कि भोजन का कार्य करने वाला श्रेष्ठ व दूसरा हीन। वैसे ही मेरे लिए कोई सन्त श्रेष्ठ या हीन वाली बात नहीं। हाथ सेवा कर रहे हैं उनका सबका सम्मान है। उसी तरह ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना द्वारा स्वयं की ओर शासन यथाशक्ति—शक्ति का गोपन नहीं करते हुए सेवा कर रहे हैं, सब मेरे लिए आदरणीय हैं।

प्र फिर आपने श्री राम मुनिजी के लिए ही क्यों सोचा ?

उ व्यवस्था तो एक ही को दी जा सकती है। दूसरी बात मैं समता दर्शन को समझा होगा, तदनुरूप जिस कार्य के लिए जो योग्य हो, उसके लिए मैंने निष्पक्ष रूप से सोचा है, वर्तमान स्थिति में चार छम्मासों में उसे मैं उपयुक्त समझ रहा हूं, और यहां मैं अन्तर सही है।

प्र आप तो महान् हैं फिर भी ……और भी तो सन्त योग्य हैं !

उ राम मुनिजी के चयन का मतलब और सन्त अयोग्य हैं ऐसा नहीं मानना चाहिए। यह व्यवस्था एक को ही सौंपी जा सकती है। इसलिए "योग्य में भी योग्य का चुनाव" आप थोड़े में समझ रहे होंगे और ध्यान रखें, राम मुनि के अतिरिक्त अन्य किसी का चयन होता तो भी यह प्रश्न "और भी तो योग्य सन्त हैं" यह ज्यों का त्यों रह जाता, अर्थात् यह प्रश्न अनुत्तरित ही रहता

प्र श्री राम मुनिजी ने रत्नाकर आदि की परीक्षा नहीं दी है, फिर ……?

उ परीक्षा मापना का फल नहीं है, साधना का फल है

समीक्षा। साधक की श्रेष्ठता वाणी से नहीं, सच्चरित्र से प्रकट होती है। परीक्षा ही योग्यता का एकमात्र मापदण्ड नहीं है, कोई ज्ञान के द्वारा कोई तप के द्वारा, कोई सेवा के द्वारा अपना विकास करता है। जेण विरागो जायईते, तं सव्वायरेण कायव्व। जिस किसी भी क्रिया से वैराग्य की जाग्रति होती हो, उसका पूर्ण श्रद्धा के साथ पालन करना चाहिए। वास्तविक योग्यता तो वह है जिससे वैराग्य भाव के रसदार फल लगे। परीक्षा के निमित्त से या अन्य निमित्त से पठन पाठन इसीलिए करना है कि जिससे हमें अपने आपको पढ़ने की, अपने आपको जानने, देखने की क्षमता प्राप्त हो।

अप्पं पि सुयमहीय पयासयं होई चरण गुत्तस्
इक्को विणहं पंई वो सचक्खु अस्सा पयासेई।

प्र० क्या आप श्री राम मुनिजी के प्रति आश्वस्त हैं। क्या उनकी भी जाहोजलाली, विनय आदि होगी?

उ० जहां तक शासन की जाहोजलाली का प्रश्न है, तो यह ध्यान रखना चाहिए कि यह पंचम आरा है, इसमें काल के प्रभाव से उतार चढ़ाव होते ही रहे हैं और आगे भी होंगे। इसलिए इस विषय में क्या कहा जा सकता है। रही विनय की बात, इस विषय में, मैं यों यही विश्वास रखता हूं कि शासन के प्रति निस्वार्थ, निष्ठा रखने वाले साधक, साधिका, श्रावक-श्राविका रहेंगे, तब तक विनय व आज्ञा पालन में कमी नहीं आयेगी।

प्र० इनका प्रभाव कैसे क्या रहेगा?

उ० यशोकीर्ति और आदेय नाम कर्म का जैसा उदय होगा, तदनुरूप रहेगा।

प्र० क्या श्री राम मुनिजी पूर्णरूपेण योग्य हैं?

उ० राम मुनिजी ही क्यों, कोई भी पूर्ण योग्य नहीं है। पूर्ण योग्यता तो वीतराग अवस्था में होती है। हां, यह कह सकता हूं कि यह पूर्ण योग्यता के पथ पर आगे बढ़ रहा है। छद्मस्थ के द्वारा छद-

(शेष पृष्ठ १२६ पर)

प्रश्न—३ आपकी विद्यमानता मे युवाचार्य श्री किन-२ कार्यों को सम्पादित करेंगे ?

उत्तर— अब तक जो दायित्व मुझ पर था, उन सभी दायित्वो का निर्वाह उन्हें करना है । मैंने मुनि श्री रामलालजी म सा को केवल युवाचार्य पद ही नहीं दिया है अपितु युवाचार्य पद घोषणा के साथ ही अपने समग्र अधिकार भी उन्हें प्रदान कर दिये हैं जिसकी क्रियान्विति चादर ओढ़ाने की रस्म के साथ ही सम्पन्न हो गयी । अत तब से मेरे समग्र दायित्वो का निर्वहन युवाचार्य श्री कर रहे हैं व करेंगे ।

प्रश्न—४ क्या उन्हें कोई स्वतन्त्र कार्य सौंपा जाएगा ?

उत्तर— मैंने जब समग्र अधिकार ही उन्हें सौंप दिये हैं तो स्वतन्त्र कार्य सौंपने का प्रश्न ही कहां रह जाता है ।

प्रश्न—५ सम्पूर्ण जैन समाज की एकता में आपका एव युवाचार्य श्री का क्या प्रयास रहेगा ?

उत्तर— मैं उस एकता का पक्षपाती हू—

- जिसका निर्माण सैद्धान्तिक धरातल पर हो, अर्थात् मूलभूत सिद्धान्तों को सुरक्षित रखा जाता हो ।
- जिसके निर्माण में सिद्धान्तो का सौदा-समझौता न किया जाता हो ।
- जिसका निर्माण जिनाज्ञा के अनुरूप तथा चारित्रनिष्ठा एव अनुशासित व्यवस्था के आधार पर हो ।
- जिसका निर्माण दिखावटी न हो, जिसके अन्दर में स्वार्थ परक क्षुद्र भावना छिपी हुई न हो जिसका आन्तरिक एवं बाह्य स्वरूप एक हो ।
- इस प्रकार की एकता के प्रति मैं प्रयत्नशील रहा हूं व प्रयास करते रहने की भावना है । फिलहाल संवत्सरी जसे एक २ बिन्दुओ पर यदि हम एक होते गये तो एक दिन हमारी सार्वभौम एकता भी सिद्ध हो सकती है अर्थात बिन्दु से सिन्धु की यात्रा ही स्थायी एकता के लिए उत्तम मार्ग प्रतीत होता है इस हेतु मेरा प्रयास

रहा है, युवाचार्य श्री भी ऐसा प्रयास रखेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

प्रश्न—६ आप युवाचार्य श्री जी को इस अवसर पर क्या संदेश देंगे?

उत्तर— इस विषयक संक्षिप्त संदेश मैंने घोषणा पत्र के माध्यम से दिया ही है। युवाचार्य श्री अपने जीवन में संघ संचालन के गुरुत्तर दायित्व को निभाते हुए निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति की पवित्रता को सदा अक्षुण्ण रखें यही शुभ भावना है।

(पृष्ठ १२३ का शेष)

स्य का चुनाव जहाँ होता है, वहाँ पूर्णता का प्रश्न उठाना व्यर्थ ही है।

प्र उनके समकक्ष या उनसे पुराने सन्तों के विषय में आपके क्या विचार हैं?

उ मेरा तो सभी साधकों के प्रति एक ही विचार है। "जाए सद्धाए निक्खन्ते तमेव अणुपालिज्जा" जिस श्रद्धा से—— उस श्रद्धा का पालन करके जिनशासन का गौरव बढ़ायें।

प्र आपने यह निर्णय जल्दबाजी में क्या सोच कर लिया?

उ शासन का हित, दूसरी बात यह स्पष्ट कर दूँ कि मैं जो भी निर्णय लेता हूँ अच्छी तरह सोच समझकर ही लेता हूँ, इसलिए यह निर्णय जल्दबाजी में नहीं हुआ है।

साध्य निर्धारण

साध्य का निर्धारण साधना से पूर्व होना आवश्यक है। साध्य का निर्धारण हुए बिना साधना की भी कैसे जा सकती है? क्योंकि साध्य विहीन साधना घाणी के बैल की तरह केवल भटकाव का कारण ही सिद्ध हो सकती है। इसलिए साधक को साधना के क्षेत्र में आने से पूर्व अपना लक्ष्य अवश्य निर्धारित कर लेना चाहिए।

—युवाचार्य श्री

शास्त्रज्ञ तरुण तपस्वी युवाचार्य
श्री रामलालजी म.सा से साक्षात्कार

साक्षात्कारकर्त्ता–प्रो सतीश मेहता

प्रश्न—१ युवाचार्य के रूप में आपके मनोनयन की घोषणा पर आपको कैसा लगा, आपकी क्या अनुभूति रही ?

उत्तर— उक्त घोषणा के समय विराट् चतुर्विध सघ के सचालन की परिकल्पना से मैं स्वयं मे काफी भारीपन सा अनुभव कर रहा था आचार्य भगवन् की सन्निधि मे रहते हुए सघ सचालन के अनुभवो के आधार पर मेरे मन मस्तिष्क में एक ही प्रश्न घूम रहा था कि क्या इस विराट् संघ का सचालन करने मे मैं सक्षम हो सकूंगा ?

काफी सोच के पश्चात् भी मैं इसका समाधान नहीं ढूंढ पा रहा था। अन्ततोगत्वा संकल्प इस रूप मे जागृत हुआ कि आचार्य देव का आशीर्वाद ही इस गुरुत्तर कार्य के निर्वहन मे सक्षमता प्रदान करेगा इससे मुझे उस भारीपन से राहत की अनुभूति हुई साथ ही कर्तव्य के प्रति दृढ़ संकल्प जागृत हुआ।

प्रश्न—२ क्या आप बता पायेंगे कि आचार्य श्री नानेश ने आपकी किस विशेषता के कारण आपको युवाचार्य के रूप में मनोनीत किया ?

उत्तर— मुझ मे क्या विशेषता है इस ओर मैंने कभी लक्ष्य ही नहीं किया। आचार्य प्रवर की पैनी दृष्टि, गहन व अपार चिन्तन व गहरे अनुभव ज्ञान ने मुझ मे क्या विशेषता देखी ? यह आचार्य भगवन् की—अनुभूति का विषय है।

प्रश्न—३ यदि आपसे पूछा जाता तो आप युवाचार्य के रूप मे किस सन्त के नाम का संकेत करते और क्यों ?

उत्तर— आचार्य देव की शासन सचालन शैली अद्भुत है। वे जो कार्य करते हैं मुख्य रूप से आत्मसाक्षी पूर्वक करते हैं। कभी वे छोटे बच्चे की बात को भी गंभीरता से ले लेते हैं जबकि बड़े-बड़े व्यक्तियो की बात भी कभी उन्हें मंजूर नहीं होती। अतः मुझ से अथवा अन्य किसी से आचार्य श्री के द्वारा पूछा भी लिया जाता अथवा पूछ भी लिया गया हो तो उसका

संसार के भौतिक पदार्थों मे मन की सतुष्टि नही थी। व्यापारादि करते हुए भी साधु जीवन के प्रति प्रगाढ़ अनुराग था। इन शुभ सस्कारो की प्राप्ति पैतृक देन थी। बचपन से ही साधु बनने के खेल खेला करता था। एक बार मित्रो के साथ प्रतिज्ञाबद्ध भी हुआ था। इन सबके बावजूद सनाथ-अनाथ निणय नामक जवाहर किरणावली पुस्तक, जो पूज्यवाद स्व आचाय श्री जवाहरलालजी म सा के प्रवचनों का सकलन है, स दीक्षा लेने का संकल्प दृढ़ीभूत बना था और इस संकल्प को वतमान आचाय श्री के जयपुर चातुर्मास के समय आगम व्याख्याता श्री कवरचदजी म सा न आचार्य देव की सन्निधि मे जागृत करा दिया वहीं से दीक्षा लेने की भावना अत्यन्त प्रबल बन गयी। जो दीक्षा ग्रहण करके ही पूरा हुई।

प्रश्न—६ दीक्षा लेने का आपका उद्देश्य (लक्ष्य) क्या था, उस उद्देश्य की प्राप्ति मे आपका युवाचाय बनना कितना सहायक सिद्ध होगा ?

उत्तर— पहले तो कोई खास उद्देश्य नही था, बस साधु परिवेश अच्छा लगता था, उसके प्रति लगाव था, किन्तु जब आचार्य भगवन् का सान्निध्य (वैराग्यावस्था मे) प्राप्त हुआ, तब आत्मा परमात्मा आदि का सम्यक अवबोध हुआ। उस बोध से "सव्व भूयप्प भूयस्स सम्म भूयाइ पासओ' के आदश को सन्मुख रख आत्मा से परमात्मा बनने का लक्ष्य निर्धारित किया और उसी की प्राप्ति के लिए साधना माग में प्रवृत्त हुआ।

मैं पिछले कई वर्षों से आचाय देव के निर्देशन मे अपने लक्ष्य के अनुरूप साधना करता रहा हू इसी बीच जो गुरुतर दायित्व का प्रसग मेरे साथ जोडा गया है, उसके विषय में भी विचार करता हू तो पूज्य गुरुदेव का आभा मण्डल मेरी आंखो के सामने तैर जाता है। यह आभा मण्डल सहसा निर्मित नही होता, उसके निर्माण म विश्व की समस्त आत्माओं के प्रति कल्याण भावना का होना जरूरी है जिससे

संकीर्ण मनोदशा के परिणाम स्वरूप ही हैं । उस संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण ही मानव के हृदय से प्रेम, सौहाद, वात्सल्य की भावना शुष्क होती जा रही है जिससे व्यक्ति, व्यक्तिगत जीवन मे सिकुडता चला जा रहा है, समष्टिगत जीवन का वह मूल्याकन ही नहीं कर पाता । वह केवल तुच्छ व्यक्तिगत स्वार्थ साधन मे तत्पर रहता है इसका परिवार, समाज, देश व विश्व पर घातक प्रभाव पडना स्वाभाविक है । इस घातक परिणाम से बचने के लिए विशपुरुषो को जनजागरण की दिशा मे कायरत होना चाहिये । व्यक्ति बदलेगा तो देश बदलेगा । अत सबसे पहले व्यक्तिश आत्म समीक्षा करनी होगी कि वह अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए जितना सजग है, सक्रिय है, क्या उतनी ही सजगता सक्रियता उसकी दूसरे के अस्तित्व के स्वीकार के प्रति है ? यदि नहीं तो उसका कारण क्या ? क्या दूसरो को जीने का अधिकार नहीं है ? यदि दूसरो को भी जीने का अधिकार है तो उसके अधिकार का हनन करना कहां तक उचित है ? इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को आत्म समीक्षा के क्षणों मे, पर अस्तित्व सापेक्ष चिन्तन कर यथाथ म जीने का प्रयास करना चाहिये ।

विशाल वृक्ष का आकार बीज मे समाया, हुआ होता है। उसी प्रकार परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्वशान्ति का आकार व्यक्ति में रहा हुआ है । अतः स्वय से ही सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी चाहिये ।

प्रश्न—९ युवापीढ़ी के लिए आपका क्या मार्गदर्शन है ? उन्हें किस क्षेत्र में क्या काय करना चाहिये ?

उत्तर— चरमराते हुए धार्मिक ढाचे व कराहती हुई मानवता के लिए यदि आशा की किरण है तो यह है—"युवापीढ़ी"। युवापीढ़ी म कुछ कर गुजरने की ललक है । वह हताश और निराश जीवन जीने की आदी नहीं है । उसकी रग-रग म उफनता जोश है । आवश्यकता है उस जोश को सही दिशा निर्देश की ।

युवाओ को चाहिये, 'जीने के पहले जीवन को जाने'। आजकल प्राय होता यह रहा है कि लोग जानना कम पसंद

हुक्म पूज्य की गादी सदा से दीपती रही है और दीपती रहेगी—संघ संरक्षक

साक्षात्कारकर्त्ता—सुशील कुमार बच्छावत

सुशील— मत्यएण वदामि

संघ संरक्षक—स्नेह और करुणा का वरद हस्त उठाते हुए—दया पालो।

सुशील— सर्वप्रथम मैं आपको बधाई देता हूं चूंकि आपको संघ संरक्षक के महत्त्वपूर्ण पद से अभिसिक्त किया गया है। अब मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूं, समय हो तो ।

संघ सं—हां, हां, अवश्य पूछिये।

सुशील— श्रद्धेय मुनि श्री के उपपात में बैठते हुए—आप संघ-संरक्षक पद प्रदान (प्राप्ति) के पश्चात् स्वयं में कैसा अनुभव कर रहे हैं ?

संघ स—इस पद की न तो पूर्व मे आवश्यकता महसूस की और न अभी भी कर रहा हूं। मैं दीक्षित होने के पश्चात पूज्य आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा के चरणों में समर्पित भाव से सेवा करता था। उसके पश्चात् पूज्य आचार्य श्री नानालालजी म सा की भी उसी समर्पित भाव से सेवा करता आ रहा हूं। मैंने सदा सेवा मे प्रसन्नता का अनुभव किया है। अभी आप देख रहे हैं। शरीर जड के समान हो रहा है, कार्य करने की क्षमता नहीं रही फिर भी कुछ न कुछ किये बिना मन को सन्तोष होता ही नही। इस पद को तो मैं आचार्य श्री का मेरे प्रति अनन्य स्नेह भाव है उसी की अभिव्यक्ति मानता हूं। मैं अपने को पूर्व की भांति अभी भी अपने आपको अकिंचन लघु के रूप में ही अनुभव कर रहा हूं।

सुशील— बहुत अच्छा, क्या आप बताएंगे कि संघ विकास के रूप में आपकी क्या परिकल्पनाएं हैं ?

संघ स—मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे तीन तीन आचार्यों की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। चौथे भावी आचार्य जो युवाचार्य के रूप में हैं वे तो मेरे सामने ही वैरागी बने साधु बने और आज युवाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। मैं संघ विकास की जो बात जब भी दिमाग में उभरती है श्री चरणों मे रखता हूं। प्रयत्न का प्रसंग

थी । चारो ओर विरोधी वादल मडरा रहे थे । गणेशाचाय स्वय अस्वस्थ थे । शारीरिक दृष्टि से अशक्त हो चुके थे । जब वतमान आचाय श्री को युवाचाय पद प्रदान करने की वात आई तो श्रावक श्राविकाएं तो क्या, साधु साध्विया मे से भी आवाज आने लगी कि इस अनबोले (कम बोलने वाले) को आचाय बना रहे हैं, क्या होगा ? कसे सघ चलेगा ? सभी को निराशा थी । परन्तु मुझे विश्वास था । क्योकि पूज्य गणेशाचाय का आशीर्वाद इन्होने प्राप्त किया था । उस महापुरुष का आशीर्वाद कब खाली जाने वाला था ।

उस समय की परिस्थिति और आज की परिस्थिति म [का]फी अन्तर है । आज सघ मे एक से एक बढ़कर विद्वान् सत है । [वि]शाल साध्वी समूह है । उसमे से एक तरुण सत को युवाचार्य का [प]द प्रदान किया गया है । विरोध की जगह सहयोग के लिए सौ-सौ [हा]थ तयार हैं । यह तो युवाचाय श्री (रामलालजी म सा) की महान् [पु]ण्यवानी है कि सघ में सेवा हेतु सहयोग हेतु तपस्वी, सेवाभावी, विद्वान्, [व]क्ता, कवि, उग्रविहारी इत्यादि सभी तरह के छोटे मोटे अनुभवी संत हैं ।

परिस्थिति मे सब कुछ अन्तर होते हुए भी वतमान आचाय [श्री] ने अपने उत्तराधिकारी का जो चयन किया उसमे गहरी सूझबूझ [क]ा दशन होता है । जब मेरे से विचार विमश करते समय आचाय श्री [ज]ी ने अपनी भावना दर्शाई तो मैं दग रह गया । मैंने पूर्ण सहयोग [क]ा भाव दर्शाया और इस चयन को सवथा उपयुक्त बताया ।

[मु]नि—क्षमा करें, मैं बीच मे एक बात पूछ लेता हू—अगर इस नाम की जगह कोई दूसरा नाम युवाचाय पद के लिए आता तो ?

[त]प स—मैने आपको पूव मे ही कहा था कि सघ मे एक से एक विद्वान संत हैं । आचार्य श्री जो सोचते है वो सवथा उपयुक्त मापत हैं और एक बात विशेषता की है कि व जो सोचते हैं, करते ही रहते हैं । चाहे कितनी ही बाधाएं क्यों न हो ।

मैंने तो प्रारम्भ से ही अपने जीवन का मूलमत्र बना रखा है—

होगा प्रभु का जिधर इशारा ।
उधर बढ़ेगा कदम हमारा ।।

आचाय श्री जो मेरे गुरु भाई हैं, फिर भी मैंने अपने आपको

युवाचार्य पद महोत्सव पर विराजमान
सन्त भगवन्तो की नामावली

१ समता विभूति आचार्य श्री नानेश
२ मुनि श्री इन्द्रचन्द जी म सा
३ " अमरचन्द जी म सा
४ " शान्तिलाल जी म सा
५ " प्रेमचन्द जी म सा
६ " पार्श्वकुमार जी म सा
७ श्री धर्मेश मुनि जी म सा
८ श्री रणजीत मुनि जी म सा
९ " महेन्द्र मुनि जी म सा
१० " सौभाग मुनि जी म सा
११ " वीरेन्द्र मुनि जी म सा
१२ " हुलास मुनि जी म सा
१३ " विजय मुनि जी म सा
१४ " ज्ञान मुनि जी म सा
१५ " बलभद्र मुनि जी म सा
१६ " राम मुनि जी म सा
१७ " प्रकाश मुनि जी म सा
१८ " गौतम मुनि जी म सा
१९ " प्रमोद मुनि जी म सा
२० " प्रद्युम्न मुनि जी म सा
२१ " मूल मुनि जी म सा
२२ " अजित मुनि जी म सा
२३ " जितेश मुनि जी म सा
२४ " विनय मुनि जी म सा
२५ " पद्म मुनि जी म सा
२६ " सुमति मुनि जी म सा
२७ " चन्द्रेश मुनि जी म सा
२८ " धर्मेन्द्र मुनि जी म सा
२९ " धीरज मुनि जी म सा

शिष्य ही समझा है तथा मेरी प्रवृत्ति शिष्यवत् ही रही है। मैं आचार्य श्री के हर इशारे को आदेश मानता हू और वे सोचते हैं उसे सही मानता हू। यह तो आचार्य श्रीजी की महानता है कि वे मुझसे भी पूछ लिया करते है।

सुशील— बस मैं आपका अधिक समय नही लूगा। अब यह अन्तिम प्रश्न है मेरा। युवाचार्य श्री रामलालजी म सा को जिस सघ का उत्तरदायित्व सौंपा गया है आप अपने दीर्घ अनुभव के आधार पर सघ के भविष्य को किस रूप म देख रहे हैं?

सघ स—निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की सुरक्षा को मद्देनजर रखकर जो भी काय किया जाता है वह सदा सही होता है तथा उस कदम का भविष्य उज्ज्वल होता है। युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा अत्यन्त विनम्र, सरल, सेवाभावी, आगम ज्ञान के धनी तथा आचारवन्त महापुरुष हैं। इस परम्परा का सौभाग्य है कि इसे एक से एक बढकर क्रियानिष्ठ उत्तराधिकारी मिलते रहे हैं। उत्तराधिकारी मे युवकत्व, विद्वत्ता और आचारनिष्ठा तीनो का एक साथ सद्भाव सघ को उन्नति के शिखर पर ले जाने वाला है। हुक्म पूज्य की यह गादी सदा से दीपती रही है और दीपती रहेगी।

[मैंने साक्षात्कार के दौरान पाया कि सघ सरक्षक श्री इन्द्रचन्दजी म में आत्म विश्वास की अमिट रेखाएं झलक रही थी और उनके सरल मन में समूचे सघ का उज्ज्वल भविष्य चमकता दिखाई दे रहा है तथा शासननिष्ठा, शासननायक के प्रति समर्पण बेजोड है—साक्षात्कारकर्ता]।

(पृष्ठ १३२ का शेष)

उत्तर— मैंने आपके एक प्रश्न के उत्तर में कहा था कि आचार्य देव के आदेश को शिरोधार्य करना हमारी साधना का प्रमुख सूत्र होना चाहिये उसी संदर्भ मे मैंने भगवान् द्वारा प्ररूपित "आणाए धम्मो" की बात भी कही थी, तदनुसार आचार्य भगवन् ने जो व्यवस्था दी है उसे मैं सयम आराधना ध्येय में सहायक मानता हू।

युवाचार्य पद महोत्सव पर विराजमान
सन्त भगवन्तो की नामावली

१ समता विभूति आचाय श्री नानेश
२ मुनि श्री इन्द्रचन्द जी म सा
३ " अमरचन्द जी म सा
४ " शातिलाल जी म सा
५ " प्रेमचन्द जी म सा
६ " पार्श्वकुमार जी म सा
७ श्री धर्मेश मुनि जी म सा
८ श्री रणजीत मुनि जी म सा
९ " महेन्द्र मुनि जी म सा
१० " सौभाग मुनि जी म सा
११ " वीरेन्द्र मुनि जी म सा
१२ " हुलास मुनि जी म सा
१३ " विजय मुनि जी म सा
१४ " ज्ञान मुनि जी म सा
१५ " बलभद्र मुनि जी म सा
१६ " राम मुनि जी म सा
१७ " प्रकाश मुनि जी म सा
१८ " गौतम मुनि जी म सा
१९ " प्रमोद मुनि जी म सा
२० " प्रद्युम मुनि जी म सा
२१ " मूल मुनि जी म सा
२२ " अजित मुनि जी म सा
२३ " जितेश मुनि जी म सा
२४ " विनय मुनि जी म सा
२५ " पद्म मुनि जी म सा
२६ " सुमति मुनि जी म सा
२७ " धर्मेन्द्र मुनि जी म सा
२८ " धर्मेन्द्र मुनि जी म सा
२९ " धीरज मुनि जी म सा

११४	महासती	श्री	पुनीता श्री जी म सा
११५	"	"	पूजिता श्री जी म सा
११६	"	"	स्वर्ण प्रभा जी म सा
११७	"	"	स्वर्ण रेखा जी म सा
११८	"	"	स्वर्ण ज्योति जी म सा
११९	"	"	स्वर्णलता जी म सा
१२०	"	"	प्रमिला श्री जी म सा
१२१	"	"	सुमंगला श्री जी म सा
१२२	"	"	पावन श्री जी म सा
१२३	"	"	प्रज्ञा श्री जी म सा
१२४	"	"	सम्बोधि श्री जी म सा
१२५	"	"	विपुला श्री जी म सा
१२६	"	"	विजेता श्री जी म सा
१२७	"	"	स्थित प्रज्ञा जी म सा
१२८	"	"	मनीषा श्री जी म सा
१२९	"	"	धैर्य प्रभा जी म सा
१३०	"	"	मणि श्री जी म सा
१३१	"	"	वैभव श्री जी म सा
१३२	"	"	शीलप्रभा जी म सा
१३३	"	"	अभिलाषा श्री जी म सा
१३४	"	"	नेहा श्री जी म सा
१३५	"	"	कविता श्री जी म सा
१३६	"	"	अनुपमा श्री जी म सा
१३७	"	"	नूतन श्री जी म सा
१३८	"	"	अर्पिता श्री जी म सा
१३९	"	"	संगीता श्री जी म सा
१४०	"	"	जागृति श्री जी म सा
१४१	"	"	क्षिमा श्री जी म सा
१४२	"	"	मननप्रज्ञा जी म सा

सन्त ३५, सतियांजी १४२ कुल = १७७

युवाचार्य विशेषांक

शुभकामना

संदेश

बधाई

तृतीय-खण्ड

आचार्य भगवन् का निर्णय प्रसन्नता लाने वाला है

—दीर्घ तपस्वीराज शासन प्रभावक महा
मुनिराज श्री ईश्वरचन्द जी म सा

मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म को सन्त-सतियो के विहार आदि के लिये अधिकार देने का वातावरण सुनने को मिला, सुनकर प्रसन्नता होना स्वाभाविक है। भविष्य मे भी आचार्य भगवन् जो काम करेंगे प्रसन्नता का ही कारण बनेगा।

भगवान् ऋषभ देव ने माता से पूछा—मा! मैं दीक्षा लू ? माता ने कहा—हे लाल! तू जो करता है अच्छा ही करता है। यह कार्य भी अच्छा ही है। दीक्षा आनन्द से लो। इसी प्रकार आचार्य भगवन ने जो काम किया है वह अच्छा ही किया है एव जो करेंगे वह भी अच्छा ही करेंगे। यह कार्य भी सघ हित मे ही किया है। जो प्रसन्नता लाने वाला है। माता मरुदेवी की तरह हमारे लिए कर्मों की निर्जरा कराने वाला है।

[उपरोक्त भाव आचार्य भगवन् द्वारा चित्तोड मे मुनि प्रवर को अधिकार प्रदान किया उस समय तपस्वीराज ने व्यक्त किये।]

❊

शुभानुशसा एवं शुभकामना

❊ सघ सरक्षक श्री इन्द्रचन्द जी म सा

सेठिया जैन धार्मिक भवन मे आज प्रार्थना के समय महमा-न्नो थी। सर्वत्र एक शान्ति का वातावरण परिलक्षित था। उपस्थित जननन्दिनी निर्निमेष दृष्टि से आचार्य प्रवर द्वारा घोषित किसी महत्व-पूर्ण निर्णय की याचना या श्रवण कर रही थी। एक ऐतिहासिक सभ्य दशा समारोह के पश्चात् युवाचार्य श्री की घोषणा का यह मांगलिक अवसर था। चित्तौडगढ के वर्षावास म आचार्य देव ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया था और चातुर्मासिक व्यवस्था का उत्तरदायित्व [illegible]

तपस्वी, शास्त्र मर्मज्ञ, विद्वद्वय, "मुनिप्रवर" श्री रामलाल जी म सा को सौंपा था। आप बडी शालीनता पूर्वक इस महनीय भूमिका का निर्वहन करते रहे हैं।

स्वर्णिम प्रभात था आज! गौरवान्वित था बीकानेर! और धन्य हुई सेठिया कोटडी कि यहां परम आराध्य आचार्य देव ने शासन व्यवस्था के लिए गहन विचार विमर्श असीम चिन्तन एवं अपूर्व दूरदर्शिता के पश्चात श्री राम मुनिजी को आचार्य पद सम्बन्धी सर्व अधिकारों के साथ युवाचार्य घोषित किया। प्रार्थना-सभा में हर्ष ध्वनि के पश्चात् जयघोष एवं अनूठे आनन्द का वातावरण व्याप्त हो गया। और अन्त हुआ एक अनिश्चितता एवं अटकलबाजियों का। चतुर्विध संघ ने इस निर्णय का तहेदिल से स्वागत किया और गुरु-आज्ञा को शिरोधार्य कर तदनुसार समर्पित रहने का संकल्प भी किया।

मैं खो गया अतीत की घटनाओं में। स्मृति पटल पर विगत दृश्य उभर रहे थे। किस प्रकार मैं हुक्मेश संघ का अभिन्न अंग बना और आज आचार्य प्रवर के वरद हस्त से आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त कर सका.. सिंहावलोकन करते चार दशक से भी अधिक दूर की स्मृतियां जैसे वर्तमान की प्रतीत होने लगी। विक्रम सं २००० की बात है। मैं किशोरावस्था में देशनोक में विराजित शान्त क्रांतद्रष्टा, सौम्यमूर्ति परम श्रद्धेय गुरुदेव आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के दर्शनार्थ उपस्थित हुआ था। तत्पश्चात् बीकानेर दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। अन्य सन्त महात्माओं के मध्य एक सदाबहार सन्त-वर्तमान आचार्य श्री जी ही नजर आये, जिन्होंने मुझे सहज ही आकर्षित कर लिया। उनके उपदेशामृत से लाभान्वित होने की जिज्ञासा से वन्दन कर निकट बैठ गया। मैंने अपना नाम बताया और वैराग्य भावों के बारे में बताया तो आप—"बहुत अच्छा" मात्र कहकर पुनः ज्ञानार्जन में संलग्न हो गये। एक क्षण के लिए कुछ अटपटा सा लगा परन्तु शीघ्र ही अनुभूति हुई कि यह निर्लिप्त भाव ही तो साधुत्व की कसौटी है। उनकी इस निर्लिप्तता से प्रभावित तो हुआ ही—आज उनका सान्निध्य पाकर धन्य अनुभव कर रहा हूँ।

दीक्षोपरान्त शांत क्रांति के अग्रदूत स्वर्गीय गुरुदेव आचार्य श्री का कृपा पात्र होने के कारण सन्त सेवा व वैराग्य पर्व के ...

दर्शन व सामाजिक/चातुर्मासिक व्यवस्था सम्बन्धी विचार विमर्श के स्वर्णिम क्षणों के शुभावसर मिलते रहे। फलस्वरूप वर्तमान शासनेश के सम्पर्क में आने का विशेष सौभाग्य प्राप्त होता रहा।

वर्तमान आचार्य श्री जी म सा के पद ग्रहण के समय संघ में कुछ अव्यवस्था व बिखराव प्रतीत हो रहा था परन्तु आपके विराट व्यक्तित्व व अनुपम कार्य प्रणाली से पुन. एक रौनक का उद्भव हुआ। आपकी प्रखर प्रतिभा, विलक्षण रत्नत्रय वैभव एवं सुगठित अनुशासन बद्ध व्यवस्था से श्री हुक्मेश संघ की गरिमा मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही और आज इस गुलशन का स्वय मे एक महत्वपूर्ण स्थान है।

आचार्य का पद कोई सामान्य पद नहीं है, गुरु के शीर्ष पद हेतु गरिमा, आचार, विचार, योग्यता, आगमिक तलस्पर्शी ज्ञान, त्याग, वैराग्य, चारित्र एवं अनुभव का होना महत्वपूर्ण है। साथ ही दूरदर्शिता, संघ के प्रत्येक सदस्य के प्रति उदारवृत्ति पूर्ण समान व्यवहार, निष्पक्ष शासन व्यवस्था आदि दृष्टिकोण भी आवश्यक है। इन्हीं मापदण्डों को दृष्टिगत रखकर आचार्य श्री ने ३ माघ ९२ (फाल्गुन बदी १३) को बीकानेर संघ को विशिष्ट पद युवाचार्य घोषणा का मांगलिक शुभवसर प्रदान किया। इस उद्घोषणा के चार दिन पश्चात् फाल्गुन सुदी ३ को श्री रामलाल जी म सा को ऐतिहासिक राजप्रासाद—जूनागढ़ में विशाल जनसमूह की साक्षी मे इस गरिमा मण्डित पद से विभूषित किया।

युवाचार्य श्री राम मुनिजी म सा क्रियोद्धारक आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा से लेकर वर्तमान आचार्य देव श्री नानेश की वृद्धिगत परम्परा मे अक्षरशः गति प्रदान करते रहें व उदित दिवाकर वत् प्रकाशित होते हुए संघ की दीप्ति को उजागर करते रहेंगे, इन्हीं शुभानुशंसाओं के साथ।

[संघ संरक्षक श्री इन्द्रचन्द जी म सा के भावों पर आधारित]

युवाचार्य श्री उच्च स्तर के प्रज्ञानिधि हैं

—शासन प्रभावक श्री सेवन्त मुनिजी म सा
एवं विद्वद्वय श्री रमेश मुनिजी म सा

शास्त्र मर्मज्ञ मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को सर्व गुण सम्पन्न समझकर आपश्री ने जो युवाचार्य पद दिया है। यह अत्यन्त दूरदर्शिता एवं संघ के हित की उत्कृष्टता का आपश्री ने अभिव्यक्तिकरण किया है, जो कि बहुत ही समीचीन है। आपश्री ने दूरदर्शिता पूर्वक जिस महापुरुष को परखा है तथा धर्म के साम्राज्य के सिंहासन पर बिठाया है वह बहुत ही उत्तम, मंगलमय एवं सेवस्कर कार्य किया है। आपश्री चतुर्विध संघ के वफादार हैं। लगता है कि आपश्री आत्मोत्कर्ष की पवित्र शक्तियों से सम्पर्क पा चुके हैं।

सब गुण सम्पन्नता, आत्मिक सिद्धियां अतिशय चारित्र निर्मलता की प्रतीक है। जो कि आपश्री ने हस्तगत करली है। आपश्री की सुदूरदर्शिता से सर्वाधिक प्रभावित हुए—हम दोनों संत।

सुयोग्य सुदृढ़ कन्धों पर शासन भार वहन के लिये जिन प्रज्ञ मेधावी महापुरुष का चयन हुआ, यह बहुत ही सही समय पर सुन्दर कार्य शासन हित की उत्कृष्टता का ख्याल करके किया गया है। शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा बहुत ही सुयोग्य उच्च स्तर के प्रज्ञानिधि हैं। सुविचक्षण हैं। अप्रमत्त होकर शासन सेवा तथा आपश्री के दिल को प्रसन्न कर जीत लिया है। इसमें किंचित् भी संदेह नहीं। मुनि प्रवर की विचक्षणता ही शासन भार को वहन करने में समर्थ हो सकेगी।

मुनि प्रवर के विशुद्ध श्रमणत्व जीवन पर हमको पूर्ण विश्वास है। आपश्री की सतत् जागरूकता संयम में सजगता सर्वविदित है। इसमें कोई शक नहीं। मुनि प्रवर के सुयोग्य कन्धों पर युवाचार्य पद सहित चादर ओढ़ाकर आपश्री ने बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया है। पर समय पर वास्तविकता सामने आयेगी तब कईयों को आपश्री की दूरदर्शिता का ख्याल आयेगा तब सब कुछ ठीक हो जायेगा।

हमारी समय से पर हृदय से मुनि प्रवर को ... प्रशस्त शासन स्नेहिल दिन ... करता है।

हित भाव की गजब की अनुमति होती रहती है ।

स्वर्गीय प्राचार्य श्री गणेशलाल जी म सा ने जो प्राप श्रीजी को शासन भार सौंपा था उसको बखूबी प्रभावी ढग से संचालित कर पूर्ण रूपेण निभाया है । उसी तरह से पुरुषोत्तम सर्व गुण सम्पन्न ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप की उत्कृष्ट आराधना करते हुए युवाचाय श्री रामलाल जी म सा भी आपश्री जी की तरह ही चतुर्विध सघ की अभिवद्धि के साथ-२ शासन मे चार चाद लगायेंगे तथा पूर्वाचार्यों की निग्र'थ श्रमण सस्कृति की रक्षा करने में अतिशय आगे रहगे इसमे कोई सन्देह जैसी बात नहीं है । हम दोनो संत भी आपश्री के चरणा में समर्पित रहे हैं उसी तरह युवाचाय श्रीजी के चरणा मे समर्पित रहेंगे । जैसे आपश्री हमारी श्रद्धा के केन्द्र रहे हैं उसी तरह से युवा-चाय श्रीजी के भी श्रद्धा के पात्र हम रहगे और वे हमारे श्रद्धा के केन्द्र रहेंगे । युवाचाय श्री की आज्ञाओ को भी आपश्री जी की आज्ञा की तरह मानकर चलेंगे ।

निर्णय सघ के लिए वरदान बनें

❖ घोर तपस्वी श्री प्रमीर मुनिजी म सा

पूज्य गुरुदेव अद्भुत योगी हैं ।
इनकी अथाह ज्ञान शक्ति को पहचानना
सब साधारण की सीमा से बाहर है ।
श्री गुरुदेव ने युवाचार्य पद का जो निर्णय
लिया वह उत्तम ही नहीं अत्युत्तम है ।
भगवान का यह निर्णय सघ के लिये
वरदान बन । पूज्य गणेशाचाय की भांति
श्री नानेशाचार्य की परख भी सोलह आना
सही निकले, यही शासन देव से प्रार्थना
है । श्री युवाचाय श्री जी दीर्घायु हो एवं
शासन की प्रभावना करते रहें ।
यही शुभ मगल कामना है ।

धिकार प्रदान किया उसी योग्यता मे दिन दुना रात चौगुना निखार लाते हुए युवाचार्य श्रीजी, पू श्री इन्द्र भगवान् की संरक्षकता में स्थविर प्रमुख तथा चतुर्विध सघ के सहयोग से इस महान् गुरुतर भार को अच्छी तरह से वहन करते हुए शासन की शोभा बढ़ावें ऐसी शुभकामना ।

पाली (मारवाड)

सही समय पर सही कदम

⊛ शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनिजी म

आचार्य के जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है—सुयोग्य उत्तराधिकारी का निष्पक्ष चयन !

प्रसन्नता की बात है कि आचार्य-प्रवर श्री नानेश ने अपने जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि प्राप्त की है युवाचार्य के रूप में 'श्रीराम' को पाकर ।

आचार्य भगवन ने शास्त्रज्ञ विद्वद्वर्य तरुण तपस्वी मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य पद पर नियुक्त करके सही समय पर सही कदम उठाया है । आचार्य श्री के इस कदम ने जहा संघ को चिन्ता मुक्त किया है वहा स्वयं को भार मुक्त भी किया है ।

इस अवसर पर आचार्य श्री को
नश्रद्धा वन्दन !
युवाचार्य श्री का भाव भीना
अभिनन्दन

पावन परम्परा अक्षुण्ण रहेगी

—कविरत्न श्री गौतम मुनिजी म

चतुर्विध सघ मे काफी समय से इस बात को लेकर चर्चा चल रही थी कि युवाचार्य पद का चयन कब होगा ? हमारे श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश भी चतुर्विध सघ की इस चर्चा को यथावसर

जैसा हम सोचते थे वैसा ही आपका चिन्तन सही रहा

✠ आगम व्याख्याता मुनिश्री कंवरचन्द जी म.
सेवाभावी मुनि श्री रतनचन्द जी म.

आचार्य भगवन ने गहरा चिन्तन मनन करके अपने उत्तराधिकारी युवाचार्य के रूप में मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को पद पर नियुक्त किया। उसका हमें गौरव है। जैसा हम सोचते थे वैसा ही आपका चिन्तन सही रहा है, इस बात पर उप मुनिवर ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा शासन के प्रति निष्ठावान बने रहने की भावना व्यक्त की है।
कानोड

शासन की शोभा बढ़ावें

✠ शासन प्रभावक श्री सम्पत मुनिजी म.
सेवाभावी श्री नरेन्द्र मुनिजी म.

जिन आज्ञा ही श्रमणजीवन के लिए मुख्य विधि है उसकी वैधानिक सुरक्षा के लिए आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने बीकानेर के भव्य राजमहल में महाराजा श्री नरेन्द्र सिंहजी की उपस्थिति में सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामी जैसे महापुरुषों की परम्परानुकूल शुभ्र वर्णी श्वेत चादर युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा को शुभ दिन फाल्गुन शुक्ला ३ सं २०४८ शनिवार दि ७-३ १९९२ को उपस्थित अन्य ३३ मुनिवर एवं १३८ महासतियां जी तथा जन समुदाय के जय घोष के अनुमोदन पूर्वक प्रदान की।

अर्थात् अपना उत्तराधिकार और इस संघ का भार अपने कंधों से उतारकर पू श्री हुक्मीचन्द जी म सा के आठवें पाट पर युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा के कंधो पर रखा। अष्ट सिद्धि नव निधि का सम्मिलन हुआ।

जिस योग्यता को परखकर आचार्य श्रीजी ने अपना उत्तर-

ाप श्री (युवाचाय श्री) की जन्म भूमि मे मुझे वैराग्य की प्राप्ति ना तथा पूज्य आचार्य श्रीजी की कृपा से मेरी जन्म भूमि मे आपश्री ।युवाचाय पद की प्राप्ति होना मेरे लिए अनूठे आत्मतोष का कारण है।

युवाचाय प्रवर के चरणो में मेरी विनम्र प्राथना है कि भग- न् ! आप श्री की महती अनुकम्पा उसी प्रकार बनी रहे जैसे ग्याचाय श्रीजी की अद्यावधि रही है। बस इसी भावना के साथ—

युवाचार्य श्री राम !

शत शत प्रणाम !!

धडकन धडकन में श्रीराम बसे रहें

विद्वान श्री प्रशम मुनिजी म-

पूज्य गुरुदेव ने मुनि प्रवर, शास्त्रज्ञ, त तपस्वी श्री रामलाल ी म सा को युवाचार्य बनाया यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है। रे जीवन का हर क्षण, हर पल युवाचाय श्री की सेवा म व्यतीत । नया धडकन धडकन मे श्रीराम बसे रहें। गुरुदेव से इसी आशी- दि की आकांक्षा के साथ युवाचाय श्री को शत-शत प्रणाम !

सुस्वागतम्

△ मुनि श्री सुमति कुमार जी

अनादिकाल से शासन परम्परा अविच्छिन्न रूप स चली आ ती है। इस सघ व्यवस्था मे सुधर्मा आदि अनेको अनेक महाविभूतियो ा महत्वपूर्ण रूप से योगदान रहा है। उसी परम्परा मे वीर लोंका- ाह ने सुषुप्त चेतना जागृत की। आचाय हुक्मगणि ने क्रियोद्धार किया। ाचार्य श्री शिवलाल जी म सा आदि पूर्वाचार्यो ने और तेजस्विता ा। महाप्रतापी आचार्य श्रीलाल जी म सा एव युगदृष्टा ज्योतिधर ाचाय जवाहर ने ज्ञान रश्मि प्रस्तुत की, गणेशाचाय एवं आचाय श्री ानेश ने सघ विकास में अद्भुत क्रान्ति की, इसी शृखला में आपको हमको सघ शासन सेवा का अवसर मिला है। सघ चेतना एवं विकास

पाप श्री (युवाचार्य श्री) की जन्म भूमि मे मुझे वैराग्य की प्राप्ति होना तथा पूज्य आचार्य श्रीजी की कृपा से मेरी जन्म भूमि में आपश्री को युवाचाय पद की प्राप्ति होना मेरे लिए अनूठे आत्मतोष का कारण है।

युवाचाय प्रवर के चरणो मे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि भगवन! आप श्री की महती अनुकम्पा उसी प्रकार बनी रहे जैसे आचाय श्रीजी की अद्यावधि रही है। बस, इसी भावना के साथ—

युवाचार्य श्री राम!
शत शत प्रणाम!!

धडकन धडकन में श्रीराम बसे रहें

विद्वान श्री प्रशम मुनिजी म-

पूज्य गुरुदेव ने मुनि प्रवर, शास्त्रज्ञ, त तपस्वी श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य बनाया यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है। मेरे जीवन का हर क्षण, हर पल युवाचाय श्री की सेवा म व्यतीत हो तथा धडकन धडकन मे श्रीराम बसे रहे। गुरुदेव से इसी आशीर्वाद की आकांक्षा के साथ युवाचाय श्री को शत-शत प्रणाम!

सुस्वागतम्

△ मुनि श्री सुमति कुमार जी

अनादिकाल से शासन परम्परा अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है। इस संघ व्यवस्था मे सुधर्मा आदि अनेको अनेक महाविभूतियों का महत्वपूर्ण रूप से योगदान रहा है। उसी परम्परा म वीर लोकाशाह ने सुषुप्त चेतना जागृत की। आचाय हुक्मगणि न क्रियोद्धार किया। आचाय श्री शिवलाल जी म सा आदि पूर्वाचार्यों ने और तेजस्विता दी। महाप्रतापी आचाय श्रीलाल जी म सा एव युगद्रष्टा ज्योतिर्धर आचाय जवाहर ने नई रश्मि प्रस्तुत की, गणेशाचाय एव आचाय श्री नानेश ने संघ विकास में अद्भुत क्रान्ति की, इसी शृंखला में आपको महत्वपूर्ण संघ शासन सेवा का अवसर मिला है। संघ चेतना एवं विराट

मे आपको अपना परिपूर्ण आत्मभोग देकर नूतन चेतना प्रस्तुत करें है । आपके प्रत्येक कार्यों में मेरा पूर्ण रूप से योगदान देने के साथ मैं आपको संघ सेवा के अपूर्व अवसर पर बहुत बहुत साधुवाद देता हूँ आपका प्रत्येक कार्य संघ एवं शासन के लिए वरदान हो इसी भावनाओ के साथ ।

हुक्म सघ ज्ञान के आलोक से आलोकित और चारित्र की सुगन्ध से सुगंधित होता रहे

● विद्वान मुनिश्री जितश कुमार

दशन कुसुम, ज्ञान है अमृत, चारित्र जहां का प्राण है ।
ऐसा सघ है मेरा जिसमें, हर चेतन भगवान है ॥

युवाचार्य श्री जी !

आपश्री जी को ऐसे शासन के सिरताज बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । परम आराध्य आचार्य भगवन् ने आपको जहां एक हरा भरा बगीचा सौंपा है उस बगीचे को हरा भरा बनाये रखने के साथ आप पर यह गुरुतर दायित्व भी आया है कि इस बगीचे का हर फल रसदार बने, हर फूल महकता रहे ।

बगीचे मे जहां फल फूल हैं, वहां कांटे और कचरा होना स्वाभाविक है । बगीचे का रखवाला माली उन कांटों तथा कचरे को बगीचे के बाहर फेंक देता है तथा जो कुशल माली होता है वह कांटों और कचरे का उपयोग क्रमशः बगीचे की सुरक्षा व खाद के रूप में करके बगीचे का उपयोगी अंग बना देता है । आपश्री जी का व्यक्तित्व भी एक कुशल माली के रूप मे उभरकर सामने आये यही मेरा मंगल मनीषा है ।

हम जिनशासन देव से यही प्रार्थना करते हैं कि आपके कुशल नेतृत्व से हुक्मसंघ ज्ञान के आलोक से आलोकित और चारित्र की सुगन्ध से सुगंधित होता रहे इसी शुभकामना एवं बधाई के साथ——

आचार्य भगवन के पवित्र पावन चार चरणों में,
सश्रद्धा वन्दन-नमन अभिवादन ।

आचार दृढता के लक्ष्य में शिथिलता नहीं आयेगी

आप श्रीजी म सा के चतुर्विध श्रीसघ के नाम दिये गये श का प्रारूप प्राप्त हुआ । आप श्रीजी म सा ने अधिवेशन के ग पर इस साहसिक घोषणा को करके सघ के दूरदर्शी भविष्य को म सुरक्षा कवच प्रदान किया है । आप श्रीजी ने अपने इस निणय से में अनवरत आचार दृढ़ता पूर्वक विकास यात्रा मे आगे वढते रहन नया आयाम समर्पित किया है ।

श्रमण संघीय परिस्थितियो की सदर्भ चर्चाओं के बीच आप की बौद्धिक चातुय पूर्ण निर्णायक क्षमता की चमत्कारिक घटनाओ सुना ही था किन्तु अब हम उनका साक्षात्कार कर रह है । यह मारा सौभाग्य है ।

जहां भारत सरकार ने आरक्षण के माध्यम से देश के सामने प्रश्न वाचक चिह्न खडा किया है । वहा आप श्रीजी ने (अपन दर्शी निणय पूर्वक) आरक्षण कर धम सघ के बीच से एक प्रश्न चक चिह्न हटा लिया है । यह है आप श्री जी की प्रतिभा का अद् त चमत्कार ।

जहां राष्ट्रीय स्तर पर श्री राम मन्दिर "निर्माण" एक विवा स्पद समस्या लेकर उभर रहा है । वहां आप श्रीजी ने धम सघ के गों क हृदय मन्दिर मे श्रीराम के मन्दिर बनाने का निर्विवाद उप म करके अप्रतिहत बौद्धिक चातुय का परिचय दिया है । आप श्री ा यह चयन हिन्दू व जैनो के बीच भी एकात्मकता स्थापित करने ा सुदर सगम सिद्ध होगा ।

श्री राम मुनिजी के चयन से यह आश्वस्तता स्वाभाविक है क व निहास एक निष्पक्ष व्यक्तित्व रूप में भी निष्पक्ष रहेंगे । श्रावक-श्राविकाओं, सत सतियो के पक्षपात मे नहो फसकर योग्यता व जनता के मूल्यो पर सघ का विशुद्ध सचालन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है ।

श्रीराम मुनिजी के चयन से संघ इस बात के लिए आश्वस्त हुआ कि हमारे सघ मे आचार दृढ़ता के लक्ष्य मे शिथिलता नहीं आयेगी । व सघ को भौतिक चकाचौंध एव लोकैषणा की मृगतृष्णा

समुपासक रहे हैं । आत्मा का अपूर्व तेज भक्तो के अनन्य विश्वास पात्र, सत-सती वग के सिरमौर, आचार की दृढ़ता, विचारो की पवित्रता, दीघ दृष्टा, गम्भीर विचारक, साधना के सजग प्रहरी, प्रतिभा सम्पन्न और भी न जाने क्या-क्या विशेपताए हैं आप श्रीजी के जीवन में.... इन सबका वर्णन करना हमारे लिए संभव नही है । राजमहल जूनागढ़ के प्रागण मे सात माच १९९२ को समता विभूति आचाय श्री नानेश ने आप श्रीजी को संघ के उत्तराधिकारी के रूप में श्वेत चादर प्रदान की । युवाचाय श्री रामलाल जी म सा के लिए भी हम साध्वी मडल यही हार्दिक मगलमय शुभकामना करते हैं कि जिस प्रकार विश्वास के साथ आचाय प्रवर ने आप श्रीजी को यह गरिमा-मय पद प्रदान किया है, आप अपनी प्रज्ञा और प्रतिभा के द्वारा हुक्म संघ की गौरव गरिमा मे चार चांद लगायेंगे और आचाय श्री नानेश के शासन की और अधिकाधिक अभिवृद्धि करेंगे । हम साध्वी मडल आप श्रीजी से यही मगल प्रार्थना करते हैं कि हमारी सयम यात्रा में आपकी ज्योतिमयी मगल कामना सदैव प्रेरणा देती रहे । आप श्रीजी का वरद् हस्त हमारे पर सदैव बना रहे । शासन देव से यही प्रार्थना है कि आप श्रीजी सदैव स्वस्थ रहे शतायु हो और भू-मडल पर गंध हस्ति की तरह विचरण करते हुए भक्तो की पिपासा तृप्त करें । इसी आशा और विश्वास के साथ श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हैं ।

अनुपम व्यक्तित्व के धनी "युवाचार्य श्री"

—शासन प्रभाविका श्री चांदकवर जी म सा

यदि सन्ति गुणा पुसाम् विकसन्ते एव ते स्वयं ।
नहि कस्तूरिका मोद शपथेन भाव्यते ।।

के अनुसार हमारे श्रद्धेय युवाचाय श्री का प्रखर व्यक्तित्व स्वत आकषण का केन्द्र है । आप सयम साधना के प्रबल हेतु हैं । आपकी सयमी धवल धारा की तुलना गगा के निमल जल से की जा सकती है । आप अपनी साधना में सतत् जागरूक हैं । आगम के तत-

स्पर्शी ज्ञान के साथ आप मे क्रिया का समन्वित रूप है।

जब जब आपके सम्पर्क मे आने का सौभाग्य मिला, वहाँ देखा आप में अपूर्व उत्साह कार्य करने की सतत् ललक, सामाजिक एवं विधियो का गहन अध्ययन तथा विकट से विकट रही हुई पहेलियों को सुलझाने में सक्षमता है।

आपकी अप्रमत्त साधना से हुक्म संघ के पूर्वाचार्यों की स्मृति उभरती है।

व्याख्यान शैली भी आपकी आगमिक धरातल से संपुष्ट है। घोर तपोधन से आपकी तेजस्विता अपने में पृथक ही पहचान बनाए हुए है।

आप शासन की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने में पूर्ण प्रयासक हैं। असीम गरिमाधनी युवाचार्य श्री हुक्म शासन की कीर्ति सौरभ बिखरने में पूर्ण सफल रहेंगे।

इन्हीं आशा से शत शत वन्दन अभिनन्दन।

हृदय हर्ष विभोर हो गया

— शा प्र साध्वी श्री इन्द्रकंवर जी

शासन क्षितिज पर नूतन निमल बाल रवि उदीयमान देख हो हृदय हर्ष विभोरित हो गया। महावीर शासन की गौरवमय पाट परम्परा की अक्षुण्ण स्वर्ण शृंखला में एक और कड़ी को जोड़ स्व० श्र आचार्य देव ने जो अपने उत्तरदायित्व का कुशलता से निर्वहन किया है उसमें हम सभी सती मण्डल में अनुमोदना के रूप सम्मिलित हैं। युवाचार्य श्री हुक्म वाटिका की संयम सुरभि को दिग् दिगन्त में व्याप्त ज्योति को देदीप्यमान बनाते हुए अनेक स्वर पर्णांकित धन प्रखर तेजस्वी बने एवं आचार्य श्री नानेश की इस गरिमा को अनवरत प्रवाहित कर अगणित मुमुक्षु आत्माओं को पथ प्रदर्शित करायें। इन्हीं भावों के साथ मनसा के द्वार—

हे! अनन्त ज्ञान पुंज

और अनन्त आराध्य

आचार्य श्री नानेश दश कर तेरे
आत्मा के कण कण मे होता है प्रस्फुटित, आनन्दमय अनन्त निझर पा
जाता है, ज म-जन्मान्तर का अन न आत्म वैभव, हे समता निधि !
तव पुनीत चरणो मे मेरा शत शत वन्दन ! अभिवन्दन !!
बशालीनगर (म प्र)

"खजाना-ए-खिद्मत"

—स्थविर महासती श्री झमकूकवर जी म सा

जनागमो में बडी ही सुन्दर अभिव्यक्ति दी गई है । मानव मन में उठने वाली विभिन्न उच्चावच्च सूक्ष्म गतिविधियो को दर्शाने के लिए "इच्छा हु आगास समा अणतिया' कहकर तृष्णा को सभी दुखों का मूल बताया गया है, अपनी अभिलाषा के अपूर्ण रहने पर व्यक्ति क्या कुछ नही कर गुजरता ? कितनी निम्न स्तरीय बन जाती है उसकी मनोवृति ! इसी आशय को व्यक्त करती हुई निम्न पक्तियां सटीक लगती है—

चाहो के अधूरेपन मे घिरकर,
आदमी हैवान बन सकता है ।
दूभर बना सकता है—
खुद का औरो का भी जीना ।
चाहो की कमी का अहसास—
बाजहा बना देता है,
काबिल शख्स को भी, हद दर्जे का कमीना ॥

चाहें अर्थात् अनन्त आकाश के समान सदा वृद्धिगत होने वाली इच्छाए जीवन के सभी मानवीय गुणो को धीरे धीरे खोखला बनाती चली जाती हैं, महत्वाकाक्षाए पूरी करने मे उचितानुचित का विवेक भी धूमिल पड जाता है और मानवता के सर्वोच्च शिखर से गिरते गिरते व्यक्ति सस्ती खुशियों से मिलने वाली प्रसन्नता को ही बटोरने में सलग्न हो जाता है। वह भूल जाता है कि दुलभ मनुष्य जन्म पाकर इससे परम सुख की भी आराधना हो सकती है, वह भूल जाता है

गुरु सेवा को अपने जीवन मे प्रथम स्थान देने वाले बहुत से
पक्ति मिल जाते हैं, किन्तु सर्वतोभावेन अविकार भाव से समर्पित होते
हुए गुरु की सेवा करना अत्यन्त दुष्कर काय है ।

सेवाकार्य बडा दुष्कर है, आत्मशुद्धि मे सम्बन्धित सेवक और
सेव्य का नाता, रहे हमेशा अविखण्डित ॥

जब होता है निज का निग्रह, केवल तब सेवा सभव, सेव्य
की इच्छा को प्रधान कर सेवक भूलें हर उत्सव ॥

सेवा करे न कोई किसी की, सिर्फ बनें ज्ञाता के निमित स्वामी-
व्याज से हो निज सेवा, नाना कम सुशोधन हित ॥

सेवामें तल्लीन भाव से, निजरा का शुभ लाभ मिले,
सच्चा सेवक तो निरपेक्षी, श्लाघा या अभिशाप मिले ।
राग-सुसेवा है, बहुरूपी उसका नही है पारावार,
सेवक हर क्षण जुड, सेव्य से, छिन्न न हो आत्मिक सधाशा ॥
सेवा करके हो कृताथ वह, प्रत्युपकार का लोभ नही,
निज सौभाग्य उदय ही माने, मान-क्षोभ विक्षोभ नही ॥
योग्य और पुण्यवान जीव ही, सेवा का अवसर पाता,
गुरु, साधर्मी, वृद्ध, ग्लान को यथायोग्य दे सुख साता ॥
हर वस्तु की तरह आजकल, मिश्रित हो गई सेवा भी,
पात्र-सुअवसर-विधि ज्ञान बिन, मिले न मुक्ति मेवा भी ॥
अतिशय कठिन व सूक्ष्म विद्या यह, सुख शांतिमय जीवन की,
कोटि सूर्यों से अधिक प्रकाशक, सम्बोधि उद्योतन की ॥

सेवा का विधि विधान अत्यन्त गहन और दुष्कर है । जो
इस प्रकार की सेवा का अप्रतिम आदश प्रस्तुत करते हुए हमारे आस्था
के आयाम बनकर चतुर्विध सघ के भव्य सेवक का भार सभालने को
तत्पर हैं, उन्हीं शास्त्रज्ञ युवाचाय श्री जी को कोटि-कोटि प्रणाम ।
धन्य है आप श्री जी का जीवन जिसके पर्यवेक्षण द्वारा, चि तन मनन
द्वारा अनुकरण द्वारा राग-सुसेवा का नवीन द्वार उद्घाटित होते हैं
एकमात्र सेवा ही हमारे भी जीवन का सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य बने, हम भी
इस खजाना-ए-खिद्मत को पाकर स्वय की आत्मा को धन्य धन्य
बना सकें, इन्हीं भावाभिव्यक्तियो के साथ -

[श्री महामती श्री भगवूबवर जी म सा के भावों के
आधार पर वि साध्वी श्री सम्बोधि श्री जी द्वारा]

सदा जयवन्त रहे

कर्ण–श्रुति पर तन मन अप्रतिम पुलक से भर उठा। धन्य हैं हम सभी नव-निर्वाचित युवाचार्य श्री के दिव्य दीदार को पाकर।

मदा यशवन्त रहे—भगवन् का वरदहस्त
सदा विजयवन्त रहे—आचार्य श्री नानेश का पट्टधर
हर दिशा मे यशस्वी नेतृत्व चमक उठे
सदा कीर्तिमान रहे—युवाचार्य श्री का वर्चस्व

युवाचार्य पदाभिषेक दिवस पर समर्पित है—हम सभी की भावप्रणति पूर्वक हार्दिक बधाईयां—

नानेश पदरज
श्री गंगावतीजी म सा
श्री सुमति श्री जी म सा
श्री निरंजना जी म सा
श्री वनिता जी म सा
श्री सगम प्रभा जी म सा
श्री पुष्प प्रभा जी म सा
श्री सुबोध प्रभा जी म सा
श्री मृगावती जी म सा

साधुमार्गी परम्परा को दैदिप्यमान करते रहें !

—विदुषी साध्वी श्री जय श्री जी म सा

युग पुरुष समता विभूति की प्रखर प्रतिमा ने एक नव प्रतिमा का निर्माण किया युवाचार्य श्री रामलालजी म सा के रूप। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है।

युवाचार्य चयन एवं चादर महोत्सव पर हम दूर दे... दूर थे! परन्तु इतनी दूर से या बधाई लेकर हम गुरु चरणों ... पहुंचे हैं। इसकी हमें हार्दिक प्रसन्नता है।

आचार्य श्री ने इस प्रकार का चयन करके शासन को ... कर बनाया है। आशा है, युग पुरुष के कसौटी/कसौटी का ... लम्बी युगों-युगों तक याद करेगा एवं यह निर्णय इतिहास को ... सिद्ध होगा।

हमारी मंगल कामना है कि आचार्य प्रवर दीर्घ काल तक स्वस्थ/निरामय रहे एवं युवाचार्य प्रवर प्रभु महावीर के शासन को, पूज्य हुक्मेश की परम्परा को एव साधुमार्गी संघ को दैदिप्यमान करते रहें।

हर कदम समर्पित हैं हम

—विदुषी साध्वी श्री मंगला कंवर जी म सा

जीवन सागर में खुशियो की लहरों पर तरता हुआ एक मनुम अवसर दस्तक दे रहा है, द्वार आपके आप अपनी जिंदगी के स्ततम अनमोल क्षणो मे हार्दिक चादर महोत्सव के सुनहरे पर्व पर मारी विनम्र मंगल शुभ कामनायें स्वीकार करें।

रवि रश्मि सम जगमगाता अरूणिम प्रभात जीवन मे खुशियो बिखेरे। फूलो मे खुशबू की तरह आपकी यश कीर्ति दिग् दिगन्त में प्रसारित होवे।

दे सकती हू सिर्फ शुभकामनाओं का गुलदस्ता,
इस रम्य स्वर्णिम महोत्सव पर।
दीप जलाईये ज्ञान-पीयूष के,
हर कदम समर्पित हैं हम ॥
समता झरना बहे निरन्तर,
बारम्बार है आपका अभिनन्दन।
कीर्तिपुंज बन गया है आपका,
गरिमा मंडित जीवन ॥

△
△△

त्याग तप की अद्वितीय रश्मि

—विदुषी साध्वी कमलप्रभा जी म सा

मैं श्रद्धा की तुच्छ भेंट ले, द्वार तुम्हारे आई हूं।
और नहीं मेरे पास कुछ श्रद्धा सुमन चढ़ाई हू ॥

भारतीय संस्कृति की भागीरथी धारा दो प्रवाहों में विभक्त : ब्राह्मण द्वितीय श्रमण।

सहजता आदि अनेक गुणो के दशन हो रहे थे । श्रद्धेय आचाय प्रवर की गूढ़ दृष्टि ने आप जैसे सादगी प्रिय, निष्पृह वात्सल्यता विराटता आदि गुणो से युक्त दिव्य विभूति को चतुर्विध सघ के बीच दिया है । इससे शासन सदा समुन्नत होता हुआ गौरवान्वित होगा ।

आज इस मंगलमय वेला म भी हम आपश्री जी के भावी जीवन के लिये अनन्त शुभ कामनाएं व श्रद्धा समपणा श्री चरणो में भेंट करते हैं। साथ ही हमे युगो युगों तक उभय महान् आत्माओ का सानिध्य प्राप्त होता रहे । इन्हीं भावनाओ के साथ ही श्रद्धावनत "

卐

युवाचार्य श्री आत्मानुशासित हैं ।

—विदुषी साध्वी मजु बाला जी म सा

युवाचाय श्री जी क्रिया मे बहुत ही कठोर हैं । ज्ञान के धनी एव शास्त्रो के ज्ञाता हैं । त्याग तपस्या से जीवन संजोते रहते हैं । मैं उनकी गुण गरिमा को कहा तक गाऊं । उनका जीवन बहुत ही सरल हैं । सौम्य उनकी आकृति है। अपने जीवन पर अत्यधिक अनुशासन है। युवाचाय श्री में रोम रोम मे विनयभाव कूट कूट कर भरा पड़ा है । युवाचाय श्री आचाय श्री की छत्रछाया में दिनोदिन बढ़ते रहे यही शुभ कामना है।

卐

याद उस मगलमय घडी की

झलक उस आनन्ददायक लडी की

—विदुषी साध्वी श्री सुशीला जी म सा

विश्व शान्ति के दीप ! तुम्हारा अभिनन्दन ! शिव सागर के दीप तुम्हारा !
मानवता के दीप ! तुम्हारा अभिनन्दन ।
दिव्य धरा के दीप ! तुम्हारा अभिनन्दन ।

'प्रभु महावीर का शासन आज दिन तक अक्षुण्ण, अबाध, गति से गतिशील है । पंच परमेष्ठि में तृतीय पद के अधिकारी आचार्य होते हैं । जो स्वयं आचार का पालन करते हैं और चतुर्विध सघ को भी आचार का पालन कराके शासन की भव्य प्रभावना करते हैं । प्रभु

सदियों रहेगा आबाद, आकाश, धरती और
महकता चमन ।"

अलौकिक महापुरुष

—विदुषी साध्वी श्री समता कवर जी

युवाचार्य पदोत्सव पर हम
शत शत वदन करते हैं ।
तपो तेजस्वी महा यशस्वी
सद्गुण सौरभ भरते हैं ।

७ माच का स्वर्णिम दिवस किसके लिये आह लाद कारक न होगा । जिस दिन हमारे गणनायक समता विभूति आचाय श्री नानेश ने अधिकारों से साथ अपना उत्तरदायित्व ऐसे मजबूत कधों पर डाला जो हुक्म शासन के दायित्व को उजागर करने में एक अलौकिक महा पुरुष है ।

युवाचार्य प्रवर का जीवन बाल्य काल से ही सेवा सहिष्णुता व कर्तव्य परायणता पर टिका रहा है ।

आप अपनी सयमीय साधना द्वारा वर्तमान आचार्य प्रवर के सानिध्य में अनवरत रह कर आगमिक तत्वों का तलस्पर्शी गहन अध्य यन कर साधना की कसौटी पर खरे उतरे व आपने आचाय प्रवर के इंगित इशारो से अपने को तराशा ।

शासन देव से यही मम्भपना है कि युवाचाय प्रवर हुक्म सघ को गरिमा को श्री वृद्धि मे आये दिन बढ़ोतरी करते रहें ।

इन्हीं शुभ भावों से श्रद्धावनत पुष्पांजलि ।

जय राम अभिनन्दन हो तुम्हारा

—वि साध्वी श्री किरण प्रभा जी म

विशुद्ध हृदय की प्रसन्नता सहित हार्दिक अभिनन्दन शतशत अभिनन्दन ! अभिनन्दन है, सेवा शुश्रूषा और विनय की साकार प्रतिमा का ।

रहती है कि—

> कोटा जाइजो बूंदी जाइजो जाइजो बीकानेर
> बीकानेर सु चेला लाइजो सूतर लाइजो चार

इस गीत से बीकानेर का त्याग वैराग्य ज्ञान संग्रह के साधन इत्यादि की गरिमा का स्पष्ट प्रतिभास होता है। इसीके साथ दूसरा प्रमाण यह भी है कि इस हुक्म सम्प्रदाय मे प्रथम आचार्य पद भी यहीं दिया गया साथ ही उसी अवधि मे एक अद्भुत घटना भी घटित हुई जो कि यहां की महत्ती उदात्तता की द्योतक है। जब चार भाइयों की दीक्षा का प्रसग था और नाई ५ आ गए। ४ अपने अपने कार्य में प्रसन्नचित लग गए ५ वा उदास हो गया तो एक उदारचेता सज्जन ने उसके गमगीन होने का कारण पूछा तो उसने अपनी व्यथाकथा कहते हुए प्रकट किया मेरे ४ भाई आज निहाल हो जायेंगे किन्तु मुझे निराश लौटना पड़ेगा। मुझे ऐसा सौभाग्य नहीं मिला यह सुन वे सज्जन संसार को त्यागने के लिए तुरन्त उद्यत हो गये। उस नाई की आशा चमक उठी ४ के बदले ५ दीक्षाए सम्पन्न हुई। जन जन के मानस इस दृश्य से अभिभूत हो गये।

ऐसी रत्नप्रसविनी उदार धरा पर फाल्गुन सुदी ३ के मगल प्रभात के सुनहरे क्षणों में जूनागढ के ऐतिहासिक प्रांगण में वर्तमान शासन सम्राट आचार्य देव ने युवाचार्य पद की विमल, धवल, अखंड सुसंगठित चादर अपने पवित्र हस्त सरोजों से चार संघ की साक्षी पूर्वक प्रदान की तो उन पुनीत पलों को पाकर हजारों हजार दर्शक धन्य २ हो गये। अनगिन नयन हर्षित हो गये। जूनागढ का कण कण पुलकित हो उठा, गगन जयकारों से गूंज उठा, दिशाएं हर्षोन्मत्त हो झूम उठीं। हवा के झोंको ने यशोगान गाया, प्रकृति ने प्रसन्नता प्रकट की सृष्टि ने सादर शीश झुकाया, प्राणों ने नमस्कार किया, चेतना ने जयनाद किया, धरती पुलकित हो उठी, जड़ जगत् भी एक बार रोमांचित हो उठा।

चतुर्विध संघ मे सद्भावनाओं का पारावार बहने लगा। भावनाओं के बादल छूटने लगे आशाओं के सितारे चमकने लगे। हर्षोल्लास की घटाऐं उमड़ने लगी। अन्तर भावों की रश्मियां फूटने लगी मेघर की बौछारें होने लगी।

त्याग तप के अद्वितीय वैभव

—विदुषी साध्वी आदर्श प्रभा जी

आर्य सुधर्मा की श्रमण परम्परा निर्बाध गति से चरम जिनेश शासनाधिपति प्रभु महावीर के निर्ग्रंथ मार्ग का अनुशीलन परिवर्धन संरक्षण संवर्धन करती हुयी, भव्य आत्माओं के लिए प्रदीप की भांति मुक्तिपथ का सतत प्रदर्शन करती हुयी प्रगतिशील है।

और इस पंचम आरे की पूर्णता तक यह महान ज्योति जाज्वल्यमान रहेगी ऐसा आत्म विश्वास है। इसी परम्परा का अनन्त पुण्य है कि इस पर समारूढ श्रद्धेय समीक्षण ध्यान योगी, संघ की समुज्जवल ज्योति, कलिकाल सर्वज्ञ, शासनेश नानेश ने फाल्गुन सुदी तृतीया को बीकानेर की पुण्य भूमि जूनागढ़ के पुनीत प्रांगण में अपनी प्रखर प्रतिभा से सूक्ष्ममेधा से मुनि प्रवर श्री रामलालजी म.सा. को युवाचार्य पद पर समारूढ किया। अत यह दिवस चिर स्मरणीय रहेगा।

इस अवसर पर प्रत्येक प्राणी के अणु अणु में उत्साह उमंग और उल्लास की अनगिन तरंगें उठ रही थी। मन चमन प्रफुल्लित हो रहा था हृदय पटल सारगसम हुए विभोर हो नाच रहा था, झूम रहा था।

अहो! यह अमूल्य अवसर क्या मिला कोई मानो भंडार मिल गया, इस सुअवसर पर मन विविध रूप से अभिनन्दन करना चाहता था, अन्तर हृदय से, श्रद्धा से, विनय भक्ति से, मांगलिक गीत गाते हुए हार्दिक भाव सुमनों से थाल को सजाकर, श्रद्धा एवं अनुरक्ति का अनूठा दीपक जलाकर, भक्ति की वीणा को बजाते हुए, विनय के घुंघरू बांधकर, सुयश का मृदंग बजाते हुए, मन के मोती का तिलक करके, ज्ञान के अक्षत को लेकर अपने धर्मदेव को हृदय में संजोकर भाव दीप जला रहा था।

प्रकृति भी मानो स्वागतार्थ उमड़ पड़ी थी पवन के प्रबल झोंके मानो हर्ष ध्वनि करते हुए गुलाल उड़ा रहे थे। पेड़ और पौधे मानो झूम झूम कर प्रणाम करते हुए अपने प्रमोद को प्रकट कर रहे थे। आयास युक्त नंदन वन सा आनन्द अनुभव कर रहे थे। वास्तव में युवाचार्य श्री जी एक प्रज्ञा पुञ्ज है या यूं कहा जा सकता है, जिनागम मन्दिर में सतत प्रज्वलित एक अखण्ड प्रकाशदीप है। आपकी

ऐसी स्थिति में सभी के प्रेम स्नेह का समादर करने रूप दायित्व निर्वाह एवं पूज्य गुरुदेव की अन्तर-भावनाओं की सपूर्ति करके आप इस चादर के साथ सयुक्त शुभ भावनाओ का क्रियात्मक प्रत्युत्तर देकर भगवान महावीर के शासन का गौरव बढ़ा सकते हैं।

यह श्वेत रंग की चादर साधारण नही असाधारण है इसमें त्याग-वैराग्य की महत्ता एवं सत्य की भगवत्ता रही हुई है। इस महत्ता भगवत्ता की आन-बान-शान को पूवज आचार्यों ने पचाचार के साथ बनाये रखा है। आचार्य श्री भी उसे बनाये रखे हुए हैं तथा भविष्य में आप श्रीजी को भी बनाये रखना है।

इन्हीं मगल भावनाओ के साथ पुन आप जैसे रत्न के निर्माता एवं पारखी रूप जौहरी पूज्य आचार्य भगवन् का वारम्बार अभिनन्दन करते हुए कुशल क्षेम की परिपृच्छा एव निरामय स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हैं।

शुभ्रतम आशीष चाहे

विदुषी-साध्वी श्री प्रमोद श्री जी

संघ की सौरभ सुहानी,
द्विगुणित होगी अनुपम।
वीर शासन में सुमन,
विकसित बनेंगे भव्य नूतन।
हो समपण सार संभृत,
शुभ्रतम आशीष चाहे।
चारू चरणों की पुलक से,
आत्म भावों को जगाये।

आज के इस स्वर्णिम दिवस पर हृदय की असीम आस्था के साथ अगणित बधाई देने को मन समुत्सुक बन रहा है पर भावों की असीमता शब्दों की सीमा से परिबद्ध नहीं कर पा रही हूं। अत यह निवेदन है कि जैसा आप श्री ने अपने आन्तरिक स्नेह की गरिमा से

आचार्यस्य प्रिय गुणा अमिता सन्ति । अद्यावधि वय पुन पुन आचार्य प्रिय गुण गौरव अकथयाम किन्तु वस्तुतया गुणगौरव गातु अवसरः साम्प्रत प्राप्त ।

यत आचार्यवर्यस्य सर्वोत्तम गुणोऽस्ति "परीक्षण दृष्टि" अय गुण आचार्यवर्येण प्राप्त । प्राप्तएव न अपितु सुयोग्यस्य युवाचार्यस्य चयनं कृत्वा जगत् प्रादर्शयत् ।

आगमज्ञ तरुण तपस्वी विद्वद्वय श्री मुनिप्रवर श्री रामलाल जी महाराज महोदय सरल विनीत अनुशासनप्रियः क्रियानिष्ठ तेजस्वी ओजस्वी सच्छिरोमणि अस्ति । युवाचार्य पदमपि भवादृश सन्तं सप्राप्य स्वगौरवमवर्धयत् । इद सुनिश्चित सत्यमास्ति यत् भवान् युवाचार्य पद न वांछति अपितु युवाचार्यपदस्य भवत महत्यावश्यकता वर्त्तते । अहं अति प्रसन्नाऽस्मि यत् युवाचार्यपदम् भवता, भवान् युवाचार्य पदेन च परमंडितोऽस्ति ।

दक्षिण भारते विचरणशीला परम विदुषी, मरुधर सिंही, शासन प्रभाविका, साध्वी रत्ना श्री नानूकंवर जी म सा युवाचार्य पदस्य घोषणा श्रुत्वा अति हृष्टवती आसीत् । ता प्रसन्नता शब्देन वक्तु नकोपि शक्त ।

आशा वर्त्तते यत् युवाचार्यप्रवर प्रवधमान हुक्मपट्ट पूर्वापेक्षया अधिकं गतिशीलं करोतु एव जिनशासनस्य प्रभावनां करोतु । युवाचार्य श्री सदैव स्वस्थ अस्तु दीर्घायुर्भवतु एव तस्य वरदहस्तो मम मस्तके शतवर्षपर्यन्तं भवताम् । युवाचार्यस्य पादयो शत शत वन्दनम् ।

गुणों का गुलदस्ता

वि साध्वी श्री गरिमा श्रीजी म सा

उदात्त प्रतिभापुञ्ज युवाचार्य श्री का जीवन सर्वतोमुखी एवं सार्वभौम है । जहाँ गणधर गौतम सी नम्रता भी है तो अभयकुमार सी बुद्धिमत्ता भी । आर्य सुधर्मा सा प्रेम है तो जम्बू स्वामी सा ओज भी । धनाजी जैसा त्याग है तो एवन्ता सा वैराग्य भी विचारों में सरसता एवं कोमलता भी है तो आचार पालन में दृढ़ता एवं अनुशासन

बधाई

—साध्वी निवेदिका, भावना, कल्पना, रेखा

हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार करने की कृपा कीजियेगा ।

※

शुभकामना

चरण रज—साध्वी उज्ज्वल प्रभा

भावी शासनाधार को
हार्दिक शुभकामनाओ सहित
बहुत-२ बधाई हो ।

एक विलक्षण व्यक्तित्व

—वि साध्वी समर्पिता श्रीजी

हुक्मि क्षितिज पर उदीयमान नये नक्षत्र आगम प्रवक्ता युवाचाय श्री रामलाल जी म सा है । बाल्यकाल से ही आप धर्म परायण एव सेवाधर्मी रहे । पर-दु स कातर युवाचाय प्रवर के मन में वराग्य का उद्रेक जागा । जीवन को सांसारिक प्रलोभन से दूर रखते हुए अपने को आत्म दर्शन के प्रति भावित करते रहे । वि संवत् २०३१ को दीक्षित होकर आप अपने जीवन को आगे बढ़ाने लगे । आपश्री ने आचार्य प्रवर के सानिध्य में आगम, टब्बा, सस्कृत, प्राकृत, गुजराती आदि का सम्यकतया अध्ययन किया । अपनी तीक्ष्ण प्रज्ञा से जीवन को अहर्निश समुन्नति की ओर अग्रसर किया । आप श्री का विराट् व्यक्तित्व एक अनबुझी पहेली-सा लगता है । जिसमें उर्मिल सागर का गाम्भीर्य, अंशुमाली का तेज, वैश्वानर की दीप्ति, सुधाकर की शीतलता, हिमाचल की अचलता, वसुन्धरा की सर्व सहिष्णुता, ध्रुव का धैर्य, तारुण्य का अपार उत्साह है । ऐसे रंगीले व्यक्तित्व, ऊर्ध्वगामी चैतन्य का शब्दो में परिचय परिवेश कैसे दिया जा सकता है ? युवाचार्य श्रीजी एक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी हैं इसलिये

सेवा करना मानवीय कत्तव्य है, साधुता उससे ऊ ची है, साधु को सेवा करने में आगे रहना चाहिए, इन्होंने सेवा करके साधुता का गौरव बढ़ाया है।

वही साधु पुन लगभग दो वप के वाद लौटा—

कहते हैं—गुरुदेव इ मुनिराज जणा वी दिन म्हारो बोझो हल्को कर्यो थो आज आपरो भी बोझो हल्को कर दियो। गुरुदेव! इ तो घणा गुणवान निकल्या। "आज म्हारो आशीष फली गयो।"

गुरुदेव ने कहा—

आपकी भावना प्रशस्त थी।

आप बधाई के पात्र हैं।

भगवन्! आपरो शासन खूब दीपो, इ सत खूब फूलो फलो।

वे वृद्धकाय सत है आदश त्यागी "श्री सौभाग्यमल जी म सा" तथा बोझ उठाने वाले सत थे युवाचार्य "श्री रामलालजी म सा"।

पावन चरणों मे स्वर्ण सुमन

△ साध्वी श्री स्वर्ण रेखा जी

ये समय नदी की धार, कि जिसमे सब बह जाया करते हैं।
ये समय बड़ा तूफान प्रबल, पवत झुक जाया करते हैं।
अक्सर दुनियां के लोग समय में चक्कर खाया करते हैं।
लेकिन कुछ ऐसे होते हैं जो इतिहास बनाया करते हैं।

मुक्तक के इसी लक्ष्य को ध्यान मे रखकर आचार्य भगवन् एवं युवाचाय श्री जी का वरदहस्त हमेशा मुझ व छोटी सी साधिका पर निरन्तर बना रहे और ज्ञान, दशन चारित्र की अभिवृद्धि में सदैव गतिशील बनकर इ गित इशारे पर चलती रहूँ। यही शुभ आशीर्वाद आज के पावन प्रसंग पर महान भगवन्तों का चाहती हूँ तथा पावन चरणों में स्वर्ण सुमन चढ़ाती हूँ।

सतत बढेंगे आदेशों पे ये कदम

[वि साध्वी श्री इन्द्रकवरजी म सा की सहवर्ती साध्वी मण्डल]

"तेरी शीतल छाया मे लाखो जीवन पा जाए
तुम बोओ जो बीज वही शत शाखी वन लहरा जाए
आभार का किन शब्दो में अनुवाद करें 'सती मण्डल'
तेरी साधना का दिव्य तेज लख लाखो पथ पा जाए"
चर्चित हुआ है दिव्य दृष्टि से सघ सदन
सतत बढेंगे आदेशो पे ये कदम
हम ही क्या सारी इला तव चरणो मे अर्पण
तन मन क्या सारा जीवन हम करें समर्पण
"पुलक रहा है आज खुशी से मन का कोना कोना
लायी है उषा की किरणें इक उपहार सलोना
सजग साधना के महासूर्य ! नत अवनत तव चरणों मे
'इन्द्र' सहज भावों की माला स्वीकारो गुरुवर नाना।"

समता जगत् के अग्रदूत शान्त चेतना के स्वामी श्रमण संस्कृति के सरक्षक दीर्घदृष्टा युग पुरुष हुक्म गच्छाधिपति आचार्य श्री नानेश के चिन्मय करो से सिक्त युवाचार्य श्री जी के चारु चयन मे हार्दिक अनुमोदन एवं

भाव समर्पण सहित।

युवाचार्य श्री देदीप्यमान होते रहेंगे

वि साध्वी श्री स्वर्ण रेखा श्री म सा

युवाचार्य श्री जी श्रीसघ की शान है
युवाचार्य श्री जी महा प्रज्ञावान है
आपश्री के किन गुणो का वर्णन करू मैं
युवाचार्य श्री जी विद्या मे प्रधान है

रोज सुबह होती है, शाम होती है जिन्दगी समय के प्रवाह में गुजर जाती है, लेकिन जीवन मे कुछ दिन ऐसे आते हैं, जो हमारे मन पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं। वह एक ऐसा ही दिन था

समयोचित दूरदर्शितापूर्ण निर्णय

—आचार्य श्री हीराचन्दजी म (रत्नवंश)

विशुद्ध निग्रन्थ श्रमण सस्कृति के रक्षण सवधन मे स्व आचार्य भगवन्त पूज्य श्री गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म सा एव आपश्री का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। श्रमण सस्कृति का उन्नयन हो और परस्पर मैत्री सम्बन्धो से चतुर्विध संघ की सैद्धान्तिक धरातल पर मान्यता चढ़े, इस दृष्टि से स्व आचार्य भगवन्त और आप श्री के चिंतन से परस्पर मैत्री की प्रभावना बढ़ी है। स्व आचार्य भगवन्त के प्रशस्त मार्ग का अनुगमन करते रहने का आचार्य श्री का सतत् प्रयास है और रहेगा।

आपश्री जीवन के अवशिष्ट समय को स्वय के आत्म श्रेय में लगा कर लोकोत्तर साधना के विशिष्ट रूप को प्रशस्त करना चाहते हैं, वस्तुत सच्चा साधक चिन्तन मनन अनुसधान कर साधना का चरम और परम लक्ष्य प्राप्त करता है। आत्म साधना के अनुष्ठान मे आप श्री की सफलता के लिये मंगलकामना की है।

आपश्री ने निरीक्षण परीक्षण के पश्चात् आत्म साक्षी से अनेक गुणवन्त साधक सन्तों मे से विद्वद्वय मुनि प्रवर श्री रामलालजी महाराज को ७ मार्च को चतुर्विध संघ की उपस्थिति मे युवाचार्य श्री का दायित्व सौंपा है, यह आपश्री का समयोचित दूरदर्शितापूर्ण निर्णय है, आपश्री ने युवाचार्य श्री को सैद्धान्तिक धरातल पर संघ एक्य के उद्देश्यो के प्रति समर्पित रहने का संकेत किया है, आशा है, आपश्री की सतत् प्रेरणा एवं युवाचार्य श्री के आत्मीय सद्भाव से परस्पर सहयोग की प्रामवत्ता बनी रहेगी।

निर्णय हितकारी, कल्याणकारी एव श्रद्धास्पद ही रहेगा।

—आचार्य श्री गरधार मुनि जी

(बर वाला संप्रदाय, गुजरात)

विगत अनेक वर्षों से पूज्य आचार्य नानचन्द (श्री नानेश)

संघ सेवा का भार सशक्त कन्धों पर

—उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म, (रत्नवंश)

"दूरदर्शी आचार्य श्री ने अपना भार शास्त्रज्ञ मुनिप्रवर श्री रामलालजी म को सौंपकर अवशिष्ट समय साधना में लगाने का लिखा, ऐसा विचार आचार्य श्री की प्रशस्त भावना का द्योतक है। आचार्य श्री ने स्वयं आत्मसाक्षी से अनेक गुणवान साधक संतों के होने पर भी मुनिप्रवर श्री को युवाचार्य पद प्रदान किया, यह उनकी गहरी सूझ-बूझ है। आपने समय रहते हुए उचित निर्णय लेकर संघ सेवा का भार सशक्त कंधो पर रखा है।

आपने जो युवाचार्य श्री को संकेत देते हुए फरमाया है कि सैद्धान्तिक धरातल पर संघ ऐक्य के उद्देश्यों के प्रति समर्पित रहें, आपका इस तरह का सन्देश भविष्य में हमारे परस्पर के सम्बन्धों को दृढ़ बनायेगा, मेरा तो हमेशा से आत्मीय सद्भाव ही रहा है। आगे भी इसी तरह से सम्बन्ध रखने के भाव हैं।"

श्री रामलालजी म. उसी माला के देदीप्यमान माणिक्य हैं

—शा प्र पूज्यपाद श्री सुदर्शनलालजी म सा

आपश्री जी (आचार्य श्री नानेश) इस युग की दिव्य विभूति है, आप ने अपने शासनकाल में वीर प्रभु की चारित्र धारा में वेग प्रदान किया है, वीर लोकाशाह के धर्म मार्ग की नींव को अधिक सुदृढ़ किया है, पूज्यपाद श्री हुक्मीचन्दजी म के परिवार की श्री वृद्धि की है। पूज्य श्री जवाहरलालजी म के वंश के मुक्ता रत्न बनकर आपने पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलालजी म के गौरव में चार चांद लगाए हैं। आपने अपनी शिष्य माला को भी संयम, चारित्र, अनुशासन विनय प्रभावना ज्ञानाराधना से सुसज्जित अलंकृत एवं परिमंडित किया है। श्री रामलालजी महाराज उसी माला के देदीप्यमान माणिक्य है। इन्हें आपश्री जी के सान्निध्य का, कृपा का वरदान प्राप्त हुआ, ये इनका सौभाग्य है। आपश्री जी की गहन प्रज्ञा ने इनकी योग्यता को परखा

शुभ कामना

—प्रवर्तक श्री महेन्द्र मुनि जी 'कमल'
(श्रमण सघीय)

आचाय श्री नानालालजी म पुरानी पीढी के अनुभव समृद्ध सत रत्न हैं। उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप मे पं श्री राममुनि जी को घोषित किए तो निश्चित रूप से उन्होंने उनका परीक्षण किया ही है। सैद्धांतिक धरातल पर हमारा आत्मीय सहयोग जब भी चाहेंगे, ले सकेंगे। श्रमण संघ, वैसे भी हमेशा सभी का उदारता पूर्वक सहयोगी रहा है।

卐

विरल मेधा शक्ति की पहचान

—प्रवतक श्री रमेशमुनिजी म
(श्रमण सघीय)

आप आचाय श्री ने अपना अवशिष्ट व अनमोल समय विशेष रूप से अपने आत्म श्रेय में व्यतीत करने की भावना से उत्प्रेरित होकर साधुमार्गीय स्थानकवासी जैन श्रमण परम्परा के भविष्य की सुरक्षा हेतु अपने उत्तराधिकारी शास्त्रज्ञ तरुण तपस्वी श्री रामलाल म को युवाचाय के रूप में निर्वाचित किया, यह आपश्री की विरल मेधा शक्ति की पहिचान है। सूझबूझ है।

जैसे आपश्री ने सघ संगठन योजना का सदैव प्रयास किया है वैसे ही नवोदित युवाचाय प्रवर श्री रामलालजी म भी पारस्परिक सौहाद्र ता को गति देंगे ताकि—भविष्य में भी सद्धांतिक धरातल पर हमारा सद्भाव संघ समाज हित के सुहाने वृक्ष अकुरित ही नहीं पुष्पित पल्लवित फलवित होंगे।

इसी शुभाशा के साथ। पुनश्च वन्दना विदित करें।

और इस संघ का गुरुतर भार प्रदान किया है इसके लिए हम आपके निर्णय पर हर्षाभिव्यक्ति करते हैं। तथा श्री राममुनिजी को वर्धापन देते हैं। आपके कुशल मार्ग दर्शन मे इनका व्यक्तित्व और निखरता जाएगा और ये आपश्री जी की आशाओ के अनुरूप ही संघ का संचालन करेंगे ऐसी मंगलकामना करते हैं। जिस प्रकार आपश्री जी के प्रति हमारी श्रद्धा बनी रही है इसी प्रकार इनसे भी हमारा हार्दिक संबंध बना ही रहेगा। युवाचार्य चादर प्रदान समारोह पर हार्दिक शुभकामनाए स्वीकार करें।

निर्णय उचित है

—प्रवर्तक श्री अम्बालालजी म
—महामन्त्री श्री सौभाग्यमलजी म (श्रमण संघीय)

आचार्य श्री नानालालजी म सा समयज्ञ और दूर दृष्टा हैं उन्होंने सम्प्रदाय के संदर्भ में जो निर्णय लिया वह उचित ही है। नव नियुक्त युवाचार्य श्री राममुनिजी स्थानकवासी जैन समाज में, श्रमण संस्कृति की सुरक्षा के साथ समाज में व्याप्त साम्प्रदायिक वैमनस्य एवं दुराव को समाप्त करने में अपना अमूल्य योगदान देंगे। ऐसी शुभकामना प्रकट करते हैं।

शुभ कांक्षा है

—प्रवर्तक श्री रूपमुनिजी 'रजत'
(श्रमण संघीय)

आपने अपने पीछे संघ समाज का संचालन और नतृत्व करने के लिये श्री राममुनिजी म को योग्य समझकर युवाचार्य के रूप में चयन किया। अब युवाचार्य श्री अपनी योग्यता और स्नेह शीलता का सभी के साथ सम्यक् रूप मे व्यवहारता मे उतरे यही शुभकांक्षा है।

देशाणे रो टाबरियो

—शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनिजी म

तर्ज—नखरालो देवरियो

देशाणे रो टाबरियो, साधना रे शिखर चढ्‌ग्यो ।
शिखर चढ्‌ग्यो, भावी शासक बणग्यो ।।टेर।।
नेमीचन्दजी रो लाडलो, ओ गवरां बाई रो जायो ।
भूरा कुल रो देखो जग मे, नाम हुयो सवायो ।।
जिन शासन क्षितिज में, आशा रो दीप जलग्यो ।।१।।
सयम लेकर गुरु चरणा में, तन मन अर्पण कीनो ।
सेवा करके ज्ञान सौरभ सू, जीवन सुरभित कीनो ।।
गुरुवर री कसौटी पर, खरो श्रीराम उतरग्यो ।।२।।
बीकाणे रे राज प्रांगण में, महोत्सव हुयो सवायो ।
गुरुवर नाना निज चादर दे, युवाचार्य बणायो ।।
चतुर्विध सघ सारो, हर्ष विभोर बणग्यो ।।३।।
गुण गौरव गा आज म्हे तो, मन मे आनंद पावा ।
राम राज्य आदर्श वर्णे म्हा, "धर्म" भावना भावा ।।
जनागम सद्‌ज्ञान सू, हृदय घट पूरो भरग्यो ।।४।।

श्री युवाचार्य सप्तकम्

● कविवर्य मुनि श्री वीरेन्द्र कुमारजी

छन्द—वसन्ततिलका

भूराकुलाब्जपरिभूषितरूपकाय ।
नेमीपितु परमदीप्तिविधायकाय ।।
साम्यप्रचारकरणेऽतुलतत्पराय ।
सन्नाम राम मुनये च नमो नमस्ते ।।१
श्री हुक्मगच्छपतिरूप सुशोभिताय ।
सम्यक्त्वभाव परिदर्शनबोधकाय ।।
दीप्ति प्रधानगुणगौरव शक्तिदाय ।
सन्नामराम मुनये च नमो नमस्ते ।।२

महावीर के शासन मे चार चाद लगाये

—मेवाड़ सिंहनी साध्वी श्री यश कवर जी म
(श्रमण सघीय)

"भारतीय सस्कृति मे ऋषि-मुनियों एव संतो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । श्रमण वृन्द की अनुपम सयम-साधना से, यशस्वी क्रिया-कलापो से, सदैव से गौरवान्वित रही है । समय समय पर महामता युग पुरुपो ने जन्म लेकर इस धराधाम को धन्य बनाया, अध्यात्म जागरण के मंगलमय सदेशवाहकों ने समूचे जीवन को नयी दृष्टि प्रदान की, मार्गदर्शन दिया है । मानव की सुप्त चेतना जागृत कर नव आलोक प्रदान किया, इसी कड़ी में यशस्वी व्यक्तित्व के धनी, आचार्य जवाहरलालजी म सा एव निर्मल सयमनिष्ठ आचार्य श्री गणेशलाल जी म हुए । जिनकी उदात्त भावनाओ से अनेक मगल कार्य सम्पादित हुए । उन्हीं के पद पर आप (आचार्य श्री नानेश) जैसे क्रान्त द्रष्टा प्रज्ञापुरुष को प्रतिष्ठित किया गया । हार्दिक प्रसन्नता है कि आप सुयोग्य सफल अनुशास्ता के रूप में सघ, समाज के हित साधन में सदैव तत्पर रहे हैं । आचार की पवित्रता एवं विचारों की निर्मलता से आपने साधुमार्गी संघ की नींव को सशक्त बनाया । सघ ऐक्य के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किये । अनेक भव्यात्माओं को मार्गदर्शन दिया । आपश्री संघ का सफल नियोजन कर रहे हैं । जीवन को विशिष्ट सयम साधना में संलग्न करने के लिए आपश्री ने अपने उत्तराधिकारी के रूप मे शास्त्रज्ञ प्रज्ञा प्रदीप श्री राममुनिजी म का चयन किया है। हार्दिक प्रसन्नता ! आप अध्यात्म जौहरी हैं, आपने उनको परखा है और युवाचार्य की पदवी से उन्हें अलंकृत किया है । वे गुरुतर भार का सम्यक् प्रकार से निर्वहन करे । तथा उनके पुनीत नेतृत्व में चतुर्विध सघ सुदृढ़ बने, महावीर के शासन में चार चांद लगाये । निर्मल तेजस्वी सयम-साधना से जन-जन को मार्ग दर्शन मिलता रहे, सदैव कृपा दृष्टि बनी रहे, यही हार्दिक मनोभावना है ।"

महिमा मण्डित प्रवर पद उजाला करे ।
करके पावन सभी को उद्भासित करे
खुशबू फैले चतुर्दिक् अनेकान्त की
बाग सरसब्ज सचे का अपूरव करे
चांदनी सी है छिटके धर्म भावना
सर्व हित मे निरत साधकों के लिये ॥१॥
आपकी देशना कायकारी बने,
कामना ये हमारी प्रभु 'वीर' से,
गौरवान्वित बने सघ पाकर तुम्हें—
नित सफलता मिले गुरु चरण सेवा से,
हो तपश प्रेत साधक तपस्वी प्रखर
हो प्रशम भाव मन में शमन के लिये ॥२॥

ये उच्च क्रिया के धारी

—कविरत्न श्री गौतम मुनिजी म

[तज : जब तुम्ही चले परदेश]
युवाचार्य श्री गुणवान, बडे पुण्यवान ।
बाल ब्रह्मचारी, ये उच्च क्रिया के धारी ॥टेर॥

- मां गवरा के ये जाये, पिता नेमीचन्दजी हर्षाये ।
  धन देशनोक है, जन्म भूमि श्रेयकारी ॥ये उच्च...
- पढ़ जैन जवाहर वाणी को अनाथी मुनि की कहानी को ।
  फिर उतर गये, वैराग्य रंग में भारी ॥ये उच्च
- आगम का गहरा ज्ञान किया, गुरु आज्ञा का सम्मान किया ।
  ज्योतिष शास्त्र के, ज्ञाता हैं ये भारी ॥ये उच्च...
- दर्शन का चिंतन नित करते, प्रदर्शन से दूरा रहते ।
  ये अल्पभाषी है, इन्हें सादगी प्यारी ॥ये उच्च
- भक्ति के सुमन चढ़ाते हैं, गौरव गरिमा हम गाते हैं ।
  श्री राम चरण "ओ एम" सदा सुखकारी ॥ये उच्च..

卐

शोभायमान नवपट्टविशिष्टकाय ।
नानेशपादकलकज विकोसकाय ।।
नैर्मल्य भाव धरणे धृतिसयमाय ।
सन्नामराम मुनये च नमो नमस्ते ।।३
यत्गीयते जिनमरादिकभक्ति गीतम् ।
सपीयते मधुर सौम्यरसादिकान्यम्
पापठ्यते निगमतत्त्वसुधादिकल्यम्
सन्नामराममुनये च नमो नमस्ते ।।४
श्रामण्य धम धरणे च विबुद्धकाय
सम्यकसुधाप्रचय जीवनदायकाय
आप्राणिमञ्जुल सुधर्म विधानकाय
सन्नामराममुनये च नमो नमस्ते ।।५

छन्द—शिखरिणी

सततशान्तिविधानविधायकम्
परमपूततपोधन धायकम्
विमलशील सुरूपनिचायकम्
सुखद राम मुनि च नमामि मे ।।६
दुरितभाव समूह विहायकम्
चरम तीर्थ जिनेश सुगायकम्
सरल सौम्य गुणादिनिनादकम्
सुखद राम मुनि च नमामि म ।।७

ΔΔ

चाग सरसब्ज सघ आ अपूरव करे

✻ वि मुनि श्री वीरेन्द्रकुमार

तर्ज—छोड़कर सारी दुनिया——
हो युवाचार्य पद पै सुशोभित महा—
भव्य भक्ति अनुपम जगाये दिये ।।
जिन वचन की बहाना है गंगा विमल
हो प्रमुदित भागीरस छक् २ पिये ।।

महिमा मण्डित प्रवर पद उजाला करे ।
करके पावन सभी को उद्भासित करे
खुशबू फैले चतुर्दिक् अनेकान्त की
बाग सरसब्ज सचे का अपूरव करे
चांदनी सी है छिटके धर्म भावना
सर्व हित मे निरत साधकों के लिये ॥१॥
आपकी देशना कार्यकारी बने,
कामना ये हमारी प्रभु 'वीर' से,
गौरवान्वित बने संघ पाकर तुम्हें—
नित सफलता मिले गुरु चरण सेवा से,
हो तपश प्रेत साधक तपस्वी प्रखर
हो प्रशम भाव मन में शमन के लिये ॥२॥

ये उच्च क्रिया के धारी

—कविरत्न श्री गौतम मुनिजी म

[तर्ज : जब तुम्ही चले परदेश ~]
युवाचार्य श्री गुणवान, बड़ पुण्यवान ।
बाल ब्रह्मचारी, ये उच्च क्रिया के धारी ॥टेर॥

- मा गवरा के ये जाये, पिता नेमीचन्दजी हरषाये ।
  धन देशनोक है, जन्म भूमि श्रेयकारी ॥ये उच्च...
- पढ़ जैन जवाहर वाणी को, अनाथी मुनि की कहानी को ।
  फिर उतर गये, वैराग्य रंग में भारी ॥ये उच्च
- आगम का गहरा ज्ञान किया, गुरु आज्ञा का सम्मान किया ।
  ज्योतिष शास्त्र के, ज्ञाता हैं ये भारी ॥ये उच्च...
- दर्शन का चिंतन नित करते, प्रदर्शन से दूरा रहते ।
  ये अल्पभाषी है, इन्हें सादगी प्यारी ॥ये उच्च..
- भक्ति के सुमन चढ़ाते हैं, गौरव गरिमा हम गाते हैं ।
  श्री राम चरण "जो एम" सदा सुखकारी ॥ये उच्च ..

卐

ओढाई देखो धवल चद्दरियां

—म व्याख्याता श्री कांतिमुनिजी म

तर्ज—गोरी है कलईया—

गाये राम की महिमा, ओढाई देखो धवल चद्दरियां
नाना गुरु की मेहरबानियां ॥ध्रुव॥
समता का निर्झर चहुं ओर बहता,
जगल में मगल का वाद्य है बजता ।
ठाठ ये आला, लगाये देखो शृ गार लाल,
अन्तर दृष्टा की नजरियां ॥१॥
छोटी लकीर को तस्वीर बनाई ।
गुणो से सजा के पूजन तदबीर बनाई,
हो दीप्त दिवाकर, बने भव सौम्य सुधाकर ।
खिल रही जन मन कलियां ॥२॥
गरिमा बढाये सघ की यही भावना है,
बढे भव्य सुषमा गुरु की यही कामना है ।
'नानेश' के पद पर चाद से बढ़े शिखर पर,
फैले 'कान्ति' तेरी गांव नगरियां ॥३॥

राम तुम्हारो आसरो

राम तुम्हारो आसरो, राम तुम्हारो ज्ञान ।
राम तुम्हारो भजन सुख, राम तुम्हारो ध्यान ॥
राम तुम्हारो ध्यान, राम तुम सिर पर राजो ।
आगे पीछे राम, दशो दिश रामहि गाजो ॥
रामचरण इक राम बिन, मन माने नहिं आन ।
राम तुम्हारो आसरो, राम तुम्हारो ज्ञान ॥

विश्व क्षितिज पर चमकता रहे

—विदुषी साध्वी श्री चांदकंवरजी

सघ ही तुझे पाकर, मेरे भाग्य अभिराम है
तेरे ही चरणो मे, मेरे शत-शत प्रणाम है ॥

आपकी कृपा और आशीष,
हमें सदा मिलती रहे,
आपके कुशल नेतृत्व में,
जिन शासन निखरता रहे ॥
अपने उज्ज्वल गौरव व वृद्धि समृद्धि द्वारा ।
विश्व क्षितिज पर चमकता रहे ॥
आपकी-आज्ञा पालन करते हुए हम
आत्म निरीक्षण करते हुए गन्तव्य तक पहुचने
में सफल होवे ।
आदर्श भाव की धार
प्रतिपल बढती रहे,
चरण मझार
हो गुण रूप सभी प्राणिगण
पा तेरा अनुपम मनुहार ॥
राम राम सम हो बने
लिये सौम्य संस्कार
तव पद मे विकसे सदा
से आदश गुणाधिक प्यार ।

राम राज्य स्वीकार हैं ।

—विदुषी साध्वी श्री प्रेमलताजी म.

तर्ज —खड़ी नीम के नीचे.... ..

चाहते हो गर भव्यो तुम सब जीवन का उत्थान रे ।
समर्पणा हो एक आण पे प्राण हमारा प्राण रे ॥टेर॥
छोड दिया जब सब कुछ शरणे जिनका का पकड़ा यहां ।
बढ़े निरन्तर चरण हमारे होवेंगे आदेश जहां ॥
शुद्ध समर्पित का यही मात्र निशान रे ॥१॥
वीर प्रभु के शासन के आचार्य देव ही अधिकारी ।
पूर्वाचार्यों से भी जिनको प्राप्त हुई प्रभा भारी ॥

स्वेच्छाचारी को न मिलता इस शासन में स्थान रे ॥२॥
ध्यान समीक्षण देख देख भी दर्शाते अपनी भक्ति ।
निवेदना भी क्या करेगी उनकी अनूठी है शक्ति ॥
हम तो मात्र हैं उनकी किरणें, ये है बुद्धि निधान रे ॥३॥
दूरी है केवल तन की मन हनुमत सम चरणार है ।
अमिचार्य है नानेश आज्ञा राम राज्य स्वीकार है ॥
"इन्द्र" कहे सच्ची समर्पणा गुरुवर का सम्मान रे ॥४॥

दीप सम जलो तुम

—महासती श्री निरंजना श्री जी म सा

तर्ज—धीरे धीरे प्यार को बढ़ाना है…

युवाचार्य श्री के गुणगाना है, चरणों झुक जाना है ।
नानेश पट्टधर श्री राम गुण गाना है, चरणों में झुक जाना है ॥टेर॥
प्रभुवीर की कीर्ति, हुक्कम संघ की दीप्ति
तुम नानेश चरणों का सिंचित कमल
शासन की ये शक्ति अनुशासन की हो कृति
साधना की हो प्रखर ज्योतिमय किरणऽऽऽऽऽऽ
पाये पाये गुरुवर का खजाना है ॥१॥ चरणों में…
हर जुबा प भक्ति हो, आस्था में अनुरक्ति हो
हो समर्पणा का शुचितन विमल चरण
दीप सम जलो तुम, सूर्य सम दीपो तुम
त्रिरत्न धारयाण की ओर बढ़े चरणऽऽऽऽऽऽ
जीवन आदर्शों पे चढ़ाना है ॥२॥ चरणों में "
खुशियां है छाई, उमंगे भर आई
चमका चमका भूरा वंश का ये नूर
धन्य है गंवरी जननी
देशाणा की वो धरती माघ शुक्ला बारस की दीक्षा है मनहरऽऽ
'इन्द्र' कहे श्री संघ को सुहाना है ॥३॥ चरणों मे "

मुख मण्डल रवि सम चमके है

—वि साध्वी मजुबालाश्री म सा

तर्ज —दिल दिवाना" ।

जूनागढ़ मे-युवाचाय जो पद पाया
जय जयकार करके सब जन हर्षाया ।।टेर।।

देशनोक मे जन्म आपका, गवरा कुल उजियारा
यौवनवय मे आते ही, अपना दूर किया अन्धियारा ।
संयम सौरभ से, मानस है सरसाया ।।१।।

त्याग तपस्या करने की ज्योति दिल में है छाई ।
मुख मडल रवि सम चमके है, आभा भी सुखदाई ।
दिव्य ज्योति से चमक रही है ये काया ।।२।।

हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर ने कैसा रत्न खोजा
मञ्जुमानस से इस जग मे, सौम्य बीज को बोजा ।
गुरु चरणों मे अपना जीवन तपाया ।।३।।

चारों तीरथ तव शरणे रहेंगे ।

विदुषी साध्वी रजना श्री जी म सा

तर्ज:—तुम्ही हो माता पिता

हुक्म शासन की शान बढ़ाओ
युवाचाय संघ खूब दिपाओ ।।टेर।।

सुरभित बगियां की सौरभ पाकर ।
नानेश आशा से जीवन सजाकर ।।
मुनि प्रवर पर मिल जय गाओ ।।
युवाचाय ......

दिशाए अपनी दशा बदल दे ।
सवत्र निमल कीरत फला दे ।।
भ्रम शील पीढ़ी को नव मग दिखाओ ।।
युवाचार्य..... .....

चारों तीरथ तव शरणे रहेंगे
एक ही लक्ष्य में चरण बढ़ेंगे

श्री साधुमार्गी संघ सरसाओ ॥
युवाचार्य.........

स्वर्णिम छटा दिव्य होवेगी "रजन" ।
होवे तव गुण से कर्म प्रभंजन ॥
'इन्द्र' श्री संघ को सरस बनाओ ॥
युवाचार्य ...

★

छा जाओ इस अवनितल पर

—विदुषी साध्वी श्री प्रवीणा श्री जी

चढते रहो बढते रहो तुम, नानेश के इशारों पर ।
दीपक से मशाल बने तुम, नानेश के अरमानों पर ॥
यही हार्दिक भावना मेरी, छाजाओ...
इस अवनितल पर, हर जीव की धडकन बन कर ॥

शिव साधक अनुपम पा, मन मोद मनाते हैं

—वि साध्वी पकज श्री जी

तर्ज —ए मेरे दिले...

युवाचार्य प्रवर गुणतम
तव कीर्तन गाते हैं
श्रद्धा के भावों को, चरणों मे चढ़ाते हैं ॥टेर॥
चौदस के शुभ दिन पर,
उतरे गुणकारी है
गवरा मां के दीपक
शिवधन शुभकारी है
भूरा कुल के नदन, परिजन मन भाते हैं ॥१॥
मति दर्शन तप निधि को
पूरण अपनाया है ।
गुरुवर की सेवा से
चरितामृत पाया है

शिव साधक अनुपम पा मन मोद मनाते है
आदर्श गुणों की हम—
माला भी सजाये है
सती "चाद" चरण सेवी, जन गुण अपनाये हैं ॥३॥

आदर्श गुणों की आभा

वि साध्वी गुण सुन्दरी जी

हुक्म सघ के अधिनायक
की नित जय जय है
द्वन्द्व भाव परिहारक की—
करते विनय है ॥
धन्य भाग्य पाये तुमसे—
हम युवराज सलौने
तेरे सद्भावो से सद्गुण—
वीज हैं वोवें ॥
सदा सदा जय ध्वजा रहे
लहराती सुखकर
"आदर्श-गुणों" की आभा से
समुदित हो दिनकर ॥
परम पूज्य गुण कीर्तन
हम क्या कर सकते हैं ?
राम नाम से दीप
अपूरव जग सकते हैं ॥

सुस्वागत हम करते तुम्हारा

वि साध्वी श्री मधुबाला जी

तज —इन्हीं लोगों ने —
देवा वधाई—३ मिल सारा
युवाचार्य जी प्यारा (म्हारा)

श्रद्धा सुमन चढाए

△ साध्वी श्री स्वर्ण ज्योति जी म सा

तर्ज —जो आनन्द मंगल चावो रे .. ....

प्रकटे भू पर सुखकारी रे गंवरा मा के नन्द-(टेर)
भूरा वश दुलारे नेमी कुल है तारे ।
जाये वार-२ वलिहारी रे..
है फाल्गुन वद दिन प्यारा, छाया जग में दिव्य उजारा
दे जो कर्म दलिक परिहारी रे.. ....
है सघ के दीप निराले, भक्तो के तारण हारे ।
जो दूर करे अंधियारी रे .....
शुभ युवाचार्य पद पाए, श्रद्धा सुमन चढ़ाये ।
दो सरदार को पार उतारी रे ...

—●—

गवरा मां के नयन सितारे नेमी कुल के चन्दन है ।
युवाचाय श्री के चरणों मे कोटि-कोटि अभिनन्दन है ।

राम सुखकार द्वार आई—

साध्वी श्री विपुल विजेता

आज अभिनव अर्चना की,
मधुरतम यह भेंट लाई ।
चारू चरणों में समाश्रय
प्राप्त हो मनुहार लाई ।
राम सुखकार द्वार आई.. .. ....
हो सदा माधुर्यमय,
कल चान्दनी सी स्वच्छता भी ।
और उसमें कुमुद पाकर,
शान्त नीरजतामयी भी ।
ध्रुव अनुत्तम शरण की,

सौरभ सदा प्रति द्वार छाई ।
राम सुखकार द्वार आई ....
दिवस के आरम्भ ओ—
अवसान में भी विहंसती सी ।
दीप्तिमत सुदीप्त छवि सी,
क्या कोई कल विलसती सी ।
एक शोभावन्त प्रतिमा,
मम हृदय मे ही समाई ।
राम सुखकार द्वार आई......

मगल दिवस पर मगल कामना

विद्या साध्वी श्री नूतन श्रीजी

जब तक गगा पतित पावनी ।
सुमनो मे सुगन्ध मतवाली ।।
पथ आलोकित रहे आपका ।
यह शुभकामना है हमारी ।।१।।
चरणों में तेरे करू समर्पण ।
सांसें उस जीवन की सारी ।।
श्रद्धा भक्ति में रमकर के ।
बन जाऊ में सबसे न्यारी ।।२।।
माना महर से नाना के सम युगों २ तक चमको तुम ।
दिव्य साधना श्रेष्ठ सम्पदा यश सौरभ से महको तुम ।।
काम्य कामना सदा हमारी चरण कमल में अर्पित है ।
पाए लक्ष्य जो सोचा हमने दो आशीष हम सबको तुम ।३।

हर पल हर क्षण कृपा बनी रहे देव

△ वि साध्वी श्री समर्पिता श्रीजी

मेरे नये जीवन में
नये संस्कार भरते रहे ।

हर पल हर क्षण,
सहयोग आपका मिलता रहे ॥
निर्मल निश्चल मुनि प्रवर
संघ के दिव्य प्रदीप ।
हुकम संघ में छा गये
ज्यूं यमुना पर नीप ॥
प्रतिपल समर्पित हम हैं
यही भावना देव ।
अहर्निश गुण रूप से
बढ़ सतत स्वयमेव ॥

"युवाचार्य" गुरुवर के गुण गीत गाते

—वि. साध्वी श्री संकिता श्रीजी म. सा.

तर्ज—बहुत प्यार करते हैं—
संघ गणनायक को करते नमन
खिला दो हमारा उजड़ा चमन ॥टेर॥
गवरा के आंगन में जीवन संवारा ।
नेमी जनक के हो राज दुलारा ।
तेरे सौम्य पथ पे, हो पावन गमन ॥१॥
दीप्ति उजागर है कीनी गुणवर ।
संयम की सुषमा को देते प्रभाकर ।
करना हमें भक्ति धन से रमण ॥२॥
सेवाधर्म धन से जीवन सजाया ।
अप्रमत्त भावों का दीप जगाया ।
अद्भुत गुणों के हो धारक सघन ॥३॥
युवाचार्य गुरुवर के गुण गीत गाते ।
श्रद्धा के सुमनों को हृदय से चढ़ाते ।
दृश्य देख अनुपम मन होता मगन ॥४॥
नूतन आयाम समता का अब दिखाना ।

सरदार भवजल से पार लगाना ।
विजय ध्वजा लहरे भव्य गगन ॥५॥

□
□□

नवीन भानु

● वि साध्वी जागृति श्री जी

नवीन भानु
प्रभात पर
नव जागृति छाई
मेरी हृदय से दिव्य २ वधाई

□□
▽

तन मन सर्व समर्पण करती

—वि साध्वी श्री सत्यप्रभा जी

मंगल कामना की बेला मे,
तन मन सर्व समर्पण करती ।
शतायु हो युवराज हमारे,
ऐसे भाव सुमन धरती ॥

महागणि नाना की छवि में,
शत शत रंग हमे मिलते हैं ।
नाना-राम की युगल शरण में,
साधना पुष्प सदा खिलते हैं ॥

है अन्तर मन की अरमान प्रभो !
कैसी भी हो विपद घड़ी ।
वरद् हस्त अगर सिर पर रहे,
तो मंजिल एकदम निकट पड़ी ॥

कृषि मंत्री, भारत
नई दिल्ली

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा श्रमणोपासक का युवाचार्य विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

मैं विशेषांक की सफलता के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

८ मई १९९२ बलराम जाखड़

अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा,
जयपुर

सन्देश

मुझे विश्वास है कि तरुण तपस्वी एवं शास्त्रज्ञ युवाचार्य के नेतृत्व में न केवल साधुमार्गी जैन संघ के कार्यकलापों एवं समाजसेवी गतिविधियों का अपेक्षित विस्तार हो सकेगा वरन् श्रमण समुदाय को भी बदलते वक्त के अनुरूप नई दिशा दशा दी जा सकेगी।

"श्रमणोपासक" के युवाचार्य विशेषांक के लिए कृपया मेरी शुभकामना स्वीकार करें।

३ मई १९९२ हरिशंकर भाभड़ा

उपमंत्री
सूचना एवं प्रसारण
भारत, नई दिल्ली
११०००१

सन्देश

मुझे प्रसन्नता है कि चारित्र चूडामणि समीक्षण ध्यानयोगी, धर्मपाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री नानालाल जी म सा ने तरुण तपस्वी, विद्वद्वर्य, सेवाभावी, शास्त्रज्ञ, मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को अपना उत्तराधिकारी/युवाचार्य घोषित किया है तथा शीघ्र ही इस सम्बन्ध मे श्रमणोपासक का युवाचार्य विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है।

मैं इस अवसर पर अपनी शुभकामना सन्देश भेजती हू और मुनि प्रवर से मार्ग दर्शन की कामना करती हू।

गिरिजा व्यास

जयपुर

राज्य मंत्री
पशुपालन, ज स्वा अभि विभाग,
इ गां न प क्षेत्र से सम्बन्धित समस्त योजनाए
एवं भाय, उपनिवेशन विभाग

सन्देश

मुझे पूर्ण विश्वास है कि विशेषांक मा समाज के युवा-वर्ग को उचित परामर्श द्वारा उनके अपने चारित्र निर्माण में तो सहयोग होगा ही, साथ ही आत्मोत्थान का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। सफल प्रकाशन की शुभकामनाए।

२३ मई १९९२

देवीसिंह भाटी

जयपुर विधायक, बीकानेर शहर

हार्दिक शुभकामना

आशा है परम श्रद्धेय युवाचार्यजी के नेतृत्व में अखिल भारत वर्षीय साधुमार्गी जैन संघ उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर पथारूढ़ होगा।

विशेषांक के सफल प्रकाशन की मंगल कामना सहित हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करियेगा।

३ मई, ९२ बी डी कल्ला

जयपुर उपाध्यक्ष,
राज. विधान सभा

अ शा पत्र सं ३६४७

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा द्वारा श्री रामलाल जी म सा को अपना उत्तराधिकारी घोषित करने पर "श्रमणोपासक" का "युवाचार्य विशेषांक" प्रकाशित किया जा रहा है।

जैन आचार्य गुरुओं की एक विशिष्ट परम्परा रही है और आत्म कल्याण के साथ-साथ समाज एवं जन-जन के हितार्थ उनके द्वारा किए गए कार्यों से ही जैनधर्म/सम्प्रदाय का देश में अपना विशिष्ट स्थान है। युवाचार्य श्रीजी महाराज भी अपने गुरु के अनुरूप ही राष्ट्र, धर्म और समाज की उन्नति में योगदान करते रहेंगे।

विशेषांक के सफल प्रकाशन की कामना।

अप्रैल ३०, १९९२ हीरासिंह चौहान

जयपुर

राज्य मत्री,
विघि एव न्याय, गृह, वित्त,
आबकारी एव करारोपण विभाग

अ शा पत्र स ७२०/रा म /न्याय/९२

परम श्रद्धेय चारित्र चक्रवर्ती, धर्म दिवाकर आचार्य श्री नानालाल जी म सा द्वारा ओजस्वी, तेजस्वी, मनस्वी संत रत्न श्री रामलाल जी महाराज सा को युवाचार्य के रूप मे मनोनीत करने बावत पत्र हेतु बहुत २ धन्यवाद । आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको महान् तपस्वी सन्तो का समागम प्राप्त हो रहा है ।

कृपया पूज्य आचाय श्री एवं युवाचार्य म सा के चरणो में मेरी वन्दना अज करें ।

२७ अप्रैल १९९२ शातिलाल चपलोत

निर्णय पर नाज है

जैसा आचार्य श्रीजी हैं वैसे ही मुझे युवाचाय श्रीजी प्रतीत होते हैं । आचाय श्री की तरह युवाचाय श्रीजी मे भी समता विशेष सया प्रतीत होती है । लगता यह समता सरिता एक दिन सागर का रूप ले लेगी । युवाचार्य श्री की मोहनी मूरत की छटा कुछ अलग ही है ।

युवाचाय श्री का भविष्य काफी उज्ज्वल है । क्योंकि आचार्य श्री का चन्द समय का सहवास भी चमत्कारिक साबित होता है तो अनवरत सहवास करने वाले युवाचार्य श्री का जीवन चमत्कारी क्यों नहीं होगा ? आचाय श्री के निणय पर हमें काफी नाज है ।

अध्यक्ष— —हुक्मीचन्द मूथा
अ भा राष्ट्रीय एकता निर्माण कमेटी
तमिलनाडु प्रदेश, कोयम्बटूर

हार्दिक बधाई–संदेश

श्री राममुनिजी को युवाचार्य पद पर आसीन करने के उप लक्ष्य में मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आपके निर्देशन व आपकी देखरेख में संघ उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो, यह प्रभु से प्रार्थना है।

एक बार पुनः आप सबको शत शत प्रणाम।

बीकानेर
दिनांक ४ मार्च ९२

—डॉ हेमचन्द्र सक्सेना
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
स. पटेल आयुर्विज्ञान महाविद्यालय
बीकानेर

सही समय पर सही चुनाव

सही समय पर सही चुनाव कर आपश्री ने संघ को चिन्ता मुक्त किया है व भावी आचार्य को अपने हाथों प्रशिक्षित कर तैयार करने का जो निर्णय लिया है वह सर्वथा संघ हित में है। सभी इस बात से अत्यधिक प्रसन्न हैं।

हम युवाचार्य श्री से बहुत आशायें हैं। वे आपश्री के नेतृत्व में संघ व्यवस्था में निष्णात बन कर भविष्य में संघ को बेजोड़ नेतृत्व प्रदान करेंगे व मिति में सत्य मूएसु के घोष को ध्यान में रख जैन समाज को जोड़ने की प्रक्रिया में प्रवृत्त होंगे ऐसी अपेक्षा है।

श्रमणोपासक युवाचार्य विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है एक शांत और समर्पित व्यक्तित्व जिसे भविष्य में संघ का नायक बनना है, उनके सम्बन्ध में लोगों को विस्तृत जानकारी हो। यह आवश्यक भी है। युवाचार्य शांतमूर्ति, सेवाभावी व समर्पित व्यक्तित्व के धनी हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि शासन की बागडोर उनके हाथों सुरक्षित रहेगी।

—आसराज बोथरा
राजस्थान हाई कोर्ट, जोधपुर

ध्रुवतारे सी पृथक् पहचान

बीकानेर के इतिहास मे युवाचार्य घोषणा एवं चादर प्रदान दिवस स्वर्णाक्षरो मे लिखा जायगा । भ महावीर के ८२ वें पाट को सुशोभित करने वाले युवाचार्य श्री जी श्रमण सस्कृति की सुरक्षा हेतु एक कदम आगे ही रहेंगे । विश्वास है, इनका निर्लिप्त जीवन शासन की सेवा एवं प्रभावना दिन दूनी रात चौगुनी करते हुए उत्तरदायित्व को भलीभांति निभायगा ।

हमारे परिवार की मगलकामना है कि आप ध्रुव तारे की तरह अपनी अलग पहचान बनाएं ।

—डॉ निर्मल जैन
एम एस (अस्थि)

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
डिपार्टमेन्ट ऑफ आर्थो—सर्जरी
एस एन मेडिकल कॉलेज एवं
महात्मा गांधी अस्पताल, जोधपुर

बीकानेर धर्मनगरी बना

आचार्य श्री ने बीकानेर मे ऐतिहासिक चातुर्मास कर इसे पावन ही नहीं बनाया, धर्मनगरी बना दिया है । युवाचार्य श्री पूर्वाचार्यों की ज्ञान सम्पदा आपश्री से प्राप्त करेंगे ही तथा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका से भ महावीर के शासन में नक्षत्र की भांति चमकते रहेंगे । गांधी परिवार अपनी शुभ कामनाएं अर्पित करते हुए हर्ष की अनुभूति कर रहा है ।

—डॉ हरि कृष्ण गांधी

कनिष्ठ विशेषज्ञ मेडिसिन
सेटेलाइट अस्पताल, बीकानेर

इस चयन से संघ कर्मशील होगा

मुनि श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य पद पर विभूषित करने पर आचार्य श्री जी एवं संघ को कोटिश साधुवाद एवं अभिनन्दन ज्ञात हो। इस चयन से संघ सुदृढ होकर के कर्मशील होगा ऐसी आशा है।

प्राणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेदरत्न — वैद्य ओंकारलाल मण्डफिया (चित्तौड़गढ)
साहित्य रत्न एवं कृषि रत्न

सहस्त्र शुभ कामना

श्रद्धेय श्री राममुनिजी म सा को युवाचार्य घोषित किया, यह परम प्रसन्नता की बात है। आशा करता हू युवाचार्य श्री के कुशल नेतृत्व में चतुर्विध संघ निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

युवाचार्य श्री को सहस्त्र शुभ कामना,
संघ के उत्तरोत्तर प्रगति की भावना ॥

गंगापुर (भीलवाड़ा) —डॉ बाबूलाल सखी
एम बी बी एस

※

संसद सदस्य, नई दिल्ली

संदेश

युवाचार्य पदोत्सव मंगलमय व सफल हो। यही मेरी शुभकामना है।

धन्यवाद !

—गुमानमल लोढा

जगत को सही जीवन जीने की प्रेरणा दे

युवाचाय श्री रामलालजी म अत्य त सरल एवं सादगी प्रिय सन्त रत्न हैं। उन्होंने गुरु सेवा कर अपने जीवन को काफी ऊचा उठाया है।

गुरु की कृपा से उन्हें महत्त्वपूण पद 'युवाचाय' का जो मिला है, आशा करता हू कि वे इस पद के अनुरूप काय करते हुए भगवान महावीर के सिद्धान्तो का प्रचार प्रसार करेंगे एव जगत को सही जीवन जीने की प्रेरणा देंगे।

मेरी एव मेहता परिवार की बधाई। शत शत वन्दन।

जयपुर

—डॉ मानक मेहता
अस्थि रोग विशेषज्ञ

卐

मानव समाज को प्रकाश प्रदान करें

मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को जैन शासन के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित करके आचाय श्री नानेश ने योग्य कार्य किया है। मुनिजी वस्तुत इस पद के अधिकारी थे।

मुनिजी का जीवन त्याग तप से ओतप्रोत है। अपने ज्ञान, अनुभव एव आत्म चिन्तन से वे मानव समाज को प्रकाश प्रदान करें एवं अपने जीवन को समुज्जवल बनाए।

अनन्त अनन्त शुभकामनाए वन्दन !

बीकानेर

—डॉ को सी जैन
पी बी एम हॉस्पीटल, बाई स्पेशलिस्ट

धर्म एव परम्परा को अक्षुण्ण रखने हेतु चयन योग्य हुआ

जनाचार्य पूज्य प्रवर श्री नानालालजी म इस युग के महान सन्त हैं। जन धर्म के मूल स्वरूप को सुरक्षित रखने हेतु वे सदा प्रयत्नशील रहते हैं। सतत् साधना मे लीन रहना एव अपने शिष्य समुदाय को साधना मे गतिशील बनाए रखना आप अपना परम कर्तव्य समझते हैं।

मुझे आचार्य श्री की सन्निधि का सेवा का बहुत लाभ मिला है। विशाल शिष्य समुदाय से भी गहरा परिचय हुआ है। इस आधार पर मैं यह कह सकता हू कि आचार्य श्री ने धर्म एव अपनी परम्परा को अक्षुण्ण रखने हेतु श्रद्धेय राममुनि का उत्तराधिकारी के रूप में चयन सर्वथा योग्य किया है। योग्य चयन हेतु आचार्य श्री को धन्य एवं उन्नत जीवन की मगल-कामना के साथ युवाचार्यजी का अभिनन्दन।

एम बी बी एस —डॉ किशनलाल जैन

एस एम ओ, वरिष्ठ चिकित्साधिकारी,

प्रभारी ना चिकित्सालय, गगाशहर (बीकानेर)

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी महाराज के विहार प्रसग में १० जनवरी, १९९२ को श्री बालाजी मे मुनि श्री राममुनि जी के दर्शन हुए।

आचार्य श्री का नोखा प्रवास स्वास्थ्य के कारण अपेक्षा से अधिक रहा है उसी दौरान मुनिश्री से बराबर सम्पर्क रहा। आचार्य श्री स्वास्थ्य सुधार होते ही बीकानेर की तरफ विहार करने को तत्पर हुए परन्तु पैदल विहार संभव नहीं लगा। जब यह बात मुनिश्री को बताई तो उत्साहित होकर बोले—तो चिन्ता नहीं करें, हम गुरुदेव को झोली में सानन्द विहार करा सकेंगे।

मुनिश्री के विनयी, सेवाभावी, सघ एवं संघपति के प्रति निष्ठा एव समपरण भाव देखने का सौभाग्य मिला।

—डॉ प्रेमसुख मरोठी
नोखा ३३४८०३

श्रद्धोद्‌गार, शुभाभीप्साए, वर्द्धापनाए

—डॉ छगनलाल शास्त्री

परम पूज्य, महामहिम, जै श्वे साधुमार्गी ग्राम्नाय के पावन प्रकाश स्तम्भ, आचार्य-प्रवर पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा के धर्मसघ द्वारा भगवान महावीर की अहिंसा, अनेकान्त एवं सयम प्रधान सांस्कृतिक परम्परा का जो दिव्य उद्योत होता रहा है, आज भी अविकल रूप में हो रहा है, वह नि सन्देह भारत के आध्यात्मिक उत्कर्षमय इतिहास का वह स्वर्णिम पृष्ठ है, जो कदापि धूमिल नहीं होगा ।

इसी परम्परा मे सौम्यता, ऋजुता, मृदुता एव प्रशान्त भाव के दिव्य सवाहक आचार्यवर पूज्य श्रीलालजी म सा, "अध्यात्म-क्रान्ति" के अग्रदूत, महान ज्योतिधर स्वनामधन्य आचार्यवर श्री पूज्य जवाहिरलालजी म सा, दिव्य ओजस्विता तथा सात्विकता के महान् उद्-वाहक आचार्यप्रवर पूज्य श्री गणेशीलालजी म सा हुए, जो श्रमण भगवान महावीर के ज्योतिर्मय शासन को उत्तरोत्तर उद्दीप्त, प्रदीप्त करते रहे।

आज इस गौरवमयी विरासत का धर्मपाल प्रतिबोधक, समता दर्शन के प्रणेता, समीक्षण योग के समुद्‌बोधक महामहिम आचार्य प्रवर पूज्य श्री नानालालजी म सा सम्यक् सवहन करते हुए, जन-जन को आत्म दर्शन के पावन सन्देश से आप्यायित करते हुए प्रभु महावीर की विश्वमैत्री, समता एवं विश्वात्सल्यमय आध्यात्मिक देन को अधिकाधिक उजागर करते हुए धर्म जागरण का महान् कार्य कर रहे हैं ।

इस परम गौरवशील विरासत का भावी उत्तरदायित्व सम्हालने हेतु परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा ने समादरणीय मुनिवर्य श्री रामलालजी म सा को जो अपना उत्तराधिकारी युवाचार्य उद्‌घोषित किया है, यह सर्वथा स्तवनीय एव अभिनन्दनीय है । इस महनीय प्रसंग पर परमाराध्य आचार्य प्रवर की सेवा में विनयाभिनत प्रणयन तथा युवाचार्य वर को हार्दिक वर्द्धापन समर्पित करते हुए अपरिसीम आनन्द का अनुभव होता है ।

मुनिवर श्री रामलालजी म सा एक प्रखर विद्वान, साधनाशील, मनस्वी, उज्ज्वल चारित्र्य के धनी, व्यवस्था कुशल, एक सुमान्य, परम विनीत, तप पूत अणगार हैं । अपने अद्वागन्द गुरुवर्य के श्री

चरणों में रहते हुए वे अपने आपको सर्वथा गुण निष्पन्न बनाने की दिशा में सदैव यत्नशील रहे हैं। वे अपने परमाराध्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त इस गौरवमय उत्तरदायित्व का अत्यन्त सफलता के साथ निवहण करेंगे, अध्यात्म अहिंसा, अनुकम्पा, और संयम विभूषित श्रमण संस्कृति को उत्तरोत्तर उद्दीप्त करते रहेंगे, ऐसी आशा है।

कोटी-कोटी मगल कामनाए, वर्द्धापनाए एवं शुभाशीष्माए।

व्याख्यान वाचस्पति
प्राच्य विद्याचार्य, काव्यतीर्थ-विद्यामहोदधि
कैवल्यधाम-सरदारशहर

आचार्य श्री की मनीषा का अखण्ड दीप युवाचार्य श्री के रोम-रोम को आलोकित रखेगा।

—डॉ. नेमीचन्द जैन

शासन मुनिश्रेष्ठ श्री रामलालजी म सा के युवाचार्य घोषित किये जाने पर उन्हें राशि राशि साधुवाद दीजिए।

मुझे विश्वास है कि वे पूज्य आचार्य श्री के सम्यक् उत्तराधिकारी सिद्ध होंगे। इतिहास के ऐसे मोड पर जहां पग पग पर हिंसा ने अपने मजबूत पांव जमा लिये हैं, उन्हें अहिंसा की पुन प्रतिष्ठा के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा। स्वयं जैन समाज भी अपने अस्तित्व का युद्ध जूझ रहा है उसमें भी कई विकृतियां आ गई हैं। जीने की जो पद्धति भगवान महावीर ने प्रवर्तित की थी, उसमें हिंसा, झूठ, चोरी, परिग्रह, कुशील आदि के लिए कोई हाशिया नहीं था किन्तु आज इन पांच लुटेरों ने हमारा सर्वस्व अपहृत कर लिया है। ऐसे मर्मान्तक क्षणों में हमें अपने आध्यात्मिक नेतृत्व पर ही भरोसा रखना होगा।

मुझे विश्वास है कि पूज्य आचार्य श्री की मनीषा का अखण्ड दीप मुनिवर रामलालजी के रोम-रोम को आलोकित रखेगा और वे अत्यधिक सफलतापूर्वक उनके धर्मपाल अभियान और समीक्षण ध्यान की उज्ज्वल परम्पराओं को अग्रसर कर सकेंगे। मैं साधुमार्गी जैन संघ

कसे हिमालय की तरह ऊंचा उठे और अखिल मानवता का मस्तक उसके कृतित्व से कैसे गौरवान्वित हो इस सबकी प्रतीक्षा करता रहूँगा। मैं आशान्वित हूं कि युवाचार्य श्री के सुयोग्य मार्ग दर्शन में आचार्य श्री की जन्म स्थली विश्व विख्यात "शाकाहारपुरम्" का रूप लेगी और वहां से शाकाहार/अहिंसा की किरणें प्रस्फुटित होकर पूरे विश्व को आलोकित करेंगी। उन्हें मेरे अनन्य प्रणाम कहिये।

परम पूज्य आचार्य श्री तक मेरे विनम्र प्रणाम पहुंचाइये।

—६५ पत्रकार कॉलोनी, कनाडिया मार्ग
इन्दौर (म प्र)

युगाचार्य युवाचार्य

—प श्री श्यामसुन्दराचार्य

अनादि निधन सनातन श्रमण संस्कृति के परम श्रद्धेय आचार्य, समीक्षण ध्यानयोगी, समता विभूति शान्त, दान्त समाहित श्री नानालालजी म सा के अन्यतम पट्ट शिष्य श्री रामलालजी म से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आपकी गम्भीरता, शालीनता, मितभाषिता, सज्जनता आदि गुणों से मैं बड़ा प्रभावित हुआ।

दया, दाक्षिण्य, औदार्य सौशिल्य देवी गुण गण आपको उत्तराधिकार के रूप मे प्राप्त हैं। अत आप वस्तुत युवाचार्य के साथ ही युगाचार्य भी कहे जा सकते हैं। आपके त्याग वैराग्य, संयम, नियम पूर्ण जीवन से चतुर्विध जैन धर्म संघ निश्चित ही पल्लवित तथा पुष्पित होगा, इस आशंसा के साथ मैं आपकी शतायु की कामना करता हूं।

वन्दन करता अभिनन्दन,
चरणों में सतत् समर्पण।
गंगा प्रवाहसम निशिदिन,
गुन्जरित हो सारा जीवन।

व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य, शिक्षाशास्त्री
बीकानेर (राज

आचार्य श्री द्वारा प्रवर्तित धर्म प्रभावना के कार्य यथावत सम्पादित होते रहेंगे।

—महामहोपाध्याय डॉ दामोदर शास्त्री

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि परमश्रद्धेय चारित्र चूड़ामणि, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री नानालालजी म सा ने तरुण तपस्वी विद्वत् पूर्वन्य, शास्त्र-मपारंगत मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को अपना भावी उत्तराधिकारी युवाचार्य-रूप में नामांकित किया है। आचार्य श्री द्वारा प्रवर्तित समस्त धर्म प्रभावना के कार्य यथावत् इन उत्तराधिकारी द्वारा सम्पादित होते रहेंगे—ऐसा विश्वास है।

—व्याकरणाचार्य, सर्वदर्शनाचार्य
जैन दर्शनाचार्य एम ए विद्यावारिधि

'सेयर्करिय सेय्वार पेरियर'

—डॉ इन्द्रराज बैद

यह सात्विक हर्ष का विषय है कि परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा ने अपने विशाल संघ का भार अपने विद्वान् सुशिष्य श्री रामलालजी म सा के हाथों में सौंपने की ऐतिहासिक घोषणा कर दी है। आचार्य श्री के छत्रछाया में रह कर फिर पूर्ण रूप से अन्यपित प्रशिक्षित होकर युवाचार्य श्री इस गुरु दायित्व का निर्वाह विनम्रता, विद्वत्ता और विलक्षणता पूर्वक करें, यह हमारी शुभ कामना है। संत तिरुवल्लुवर के अनुसार श्रेष्ठ ही महान् कार्यों का निर्धारण संपादन करते हैं—सेयर्करिय सेय्वार पेरियर। विशेषांक हेतु हार्दिक बधाई।

मानद मोचन (हरिगन्धा)

म्हारी कुख उजाले

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री नानालालजी म सा ने जो भार श्री रामलालजी म सा को दिया है वो पूज्य गुरुदेव री किरपा सू ही पार लागसी ।

म्हारे अन्तर रो आशीश है श्री रामलालजी म सा गुरुदेव रो नाम दिपावे और म्हारी कुख ने उजाले ।

देशनोक —गवरा देवी बूरा

(युवाचार्य श्री जी की ससार पक्षीय मातु श्री जी)

म्हाने घणी घणी खुशी है

भ्राता रे दीक्षा देने के पहले मैं आ नहीं सोचतो हो कि सयम पथ पर जाकर इतनी जल्दी इस पद पर पहुंच जासी । पूज्य गुरुदेव ने उनकी सयम साधना को अच्छी तरह परख कर अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य पद श्री रामलालजी म सा को दिया।

म्हाने घणी घणी खुशी है । इससे म्हारे समझ में आवे कि कोई भी दीक्षा लेवे तो दीक्षा दिलाने में सहयोग देना चाहिए ।

देशनोक —मांगीलाल बूरा

(युवाचार्य श्री के संसार पक्षीय एक मात्र ज्येष्ठ भ्राता)

आगम मर्मज्ञ युवाचार्य श्री रामलालजी म सा

—लालचन्द्र नाहटा 'तरुण'

स्थानकवासी जैन समाज में पूज्य स्व श्री आचार्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा के सम्प्रदाय का स्थान विशेष गौरवशाली रहा है। हुक्म सम्प्रदाय के सभी आचार्यों ने उत्तरोत्तर शासन के गौरव को प्रदीप्त किया। वे सभी अष्टाचार्य एक से बढ़कर एक प्रतापी हुए। पूज्य स्व श्री श्रीलालजी म सा के शासन से इस सम्प्रदाय के उत्कर्ष का जो स्वर्णिम अध्याय प्रारंभ हुआ, वह अनिर्वचनीय है। हम सबके सौभाग्य से वर्तमान शासनेश आचार्य श्री नानेश ने अपने दिव्य व्यक्तित्व से जिनशासन की महान् सेवा की है। ओजस्वी, तेजस्वी, प्रभावशाली और आदर्श आचार्य श्री १००८ श्री नानालालजी म सा में आदर्श आचार्य के सभी ३६ गुणों का समावेश है। आपके पावन जीवन की सत् सन्निधि से समाज जीवन में समता का अमृत रस [illegible] संचरित हो रहा है और व्यक्ति एवं समाज जीवन में रूपान्तरण के अलौकिक दृश्य मूर्तिमन्त हो रहे हैं।

आपकी अमृतमयी वाणी अन्तर हृदय से प्रस्फुटित और स्वानुभूति से परिपुष्ट है। अत आपके प्रवचन हृदयग्राही और प्रभावशाली होते हैं। आपके लोकोत्तर व्यक्तित्व ने समग्र स्थानकवासी जैन समाज में नव जागरण का प्रेरक शंखनाद किया है और आपश्री ने अनेकानेक आध्यात्मिक कीर्तिमानों की स्थापना की है। आपके हाथ से जितनी दीक्षाएं हुई हैं उतनी सम्पूर्ण स्थानकवासी समाज के किसी एक आचार्य के हाथों आज तक नहीं हुई हैं। आपश्री ने केवल मात्र दीक्षा देकर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं मानी अपितु दीक्षा के उपरान्त शिक्षा और विकास का उत्तम प्रबन्ध करके अपने आज्ञानुवर्ती श्रमण श्रमणी वर्ग को सुयोग्य बनाकर, अनुशासन को बीज रूप में स्थापित करके और उनकी प्रतिभाओं को निखार कर समाज जीवन की [illegible] की वृद्धि की है। परिणाम स्वरूप आपके सभी शिष्य योग्य और विद्वान् हैं। स्थविर प्रमुख श्री शांतिमुनिजी, श्री विजयमुनिजी, श्री [illegible]जी, श्री ज्ञानमुनिजी, श्री पारसमुनिजी और शासन प्रभावक श्री [illegible] मुनिजी आदि सभी हुक्मगच्छ के गौरव हैं। आचार्य श्री नानेश के श्री चरणों की सेवा करके [illegible] का फल है। गुरुदेव धन्य हैं।

इन उज्ज्वल मणियों, इन ज्योतिपुंज रत्नदीपो मे से पूज्य चरण आचार्य-प्रवर श्री नानेश आगम मर्मज्ञ, विद्वद्वर्य, मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य घोषित किया है। यह घोषणा करके आचार्य प्रवर ने समाज के महान् हित की साधना की है। हम आचार्य प्रवर के इस उपकार हेतु अनन्त हृदय से आभारी हैं।

युवाचार्य श्री रामलालजी म सा से यद्यपि मेरा परिचय दीर्घकालिक नहीं है किन्तु प्रथम दर्शन मे ही आपश्री के महनीय व्यक्तित्व ने मुझे जिस प्रकार प्रभावित किया, वह अविस्मरणीय है। अशोक नगर, उदयपुर मे मैंने आपश्री के प्रथम दर्शन किए थे और उस समय सहसा मेरे मन मे कवि की निम्न पंक्तियां कौंध गई थी— दूरेपि श्रुत्वा भवदीय कीर्ति, कर्णौच तृप्तो न च चक्षुणी मे तयोर्विवाद परिहर्तु काम समागतो हं तव दर्शनार्थी। हे परम श्रद्धेय! दूर बानो ने आपका नाम तो सुना था किन्तु जो कुछ सुना था उस पर नेत्रों को विश्वास नहीं हो रहा था, क्योंकि उन्होंने आपके दर्शन नहीं किए थे। आज आपके दर्शन प्राप्त कर मैं आह्लादित हू। जैसा मैंने सुना था, उससे भी सुन्दर रूप मे आपको देखकर मेरे श्रोत्र और नेत्र का विवाद समाप्त हो गया।

युवाचार्य श्री राममुनिजी के भव्य-दिव्य और आकर्षक व्यक्तित्व तथा उनकी ओजस्वी, तेजस्वी आकृति, उनकी सतत मधु मुस्कान और सदा प्रसन्न आनन एव उनकी वाणी का माधुर्य शासन की श्री वृद्धि करेंगे ऐसा मेरा निश्चित मत है।

शासन नायक परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर को इगियाकार सम्पन्न वृत्ति से, अत्यन्त समर्पित भाव से अहर्निश सेवा, ज्ञानचर्चा मे विनय पूर्वक महत्त्वपूर्ण योगदान, परम्परा और आगम के प्रति पूर्ण सम्मान के साथ साथ नये युग की नई दिशाओं, चलाओं और चरतनाओं का समीचीन समन्वय आपकी प्रमुख और विलक्षण विशेषताए हैं। मुमुक्षु भव्य जन तारण हार परम पावनी जिनवाणी के साथ रहस्य ज्ञाता हैं।

युवाचार्य श्री राममुनिजी मर्यादा और परम्परा के समर्थ अनुपालक, निरभिमान कर्मयोगी और स्पष्टा हैं। भगवान की संयम साधना और बुद्ध की करुणा से आपका मानस आप्लावित है। मानव सेवा और बन्धुत्व का सन्देश आप सदैव सुनाते रहते हैं। आप मानव संस्कृति

की अनुभूति हेतु सबभावन समावत है ।

अत जैनाचार्य परमपूज्य श्री नानालालजी म सा द्वारा आपश्री का युवाचार्य के रूप में चयन समग्र मानव जाति और प्राणी मात्र के लिए मगलमय है । श्री हुक्म सघ की बागडोर सक्षम हाथ मे आने से हम सब हर्षित हैं ।

गुरुचरणों मे रहकर आपने श्रुतशास्त्र और आगम का गहन अध्ययन किया है तथा तीव्र मेधा शक्ति के संयोग से आपने प्रवचन मे दक्षता प्राप्त की है । इसी ज्ञान के आधार से श्रमण संस्कृति में चिरकाल से चली आ रही जिज्ञासा तथा समाधान की परम्परा का आप कुशलता से निर्वाह कर रहे हैं । स्वयं प्रभु महावीर ने जिज्ञासु जनों के अगणित प्रश्नों का सम्यक् समाधान दिया था और हुक्म संघ के प्रतापी आचार्यों ने तीर्थंकर देव की उस अनवरत समाधान वृत्ति का सुन्दर शैली मे बखूबी निर्वहन किया है ।

कुछ कालपूर्व श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक समाज के धुरंधर विद्वान् श्री न्याय विजयजी ने अपने पांडित्य का भरपूर प्रयोग करते हुए स्था नकवासी समाज के समक्ष कुछ जटिल प्रश्न रखे थे तब ज्योतिर्धर श्री जवाहराचार्यजी ने उन सब प्रश्नों का संस्कृत में समाधान प्रस्तुत कर समाज को चमत्कृत कर दिया । उन प्रश्नों के माध्यम से उन युगद्रष्टा आचार्य ने सप्तभंगी, न्याय से प्रत्यभिज्ञा प्रामाण्य, कारक लक्षण, लेश्याओ की मर्म निष्पक्षता आदि के विषय में शास्त्रीय समाधान प्रदान किए थे । स्व आचार्य देव श्री जवाहरलालजी म सा. के बेकड़ी शास्त्रार्थ के प्रसंग पर मेरे पूज्य पिता श्री धनराजजी को जो महत्व मार्ग दर्शन प्रदान किया, वह चिरस्मरणीय है ।

इसी प्रकार तत्कालीन युवाचार्य श्री गणेशीलालजी म सा जब सं १९९६ म केकड़ी पधारे और जब उनसे श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज की ओर से श्रुतज्ञान का प्रमाणत्व और अप्रमाणत्व 'सम्यग्ज्ञान है य परतो ग्राह्य है, सम्यग्दर्शन के सब सन्निकृष्ट-विप्रकृष्ट प्रत्यक्ष बहिरंग कारणों के संबंध में तथा अन्य अनेकानेक प्रश्न पूछे तब श्री गुरुदेव ने समस्त जिज्ञासाओं का सम्यक् सतोषप्रद समाधान किया था ।

इस प्रकार की प्रश्नोत्तरी प्रणाली के विषय में अपने परिवार में विकसित जिज्ञासा और स्वाध्याय के प्रति मेरी बाल्यकाल से रही रुचि के कारण मेरे मन में उत्पन्न होने वाली जिज्ञासाओं को मैं सकलित करता गया । इस प्रकार मेरे पास ३२ जिज्ञासाओं एकत्र हो गई । अन्तरहृदय में इन जिज्ञासाओं के समाधान की प्यास उत्तरोत्तर बढ़ती गई और मैंने अनेक स्थानों पर इन्हें प्रेषित किया । मात्र कुछ स्थानों से २४ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए । उनसे भी समाधान नहीं हुआ । श्रुतधर पं प्रकाशमुनिजी म सा एवं श्रीमज्जैनाचार्य श्री नानालालजी म सा की ओर से उनके सुशिष्य मुनिप्रवर श्री रामलालजी म सा ने सम्पूर्ण समाधान प्रेषित किए । पूज्य आचार्य भगवन्त के चरणों में बैठकर शास्त्रज्ञ श्री रामलालजी म सा ने जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसका प्रत्यक्ष प्रमाण इन जिज्ञासाओं के समाधान में दृष्टिगोचर होता है । इन समाधानों में स्थान-स्थान पर शास्त्र की आत्मा जिस प्रकार मुखर हुई है, वह युवाचार्य श्री जी की महान् प्रतिभा की मुख बोलती सत्यकथा है । आपश्री द्वारा प्रदत्त समाधानों की कुछ बानगी देखिये—

प्रश्न—श्री उत्तराध्ययन सूत्र के २९ वें अध्ययन में ५ वें प्रश्न के उत्तर में भगवान ने फरमाया है कि आलोचना करने से जीव स्त्रीवेद और नपुसक वेद का बंध नहीं करता और कदाचित उनका बंध पहले हो चुका है तो उनकी निर्जरा हो सकती है क्या ?

(i) वेद का बंध पड़ने के बाद उनकी निर्जरा हो सकती क्या ?

(ii) यदि हो सकती है तो श्री मल्लि भगवती (श्रेणिक, कृष्ण) के निर्जरा क्यों नहीं हुई ?

(iii) अनुत्तर विमान में आराधक जाते हैं—विराधक नहीं । श्रीमल्लि भगवती ने महाबल के भव में निर्जरा की इसलिए अनुत्तर विमान में गई । आलोचना करने के बावजूद श्रीमल्लि भगवती के निर्जरा क्यों नहीं ?

उत्तर—शास्त्रीय सन्दर्भ के इन प्रश्नों का समाधान करते हुए शास्त्रज्ञ मुनिप्रवर श्री रामलालजी म सा ने फरमाया कि—सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन के पांचवें सूत्र में आलोचना करने वाला पुरुष

श्रेणिक और कृष्ण के नरकायु का बंध हो चुका था। नरक में नपुंसक वेद का उदय अवश्यंभावी है। अतः स्वभावी होने से उस कर्म प्रकृति का वहां उदय अवश्यंभावी होने से निर्जरा होने का प्रसंग नहीं रहा।

(३) महाबल की अवस्था में जब स्त्री वेद का बन्ध ही आगम सम्मत नहीं लगता तो उसके निर्जरा के प्रश्न को अवकाश ही कहां रहता है।

मुनि प्रवर श्री रामलालजी म. सा. द्वारा प्रदत्त समाधान का विश्लेषण करिये। श्वेताम्बर जैन समाज की पुरातन मान्यता के अनुसार वेद का बंध निकाचित होने से अथवा निर्जरा एकदेश होने से श्री मल्लि भगवती के स्त्री वेद का उदय रहा जबकि आगम मर्मज्ञ श्री रामलालजी म. सा. वेद के बन्ध को ही स्वीकार नहीं कर रहे हैं और स्त्री शरीर की प्राप्ति नाम कर्म के उदय से बताते हैं न कि वेदोदय से।

युवाचार्य श्री जी की उक्त उद्भावना मौलिक है और अपनी इस मौलिक उद्भावना की पुष्टि वे आगम प्रमाणों से करते हैं। इस प्रकार आपश्री ने विद्वानों और विचारकों के लिए चिन्तन के नए द्वार अनावृत्त किए हैं। चिन्तन के क्षेत्र में आपश्री ने अभिनव आयाम प्रस्तुत किए हैं।

मेरे बत्तीस प्रश्नों के उत्तर में वर्तमान युवाचार्य श्री ने अनेक मौलिक विचार दिए हैं। पूज्य आचार्य भगवंत एवं परमागम रहस्य-ज्ञाता श्री राम मुनिजी म. सा. द्वारा आगमिक जिज्ञासाओं के समाधानों को गहराई से इन दिनों देखा। देखकर मैं चमत्कृत हो गया। कुछ समाधान तो प्रचलित धारणाओं से हटकर भी इतने युक्तियुक्त और प्रमाण पुरस्सर हैं कि देखकर स्थानीय विद्वान भी दंग रह गये हैं। पूज्य गुरुदेव को कितना परिश्रम करना पड़ा होगा, इसकी कल्पना ही दुष्कर है। तथापि केवल मात्र परिश्रम ही काफी नहीं है, उसके साथ साथ तीव्र मेधाशक्ति, प्रत्युत्पन्न शक्ति, स्मरण शक्ति एवं स्वय का तलस्पर्शी अध्ययन आवश्यक है। इन सबकी आपके यहां एक साथ उपस्थिति समस्त विश्व के लिए गौरव का विषय है। वह गुरुदेव "रति सम्मति" के प्राचीन सिद्धांत का प्रत्यक्ष और पति विरल दृष्टांत है।

वस्तुत यह सब अनुभव करके लगता है कि आचार्य श्री का चयन निर्णय अत्यन्त दूरदर्शितापूर्ण सशक्त और प्राणवान निर्णय है। पूज्य गुरुदेव के युवाचार्य चयन का यह निर्णय हुक्म वंश के गौरव के अनुरूप तथा समग्र मानव जाति के कल्याण का ऐतिहासिक फैसला है। आचार्य प्रवर के चयन से एक उपयुक्त व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुरूप सही पद मिला है, जिसके वे वास्तविक अधिकारी हैं।

हम सभी को दृढ़ विश्वास है कि युवाचार्य श्री रामलालजी म सा के सुयोग्य नेतृत्व में संघ एवं समाज का सर्वांगीण विकास होगा। हमें गुरुदेव के इस युगान्तरकारी निर्णय पर गर्व है।

मुझे यह प्रकट करते हुए अपार हर्ष भी होता है कि आज से लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व जब मेरी आगमिक जिज्ञासाओं का विद्वान मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा ने समाधान किया था, उसी समय मुझे अनुमान हो गया था कि युवाचार्य पद पर आप ही विराजेंगे। मैंने अपने अनुमान को लिखित व मौखिक रूप से बता भी दिया था, आज उस अनुमान के सत्य सिद्ध होने पर मेरे हर्ष का पारावार नहीं है।

इस पावन घोषणा हेतु गुरुदेव के प्रति साधुवाद और कोटि कोटि वन्दन तथा युवाचार्य श्री जी का हार्दिक अभिनन्दन।

द्वारा—श्री जुहारमलजी दीपचन्दजी [illegible]
देवगढ़ जिला अजमेर (राज)

सर्वतोभावेन समर्पित

• हम युवाचार्य श्री का हार्दिक अभिनन्दन एवं अभिवन्दन करते हैं तथा विश्वास दिलाते हैं कि संघ के व्यापक हित की इस जिम्मेदारी को सशक्त करने में सदैव सर्वतोभावेन समर्पित रहेंगे।

—[illegible]

उपाध्यक्ष
श्री अ भा साधु जैन संघ, इन्दौर

हम गौरवान्वित हैं

० ऐतिहासिक राजप्रासाद (जूनागढ़ दुर्ग) के प्रांगण में सम्पन्न चादर प्रदान दिवस की निराली, अभूतपूर्व एवं अविस्मरणीय छटा देख संघ का प्रत्येक सदस्य गद् गद्, आनन्दित एवं गौरवान्वित है ।

हमारा संघ पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा के समय से ही गुरुणाम आज्ञा सतत श्रद्धावनत रूप से मानता आया है एवं एकछत्र संगठित रहा है और आगे भी तथैव हृदय से अनुसरण करता रहेगा ।

गुरुदेव का निर्णय जन-जन के द्वारा अभिनन्दनीय है । अपने अतिशय ज्ञान बल से, अन्तर साक्षी से जिनशासन की सत्ता जिन सुयोग्य हाथों में सौंपी है, हमें देखकर आनन्दानुभूति होना स्वाभाविक है । युवाचार्य श्री जी को बधाई देते हुए अपेक्षा रखते हैं कि वे भी पूर्वाचार्यों का अनुकरण करते हुए श्री संघ को दिव्यदान से लाभान्वित करेंगे ।

संघ के प्रतिपाल वन्दनीय भावी कर्णधार वस्तुत बधाई के पात्र हैं क्योंकि अपने पुरुषार्थ से पूज्य गुरुदेव के हृदय में स्थान बनाकर आराधक से आराध्य, पूजक से पूज्य तथा उपासक से उपास्य बनने का सौभाग्य प्राप्त कर लिया । शुभ कामना है कि युवाचार्य जी साधक से सिद्ध बनने के पूर्व अपनी विशेष क्रियाविधि से हमें बार-बार बधाई देने का मौका दें ।

भंवरलाल बरेर	केशरीचन्द सेठिया	जतनलाल डागा
(उपाध्यक्ष)	(सहमंत्री)	(उपाध्यक्ष)
प्रकाशचन्द बांठिया		माणकचन्द बारी
(उपमंत्री)		(कोषाध्यक्ष)

(श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक संघ)

हमें गौरव है

० आचार्य भगवन् द्वारा गहन चिन्तन, मनन से अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति का हमें गौरव है ।

भवनलाल नवावत
अध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीण्डर

फूलचन्द कुदाल
अध्यक्ष
श्री सा जैन संघ, कानोड़

अनिर्वचनीय हर्ष

० उद्घोषणा एवं चादर समारोह के लिए सम्पूर्ण संघ में अपूर्व हर्ष हुआ । इसे अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता ।

—भवरलाल बोथरा
अध्यक्ष
श्री जैन श्वे स्था संघ, बाड़मेर

संघ अबाध गति से आगे बढ़े

आचार्य भगवन द्वारा सत्पात्र व विचक्षण घोषणा पर श्री संघ, जयनगर साधुवाद के साथ साथ हार्दिक शुभ कामनाएं अर्पित करता है एवं आशा रखता है कि यह चतुर्विध संघ दिन दूना रात चौगुना अबाध गति से आगे बढ़ता रहे ।

—शांतिलाल दोशी
मंत्री
श्री साधुमार्गी जैन संघ, जयनगर

हार्दिक उपकार

० अपने उत्तराधिकारी का चयन कर गुरुदेव ने सम्पूर्ण संघ पर हार्दिक उपकार किया है । असीम प्रसन्नता है । समता युवा संघ पूर्ववत् श्रद्धाधार बना रहेगा ।

—शांतिलाल कोठारी
मंत्री
समता युवा संघ, चिकारड़ा

संघ का अहोभाग्य

० संघ का अहोभाग्य है कि आचार्य प्रवर ने महती कृपा कर युवाचार्य पद का भार ऐसे संत रत्न को सौंपा है, जो वर्तमान 'जाहो जलाली' को निरन्तर प्रवहमान व वृद्धिगत रखेंगे । युवा वर्ग में अपार प्रसन्नता है । हार्दिक स्वागत व समर्थन करते हुए विश्वास दिलाते हैं कि आचार्य श्री व युवाचार्य श्री का जो भी आदेश होगा, शत प्रतिशत पालन किया जायगा ।

—वीरेन्द्रसिंह लोढ़ा
सहमंत्री
श्री अ भा सा जैन संघ
उदयपुर

अतीव हर्षानुभूति

० आचार्य भगवन द्वारा श्री राम मुनिजी को युवाचार्य घोषित करने के समाचार से संघ को अतीव हर्षानुभूति हो रही है । स्थानीय संघ अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हुए जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता है कि अ भा सा जैन संघ नवीन उपलब्धियों सहित उत्तरोत्तर शासन की वृद्धि करे ।

—सम्पतराज सुराणा
मन्त्री
श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा

पूर्ण विश्वास व्यक्त

० समाचार पाते ही नगर में हर्ष एवं प्रसन्नता का वातावरण बन गया । बेंगलोर श्री संघ युवाचार्य श्री जी में पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए अपनी मंगल कामना प्रेषित करता है ।

—सोहनलाल सिपानी
अध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन संघ
बेंगलोर

चमकते सितारे

• आचार्य भगवन् ने अपने दिव्य ज्ञान से, अन्तरात्मा के निर्णय लेकर भावी शासन नायक का जो चयन किया है—महत्त्वपूर्ण है एवं जैन जगत के इतिहास में चिर स्थाई रहेगा।

शास्त्रज्ञ, आगम मनीषी, तरुण तपस्वी, आचार शुद्धि के दृढ़ पक्षधर, तर्क शक्ति के धारक, रहस्यज्ञाता मुनि प्रवर के युवाचार्य चयन पर समग्र भारत में प्रसन्नता एवं प्रमोद का वातावरण है। आप समाज के चमकते सितारे हैं। यही मंगल कामना है कि आप तेजस्वी, यशस्वी, वर्चस्वी बनकर समाज को देदिप्यमान करते रहें।

मंत्री —महेन्द्र [illegible]
श्री साधु जैन श्रा संघ, गगाशहर-भीनासर

आज्ञा का अनुमोदन करते हैं

• श्री संघ युवाचार्य श्री जी की घोषणा एवं चादर समर्पण का हृदय से स्वागत एवं अभिनन्दन करता है। गुरुदेव की आज्ञा का अनुमोदन करते हुए उन्हें सफल बनाने का विश्वास दिलाता है। वन्दन!

मंत्री —शान्तिलाल [illegible]
श्री साधुमार्गी जैन संघ, [illegible]

नवम् पट्टधर को सविधि वन्दना

• प्रसन्नता की अभिव्यक्ति अवर्णनीय है। इस निर्णय की व्यक्तिगत रूप से, परिवार व संस्था की ओर से अनुमोदना। नवीन उत्तराधिकारी एवं नवम् पट्टधर को सविधि वंदना करते हुए [illegible] की मंगल कामना।

संपादक —चम्पालाल कोठारी एवं परिवार
[illegible] समता शासन सन्देश — रतलाम

अखण्ड-सोभाग्य के प्रतीक

० हुक्म परम्परा के मुख्य उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए आचार्य प्रवर ने चतुर्विध संघ अनुशास्ता के रूप में पंचाचार व श्रमण समाचारी रत्नत्रय आराधना के योग्यतम शिष्य को नवम् पट्टधर रूप पद स्थापित किया है। यह गौरवशाली श्रमण परम्परा का महत्वपूर्ण पृष्ठ है। युवाचार्य श्री जी संघ निष्ठा का जीवन्त बोध, धर्म स्नेह की गहन अनुभूति व तत्व अन्वेषणा की गहराईयों को प्राप्त करें। यह चयन सदर्भ चतुर्विध संघ के अखण्ड सौभाग्य का प्रतीक बन गया है। अनन्त शुभ कामनाएं।

देशनोक (राज) —सोहनलाल लूणिया

बहु प्रतीक्षित निर्णय का हृदय से स्वागत

० नवम पट्टधर, तरुण तपस्वी वि शास्त्रा श्री राम मुनिजी को घोषित कर समस्त श्रीसंघ पर महान उपकार किया है। आचार्य श्री के इस समयानुकूल, बहुप्रतीक्षित एवं क्रान्तिकारी निर्णय का हृदय से स्वागत आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सदैव की भांति पूर्ण निष्ठा एवं अनुमोदन ज्ञापित करते हैं।

अध्यक्ष —सागरमल चपलोत

मेवाड़ क्षत्रीय संघ, निम्बाहेड़ा

योग्य गुरु के योग्य शिष्य

० यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि पूज्य आचार्य श्री नानालालजी म.सा. ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुनि श्री रामलाल जी महाराज को युवाचार्य घोषित किया है।

युवाचार्य श्री जी योग्य गुरु के योग्य शिष्य हैं। इस पर युवाचार्य श्री जी को मेरी मंगल भावनाएं और वन्दना निवेदित करावें।

प्रधानमन्त्री —चन्दनमल "चांद"

भारत जैन महामण्डल, बम्बई—२

दूरदर्शिता का दर्पण

○ गुरुदेव ने समस्त श्रद्धालुओं को गद्-गद् कर दिया है। वस्तुतः हीरे की परख तो जौहरी ही करते हैं परन्तु उनके मुख से इसका मूल्य जानना हर खरीददार की अभिलाषा होती है। इसे गुरुदेव ने जन-जन को जता दिया है। आपने अपनी विशाल दूरदर्शिता का दर्पण दिया है।

श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति की शुभेच्छा इस गुरु के चरणों में समर्पित है।

मंत्री —रत्ना ओस्तवाल

श्री अ भा सा जैन महिला समिति

राजनांदगांव

साहसिक निर्णय

○ गुरुदेव ने एक साहसिक, ऐतिहासिक एवं गरिमापूर्ण निर्णय लेकर संघ के चारों तीर्थों को जिस वात्सल्य भाव से एक सूत्र में पिरोया है महान उपलब्धि है। सरदारशहर संघ के सभी सदस्य सुखद निर्णय की अपनी अन्तरात्मा से प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते। गुरुदेव के प्रति आत्म समर्पण की भावना आज भी निर्बाध गति से प्रवहमान रहेगी।

पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार गुरुदेव ने महावीर स्वामी के शासन से लेकर हुक्म संघ के सात पाटों के साथ गौरवान्वित किया है युवाचार्य श्री भी अपने तेज तपोबल से नवें पाट को सुशोभित करते हुए पूर्ववर्ती आचार्यों के साथ दीपायेंगे। आप उनके पद चिह्नों पर चलकर अपनी गरिमा अक्षुण्ण रखते हुए अपनी विशिष्ट छाप अंकित करेंगे। आपके प्रति प्रदर्शित चारों तीर्थों की आस्था को अक्षुण्ण रखेंगे।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, सरदारशहर —सम्पतमल

नव आयामों के साथ प्रगति करे

० युवाचार्य श्री के सानिध्य में यह संघ उत्तरोत्तर वृद्धि करे व नव आयामों के साथ निरन्तर प्रगति करे। ये शासन को खूब चमकावें—महकावें। प्रभु महावीर व पूर्वाचार्यों की जाहोजलाली करें। शुभ कामना।

—सुरेश पामेचा
अध्यक्ष
समता युवा संघ

पिपल्या मंडी (म प्र)

चतुर्विध संघ को अबाध गति से आगे बढ़ाये

० ब्यावर संघ को अपार प्रसन्नता है। हम पूर्ण विश्वास दिलाते हैं कि पूर्ण निष्ठा एवं आत्मीयता पूर्वक युवाचार्य श्री जी म सा को एवं संघ को निरन्तर आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील होते हुए हार्दिक सहयोग करते रहेंगे। युवाचार्य श्री जी म सा अपने ज्ञान, दर्शन, चारित्र की उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति की सुरक्षापूर्वक चतुर्विध संघ को अबाध गति से आगे बढ़ाने में पूर्ण सफल हों यही शुभ कामना है।

ब्यावर (राज) —मोहनलाल जी श्रीमाल

इस चयन से बहुत प्रसन्न हैं

० हम सब आचार्य प्रवर के इस चयन से बहुत प्रसन्न हैं। श्री रामलालजी म सा युवाचार्य पद के पूर्ण योग्य सिद्ध होंगे तथा अपने गुरु के चरण सानिध्य में रहकर जैन धर्म, साहित्य एवं संस्कृति के प्रचार प्रसार में अपने आपको समर्पित करेंगे। मैं उनके मंगलमय एवं पावन जीवन की हार्दिक कामना करता हूं।

निदेशक —डॉ कस्तूरचन्द कासलीवाल
जैन इतिहास प्रकाशन संस्थान, जयपुर

निर्णय से अवर्णनीय प्रसन्नता

• आचार्य भगवन के निर्णय से अवर्णनीय प्रसन्नता है। आचार्य श्री की आज्ञा सर्वतोभावेन पालन करने हेतु हम संकल्पबद्ध हैं। उदयपुर संघ के समस्त स्वधर्मी बन्धु एवं बहिनें युवाचार्य श्री का हार्दिक प्रसन्नतापूर्वक हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। शासनदेव से प्रार्थना है कि आप शासन में चार चांद लगा इस हुकम संघ को निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर करते रहें।

—करणसिंह सिसोदिया
मंत्री
श्री वर्ध. साधु. स्था. जैन श्रा. संघ

उदयपुर (राज)

●∆

सब को प्रगति की ओर ले जावें

• यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आचार्य प्रवर पूज्य श्री नाना लालजी म. सा. ने मुनि प्रवर श्री रामलालजी म. सा. को अपना उत्तराधिकारी युवाचार्य नियुक्त किया है। मुनि श्री इस दायित्व का निर्वाह कर संघ को ज्ञान-साधना और धर्म साधना के क्षेत्र में प्रगति की ओर ले जावें, यही शुभ भावना है।

—प्रो. सागरमल जैन
निदेशक
पूज्य सोहनलाल स्मारक पार्श्वनाथ शोधपीठ,
वाराणसी—५

शुभ घोषणा

शुभ घोषणा के शुभ समाचारों से सकल साधुमार्गी श्रावक संघ में प्रसन्नता परिव्याप्त हो गई। पूज्य गुरुदेव, युवाचार्य श्री संघ शासन के दिशा दर्शन में संघ अधिकाधिक प्रगति पथ पर अग्रसर होता रहे व आध्यात्मिक जीवन से अनुप्राणित होता रहे।

बड़ी सादड़ी —श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ के सदस्य

卐 श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य पद पर चयन हेतु शुभ-कामनाए एव वन्दना ।

जितेन्द्र कुमार देवेन्द्र कुमार सेठिया
विराटनगर श्रीसघ

卐 हार्दिक शुभकामनाए एव बधाई ।

—मदनलाल जैन
शाखा सयोजक
भदेसर

नवमे पट्टधर नव आयाम प्रदान करे

आचार्य भगवन ने श्रीराम मुनिजी को चयनित कर समाज को अत्यन्त योग्य युवाचार्य दिया है । सम्पूर्ण सघ में इस समाचार से असीम हर्ष है । वीर प्रभु नवम् पट्टधर आचार्य को फलने-फूलने में नव आयाम प्रदान करें ।

—शान्तिलाल माण्डोत
मन्त्री—श्री साधुमार्गी जैन सघ
सरवानिया

निर्विघ्न पद सभाले

घोषणा से प्रसन्नता हुई । ईश्वर आचार्य भगवन को दीर्घायु बनावें एवं युवाचार्य श्रीजी को निर्विघ्न पद सम्हालने की शक्ति प्रदान करें ।

—पन्नालाल कोटडिया
स्था जैन श्रावक सघ
मुढीपार (खरागढ़)

युवा नेतृत्व : बहुमुखी प्रगति

हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए सघ आशान्वित है कि युवा नेतृत्व से जिनशासन की बहुमुखी प्रगति होगी तथा भविष्य में चतुर्विध संघ अधिक उन्नति की ओर अग्रसर होगा ।

—निम्बाहेड़ा संघ के सदस्य
५ मार्च ९२

शासन की शोभा वृद्धि को प्राप्त हो

चादर महोत्सव के शुभावसर पर वन्दन, अभिनन्दन के इस समारोह की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

पू आचार्य श्री एवं युवाचार्य श्री के नेतृत्व में जिनशासन की शोभा उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

—फतहचन्द बाफना
अध्यक्ष, श्री व स्था जैन सं

भापास

महत्वपूर्ण—चयन

तरुण तपस्वी, शास्त्रज्ञ, सदाचार के धनाधर, विद्वद् होनहार युवाचार्य को पाकर कौन प्रसन्नता का अनुभव नहीं करेगा। गौरवान्वित है श्री साधुमार्गी जन सघ इस महत्वपूर्ण चयन पर। युवाचार्य श्री देश विदेश में चतुर्दिक अपनी ख्याति फैलाते रहें—इसी शुभ एव मंगल कामना के साथ।

—सूरजमल जैन (बोरा)
अध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन संघ

उसलाना (टोंक)

भावी पूज्य : पूर्ण समर्थ

मद्रास श्री संघ तथा नखरा बाजार का दीक्षा आदि का ज्ञानानुभूति करता है। आशा है हमारे युवाचार्य एवं भावी पूज्य श्री रामलाल जी म सा अपने शुद्ध व उदार विचारों से जनजीवन को पवित्र बनाते हुए भ महावीर का शासन दीपाने में अपने पूज्य आचार्य एवं भावियाचार्य की तरह ही समर्थ होंगे।

—मोतीलाल बोथरा

मद्रास (नखरा बाजार सघ)
७ मार्च ६२

अन्तरात्मा की साक्षी से निर्णय

आचार्य भगवन ने अपनी दीर्घ दृष्टि से चिन्तन मनन कर अन्तरात्मा की साक्षी से निर्णय लेकर मुनि प्रवर श्रीजी को युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया है। इस समाचार से गंगाशहर भीनासर संघ के आबाल वृद्ध वर्गों में प्रसन्नता की लहर परिव्याप्त हो गई।

चतुर्विध संघ इनके गुणों आगम बल दृढ़ आचार, परम पुरुषार्थ, सेवानिष्ठता, शास्त्रज्ञता आदि-से प्रभावित है। श्रीसंघ उनकी आज्ञा को आपकी ही आज्ञा मानकर उनके निर्देशानुसार चलने हेतु सहर्ष कृत सकल्प है। आप चतुर्विध संघ को निरन्तर गतिशील बनाते हुए आत्मीयता प्रदान करते रहें यही आकांक्षा है। उनके नेतृत्व में दिनों दिन शासन वृद्धिगत होने की मंगलकामना करते हैं।

—धासचन्द सेठिया

गंगाशहर-भीनासर अध्यक्ष, श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ

भावी गौरवमय शासनेश

परम शांत, दान्त, गंभीर, परम श्रद्धेय श्री रामलाल जी म सा की युवाचार्य पद घोषणा से परम प्रसन्नता है। पूरा विश्वास है कि संघ के आशानुरूप कार्य करते हुए भ महावीर के शासन को गौरवमय बनायेंगे।

श्री साधुमार्गी जैन श्रा संघ, —कन्हैयालाल बोरदिया
रायपुर (भीलवाड़ा)

मरुधरा की पावन भूमि-बीकानेर का परम सौभाग्य है कि विशाल चतुर्विध संघ के सम्मुख अपना उत्तराधिकार व संघ का हुक्मेश शासन के नवम् पट्ट हेतु श्री राममालजी म सा को सौंपा, जो तपोमूर्ति, विद्वान एवं शास्त्रज्ञ हैं। युवाचार्य श्रीजी से यही कामना है कि निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति की सम्यक् रक्षा करते हुए शासन की शोभा बढ़ायें। ब्यावर श्रीसंघ पर वरदहस्त एव कृपा दृष्टि सदा बनी रहे।

ब्यावर —श्री जैन मित्र मंडल, ब्यावर के कार्यकर्ता
७ मार्च ९२

सच्चा संघनायक राम

साधुमार्गी जैन संघ के लिए बड़े गौरव का विषय है कि हमें एक सच्चा संघनायक राम के रूप में मिला है जो अन्धकार रूपी मिथ्यात्व को दूर करके समाज को अपने ज्ञानोदय से प्रकाशमान कर नयी राह दिखाएंगे। छात्रावास के समस्त छात्रों की तरफ से भी शत-शत वन्दन।

रणावास (राणावास) —लालचन्द गुगलिया

रोम-रोम हर्षित हो उठा

युवाचार्य श्री की घोषणा एक योग्य निर्णय है। निर्णय से रोम-रोम हर्षित हो उठा, सारे समाज में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। निर्णय को शिरोधार्य करते हुए प्रतिज्ञा करते हैं कि आपके आदेशों का पूर्णतः पालन करते रहेंगे। शत शत वन्दन।

म उपाध्यक्ष, —छगनलाल पटवा
पुल बाजार, जावरा

सेवा में हर समय तैयार

युवाचार्य श्री को बहुत बधाईयां। सभी पूर्वाचार्यों की तरह हमारे परिवार पर स्नेहदृष्टि रखायें। सरदारशहर संघ आपकी सेवामें हर समय तैयार है।

सरदारशहर (राज) —चन्दन जैन

निरन्तर आगे बढ़ें

अति प्रसन्नता व्यक्त करते हैं एवं शुभकामना करते हैं कि आप निरन्तर आगे बढ़ते रहें।

थोरांव, नाई (उदयपुर) —भंवरलाल कोठारी

वर्चस्व वर्धमान रहे

युवाचाय पदाभिषेक दिवस पर युवाचाय श्री जी को मेरी एव परिवार की भावभीनी वन्दना एव हार्दिक बधाईयां दशो दिशा में आपका वचस्व वधमान रहे ।

अमरावती (महाराष्ट्र) —प्रकाशचन्द कोठारी

❋

महत्त यात्रा में सफल हों

हुक्म सघ के मुक्ताहार में
चमकते हुए माणिक्य,
युवाचार्य प्रवर श्री राम मुनिजी म सा
की सेवामे श्रद्धापूवक वन्दन एव
अभिनन्दन

आपका सयमी जीवन यशस्विता वचस्विता के साथ सदैव चिरस्मरणीय रहे। आपकी यह सयम यात्रा अप्रतिहत रूप से गतिशील रहे। आपके मन मे, तन में, चिन्तन में, चेतन में समाधि भाव की निरन्तर वृद्धि होती रहे यही भावना ।

आप अणु से विराट,
बिन्दु से सिन्धु,
कण से मण
साकार से निराकार
सापेक्ष से निरपेक्ष
संयोग से अयोग
की महत्त यात्रा में सफल हो
इसी शुभेच्छा के साथ .. ..

पूना —विजय ने पटवा

✳

दायित्व निभायेंगे

युवाचाय श्रीजी प्रमुख सन्तो व प्रमुख श्रावकों का सहयोग लेकर पूरे जोश और होश के साथ अपना दायित्व निभाएंगे, इस मगल कामना के साथ ।

पालो (राज) —कुन्दन सुराणा

समर्पण और निष्ठा मे हमारा सुख

साधुमार्ग आचार्याणा दिव्य योगी मुनिश्वर
समता धर्म प्रस्तीर्णा मुनि श्रीराम गुरवे नम
युवा हृदय सम्राट धर्म सघ के प्राण
लोकमान्य श्री

श्रीराम मुनिजी धर्म, दशन एवं संस्कृति के उच्च कोटि के विद्वान हैं, विचारक हैं तथा ध्यान एव योग मे निष्णात हैं । आप स्थानकवासी जैन साधु हैं पर आपका व्यक्तित्व व्यापक है । आपकी योग्यता एव प्रतिभा को देखकर आचाय श्री ने २-३-९२ को साधुमार्गी सघ के युवाचाय का पद दिया है । इस प्रसंग पर परम पूज्य श्री राम मुनिजी म का युवाचाय विशेषांक का जागृत प्रकाशन हो रहा है इसके साथ हमारी शुभ कामनाएं अर्पित हैं । पूज्य युवाचाय श्री आने कलुषित काल मे विश्व को नयी चेतना से अभिमंडित कर रहे हैं, समर्पण और निष्ठा में हमारा सुख है यह सूत्र युवाचाय श्री में दृष्टि गोचर होता है ।

पूज्य युवाचार्य श्री अहिंसा समता एवं आगम ज्ञान का सदश विश्व मानव को दे रहे हैं । भगवान जिनेश्वर देव से हम प्रार्थना करते हैं कि आप विश्व शाति के लिए इस धरा धाम पर निरामय पूर्णायु प्राप्त करें ।

—साधना जैन

२२, आदिअप्पा नायकन स्ट्रीट
मद्रास

"मूर्ति छोटी कीर्ति मोटी"

प श्री कन्हैयालाल जी वक, उदयपुर

किसी भी सन्त रत्न के सम्बन्ध मे एकान्त रूप से कुछ भी लिखना या उनका परिचय होना अत्यन्त दुष्कर काय है क्योंकि सन्त छिपे हुए रत्न के समान होते है, उनकी यथार्थ परीक्षा उनके वे गुरु ही कर सकते हैं, जो उन्हें कुशल जौहरी के समान परख चुके हैं और वे दिव्यदृष्टा गुरु ही उनके सम्बन्ध मे अधिकार पूवक कुछ कह सकते हैं।

मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा भी एक ऐसे ही सत-रत्न हैं, जो अपनी कठोर व निस्पृह साधना, निष्ठा, गुरु भक्ति की समर्पित भावना व लगन से स्वल्प समय मे जन-मानस पटल पर उभर कर हमारे समक्ष आये हैं इस रूप में इसे अप्रकाशित दुर्लभ कृति भी कह सकते हैं। कौन जानता था कि १७ वष पूव ही दीक्षा धारण करने वाला एक नवयुवक अपनी साधना व गुरु भक्ति के बल पर जनता जनादन का वन्दनीय, पूजनीय श्रद्धेय हो जावेगा और साधुमार्गी जैन सघ के भावी आचाय पद को विभूषित करने का गौरव प्राप्त कर लेगा। आपने वास्तव मे हिन्दी की इस पक्ति को चरितार्थ कर दिया है कि "करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान"। आपके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था, अपने आचार विचार में दृढ़ रहते हुए गुरु की सेवा मे तल्लीन रहना। गुरुदेव के निर्देशन में जिनाज्ञा की आराधना करना गुरु का हार्दिक विश्वास प्राप्त करना और शास्त्रीय भाषा में "इगियागार सम्पन्ने" होकर अपना जीवन मगल तथा उत्तम बनाना। इसी उद्देश्य के अनुरूप चलकर आपने "जाए सद्धाए निक्खतो, तमेव अणुपालिज्जा" के आदश को जीवनगत बनाया। आपने अपने जीवन को जनसम्पक से बचाकर रखा मात्र स्वाध्याय सेवा को प्रमुखता देकर चले "वस गुरुकुले णिच्चं" के आदश लक्ष्य को अपने समक्ष रखा। लक्ष्य के अनुरूप चलते रहे, जिसका परिणाम है "युवाचाय पद की उपलब्धि'।

इस १७ वर्ष के संयमी जीवन में आपने अपने को शान्त, दान्त, मितभाषी नम्र गम्भीर व सेवा भावी आत्म साधक के रूप में समाज के समक्ष उपस्थित किया है। आचाय श्री की अनुपम कृपा

अभिव्यक्ति हेतु शब्द सामर्थ्य नहीं

आचार्य भगवन ने देशकाल भाव दृष्टिगत रख संघ हेतु जो नई व्यवस्था दी है तदर्थ हम आभारी हैं। शासनदेव से प्रार्थना है कि अनुशास्ता द्वारा प्रदत्त समीचीन व्यवस्था सम्पूर्ण चतुर्विध संघ के उत्कर्ष मे सहायक हो। हमारा संघ गौरवोत्तर सीमाओं को पार करे।

हर्ष के इन क्षणो मे अधिक अभिव्यक्ति शब्दों में सम्भव नही।

जयपुर —पीरदान पारख
५ मार्च ९२ पूर्व मंत्री, श्री अ भा सा जैन संघ

युग–मांग की पूर्ति हुई

युवाचार्य श्री का चयन युग मांग की पूर्ति एवं विशाल संघ की सुव्यवस्था हेतु अनिवार्य था, जो युग द्रष्टा आचार्य श्री ने समय पर किया है। क्रियानिष्ठ, तपोनिष्ठ, शान्त एवं गम्भीर प्रकृति के धनी श्री युवाचार्य श्री हुक्म परम्परा को सुरक्षित रखने मे जहां सक्षम हैं वहां इसे और अधिक विकसित करने मे भी सफल सिद्ध होंगे।

आचार्य श्री द्वारा प्रदत्त दायित्व निभाते हुए युगों-युगों तक समाज को, मानव मात्र को सम्यग् दिशा दर्शन देते रहें, यही शुभेच्छा है।

गंगाशहर (बीकानेर) —शांति छाजेड 'प्रतिमा'

ठोस निर्णय। सराहनीय निर्णय

युवाचार्य श्री जी का जीवन महकता चन्दन है! संयम ही जिनकी सांस और धड़कन है। युवाचार्य महोत्सव के अवसर पर अन्तर मन से शतश अभिनन्दन ...।

हकीकत में दृढ़ता के धनी दीर्घ अनुभवी, आचार्य भगवन ने अपनी पैनी दृष्टि से जो ठोस निर्णय लिया वह सराहनीय ही नहीं, अति सराहनीय है।

वेद परिवार का अभिनन्दन ! शत शत वन्दन !!

ईरोड —मार पुखराज वेद

गौरव की श्री वृद्धि करे

प्रसन्नता की बात है कि मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को 'युवाचार्य' पद प्रदान किया गया है। मेरे संसारपक्षीय "मामा" होने के कारण मुझे अतिरिक्त प्रसन्नता है।

आचार्य भगवन् की दृष्टि कुछ अलौकिक ही है। उन्होंने मुनि प्रवर को जिस योग्य समझा है, वे उससे भी अधिक योग्यतर योग्यतम निकलें एवं विशाल गच्छ-संघ के गुरुतर भार को कुशलता से वहन करते हुए संघ, समाज, माता पिता, गुरु, भूरा कुल एवं जिनशासन के गौरव की श्री वृद्धि करें यही शुभाशा है।

नोखा (बीकानेर) —चन्द्रकला चोपड़ा

△
△△

अपार प्रसन्नता

हमारे युवाचार्य श्री जी एक अलौकिक महापुरुष के चरणों में रहकर वीर बने हैं।

जिनके जीवन में त्याग-तपस्या का सरोवर लहरा रहा है। ऐसे महान् पुरुष को नाना ने 'नाना' प्रकार से परख कर युवाचार्य पद पर बिठाया है, जिसकी हमें अपार प्रसन्नता है। अनन्त अनन्त शुभकामनाएं हैं।

बालोतरा —पुखराज चोपड़ा

—❀—

कोहिनूर हीरा

आचार्य भगवन प्रदत्त कोहिनूर हीरा प्राप्त कर चतुर्विध संघ अति आनन्द की अनुभूति कर रहा है। मेरा मन हर्ष से सराबोर है।

युवाचार्य श्रीजी के नेतृत्व में संघ उत्तरोत्तर विकासशील होकर उन्नति करता रहे। आप यशस्वी, तेजस्वी एवं वर्चस्वी बनकर संघ को चमकायें, महकायें तथा दीप्तिमान कर अपनी छटा चतुर्दिक फैलावें-यही मंगलकामना है।

बीकानेर —जवरलाल बरडिया
ज्ञानचन्द, सुरेन्द्र, वीरेन्द्र बरडिया

निर्णय । प्रखर अनुभव के आधार पर

आचार्य प्रवर ने गहन सूझबूझ एव दीर्घकाल के प्रखर अनुभव के आधार पर चतुर्विध सघ के सर्वतोमुखी विकास हेतु लिये गये निर्णय की तहे दिल से अनुमोदना करते हैं ।

हमारा सघ यह प्रतिज्ञा करता है कि युवाचार्य श्री १००८ श्री रामलाल जी म सा सघ हित में जो भी आदेश निर्देश दें, उसका अन्त करण पूर्वक पूर्ण श्रद्धा और भक्ति के साथ पालन करने में अपना गौरव समझेगा ।

युवाचार्य श्रीजी के शासन काल में चतुर्विध सघ सर्वतोमुखी आध्यात्मिक विकास करे, रत्नत्रय की अभिवृद्धि करे । जिनशासन उन्नति के शिखर पर आरूढ़ हो और शान्ति सुख का साम्राज्य स्थापित हो यही शुभ एव मगलकामना है ।

भदेसर   श्री साधुमार्गी जैन श्रा सघ

अध्यक्ष मीठालाल जैन   मत्री-हरकलाल जैन   शाखा सयो -मदनलाल जैन

एव समस्त श्रावक गण

—❀❀❀—

कुशल जौहरी की परख

यथा नाम तथा गुण सत-रत्न की परख कुशल जौहरी ही कर सकता है । जो कठोर व निस्पृह साधना, निष्ठा, गुरु भक्ति, समर्पण लगन समन्वित व्यक्तित्व के धनी हैं । भारत के मनियों का मस्तक उन चरणों मे सदा झुकता है जो सयम रूपी तपस्या के धनी, सदाचार रूपी वित्त के अटल स्वामी तथा लोक कल्याण के लिए सर्वस्व के त्यागी हैं । आप जहां से कोसो दूर रहे हैं, आचार्य श्री के विचारों व भावनाओं को बिना कुछ कहे समझने में समर्थ हैं तथा सेवामें अपनी सानी नहीं रखते । सहज ही स्वर फूट पड़ता है—

> हु शि उ चौ श्री ज ग ना रा,
> अमर रहे यह संघ हमारा ।
> नाना राम है तारण हारा,
> युवाचार्य है राम हमारा ।

ब्यावर   —उत्तमचन्द श्री श्रीमाल

गुरु सेवा का सुफल

समाचार पढ़कर अपार हर्ष हुआ। 'हुक्म' परम्परा के युवाचार्य पदालकृत होना आपकी सत्रह वर्षों की निरन्तर तप संयम साधना एवं गुरु सेवा का ही फल है। इस शुभावसर पर गोयल परिवार की ओर से बधाई ! बधाई !! बधाई !!!

द्वारा-श्री मोहनलाल जैन
३२२८/२ सेक्टर ४०-डी
चण्डीगढ़

—दीपक कुमार (गोयल)
(प्रपौत्र श्री पुष्प मुनिजी)

卐

विचक्षण-देन

परम श्रद्धेय चारित्र चक्रवर्ती, समता दर्शन प्रणेता, प्रातः स्मरणीय आचार्य-प्रवर द्वारा युवाचार्य पद की घोषणा एवं चादर प्रदान दिवस के रूप मे दो स्वर्णिम अवसर प्राप्त कर बीकानेर धन्य हो गया। धरती धन्य हो गई। ऐतिहासिक दुर्ग में आयोजित समारोह म महावीर के समोशरण जैसा प्रतीत हो रहा था। चारों ओर वातावरण मे उल्लास दर्शनीय था। जो प्रत्यक्षत देख पाया उसके लिए स्मरणीय बन गया।

आचार्य भगवन ने संघ को बडी सूझबूझ के साथ यह विचक्षण देन दी है।

मद्रास —तोलाराम मिन्नी

निर्णय का अभिनन्दन

आचार्य श्री नानेश के निर्णय का अभिनन्दन,
युवाचार्य श्री राम मुनि को शत शत वन्दन।
बढ़े निरन्तर स्नेह, एकता अरू अनुशासन,
रहे महकता सतत साधना से यह उपवन ॥

धम्बोरा (उदयपुर) —किशोर चीन

युवाचार्य श्री जिनशासन को दीपावे

जिनशासन की प्रभावना हेतु गुरुदेव ने योग्य निर्णय लिया है। मनावर श्री संघ की तरफ से व मेरी ओर से हार्दिक शुभ अभिनन्दन करते हुए शासन देव से प्रार्थना है कि पूर्व आचार्य भगवन्तों के अनुगामी रहते हुए युवाचार्य श्री जिनशासन को दीपावें।

—सौभाग्यमल जैन
मनावर

पात्रता में खरा उतरा

अपने आत्म विश्वास, गुरु भक्ति, सेवा, लगन, कर्त्तव्यनिष्ठा, शान्तचित्त एवं गुरु सानिध्य पाकर अटूट विश्वास का प्रतीक, तपस्वी एवं मनस्वी आज उत्तराधिकार पात्रता में खरा उतरा है। गुरुदेव की आन्तरिक भावना, अर्न्तदृष्टि एवं दिव्य परख को कितना सराहा जायें पूरा विश्वास है कि आप समता को साकार रूप देने हेतु सक्रिय रहेंगे। 'तिन्नाण तारयाण' कहते हुए शत शत नमन हैं।

—प्रो॰ रतनलाल जैन
रामपुरिया कॉलेज, बीकानेर

अत्यन्त प्रमोद

अत्यन्त प्रमोद हुआ। पूरा विश्वास है आचार्य श्री एवं युवाचार्य श्री की नेश्राय में जैन संघ की जाहो जलाली में निरन्तर वृद्धि होगी।

—शान्तिलाल सांखला
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट
भोपाल

असीम प्रसन्नता

शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर को युवाचार्य पद से विभूषित किया यह, असीम प्रसन्नता का विषय है।

मदनलाल पन्नालाल जैन
दोंडाइचा

अन्तर आत्मा की पहचान

दिव्य दृष्टा के रूप में आचार्य श्री ने श्री राम मुनि को चयनित किया यह एक आदर्श है। आपकी अन्तर आत्मा की पहचान से सकल संघ हर्ष एवं आनन्द विभोर है।

गेली —सौभाग्यमल कोटडिया

देशाणे का लाल : बना संघ का भाल

देशाणे के लाल ने कर दिया निहाल। समस्त नागरिकों के हृदय में प्रसन्नता तथा आनन्द की सीमा नहीं है। मंगल कामना है कि शासन की उत्कृष्ट सेवा करते रहें।

देशनोक (राज) —पूरणचन्द बुच्चा

उत्तरोतर वृद्धि करे

आशा है श्रद्धेय युवाचार्य श्री जी पूज्य आचार्य श्री के सान्निध्य में शासन संचालन सुचारू रूप से करेंगे और पू आचार्य श्री द्वारा स्थापित संघ की मान मर्यादा व प्रतिष्ठा मे उत्तरोतर वृद्धि करेंगे।

जोधपुर (राज) —उगमराज खींवसरा
—मांगीचन्द भण्डारी, उगमराज मेहता

मन्थन

छाछ में है अमृत कलश।

देशनोक (राज) —नयमल भूरा
—सरला, सरिता, जया, अभिषेक, एवं अरिहन्त भूरा

—❦—

करते चरणों मे वन्दन हैं

आज हवाए मचल मचल कर
करती आपका अभिनन्दन है।
नभ के नक्षत्र चमक चमक कर
करते चरणों में वन्दन है।

युवाचार्य का निर्णय महत्त्वपूर्ण एवं शासन के अनुरूप है युवाचार्य श्री सघ गरिमा में आये दिन निखार लाते रहें, इन्हीं शु भावो के साथ वन्दन अभिनन्दन करती हुई—

तुम एक गुल हो,
तुम्हारे जलवे हजार है।
तुम एक साज हो,
तुम्हारे नगमें हजार है ॥
खिले सुमन सद्‌गुणों के प्रतिपल।
मानस सौरभ लिये विशाल ॥
मान सरोवर पर नित आते।
पाने मौक्तिक दिव्य मराल ॥

जदिया (बिहार) —मुमुक्षु सुमन श्री

स्वय मे गौरवपूर्ण

० गुरुदेव का समयानुकूल सही निर्णय स्वागत योग्य है। जिनकी तप, ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान आदि मे एक अद्‌भुत चिन्तन शैली है और जो आकर्षक व्यक्तित्व, ओजपूर्ण चेहरा, समन्वयपूर्ण दृष्टिकोण, सरलता विद्वता की प्रतिमूर्ति, तपोमणि, ज्ञानमूर्ति हैं उनके युवाचार्य/उत्तराधिकारी बनना स्वय में गौरवपूर्ण है।

आचार्य श्री के आशानुकूल उनके मिशन में सफल हों।
वन्दना के साथ शुभ कामनाए स्वीकार करें।

मेहता वाडी, उदयपुर —महेन्द्र कुमार नलवाया

आचार दृढता के प्रतीक

० युवाचार्य श्री जी से मेरा वैराग्यकाल से ही सम्पर्क बना हुआ है आपके दीक्षा प्रयास में संयुक्त होने का भी मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

ज्ञानी, ध्यानी, परम तपस्वी, सेवानिष्ठ शास्त्रज्ञ, ज्योतिषज्ञ, आचार दृढता के प्रतीक संयम साधना में व्यस्त युवाचार्य श्री जी पर विश्वास है कि वे जिनशासन की भव्य प्रभावना करेंगे। निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति अक्षुण्ण रहेगी और हुक्म संघ की अभिवृद्धि होगी।

मेरी और सुखानी परिवार की मंगल कामना है कि युवाचार्य श्री इस उत्तरदायित्व को उत्तरोत्तर गतिशील बनाते हुए धर्म की प्रभावना करेंगे।

बीकानेर —भंवरलाल जयचंदलाल सुखाणी
एवं समस्त सुखानी परिवार

सोनियोग्राफी

० आचार्य श्री चिन्तन मनन के महासागर हैं। परख दृष्टि की अपेक्षा 'सोनियोग्राफी' है। युवाचार्य का चयन वस्तुतः आपकी परख दृष्टि का उदाहरण है। द्वय महापुरुषों को वंदन के साथ—

ओ राजस्थान के सुरंगे गुलाब।
चरणों में समर्पित है भावों का सैलाब॥

अहमदाबाद —पारसमल बागमार

सामयिक कदम

० युवाचार्य पद की घोषणा कर आचार्य श्री ने संघ हित में एक सामयिक कदम उठाया है। फलस्वरूप स्थानकवासी समाज में आनंद व उत्साह की लहर जागृत हुई है एवं संघ के प्रति निष्ठा की भावना बलवती हुई है।

कलकत्ता —रिखबदास भंसाली

धिन दे रामा धिन्न

देशाणो करनल कृपा, विश्व मांय विख्यात ।
सती संत उपज अठे, जस री जोत जगात ।।१।।
करणी री किरपा रही, भूराकुल भरपूर ।
जिण कुल रामो जनमियो, निरमल झलके नूर ।।२।।
सुतज अमोलख रो सुणो, नामी नेमीचन्द ।
जिणरे रामो जनमियो, उण दिन हुयो अणद ।।३।।
आचलियो कानू कहू, धिन गवरा रा छीव ।
जिणरी कूख ज जनमियो, उत्तम राम अतीव ।।४।।
भ्रात जेष्ठ जिण रो भले, लाखो मागीलाल ।
वैरागी गृहस्थी बण्यो, करे शील प्रतिपाल ।।५।।
लगन राम रे उर लगी मुगती री मन मांय ।
जोग लियो तज भोग जग, जिन गुरु शरणे जाय ।।६।।
उत्तम शिष अपणावियो, गुरु नाना दे मान ।
केवल मुगती कारणे, धरे निरंजन ध्यान ।।७।।
पद युवा आचार्य रो पायो राम प्रवीण ।
जिण कारण जग मांयने, बाजे जस री बीण ।।८।।
आंचलियाणी रै उदर, उपज्यो राम रतन ।
तात भूराकुल तारियो (तने) धिन दे रामा धिन्न ।।९।।
गावे मंगल नार नव हरख हिये मे होत ।
देशणोक जग मे दिपै, जस रामे रो होत ।।१०।।
तप साध तन तापकर, साधण संयम सग ।
आयो जीव उधारवा, (तनै) रंग रै रामा रंग ।।११।।

देशनोक —सोहनदान चारण

कोटिशः बधाईयां

० इस शुभ अवसर पर हमारे परिवार की ओर से कोटिशः बधाईयां, शुभ कामनाएं, वंदन व हार्दिक अभिनन्दन ।

भिलाई —सुभाष बोथरा

हार्दिक प्रसन्नता

• प रत्न श्रद्धेय राम मुनिजी म सा को युवाचार्य घोषित किया है जानकर संस्थान परिवार मे हार्दिक प्रसन्नता व्याप्त हो गई है। चादर दिवस के उपलक्ष्य मे हार्दिक शुभकामनाए एव श्रीचरणों में वन्दन।

—डॉ सुभाष कोठारी
उदयपुर प्रभारी एव शोध अधिकारी
आगम, अहिंसा, समता एव प्राकृत संस्थान

शान्त दान्त गम्भीर

• पूज्य आचार्य श्री जी ने अपनी सूझबूझ एव दूरदर्शिता से आप श्री को सर्व दृष्टि से सुयोग्य, निष्ठावान, अनुशासन प्रिय शान्त दान्त गम्भीर, शास्त्रज्ञ एव समन्वय प्रतीक पाकर ही इस पद पर सुशोभित कर महान उत्तरदायित्व सौंपा है। हमारी ओर से शत शत वन्दन सहित हार्दिक बधाई स्वीकारें। पूर्ण विश्वास है कि पूज्य गुरुदेव के सानिध्य एवं मार्गदर्शन में अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए सघ शिरोमणि पद को गौरवान्वित कर रत्नत्रय की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि सहित आत्म विकास की ओर निरन्तर अग्रसर रहकर समाज को चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने का दिशा बोध प्रदान करेंगे। बधाई स्वीकारें।

नीमच सिटी —नाहरसिंह राठोड

卐

सम्पूर्ण मेवाड मे हर्ष की लहर

• मुझे ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मेवाड में हर्ष की लहर परिव्याप्त हो गई। युवाचार्य चादर महोत्सव के पावन प्रसंग पर हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

—गणेशलाल सहलोत
चित्तौड़गढ़ समता प्रचार संघ

पूर्वाचार्यों के आदर्श को जन-जन में प्रगट करें

० युवाचार्य श्री जी की मेधाशक्ति प्रखर हैं। आपश्री ने असीम तल्लीनता सहित गहन अध्ययन किया है एवं संयम समर्पित, सजग, क्रियाशील बनकर सेवा साधना मे रत रहते हैं।

यही शुभ कामना है कि आपश्री हुक्म संघ, नानेश शासन की यशकीर्ति दिग्‌दिगन्त फैलाते हुए पूर्वाचार्यों के आदर्शों को जन-जन में प्रकट करें।

—मेहता परिवार

सुवासरा मण्डो

शब्दातीत अनुभूति

० शांतमूर्ति एवं समर्पित श्री राम मुनिजी म सा को चादर प्रदान कर आचार्य भगवन् ने महत्ती कृपा की है। हमें अपार हर्ष एवं आनन्द की अनुभूति हो रही है। एतदर्थ शब्द नहीं हैं। बधाई दें। आभार मानें या उपकार। आचार्य श्री का निर्णय सर्वोपरि है। हम सब उनके आदेश पर नतमस्तक हैं।

—केशरीचन्द सेठिया

संयोजक विनियोजन मंडल
(श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ) मद्रास

नानेश की गरिमा को प्रवर्धमान करें

मंगल समाचार कर्ण गोचर होते ही हृदय हर्ष विभोर हो गया। आचार्य श्री ने अपनी दिव्य दीर्घ दृष्टि से मुनि प्रवर श्री राम लालजी म सा को युवाचार्य पद प्रदान किया। युवाचार्य श्री प्रभु महावीर के उज्ज्वल शासन के संवाहक बन हुक्म गच्छाधिपति आचार्य श्री नानेश की गरिमा को प्रवर्धमान करें।

अभिनन्दन! अभिनन्दन!! अभिनन्दन!!!
शत शत वन्दन! शत शत वन्दन!!

—वैरागयवती शमता जैन

भिलाई

संगठन-क्षमता एवं संयम-साधना के प्रतीक संत रत्न

० शास्त्रज्ञ, संगठन क्षमता के धनी एवं कठोर संयम साधना के पक्षधर ऐसे महान, तपस्वी युवा संत रत्न श्री राम मुनि का युवाचार्य हेतु चयन के लिए पू आचार्य भगवन् को हमारी ओर से कोटिशः धन्यवाद एवं युवाचार्य श्री जी को हार्दिक बधाई ।

सावरोद —झमकलाल चौरडिया (वरखेडा)

शासन की शोभा बढावें

० जिस योग्यता को परख कर आचार्य श्री जी ने अपना उत्तराधिकार प्रदान किया, उसी योग्यता मे दिन दूना रात चौगुना निखार लाते हुए इस महान् गुरुतर भार को अच्छी तरह से वहन करते हुए शासन की शोभा बढ़ावें ऐसी शुभ कामना ।

पाली —शान्तिलाल सिंघवी

卐

अनिर्वचनीय प्रसन्नता

(बुजुर्ग परिजन की अपेक्षाएं)

० शत २ वन्दन । आपको शासन की बहुत बड़ी जिम्मेदारी दी गई है । जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि आपका यश भी, गुरुदेव की भांति, दिन-ब-दिन वृद्धि को प्राप्त हो । मधुर एवं संतुलित भाषा में आपका व्याख्यान सुनकर अनिर्वचनीय प्रसन्नता हुई है । यही शुभेच्छा है कि आपकी वक्तृत्व कला चिर नवीन आयाम पाए । पूरा विश्वास है कि सन्त सतियों से मधुर-व्यवहार, विचार-विमर्श करते हुए अनुशासनबद्ध गति देते हुए चतुर्विध संघ को प्रगति पथ में अग्रसर करेंगे ।

देशनोक दीपचन्द भूरा

पूर्व अध्यक्ष श्री अ भा सा जैन संघ

प्रखर व्यक्तित्व । काटों का ताज

(युवाचार्य श्री जी को सम्बोधित वन्दन पत्र)

○ आचार्य प्रवर की सामयिक उद्घोषणा से समाज में हर्षोल्लास एव निश्चितता की भावना जागृत हुई है। समाज का एक अदना सेवक होने के नाते मैं भी इस निणय को पूर्ण निष्ठा और विवेक के साथ स्वीकार करता हू।

आप जैसे प्रखर व्यक्तित्व का धनी ही यह कांटों का ताज पहनने में समर्थ हैं। आशा है पूर्वाचार्यों के पद-चिह्नों पर चलकर तथा वर्तमान आचार्य प्रवर से मार्गदर्शन प्राप्त कर आप चतुर्विध संघ को गति प्रदान करने में प्रेरक भूमिका का निर्वाह करेंगे। आज के भौतिक साधनो का विचार तरगो पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता रहता है फलस्वरूप स्वस्थ चिंतन का प्राय अभाव प्रतीत होता है। वर्तमान युवा पीढ़ी मे जोश है लेकिन नैतिक जागरण पूर्ण रूप से विकसित नहीं है। मैं चाहूगा कि आज की युवा पीढी को दिशा निर्देश दें। पूरा विश्वास है कि आप द्वारा समाज का प्रत्येक वर्ग लाभान्वित होगा एवं सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की अभिवृद्धि कर अपना, परिवार एव समाज का दायित्व प्रामाणिकता से निर्वाह करने का प्रयास करेगा।

पावन चरणो मे सविधि वन्दना !

—रिखबदास भंसाली

कलकत्ता

कोहिनूर हीरा

अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि आध्यात्मिक आलोक-पुञ्ज, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने मूल्यवान कोहिनूर हीरे को परख लिया। सर्वांगीण ज्ञाननिधि, चारित्रिक सम्पन्नता एवं निस्पृही सरल को भावी शासन नायक चयनित कर लक्षाधिक हृदयों की मनोकामना मूर्त कर दी है। तपोमय जीवन एवं विवेक पूर्ण काम प्राणी आपकी निजी विशेषताएं हैं। ऐसे युवाचार्य श्री जी को कोटिश वन्दन।

—सहदूलाल जैन

मेवड़ी (अजमेर)

हुकम शासन की गरिमा बढ़ायें

○ समता विभूति आचार्य भगवन् ने दीर्घ दृष्टि से मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य पद प्रदान किया। मंगल कामना है कि आप हुक्म शासन की गरिमा बढ़ायें। हार्दिक अभिनंदन! शतशः वंदन।

भिलाई

झंवरलाल पुगलिया

सहयोग का विश्वास

○ कृपया शास्त्रज्ञ, विद्वद्वर्य, युवाचार्य श्री जी के चरणों में सविधि वंदना अर्ज करावें। श्री संघ नगरी की ओर से युवाचार्य पद प्राप्ति एवं चादर प्रदान हेतु हार्दिक बधाई देकर सहयोग का विश्वास दिलायें। संघ को इस चयन से अपार हर्ष है।

नगरी (मन्दसौर)

—किशोरकुमार जैन
मंत्री सा जैन संघ

विराट व्यक्तित्व

○ आचार्य भगवन् ने ऐसे महान मुनिराज को चतुर्विध संघ के भावी शासन नायक रूप में विराट व्यक्तित्व प्रदान किया है। इस निर्णय को मैं हृदय से स्वीकार करते हुए सत्कार एवं सम्मान करता हूँ।

भीनासर

—बालचन्द सेठिया

मुक्त कंठ से प्रशंसा

○ आचार्य भगवन की घोषणा का इस क्षेत्र के सब सदस्यों ने अनुमोदन किया व चतुर्विध संघ की व्यवस्था हेतु लिये गये महत्वपूर्ण निर्णय की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

मनावर

—सौभाग्यमल जैन, उपाध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ

समग्र समाज में प्रसन्नता

० जो सम्मान आपको मिला, इसके आप वास्तव में योग्य हैं। मुझे ही नहीं, समग्र समाज मे इसकी प्रसन्नता है।

प्रेम केब्लस प्रा लि, पीपलियाकला —प्यार के सिंघवी

हार्दिक शुभकामनाए

कोटिशः वन्दन ! आपश्री के इस मंगलमय शुभ पदारोहण होने पर हमारी हार्दिक शुभकामनाए बधाई स्वरूप स्वीकृत करें।

छापर —शकुन एव पंकज जैन (बुचेड़िया)

●—●—●

कोटिश वन्दन

युवाचार्य पद महोत्सव पर हार्दिक शुभकामनायें एवं हार्दिक वन्दन। यही मंगल कामना है कि आपश्री साधुमार्गी परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखें एव अपने गुणो से इसे विकसित एवं सुशोभित करें।

उदयपुर —जीवनसिंह कोठारी एवं परिवार

हार्दिक अभिनन्दन

युवाचार्य श्री का हार्दिक अभिनन्दन एवं यशस्वी, तेजस्वी दीर्घायु जीवन हेतु शुभकामनाए। आचार्य श्री जी के दीर्घायु होने की मंगल कामना है।

ब्यावर —बालूराम माहेर

●—●—●

हार्दिक शुभकामना

शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर श्री राममुनिजी म सा को परम श्रद्धेय शासनाधीश द्वारा अपने उत्तराधिकारी रूप मे घोषित करने व भार प्रदान करने के उपलक्ष्य में हार्दिक शुभकामना।

ब्यावर —लालचन्द मुणोत

नित्य नये सोपान कायम करें

इस शुभावसर पर यही मनोकामना है कि पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री नानेश दीर्घायु हो एवं उनके नेतृत्व मे युवाचार्य प्रवर दिन दूनी रात चौगुनी जिन शासन की वृद्धि में नित्य नये सोपान कायम करें।

भादसोडा (चित्तौडगढ़) —नरेन्द्र खेरोदिया

आखें पवित्र हो गई

७ मार्च का गौरव गरिमापूर्ण, महिमा मण्डित चादर महोत्सव देखकर हमारी आंखें पवित्र हो गई। जीवन मे प्रथम बार ऐसा महोत्सव दृष्टिगोचर कर जीवन धन्य हो गया। हार्दिक बधाई।

पीपल्या मंडी —सुरेश पामेचा
अध्यक्ष, समता युवा संघ

शासन सूर्य के समान चमकता रहे

० संघ का उत्तरदायित्व श्री राममुनिजी को सौंपने की घोषणा से प्रसन्नता है। विश्वास है कि प्रतिभाशाली, तेजस्वी, कठोर संयमी एवं दृढ़ धर्मी आचार्य रूप में इन्हें पाकर यह सम्प्रदाय अधिकाधिक विकास करेगा। दीर्घदृष्टा एवं पारखी आचार्य भगवन की परख निश्चित ही बहुमूल्य है। आपश्री के अनुयायी विश्वास दिलाते हैं कि युवाचार्य श्री की प्रत्येक आज्ञा को शिरोधार्य कर अपना कर्तव्य पालन करेंगे।

शासनदेव से प्रार्थना है कि आप स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों और दीर्घकाल तक आपका शासन सूर्य के समान चमकता रहे।

रतलाम —पी सी चोपड़ा
पूर्व अध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन संघ

सुविचारित क्रांतिकारी मार्ग

चिर प्रतीक्षित घोषणा से चिन्ता व्यथा का अन्त हुआ है और श्रद्धालु श्रावकों की अभिलाषाएं पूर्ण होने से अत्यन्त हर्षानुभूति हुई है। आचार्य प्रवर ने युवाचार्य पद की घोषणा तथा संरक्षक सहित स्थविर मुनिराजों की घोषणा कर एक सुविचारित क्रांतिकारी मार्ग अपनाया है। पूर्ण विश्वास है कि आचार्य भगवन ने शासन में जो अभूतपूर्व क्रांतिकारी कीर्तिमान बनाए हैं उन्हें युवाचार्य श्री जी म सा उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने में पूर्णतया सफल होंगे और इस गौरवशाली सम्प्रदाय को सम्मान पूर्वक गति प्रदान करते रहेंगे।

शत शत वन्दन।

भीलवाड़ा —कन्हैयालाल मूणोत

समता का साम्राज्य फैलेगा

आचार्य श्री ने महान मंगल एवं शुभ कार्य कर संघ व समाज की महिमा व गौरव बढ़ाया है जो स्वयं में ऐतिहासिक है। निःसंदेह संघ की चहुंमुखी प्रगति होगी व समता का साम्राज्य फैलेगा।

कृपया हमारी हार्दिक बधाईयां व शुभकामनाएं स्वीकार करावें।

भीलवाड़ा —लादुलाल सिरोही

ढेर सारी बधाईयां

• आचार्य भगवन् के चरणों में शत शत वन्दन एवं युवाचार्य श्री के चरणों में हार्दिक वन्दन, अभिनन्दन। अपनी ओर से ढेर सारी बधाईयां। यही कामना है कि हमारा जीवन भी प्रशस्त मार्ग में अग्रसर हो उन्नत बने ऐसी शिक्षा का दान/वरदान दीजिएगा।

बीकानेर —प्रभा सुराणा

ΔΔ

योग्य युवाचार्य

० घोषणा समाचार से हृदय मे खुशी का पार नहीं रहा। प रत्न, धीर-वीर गम्भीर मूर्ति १००८ श्री राम मुनिजी म सा जैसे योग्य युवाचार्य को पाकर कौन अपने को धन्य नहीं समझेगा। चादर महोत्सव की कल्पना से हृदय विभोर हो जाता है। स्वय की ओर से एव कोटा सघ तथा कोटा के समस्त धर्मप्रेमी भाई बहिनो की ओर से हार्दिक स्वागत।

—मोहनलाल भटेवरा
(समस्त कोटा सघ की ओर से)

दिव्य दृष्टि का प्रतिफल

० चादर महोत्सव के समाचार मिलते ही हर्ष एवं प्रसन्नता की लहर छा गई। यह आचार्य श्री की दिव्य दृष्टि का ही प्रतिफल है कि तरुण तपस्वी आत्मार्थी साधक मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचाय पद प्रदान किया गया।

युवाचार्य श्री का हार्दिक भावाभिवन्दन।

भिलाई —दीपक बाफना

हार्दिक बधाई

० आचाय भगवन् को कोटिशः वन्दन एवं युवाचाय प्रवर को हार्दिक बधाई। सुखद चादर महोत्सव हेतु शुभकामनाएं।

—सुरेन्द्र कुमार मेहता
मन्दसौर (शहर) (श्री साधुमार्गी जैन संघ)

नानेश वृक्ष फले फूले

० युवाचाय श्री के शासन मे यह नानेश वृक्ष फले-फूले, नव पल्लवित हो, गुंजन हो यही शुभकामना है। वन्दन।

कलकत्ता — गुणपू, तरुण, रीता कोचर

वही आस्था सदा रहेगी

○ हमारी जो आस्था आचार्य भगवन में है वही युवाचार्य श्री में है एवं सदा रहेगी। निर्णय का हार्दिक अनुमोदन। पूर्ण विश्वास है युवाचार्य श्री के शासन में जैन धर्म, साधुमार्गी संघ एवं आचार्य श्री नानेश का नाम सूर्य चन्द्रमा की भांति चमकेगा, रोशन होगा।

भीलवाड़ा —भगवतीलाल सेठिया एवं समस्त परिवार

निर्णय को शिरोधार्य कर प्रसन्नता

○ नवम् पाट के लिए तरुण तपस्वी, आचार सम्पन्न, वचन एवं वाचना सम्पदा के धनी, गूढ़ शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर के चयन हेतु हार्दिक शुभ कामना। निर्णय को प्रसन्नता पूर्वक शिरोधार्य कर आनन्द का अनुभव करते हैं।

—सागरमल चपलोत
चित्तौड़गढ़ समता भवन निर्माण समिति

नवम पाट भव्यता व ऊंचाईयां प्राप्त करेगा

○ युवाचार्य श्री से विशेष निवेदन है कि आचार्य श्री द्वारा उपदिष्ट मानव कल्याणकारी योजना को उपयुक्त रूप से प्रतिष्ठित कराने की कृपा करावें। समय बतायगा कि नवम पाट अधिक भव्यता व ऊंचाईयां प्राप्त करेगा। निर्णय की अनुमोदना।

—मगनलाल मेहता
रतलाम शान्ता मेहता

आदेश की पालना हेतु सदैव तत्पर

○ हम आचार्य भगवन् के आदेश की पालना हेतु सदैव तत्पर रहेंगे व हार्दिक स्वागत करते हैं। तहेदिल से वन्दन, अभिनन्दन।

मद्रास-६ —प्रेमराज गोमावत

स्वप्न साकार हुआ

○ एक वर्ष पूर्व देखा स्वप्न साकार हुआ। चोधरी परिवार की ओर से हार्दिक बधाई। असीम अनुभूत आनन्द को व्यक्त करने हेतु शब्द नहीं मिल पा रहे हैं।

पुनः हृदय की गहराईयों के साथ ढेरों बधाईयां।

मन्दसौर —निर्मसिंह चोधरी

○○○

युवाचार्य की खोज पर शुभ कामना

○ गुरुदेव को शासन के नए युवाचार्य की खोज पर शुभ-कामनाएं।

—अशोक सुराना

रायपुर (छत्तीसगढ़ संभाग के क्षेत्रीय संयोजक, श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ)

○○

चरण कमलों के प्रति समर्पित रहेंगे

○ पूज्य गुरुदेव ने मुनि प्रवर श्री रामलालजी म. सा. को युवाचार्य घोषित किया, यह जानकर अति हर्ष हुआ। पूज्य श्री रामलालजी म. सा. प्रखर विद्वान, चिन्तक एवं शास्त्रज्ञ तो है ही, साथ ही गुरु व श्री संघ के प्रति निष्ठावान, समर्पित विनयशील और सरल स्वभावी हैं। इस युग में किसी एक ही व्यक्ति में ये सब गुण मिलने मुश्किल हैं।

मैं पूर्ण आस्था एवं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि पूज्य श्री राम मुनिजी म. को युवाचार्य पद पर घोषित करके आचार्य श्री ने समस्त जन संघ पर महान उपकार किया है।

पूरी श्रद्धा के साथ निवेदन कर रहा हूं कि आचार्य श्री की तरह युवाचार्य के चरण कमलों के प्रति सभी श्रद्धावान, जागरूक और समर्पित रहेंगे। वन्दन

—जिनेन्द्र कुमार जैन

अहमदाबाद (सम्पादक का सोहर दैनिक जैन समाचार दर्पण)

संघ संरक्षक घोषित करने पर बीकानेर संघ गौरवान्वित है

धर्ममातृ पद विभूषित श्री इन्द्रचन्दजी म सा जिन्हें बीकानेर संघ के श्रावक-श्राविका 'इन्द्र भगवन्' के नाम से संबोधित करते हैं। अपने हृदय सम्राट को आप द्वारा चतुर्विध संघ का संरक्षक घोषित करने पर जहाँ असीम प्रसन्नता का आभास करता है वहाँ अपने को गौरवान्वित भी महसूस करता है कि हमारे यहाँ विराजित भगवन् को बहुत बड़ा सम्मान प्राप्त हुआ है। दि ७ माघ ९२ को प्रात कालीन बसन्ती वेला, २ माघ की अपेक्षा अधिक सुखद आभास करा रही थी, जब ऐतिहासिक राजमहल जूनागढ दुर्ग में आप श्री जी द्वारा सघ रत्न श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य पद की चादर प्रदान की गई। उपस्थित विशाल जनमेदिनी के साथ २ बीकानेर संघ का प्रत्येक सदस्य उस निराली छटा को देखकर गद्‌गद् एवं आनन्दित हो रहा था।

हम सभी पदाधिकारी एवं संघ का प्रत्येक सदस्य आप श्री जी को विश्वास दिलाते हैं कि हमारा संघ पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा के समय से ही गुरुआम आज्ञा सतत श्रद्धावनत रूप से मानता आ रहा है तथा एक छत्र रूप में संगठित रहा है। हम आगे भी एक छत्र रूप में संगठित रह कर गुरु आज्ञा को इन्द्र भगवन् के शब्दों में "होगा प्रभु का जिधर इशारा, उधर बढ़ेगा कदम हमारा" का नाद हृदय से अनुसरण करते रहेंगे।

—श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक संघ

००

परम श्रद्धेय चारित्र चूड़ामणि आ प्रवर १००८श्री नानालालजी म सा आदि ठाणा के चरणों में शत शत वंदन!

आज दिन जब यह सुना कि श्री राम मुनिजी को युवाचार्य पद सुशोभित किया गया है। सुनकर संघ को अति प्रसन्नता हुई कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्री राम मुनि यह दायित्व बहुत ही अच्छी तरह निभायेंगे। श्री संघ छोटी सादड़ी इस निर्णय का अनुमोदन करता है तथा विश्वास दिलाता है कि हम सब सदैव समर्पित रहते हुए आज्ञाओं का पालन करेंगे।

इसी आशा व मंगल कामना के साथ।

—प्रभुलाल नाहर
मंत्री

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ
छोटी सादड़ी (राज)

तार द्वारा प्राप्त बधाई सन्देशः—

बधाई

- सम्पतराज अनिल कुमार कडावत, रामपुरा (मन्दसौर)
- मेघराज प्रकाशचन्द कडावत, " "
- रामप्रकाश अजित कडावत, " "
- शान्तिलाल प्रकाशचन्द सुराणा, " "
- रायपुर स्थानकवासी संघ,
- मणिलाल घोटा, रतलाम

समारोह की सफलता हेतु शुभकामना एवं हार्दिक बधाई

- आर प्रेमराज सोमावत, मद्रास
- जम्बू कुमार मूथा, बंगलोर
- गोकुलचन्द सिपानी, चिक्कमगलूर
- स्थानवासी जैन संघ, नन्दूरबार
- तरूण जैन साप्ताहिक, जोधपुर
- महेन्द्र वाठिया, बाड़मेर
- सा जैन संघ, सवाई माधोपुर

आपको प्रदत्त सम्मान पर हार्दिक बधाई

- बालचन्द रांका, तंडियार पेट, मद्रास
- समता भवन, तंडियार पेट, मद्रास
- रतनचन्द कटारिया, रतलाम
- धोगुलाल कोठारी, तंडियार पेट, मद्रास
- अशोक पिरोदिया, रतलाम
- पूनमचन्द, रतलाम
- उगमराज मेहता, जोधपुर

✲ श्री दक्षिण भारतीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ,
मैलापुर-मद्रास

✲ मांगीलाल घोका, मद्रास

✲ आचार्य श्री नानेश जी द्वारा श्री राममुनि जी को युवाचार्य मनोनित करने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।
—मिट्ठालाल घोका, मद्रास

✲ आध्यात्मिक क्षेत्र में समता के वातावरण में आपके नेतृत्व के विकास के साथ साथ ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप में उत्तरोत्तर वृद्धि की कामना करते हैं । —देवराजसिंह सुराना, रायपुर

✲ आचार्य श्री नानेश के निर्णय का स्वागत एवं अभिनन्दन।
—कन्हैयालाल पोखरना (भूपाल सागर) नानेशनगर दांता

✲ युवाचार्य पद के लिए श्री राम मुनिजी को हार्दिक बधाई ।
—हरकलाल तल्यारिया, चित्तौड़

✲ युवाचार्य श्री राम मुनि के चरणों में शत शत नमन ।
— राजेन्द्र सुराना, रायपुर

✲ पूज्य श्री राम मुनि के युवाचार्य बनने की खुशी में दुर्ग ओसवाल की ओर से हार्दिक बधाई । —शंकरलाल/पृथ्वीराज पारख
अध्यक्ष/मंत्री, ओसवाल पंचायत, दुर्ग

✲ अनन्त श्री विभूषित १००८ पूज्याचार्य श्री नानेश गुरु को एवं पूज्य श्री राम मुनिजी को युवाचार्य पद प्राप्ति के हार्दिकोपलक्ष पर कोटिशः वन्दन नमन ।
चन्दाला —माणकचन्द रामपुरिया
(अध्यक्ष, श्री सा. जैन श्रावक संघ, बीकानेर)

✲ विद्वान संत राम मुनिजी के युवाचार्य पद महोत्सव पर मेरा सादर नमन ।
ब्यावर —चम्पालाल जी (जियावर)
(पूर्व उपाध्यक्ष, श्री अ. भा. सा. जैन संघ)

✲ उत्सव के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।
अहमदाबाद —सूरजमल रमेशचन्द्र बोरदिया

☼ युवाचार्य पद पर विराजमान श्रद्धेय रामलालजी महाराज साहब का सविनय अभिनन्दन एवं मंगल कामना ।

—नेमीचन्द मुनोत
जैन श्वे स्था जन संघ, विराटनगर

☼☼
☼☼

युवाचार्य पद के लिए श्री राम मुनिजी को हार्दिक बधाई

☼ साधुमार्गी जैन संघ, चित्तौड़गढ़

☼ सिरेमल देशलहरा, दुर्ग

☼ श्री राम मुनिजी म सा को युवाचार्य बनाने की घोषणा से अपार हर्ष ।
—श्रीसंघ, टोंक

☼ वन्दन, अभिनन्दन —प्रकाशचन्द्र सूर्या, उज्जैन

☼ युवाचार्य श्री राम मुनिजी के चादर महोत्सव पर अनेकों साधुवाद ।
मुंगेली —सौभाग्यमल कोटड़िया

☼ हार्दिक बधाई

☼ भार सुगनचन्द जी घोका मैलापुर–मद्रास

☼ साधुमार्गी जैन संघ, भीम

☼ सागरमल मोहनलाल चोरड़िया, मैलापुर मद्रास

☼ प्रेमचन्द बोथरा, मैलापुर–मद्रास

☼ बहुत-बहुत शुभकामनाएं व हार्दिक वन्दन नमस्कार ।
—प्रेमरत्ना, इन्दौर

☼ हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई ।
भदेसर —[illegible] जैन
[illegible]-संयोजक

☼ श्री [illegible] श्री म सा को [illegible] पद पर [illegible] हेतु शुभकामनाएं एवं वन्दना ।
विराटनगर —[illegible]

☼ आचार्य श्रीजी को वन्दना, युवाचार्य श्री जी की पावना पर हार्दिक बधाई—

☼ समता युवा संघ, ब्यावर
☼ जवरीलाल श्री श्रीमाल, ब्यावर
☼ मोहनलाल नरेश कुमार श्री श्रीमाल, ब्यावर
☼ धनराज कोठारी, अध्यक्ष ब्यावर
☼ मानकचन्द मूथा, ब्यावर
☼ सरदारमल सीचा, ब्यावर
☼ माणकचन्द बोहरा, ब्यावर
☼ उत्तम लोढ़ा, ब्यावर

☼ हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हुई। मंगल कामनाएं।
सुशील कुमार बोथरा, दिल्ली-६

☼ पूज्य गुरुदेव के निर्णय पर संघ की आस्था। युवाचार्य पदारोहण पर बधाईयां। —कमलाल दक बदनावर

☼ युवाचार्य पद प्रदान करने की खुशी पर हार्दिक शुभकामनाएं —दीपक बापना, धनडरी

☼ आचार्य-प्रवर को शत शत वन्दन एवं अभिनन्दन, युवाचार्य पट्ट महोत्सव पर हार्दिक अभिनन्दन। —धीलाल कावड़िया, अजमेर

☼ Vandana Acharya Shree Great Pleasure Announcement for Yuvacharya Ram Muniji
Deogarh —CHANDANMAL JAIN

☼ Hearty Congratulation on appointment Yuvacharya Shree Pray Vandana Pujya Acharya Shree & Yuvacharaya Shree Wishing function great success
Madras —MUTHA Family

☼ Pray Vandana to gurudev Whole Sardarshahar Sangh highly Jubilant over timely judicious rational and dignified decision of Acharya shree Hearty Congratulations
Sardarshahar —SAMPAT LAL BARDIA

☼ Wishing the function great success
Madras —ABEERCHAND GALDA

☼ Yuvacharya declaration Ramlal ji Maharaj Hearty Congratulations loyalty affirmation Vandana Acharya shree
—Kanhaiyalal Bhora and Sadhumargi Sangh
Coochbehar

॥ युवाचार्य–प्रशस्ति ॥

—आचार्य चन्द्रमौलि

नावेद्य सद्गुरु समर्पितशान्ति रूपे ।
भव्येमहाध महनीय पदे स्थितन्तम् ॥
रामाभिधानमहित सहितं गुणौघं ।
सर्वातिशायिसुकृत मुनिमानतोऽहम् ॥१॥

सर्वं विहाय भवजीवन वस्तुजातम् ।
नानेशमेव शरण वरणीयमीष्टम् ॥
ऊरीकृतो जिन निर्दिष्टपथो विशिष्ट ।
सर्वातिशायिसुकृतं मुनिमानतोऽहम् ॥२॥

मायाप्रपञ्च रहित शमनप्रधानम् ।
भव्य महाव्रत समाश्रयणैकवीरम् ॥
सरक्षक श्रमण धमपरम्पराणाम् ।
सर्वातिशायिसुकृतं मुनिमानतोऽहम् ॥३॥

शास्त्रायतत्त्व परिशीलनवद्धकक्षम् ।
सद्धैर्यधमधरणं धृतजीवरक्षम् ॥
ध्यातं ध्रुवं परिगतं परमात्मतत्त्वम् ।
सर्वातिशायिसुकृतं मुनिमानतोऽहम् ॥४॥

सद्बोधिदान निरत शुभवमदक्षम् ।
स्वयं धृतं भुवनशोधितसवसत्त्वम् ।
त्यक्त च सवजगतां निखिलं ममत्वम् ।
सर्वातिशायिसुवृत्त मुनिमानतोऽहम् ॥५॥

यज्जीवनं भुवि जिनेश्वरपादपद्मे ।
लग्नं निराकृतिमयं सततं प्रसन्नम् ॥
आचायकल्पमखिलं मधुरं मनोज्ञम् ।
सर्वातिशायिसुवृत्तं मुनिमानतोऽहम् ॥६॥

श्रीमद्गुरुप्रवर सच्चरणारविन्दे ।
श्रद्धानमाशु महिता विपुलाच निष्ठा ॥
सेवासुधा परिगता विविधा पयेन ।
सर्वातिशायिसुवृत्तं मुनिमानतोऽहम् ॥७॥

पूर्वार्जितो विविध पुण्यचयो विभाति ।
लब्ध यतो भुवन भास्करतुल्य तेजः ॥
आसप्रमेय विपुल परमात्मरूपम् ॥
सर्वातिशायिसुकृत मुनिमानतोऽहम् ॥८॥

युवाचार्यपद लब्ध रामेण मुनिना नवम् ।
तस्यासशाहृताहृद्या यथिना चन्द्रमौलिना ॥

—नव्यव्याकरणाचार्य कवितार्किक चक्रवर्ती
—भूतपूर्व प्राचार्य, संस्कृत विद्यापीठ बीकानेर
आनन्द भवन, बीकानेर (राज)

❉

"मन वडो हरपायो है"

△ श्री श्याम लाल बना

हमने सुना दो माघ को, युवाचार्य पद दिया आपको ।
धर्म ध्यान को रखा ध्यान में, मन वड़ो हरपायो है ॥
"राम मुनि" यथा नाम, तेवे भगवन्त नाम ।
चातुर्मास का रखे ध्यान, युवाचार्य पद पायो है ॥
जन्म हुआ देशनोक, और हुआ परलोक ।
और हुए माता पिता, ऐसो नन्दन जायो है ॥
राम नाम रहे पास, मन को छड़े आशाश ।
गिरदां रो रातरो नहीं, मानेश रो मन भायो है ॥

—भीन्डर (उदयपुर)

❋

राजस्थानी दूहा

णमोकार महामन्त्र रा दूहा

△ डॉ. नरेन्द्र भानावत

(१)

करम क्लेश सब दूर वै, जपियां नित नवकार ।
मन री गांठा सब खुलै, निगमागम रा सार ॥

(२)

"अरिहंताण' जो जपै, रहै न अरि जग मांय ।
राग द्वेष पै विजय वै, आतम बल प्रगटाय ॥

(३)

"सिद्धाण" सूं सिद्ध वै मन रा सोच्या काज ।
दुःख री सगली जड कटै, निराबाध सुख-राज ॥

(४)

"आयरियाणं" जो जपै, मन वच-करम विशुद्ध ।
तप संजम री पालना, पाप-वृत्ति अवरुद्ध ॥

(५)

"उवज्झायाणं" जो जपै, मिटै भरम नै भेद ।
ग्यान जोत प्रगटे विमल, कटै करम री फंद ॥

(६)

सब "साधु" नै नमन सूं, बधै विनय वैराग ।
विष-विकार व्यापै नहीं, रूं-रूं प्रेम पराग ॥

(७)

पंच परमेष्ठि देव-गुरु, सब मंगल रा मूल ।
नमन कर्‌यां नित भाव सूं, संकट कटै समूल ॥

(८)

णमोकार जो नित जपै, बण शुद्ध स्वाधीन ।
ग्यान-चरित, विश्वास, तप, देवै शक्ति नवीन ॥

(९)

णमोकार री गूंज सूं, नाचै मन आणंद ।
अलगा अलगा सब जुडै, मानव-मानव एक ॥

नमोकार गीत

● श्री सुरेन्द्र दुबे

है महामंत्र यह नमोकार जपलो प्यारे।
अपने मन का अहंकार तजलो प्यारे॥
राग, द्वेष, मद, लोभ मोह अपने दुश्मन,
खा जाते हैं, ये सब, तन मन धन जीवन।
इनको जिनने मारा ये अरिहन्त हुए,
अरिहन्तों को नमस्कार करलो प्यारे।
है महामन्त्र --

जिन्होंने पाया, जिया और भी जाना है,
इस जीवन का गूढ़ तत्त्व पहचाना है।
जिनने पाया परम सत्य वे सिद्ध हुये,
सब सिद्धों को नमस्कार करलो प्यारे।
है महामन्त्र ----

जो ज्ञान वह व्यक्त आचरण से होगा,
व्यवहार ज्ञान सब मुक्त आवरण से होगा।
आचार ज्ञान से उपजा तो आचार्य बने,
आचार्यों को नमस्कार करलो प्यारे।
है महामन्त्र— -

जो ज्ञान वह जिये वही बतलाये भी,
समझ न पाये, उसे और समझाये भी।
दें जो भी उपदेश व उपाध्याय हुए,
उपाध्यायों को नमस्कार करलो प्यारे।
है महामन्त्र --

साधु या साधना में, मगन हुए हैं जो भी।
वन्दनीय हैं हमें हमेशा जो-जो भी।
पाया परम स्वभाव तो साधु कहलाये,
सब साधों को नमस्कार करलो प्यारे।
है महामन्त्र---- ---

—ब्यावर (राज.)

आपको अभिनन्दन है हमारा

△ शशिकर

(१)

हर पल जो अहंकार का प्रतिकार रहे हैं।
सुखी कैसे हो मानव बस विचार कर रहे हैं॥
समता का सन्देश जिन्होंने जन-जन को दिया,
धन्य हैं वे जो नानेश वाणी का प्रचार कर रहे हैं॥

(२)

आचार्य नानेश की घोषणा से जन-मन हिल गया।
अन्तर सुमन हर एक का औचक खिल गया॥
सोचते थे सभी कि कौन युवाचार्य होगा अब,
घोषणा सुनकर मरुथल को मन चाहा मिल गया॥

(३)

मुनि श्री रामलालजी शास्त्रों के अद्भुत ज्ञाता हैं।
सुन लेता वाणी जो भी वह मोद बहुत पाता है॥
तप त्याग की अनोखी घूटी मिली है गुरु से,
युवाचार्य पद इन्हें छू ऊंचा ही हो जाता है॥

(४)

मुनि श्री रामलालजी आडम्बर से बहुत दूर हैं।
शास्त्रों के पठन एवं मनन में रहते नित चूर हैं॥
जीवन का ध्येय है समता के भाव को फैलाना,
ज्ञान रश्मियां आपके अन्तर में भरपूर हैं॥

(५)

आपके युवाचार्य बनने पर वन्दन है हमारा॥
मन मरुस्थल आपको पा नन्दन है हमारा॥
धन्य है नानेश को जो हीरे को परख लिया,
शुभ वेला में कोटि कोटि अभिनन्दन है हमारा॥

—कवि कुटीर, विजय नगर (अजमेर)—३०५६२४

卐

वन्दन-अभिनन्दन मुनि राम

☼ शीला पारीक

निर्भय होकर महावीर के, पथ पर पांव बढ़ाने वाले।
समता भाव सजोकर पल-पल, ज्ञान ज्योति प्रकटाने वाले॥
चाहे सुबह हो चाहे शाम।
नित तुमको कोटि कोटि प्रणाम॥

झूठी माया झूठी काया, जान के बन्धन तोड़ दिया।
सत्य अहिंसा दया धर्म के, पथ पर मन को मोड़ दिया॥
महाविभूति समता योगी, श्री नाना का सान्निध्य मिला।
महक उठा जीवन का उपवन, मन में पावन सुमन खिला॥
जागे हैं तुमसे घर घर ग्राम।
नित तुमको कोटि-कोटि प्रणाम॥

जैसे राम ने गुरु की आज्ञा, पाकर शिव धनु तोड़ा था।
महासती सीता ने भरने, निज जीवन को जोड़ा था॥
तुमने भी गुरु आज्ञा पाकर हर एक बन्धन काटा है।
ज्ञान रश्मियां फैलाकर, स्नेह विश्व में बांटा है॥
युवाचार्य बन गये मुनि राम।
नित तुमको कोटि कोटि प्रणाम॥

जैनाचार्य महामुनि नाना, मोद बहुत ही पाते हैं।
युवाचार्य पद देकर तुमको, फूले नहीं समाते हैं॥
महामुनि श्री रामलाल जी, नमन आपको बारम्बार।
यही भावना है मेरी कि समता का हो नित्य प्रचार॥
वन्दन-अभिनन्दन मुनि राम।
नित तुमको कोटि-कोटि प्रणाम॥

'आराधना' बेकरी रोड, विजयनगर-अजमेर (राज) पिन ३०५६२४

☼——☼

जय जय नाना जय जय राम

खटका राजस्थानी

युगों-युगों तक जिनकी वाणी, दिग्दिगन्त तक गूंजेगी,
वाद्य बजेंगे भावों के नित, जनता जिनको पूजेगी।
चारो ओर अहिंसा का, विजय घोष करना होगा,
यह वाणी है नाना गुरु की, समता सबमें भरना होगा।
मुख पर दिव्य तेज को लेकर, ज्ञान रश्मियां देने वाले,
निश दिन भव सागर के अन्दर, सबकी नैया खेने वाले।
श्रीमन्तों के शीश आपके, चरणों मे झुक जाते हैं,
राम आपकी दिव्य शक्ति से, स्वय दशानन रुक जाते हैं।
मन में मानवता को लेकर, मीलों पैदल आप चले,
लाभ और हानि ना सोची, तम के कारण सदा जले।
लगन आप में एक रही बस, गुरु की सेवा करना है,
जीवन तो नश्वर है साथी, पांव सभल कर धरना है।
महावीर का पथ है पावन, यही सत्य का वाहक है,
हाहाकार भरा जो जग में, सोचो कितना दाहक है।
राग द्वेष को तजकर मानव, सुखी यहा हो जायेगा,
जब तक खुद को ना जानेगा, लक्ष्य नहीं छू पायेगा।
कीचड़ में जब पांव सने तो, क्यों चेहरे को धोते हो,
बवरन ज्वाला में कूदे तो, अब बोलो क्यों रोते हो?
यह जीवन धन्य बनालो बन्धु, समता को अपनाओ रे,
हो जाओगे तुम निर्भय, जय श्रमण धर्म की गाओ रे।

जय जय नाना, जय जय राम।
समता भाव लगे अभिराम॥

—'आराधना' केकड़ी रोड, विजयनगर (अजमेर राज) पि-३०५६२४

नवें पाट पर अब नये

● श्री कमलचन्द लूनिया

संघ नायक नाना गुरु
समता के अवतार ।
हुक्म संघ में शोभते
जन मन के आधार ॥१॥

समता दर्शन है परम
श्री गुरुवर की देन ।
साम्य भाव में छा रहे—
तात्त्विक गुरु के बैन ॥२॥

नवें पाट पर अब नये
आये हैं युवराज ।
राम मुनि गुणिवर प्रवर
प्रमुदित सरस समाज ॥३॥

गुण ग्राही पाया सरल
नहीं अहम का भाव ।
राम मुनि साधक महा—
तारें भव निधि नाव ॥४॥

जिनके क्रिया प्रकार से
विकसे संघ जनजात ।
आगम निगम प्रभाव का—
जागे नवल प्रभात ॥५॥

रामराज्य की कल्पना—
बननी है साकार ।
"कमल" कहे चमके सदा
दिनकर सम गुरुवार ॥६॥

बीकानेर (राज.)

"राम चरण मे शत शत वन्दन"

वैराग्यवती-प्रतिभा बोकड़िया

॥ चौपाई ॥

हु शि च चौ श्री ज ग ना रा ।
उदित हुआ है भानू प्यारा ॥
शिव सुख के हैं ये अधिकारी ।
सकल सघ है चरण पुजारी ॥
उदय उदय होवेगी पूजा ।
जय श्री राम जगत मे गू जा ॥
चौथे आरे सम करणी है ।
भव जल की अनुपम तरणी है ॥
श्री सम्पन्न पट्टधर प्यारे ।
नाना गुरु के सबल सहारे ॥
जन जन के मन आप विराजे ।
नव निधि युक्त नवम् पट्ट छाजे ॥
गण मे ऊ चा नाम तुम्हारा ।
उससे ऊ चा काम तुम्हारा ॥
नाना गुण से हैं ये मण्डित ।
जैनागम के पूरे पण्डित ॥
राम है गवरा देवी नन्दन ।
राम चरण मे शत-शत वन्दन ॥

—उदयपुर (राज)

स्वीकारो मेरा वन्दन-अभिनन्दन !

श्री प्रेमचद रांका 'चन्चल'

हुए धन्य आपका सुत पाकर, मात पिता जो,
अमर हो गया वह घर ग्राम आपको पाकर जो।
गुरु की एक नजर मे ही आप आ गए,
होना था उद्धार आप मन चाहे गुरु पा गए ॥

आपके नाम के आगे लगा राम,
धन्य धन्य जन जगत की शान।
महाराज अति विद्वान, ध्यान की मूर्ति,
फल रही चहु ओर आज आपकी कीर्ति ॥

आप सच में नाना गुरु के पटहार,
सरस्वती आगम ज्ञान से कंठ विराजी।
आप हैं सच म सत महा विद्वान,
तप त्यागी गुण की धारा चरण बुलाती ॥

सांसारिक सुखों का कर त्याग,
स्व जीवन धन्य जिसने किया।
तप के पथ पे गए सोपान आप,
महासतों मे पाया स्थान सभी ने सम्मान दिया ॥

आप सचमुच म संयम पथ पग बढा रहे,
ज्ञान का पी पीयूष जीवन का पावन सदय बना रहे।
कर नित ग्रन्थों का पान जीवन सरस बना रहे,
नाना भगवन का नाम, आप खूब दीपा रहे ॥

हे युवाचार्यजी ! स्वीकारो मेरा वन्दन-अभिनन्दन।
भाव भरे पावन सुमन, बुलाता अभिनन्दन।
पावन है नाम रामलाल मन नन्दन,
भक्ति के माला मोती, भेंट चरणों में, अभिनन्दन ॥

—गुमानपुरा भीलवाड़ा

युवाचार्य तुम्हारी जय होवे

भवरलाल सेठिया

तर्ज —महावीर तुम्हारे चरणो मे श्रद्धा के

अखिल हिन्द जिनशासन के युवाचाय तुम्हारी जय होवे ।
'श्री रामलाल" सरदार गुणी युवाचाय तुम्हारी जय होवे ।।टेर।।

माता 'गवरा' के जाए हो, अरु 'नेमचन्द' मन भाए हो ।
'भुरा' कुल के उजियारे तुम, युवाचाय तुम्हारी ।।१।।

श्री नाना पूज्य के पट्टधारी सेवाभावी, आज्ञाकारी ।
हितकारी अरु अति प्रियकारी, युवाचार्य तुम्हारी ।।२।।

समतादर्शी अरु सुखकारी, भक्तो के दु.ख भजनहारी ।
जिनशासन को चमकाना तुम, युवाचाय तुम्हारी ।।३।।

कम शत्रु तुम्हें तपाए गे, 'सोने' जिम बहुत कसाएंगे ।
निज गहरा रग दिखाना तुम, युवाचाय तुम्हारी ।।४।।

"नाना-शिक्षाएं दिल धरना, जीवन को अति उत्तम करना" ।
'श्री हुक्म सघ' दीपाना तुम, युवाचार्य तुम्हारी ।।५।।

जैसी कृपा गुरुओ की रही, वैसी ही रहे तुम्हारी भी ।
'बीकाणे' को ना विसराना युवाचाय तुम्हारी ।।६।।

—पवनपुरी बीकानेर

चादर दिवस रग लाया है

जया रांका

बीकाणे के नर नारी में हर्ष छाया है ।
तीज का चादर दिवस रंग लाया है ।।
होय आज का दिवस सदा याद रहेगा ।

इतिहास के पन्नों में नया नाम जुड़ेगा ॥
प्यारी माता से प्यारा आदेश
चतुर्विध संघ निभायेगा आदेश । बीकाणे .
उज्ज्वल, निर्मल ये श्वेत चादर
धारण कराये हैं, नाना गुरुवर
होय उज्ज्वल, निर्मल ये धवल चादर
चार चांद लगायेंगे राम मुनिवर । बीकाणे…
वाणी का है झरना बहता गुणों की ये खान
महावीर की याद दिलाये, पूज्यवर का दीदार
होय 'राममुनि' चमकेंगे भानु समान
'नानेश' का नाम बनेगा जिनशासन की शान । बीकाणे ।…

—गोलछा मोहल्ला, बीकानेर

卐

आचार्य श्री नानेश को समर्पित

दो मुक्तक

卐 रचयिता—सुरेन्द्र कुमार आहरा

(१)
पाँचों इन्द्रियों का संयम ही मुनि की पहचान है,
मन, वचन, काय गुप्ति ही असली शान है ।
आत्म दर्शन के लिये जरूरी है वासना पर विजय,
समीक्षण ध्यान साधना में रत मुनि ही महान् है ॥

(२)
संयममय जीवन ही जीवन का सार है,
सत का आचरण ही जीवन का निखार है ।
समीक्षण साधना से ही मिलेगी परम शान्ति,
शास्त्रों का अनुशीलन ही जीवन का शृंगार है ॥

—[illegible]

नमन

आशा जैन

नमन नानेश को
मन से तन से
भाव के, सिन्धु से
गुरुवर नानेश को ।
समता सिद्धान्त
समीक्षण ध्यान
प्रणम्य है गुरुता
महिमा महान् ।
परम्परा विशाल
धर्म का ज्ञान
मुझ पामर का
करो कल्याण ।

—छोटी कसरावद
प. निमाड़ (म.प्र.)

णमोक्कार : एकता का प्रतीक

श्री दिलीप धींग

एकता का है प्रतीक, शब्द अक्षर सटीक,
णमोक्कार महामन्त्र अनादि अनन्त है ।
उपकारी हैं अनन्त ज्ञानी श्री अरिहन्त,
पूर्ण शुद्ध बुद्ध मुक्त सिद्ध भगवन्त हैं ।
संघ नायक आचार्य, ज्ञानदाता उपाध्याय,
महाव्रती निस्पृही निग्रन्थ सन्त हैं ।
'दिलीप' बनो निर्विकार, जपो ध्याओ नवकार,
पंच-परमेष्ठी को वन्दन अनन्त है ।

—बम्बोरा–३१३७०६ (उदयपुर)

वीतराग पथ के पथिक का परिवेश

वीतराग पथ के पथिक का स्नेहसिक्त अभिषेक

अनन्त स्नेह की अमृत वर्षा

[illegible]